ISBN: 978-93-5659-295-7

महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में हिन्दी कम्प्यूटिंग के प्रति जागरूकता: एक अध्ययन (बाँदा जिले के विशेष सन्दर्भ में)
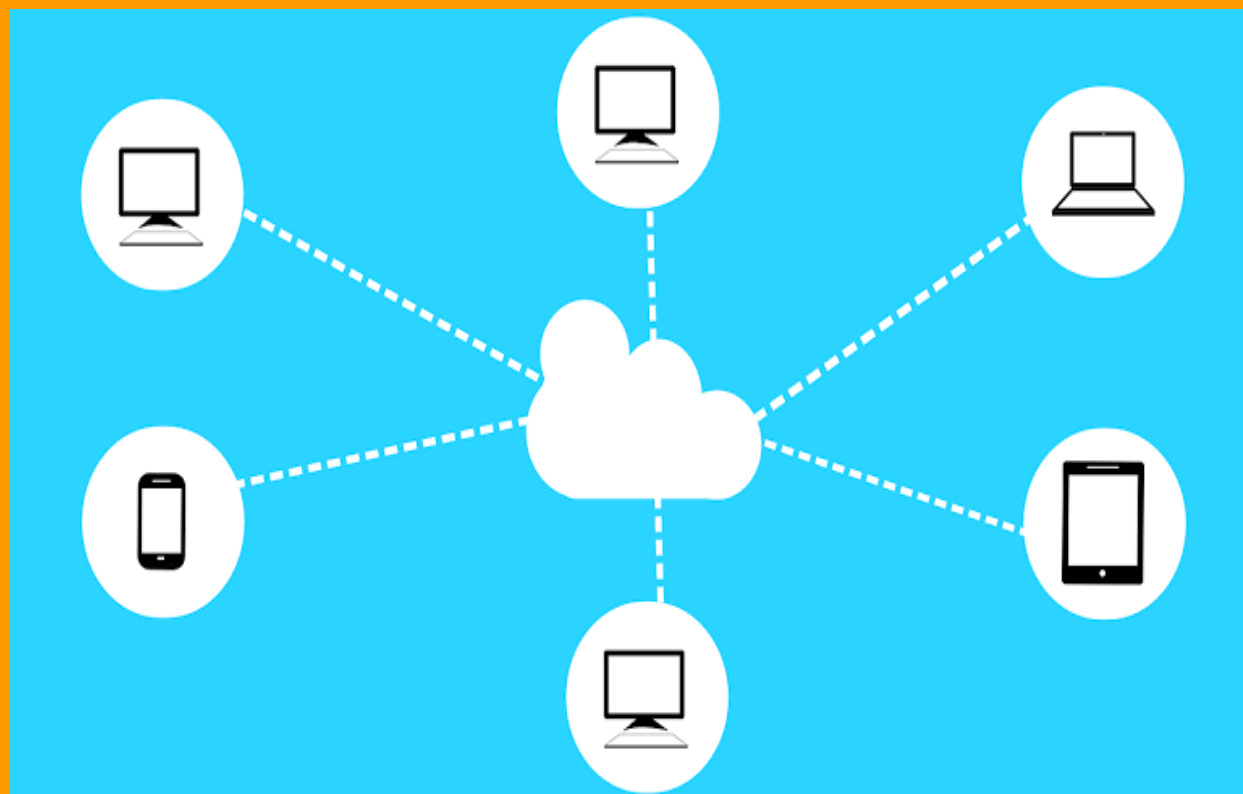
राजीव अग्रवाल

दीनानाथ

दिलीप कुमार

महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में हिन्दी कम्प्यूटिंग के प्रति जागरूकता: एक अध्ययन (बाँदा जनपद के विशेष सन्दर्भ में)

डॉ० राजीव अग्रवाल

डीन–शिक्षा संकाय

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उत्तर प्रदेश)

दीनानाथ

एम० ए० (भूगोल), एम० एड०

दिलीप कुमार

एम० ए० (इतिहास), बी० एड०

महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में हिंदी कंप्यूटिंग के प्रति जागरूकता: एक अध्ययन (बाँदा जिले के विशेष संदर्भ में)

राजीव अग्रवाल
दीनानाथ
दिलीप कुमार

E-Book संस्करण: 2022

मूल्य: ₹99

ISBN: 978-93-5659-295-7

प्रकाशक**:**
दिलीप कुमार
ग्राम—नायकपुरवा, पोस्ट— इचौली, तहसील— मौदहा, जिला— हमीरपुर (उत्तर प्रदेश)
पिन कोड — 210507
मो.न.— 8858445669
ई-मेल— dilipichauli@gmail.com

प्राक्कथन

वर्तमान युग कंप्यूटर का युग है। हिंदी कंप्यूटिंग के प्रति जागरूकता आधुनिक युग की कुशलता का परिचायक है।

आज जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों में कंप्यूटर का प्रवेश हो गया है। शिक्षण संस्थान, बैंक, रेलवे स्टेशन, हवाई अड्डे,बड़े-बड़े उद्योग, कारखाने, व्यवसाय, हिसाब-किताब इत्यादि कोई भी क्षेत्र कंप्यूटर से अछूता नहीं है। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में इसका प्रयोग और भी आवश्यक हो गया है।इसलिए महाविद्यालय स्तर पर छात्रों में जागरूकता फैलाने के लिए हिंदी कंप्यूटिंग की आवश्यकता महसूस की गई।

वर्तमान समय में कम्प्यूटिंग एवं हिन्दी कम्प्यूटिंग रोजगार चुनने में भी सहायता दे रहे है। कम्प्यूटिंग एवं हिन्दी कम्प्यूटिंग में छात्रों को रोजगार परक विषय पढ़ने में सहायता प्रदान करने के साथ सही व्यवसायिक निर्देशन में भी सहायक भूमिका निभाती है।

इस प्रकार छात्र स्वतः इस योग्य हो जाते हैं कि वह उपर्युक्त रोजगार अपना सके इसके साथ छात्रों को कुशलता एवं दक्षता बढ़ाने में कम्प्यूटिंग एवं हिन्दी कम्प्यूटिंग सहायक भूमिका निभा रहे है। आज के परिप्रेक्ष्य में कम्प्यूटिंग एवं हिन्दी कम्प्यूटिंग की विषयगत आवश्यकता है।

प्रस्तुत पुस्तक का शीर्षक "महाविद्यालय विद्यार्थियों में हिन्दी कम्प्यूटिंग के प्रति जागरुकता एक अध्ययन (बाँदा जिले के विशेष सन्दर्भ में)" है। इस पुस्तक को 5 अध्यायों में विभक्त किया गया है।

प्रथम अध्याय में हिन्दी भाषा और सूचना प्रौद्योगिकी का विकास, हिन्दी शिक्षण की समस्याएँ तथा हिन्दी कम्प्यूटिंग के इतिहास का विस्तृत वर्णन किया गया है।

द्वितीय अध्याय में उच्च शिक्षा, हिन्दी, हिन्दी कम्प्यूटिंग के संदर्भ में हुए कतिपय शोध का अध्ययन किया गया है।

तृतीय अध्याय में शोध विधि, प्रतिदर्श चयन, परीक्षण का प्रशासन, फलांकन एवं सांख्यिकीय प्रविधियों का वर्णन है।

चतुर्थ अध्याय में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में हिंदी कंप्यूटिंग के प्रति जागरूकता का प्रश्नश: विश्लेषण एवं महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में हिंदी कम्प्यूटिंग के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

पंचम अध्याय में निष्कर्ष एवं विवेचन, अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता, अध्ययन का शैक्षिक निहितार्थ एवं अध्ययन के सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं।

प्रस्तुत पुस्तक लघु शोध प्रबन्ध पर आधारित हैं। शोध कार्य के प्रकाशन से वैज्ञानिक ज्ञान भण्डार में वृद्धि होती है एवं नवीन अनुसन्धानों को प्रेरणा मिलती है। किसी भी शोध कार्य का तब तक कोई अर्थ नहीं है; जब तक कि वह जनसामान्य के लिए सुलभ न हो। प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है। यह पुस्तक महविद्यालयीन विद्यार्थियों में हिन्दी कम्प्यूटिंग के प्रति जागरूकता: एक अध्ययन (बाँदा जिले के विशेष सन्दर्भ में) से सम्बन्धित हर एक घटक में प्रेरणा का संचार करने में सहायक सिद्ध होगी।

इस पुस्तक के सृजन में सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में उल्लेखित विभिन्न पुस्तकों का सहयोग लिया गया है। हम सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में अनेक त्रुटियाँ होना स्वाभाविक हैं। अतः यदि अनुभवी विद्वतगण अवगत कराने का कष्ट करेंगे, तो हम अत्यन्त आभारी होंगे तथा भावी संस्करण में संशोधन का प्रयास करेंगे।

दिनांक —22/07/2022
स्थान—अतर्रा

राजीव अग्रवाल
दीनानाथ
दिलीप कुमार

विषय – सूची

अध्याय	विषय वस्तु	पृष्ठ संख्या

प्रथम अध्याय- अध्ययन परिचय

1.1 प्रस्तावना

"गुरु ज्ञान से निकला प्रकाश पुंज जीवन के प्रति हमारे दृष्टिकोण और व्यक्तित्व के विकास की राह को रोशन करता है"

डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन का उपरोक्त कथन मानव जाति के विकास का मुख्य आधार है। मानव समस्त प्राणियों में बौद्धिक रूप से श्रेष्ठ है उसमें ज्ञान प्राप्त करने और ज्ञान की सुधा तृप्त करने की असीम अभिलाषा व क्षमता रहती है। वह विभिन्न विषयों का अध्ययन, उनकी मीमांसा, अन्वेषण, विश्लेषण करने में तथा अपने व्यक्तित्व को सुधारने की आकांक्षा रखता है। आज का सामाजिक परिवेश द्रुत गति से परिवर्तित हो रहा है जिसके कारण सामाजिक समरसता के मुद्दे एवं मानव मूल्यों व कार्यकुशलता के निर्माण की समस्या जटिलता बनती जा रही है। इस बिन्दु को अपेक्षित गम्भीरता के साथ आलोचनात्मक चिन्तन के घेरे में लाना है, जिससे मानव समाज को एक नए शैक्षिक आयाम की प्राप्ति हो सके। असीम आनन्द का अनुभव प्राप्त करता है। ज्ञान द्वारा वह अपने लोक-परलोक के ऐहिक, लौकिक व धार्मिक जीवन

मानव की उत्पत्ति के समय से ही यह प्रमाण मिले हैं कि जितनी भी उन्नति प्रगति मानव जाति ने की है वह उसकी जिज्ञासु प्रवृत्ति के कारण ही सम्भव हो सकी है। मानव संसार के समस्त प्राणियों में उत्कृष्ट माना गया है। भाषा, चिन्तन, सृजनात्मकता, सहयोग, सामाजिक एवं व्यावसायिक लालसा जैसी मूल प्रवृत्तियों से अलंकृत मानव नि:सन्देह रूप से सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। मनुष्य की इन्हीं सब मूल प्रवृत्तियों एवं अन्तर्निहित क्षमताओं के विकास की प्रक्रिया को हम शिक्षा के रूप में परिभाषित कर सकते हैं। शाब्दिक व्युत्पत्ति के आधार पर शिक्षा का तात्पर्य सीखने-सिखाने एवं बालक या मनुष्य की अन्तर्निहित शक्तियों गुणों एवं क्षमताओं को बाहर निकालने तथा बाह्य शक्तियों के विकास की सकारात्मक प्रक्रिया से है।

परिवर्तन प्रकृति का एक शाश्वत सत्य है। मानव स्वभावतःएक गतिशील प्राणी है अतः मानव समाज में सदैव परिवर्तन होता रहता है। किसी भी व्यवस्था या किसी भी समाज में समय सापेक्ष परिवर्तन आवश्यक है। समय

के साथ हो रहे हर परिवर्तन के प्रति जागरूक ना रहने वाला समाज भविष्य में अपना अस्तित्व खो देता है। समाज परिवर्तन सापेक्ष बनाने का सबसे प्रमुख साधन है शिक्षा, क्योंकि शिक्षा ही समाज को प्रत्येक परिवर्तन में समायोजित होने योग्य बनाती है। इसके द्वारा व्यक्ति के व्यवहार चरित्र, आचरण, मनोवृत्ति, भावनावों आदि में जो परिवर्तन होते हैं, उनके कारण व्यक्ति सुसंस्कृत एवं सभ्य जीवन व्यतीत करने की क्षमता के विकास के साथ-साथ अग्रोन्मुखी तथा परिवर्तनाकूल समाज का निर्माण भी करता है। शिक्षा ही वह सशक्त माध्यम है जिससे मनुष्य अपने को परिवर्तनशील वातावरण में समायोजित करने में सक्षम होता है। परिवर्तनोन्मुख वर्तमान समाज में शिक्षा व्यवस्था के प्रमुख स्तम्भ 'शिक्षक' की भूमिका निर्विवाद रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि शिक्षक ही वह बिन्दु है जो अपने प्रयासों से किसी भी शिक्षा व्यवस्था एवं उसके उद्देश्यों को परिपूर्ण करता है। वह समाज का नवसृजन करता होता है। विद्यार्थी के विचारों, मूल्यों, अभिवृत्तियों और संस्कारों को परिवर्तन एवं समय सापेक्ष बनाने का दायित्व शिक्षकों के कंधों पर होता है।

1.1.1 शिक्षा: विकास की प्रक्रिया

शिक्षा ही मानव विकास का मूल आधार है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य अपनी शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक एवं आध्यात्मिक शक्तियों को अनुशासित करता है। इस प्रकार मनुष्य के स्वानुशासन के विकास में 'शिक्षा' का महत्वपूर्ण स्थान है। जब से बालक इस संसार में जन्म लेता है तभी से वह वातावरण के साथ अनुकूलन स्थापित करना प्रारम्भ कर देता है। वातावरण एवं पर्यावरण के साथ अनुकूलन स्थापित करने में शिक्षा की महती भूमिका होती है प्रारम्भिक अवस्था में बालक की सीखने की गति प्रायः कम होती है। धीरे-धीरे जब बच्चा बड़ा होता है तो वह वातावरण से कुछ नए अनुभव अर्जित करता है और उसके फलस्वरूप उसका व्यवहार परिवार एवं समाज तथा समुदाय के अनुकूल हो जाता है। बालक के अनुभव का यह क्रम दिन प्रतिदिन बढ़ता रहता है जिसके परिणाम स्वरूप उसका व्यवहार संयमित होने लगता है शिक्षा के द्वारा ही एक असभ्य, अविकसित, अपरिपक्व मानव, सुसभ्य एवं सुविकसित इंसान के रूप में परिवर्तित हो जाता है।

शिक्षा केवल मानव जाति के व्यवहार में परिवर्तन लाने तक ही सीमित नहीं है अपितु उनका चारित्रिक विकास भी करती है। संसार के अन्य प्राणियों की अपेक्षा मनुष्य पर शिक्षा का प्रभाव अपेक्षाकृत अधिक होता है क्योंकि

मनुष्य एक विवेकशील एवं बुद्धिमान प्राणी है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य के पशुवत व्यवहार में परिवर्तन करके उसे एक सामाजिक प्राणी बनाया जाता है। सामाजिक प्राणी बनाने की प्रक्रिया में परिवार, विद्यालय समाज तथा समुदाय बालक की सहायता करते हैं। बालक की शिक्षा के विकास में प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च स्तर पर अलग-अलग कार्यक्रम निर्धारित किए जाते हैं जिससे बालक के सर्वांगीण विकास के उद्देश्य की प्राप्ति आसानी से की जा सके। बालक की शिक्षा में उच्च शिक्षा अपना महत्वपूर्ण योगदान देती है। उच्च शिक्षा स्तर पर ही बालक की शैक्षिक,व्यावसायिक एवं सामाजिक परिपक्वता की प्राप्ति होती है जो उसके आगे आने वाले भविष्य की दिशा निर्धारित करती है।

समाज की आर्थिक व्यवस्था चार प्रकार की श्रेणियों में विभक्त रही है। ब्राह्मण वर्ग से अपेक्षा की जाती थी कि वह समुदाय को पुरोहित , चिंतक, लेखक, विधायक, धार्मिक नेता तथा पथ प्रदर्शक देंगे। क्षत्रिय वर्ण समाज को योद्धा शासक प्रशासक, वैश्य समाज को उत्पादक, कृषक, शिल्पकार, व्यापारी देते थे। शूद्र वर्ण छोटे-छोटे कार्यों के लिए भृत्यों या नौकरी की आपूर्ति करते थे। इस प्रकार की प्रणाली में धर्म चिन्तन तथा विद्या को सर्वश्रेष्ठ स्थान दिया गया। सामाजिक व्यवस्था जन्म के आधार पर नहीं, अपितु व्यक्ति क्षमता व आन्तरिक व्यवस्था के आधार पर निर्धारित की गई। वर्णों के आधार पर तदनुरूपी चार पुरुषार्थ स्थापित किए गए जो उस समय की दार्शनिक सोच के द्योतक है- ब्राह्मण-मोक्ष,क्षत्रिय-काम, वैश्य-अर्थ, शूद्र- धर्म। कालान्तर में यही वर्ण व्यवस्था जाति व्यवस्था में परिणित हुई तथा जातीय संघर्ष का जन्म हुआ। जो आज की सूचना तकनीकी युग में भी यह संघर्ष उच्च स्तर पर विद्यमान है, चाहे वह राजनीति में हो, शिक्षा में हो, या शासन में हो, यह राष्ट्र निर्माण में बाधा स्वरूप है। सामाजिक विघटन को दूर करने के लिए समाज में ऐसी शिक्षा का होना नितान्त आवश्यक है जो हमें संकीर्ण सोच से ऊपर उठाकर वैश्विक स्तर तक पहुँचा सके, और इस सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी युग में एक सकारात्मक सोच का विकास कर सके। वर्तमान समय में उच्च शिक्षा की जो स्थिति है उसमें कुशल शिक्षक के साथ वर्तमान तकनीकी भी महत्वपूर्ण भूमिका में होती है, क्योंकि उच्च शिक्षा के सन्दर्भ में भारत की स्थिति अभी निराशाजनक है।

1.1.2 उच्च शिक्षा बहुआयामी ज्ञान का आधार

शिक्षा, विज्ञान, चिकित्सा तथा सूचना तकनीकी के विकास एवं संवर्द्धन के साथ ना केवल ज्ञान का विस्तार हुआ है बल्कि आधुनिक जगत की भौतिक यात्रा की उच्च कीर्तिमान स्थापित हुए हैं। इस प्रौद्योगिकीय प्रगति से मानवीय जीवन भी प्रभावित हुआ है। मानव की जीवन शैली में बदलाव के साथ-साथ उनकी सोचने-समझने की शक्ति में भी बदलाव आया है। आज वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकीय उन्नति के साथ-साथ शिक्षा की अवधारणा भी परिवर्तित हुई है। वर्तमान समय में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में हमारे राष्ट्र की प्रगति मन्द है हमारी शिक्षा में आज भटकाव की स्थिति उत्पन्न हो रही है। इस संदर्भ में स्वामी विवेकानंद ने सभी प्रकार की शिक्षाओं में निपुणता हासिल करने पर बल दिया है। जिसके परिणाम स्वरूप ही मानव का सर्वांगीण विकास संभव है। जो मनुष्य की इच्छा शक्ति को प्रबल बनाकर उसके जीवन को संयमित रूप प्रदान करें। स्वतंत्रता प्राप्ति के छह दशक बाद भी उच्च शिक्षा के क्षेत्र में कोई गुणात्मक सुधार नहीं हुआ है। स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत शिक्षा पर गठित सभी आयोगों ने गंभीरतापूर्वक विचार किया और भारतीय शिक्षा के उद्देश्यों को स्पष्ट किया।

विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948-49) स्वतंत्र भारत का पहला आयोग था, जिसने देश में उच्च शिक्षा के विकास की समीक्षा की और भविष्य में उसके सुधार के लिए प्रस्ताव किए। तत्पश्चात माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952-53) तथा शिक्षा आयोग(1964-66) स्थापित हूए इन तीनों गठित आयोग ने शिक्षा आयोग का आधार भारतीयता, भारतीय जीवन दर्शन तथा प्रौद्योगिकीय विकास होना स्वीकार किया। सन1968 में जारी शिक्षा नीति ने भी सहमति जताई कि शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के सामाजिक व्यक्तित्व का विकास करना होना चाहिए। इसी प्रकार 1986 में जारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति में कहा गया कि शिक्षा व्यक्ति के भौतिक विकास के लिए आवश्यक तत्व है। 21 वीं शताब्दी की पीढ़ी के लिए हमें ऐसी शिक्षा नीति का निर्माण करना है जो एक प्रगतिशील, जागरूक और एक सूत्रबद्ध राष्ट्र का निर्माण कर सकें। वर्तमान उच्च शिक्षा व्यवस्था सुसंस्कृत व मूल्यबोध, सामाजिक व्यक्तित्व, प्रौद्योगिकीय ज्ञान, कुशल युवा नागरिक तैयार करने में समर्थ है परन्तु यह तभी संभव है जब पूरी शिक्षा एक योजनाबद्ध तरीके से दी जाए। इसके लिए राष्ट्र की भावनात्मक एकता स्थापित करने के साथ-साथ राष्ट्र को प्रौद्योगिकीय एवं व्यवसायिक उन्नति दिलाने में हमें प्रयास करना होगा।

भारतीय चिंतकों, शिक्षाशास्त्रियों और भविष्य दृष्टाओं की मान्यताओं के विपरीत आज शिक्षा प्राप्त करने का एकमात्र लक्ष्य व्यवसाय की प्राप्ति है। अतः चिन्तन का विषय है कि आज की शिक्षा हमारी युवा पीढ़ी एवं समाज को किस दिशा की ओर ले जा रही है।

वर्तमान शिक्षा को अगर प्रणाली उपागम की दृष्टि से देखें और इस प्रणाली सूत्र का विश्लेषण करें तो हमें पता चलता है कि जितना अदा हमने लगाया उसके अनुपात में प्रदा हमको नहीं मिल रहा है इस अदा में समस्त भौतिक संसाधन, शिक्षक-शिक्षार्थी सहित अन्य भारतीय संसाधन सम्मिलित हैं। भारतीय मानदंडों के अनुरूप उपलब्धि के रूप में विद्यार्थियों में जो अपेक्षित व्यक्तित्व परिष्कार दिखना चाहिए वह नहीं दिखाई दे रहा है ऐसी परिस्थिति में सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली के सम्मुख एक प्रश्नचिन्ह खड़ा हो जाता है कि आखिर इन सब चीजों के लिए जिम्मेदार कौन है इस दिशा में आज शिक्षा व्यवस्था के प्रत्येक पहलू पर गंभीरता पूर्वक विचार करने की आवश्यकता है। इसके लिए शैक्षिक उद्देश्यों के निर्धारण से लेकर प्रक्रिया के व्यावहारिक परिवर्तन हेतु विभिन्न उपागम शिक्षक और शिक्षार्थी के मध्य रचनात्मक चिन्तन को विकसित करने वाले प्रेरकों तथा शिक्षक के व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों पर पुनः नए ढंग से विचार करना होगा।

1.1.3 भारतीय उच्च शिक्षा: विश्व जगत का आदर्श

भारतीय शिक्षा का सूत्रपात प्राचीन काल में आज से लगभग 4000 वर्ष पूर्व हुआ था परन्तु इसका सुव्यवस्थित स्वरूप वैदिक काल से प्रारम्भ होता है। इस काल में शिक्षा को ब्रह्माणी शिक्षा तथा कुछ ने इसे 'हिन्दू शिक्षा' की संज्ञा दी है। प्राचीन काल में ऋषि, मुनि व आचार्य इस तथ्य से भलीभांति परिचित थे कि शिक्षा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा बालक या मनुष्य का सर्वांगीण विकास समाज को समुचित दिशा-निर्देश एवं सभ्यता तथा संस्कृति का संरक्षण एवं प्रसार संभव है अतः ऋषि-मुनियों एवं विद्वानों ने ऐसी प्रणाली का विकास किया जिससे हमारी विशाल भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति सुरक्षित रही तथा ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में ऐसे दिग्गज विद्वानों का जन्म हुआ जिनकी यश एवं कीर्ति की पहचान पूरे विश्व में उजागर हुई, जिससे भारतवर्ष दुनिया के सामने शैक्षिक रूप से अपने आप को समृद्ध कर सका। इसी सन्दर्भ में भारत की मुक्त स्वर से प्रशंसा करते हुए **एफ. डब्लू टॉमस** ने लिखा है-

“भारत में शिक्षा विदेशी पौधा नहीं है। संसार का कोई ऐसा देश नहीं है जहाँ ज्ञान के प्रति प्रेम का इतने प्राचीन समय से आविर्भाव हुआ हो या जिसने इतना चिर स्थाई और शक्तिशाली प्रभाव डाला हो।” प्राचीन युग में शिक्षा को किताबी ज्ञान का पर्यायवाची नहीं माना गया न ही व्यवसाय का साधन, इसके विपरीत शिक्षा को वह ज्ञान रूपी प्रकाश पुंज माना गया जो व्यक्ति को अपना सर्वांगीण विकास करने, सम्मानित जीवन जीने और मोक्ष प्राप्त करने में सहायता देती है। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो शिक्षा व्यक्ति के हर एक पक्ष का पथ प्रदर्शन करने का कार्य करती है **डी०ए०एस० अल्तेकर** ने लिखा है कि “वैदिक युग से आज तक शिक्षा के संबंध में भारतीयों की मुख्य घोषणा यह रही है कि शिक्षा प्रकाश का वह श्रोत है जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हमारा सच्चा पथ प्रदर्शन करता है।”

1.1.4 भारतीय शिक्षा का विकास

भारतीय शिक्षा के इतिहास को अध्ययन की सुगमता की दृष्टि से तीन भागों में बाँटा जा सकता है- प्राचीन काल, मध्यकाल और आधुनिक काल। प्राचीन काल में वैदिक कालीन शिक्षा को उच्च शिक्षा की नींव माना जाता है। उच्च क्षिक्षा का विकास काल यहीं से प्रारम्भ माना जाता है। वैदिक काल से आधुनिक काल तक उच्च शिक्षा में कई उतार-चढ़ाव आए जिससे समय-समय पर कई बदलाव देखने को मिले।

1.1.4.1 प्राचीन काल में उच्च शिक्षा

प्राचीन काल में जिस शिक्षा प्रणाली का विकास हुआ उसे वैदिक शिक्षा प्रणाली कहते हैं। पूरे वैदिक काल में शिक्षा का प्रशासन एवं संगठन तो सामान्यतः एकसा रहा परन्तु समय की परिस्थितियों और ज्ञान एवं कला कौशल के क्षेत्र में विकास के साथ-साथ उसकी पाठ्यचर्या और शिक्षण विधियों में विकास होता रहा। वैदिक काल में उच्च शिक्षा की व्यवस्था गुरकुलों में होती थी। 8 से 12 वर्ष की आयु पर बच्चों का गुरुकुल में प्रवेश होता था। 8 वर्ष की आयु पर ब्राह्मण बच्चों का ,10 वर्ष की आयु पर क्षत्रिय बच्चों का और 12 वर्ष की आयु पर वैश्य बच्चों का गुरुकुल में प्रवेश होता था। गुरुकुल में प्रवेश के समय बच्चों का ‘उपनयन संस्कार’ होता था। इस संस्कार के बाद उनकी उच्च शिक्षा प्रारम्भ होती थी।

वर्तमान की नीव अतीत पर टिकी होती है। हमारे देश में वैदिक काल में जिस शिक्षा प्रणाली का विकास हुआ वह हमारी आधुनिक शिक्षा प्रणाली की नींव का पत्थर है । वैसे तो वैदिक शिक्षा प्रणाली के बाद हमारे देश में क्रमशः बौद्धशिक्षा प्रणाली, मुस्लिम शिक्षा प्रणाली और अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली का विकास भी हुआ परन्तु वैदिक शिक्षा प्रणाली प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से निरंतर चलती रही और आज भी चल रही है । आज भी देश भर में वैदिक शिक्षा प्रणाली पर आधारित धार्मिक शिक्षा केन्द्र, गुरुकुल एवं संस्कृत विद्यालय चल रहे हैं । वैसे तो इनका स्वरूप वैदिक कालीन ऋषि आश्रमों और गुरुकुलों से काफी भिन्न है पर मूल आधार वही है। आधुनिक भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली के विकास में भी इसकी आधारभूत भूमिका है । वैदिक काल की भांति आज भी समस्त ज्ञान-विज्ञान, कौशल और तकनीकी को शिक्षा की पाठ्यचर्या में सम्मिलित करते हैं । आज भी हम शिक्षक और शिक्षार्थिओं के बीच मधुर संबंध स्थापित करना चाहते हैं । आधुनिक काल की शिक्षा प्रणाली और वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली में जो अन्तर है वह तो विकास क्रम का ही प्रतिफल है ।

1.1.4.2 मध्यकाल में उच्च शिक्षा

मध्यकाल में मुस्लिम काल के शिक्षाविदों, धार्मिक व्यक्तियों, चिन्तकों व विचारकों का ध्यान शिक्षा की ओर गया। क्योंकि बिना अरबी भाषा के ज्ञान को प्राप्त किए आम मुसलमान ना तो 'कुरान' को पढ़ या कंठस्थ कर सकता था, न शासन के नियमों को समझ सकता था और ना ही मोहम्मद साहब द्वारा दिखाए गए मार्ग पर विधिवत चल सकता था। उसके जीवन में शिक्षा का बड़ा महत्व था। एस काल में इस्लामी शिक्षा का सर्वांगीण विकास हुआ। शिक्षा का मुख्य आधार धर्म था।

भारत में तुर्की सत्ता की स्थापना के उपरान्त मुसलमानों ने शिक्षा के प्रसार हेतु अनेक प्रकार की संस्थाओं जैसे कि मकतब, मदरसे, खानकाहों की स्थापना की। मुसलमान परिवारों में शिशु की शिक्षा विस्मिल्लाह खानी या मकतब संस्कार से प्रारम्भ होती थी।

शिशु की आयु जब 4 वर्ष 4 माह 4 दिन की हो जाती थी तो उसके माता-पिता को धूमधाम से बिस्मिल्लाह खानी के अक्षर बोध का संस्कार मौलवी या काजी द्वारा संपन्न करवाते थे। इस अवसर पर शिशु से वर्णमाला का प्रथम अक्षर आलिफ तख्ती पर लिखवाया जाता था। इसके बाद संपन्न परिवारों में शिशु को प्रारंभिक शिक्षा

देने के लिए शिक्षक नियुक्त किए जाते थे। इन शिशुओं का ज्ञान वर्णमाला कुरान के पाठ सुलेख व्याकरण आदि विषयों तक ही सीमित रहता था। इसके पश्चात कुछ बड़े होने पर उन्हें साहित्य इतिहास तथा नीतिशास्त्र इत्यादि विषयों का अध्ययन करना पड़ता था। वे पदनामा, आमदनामा, गुलिस्ता, बोस्ता, हार-ए दानिश तथा सिकन्दर नामा का अध्ययन करते थे। जो विद्यार्थी उसके उपरांत शिक्षा नहीं ग्रहण करते थे उन्हें मुंशी तथा जो उच्च शिक्षा ग्रहण करते थे, उन्हें मौलाना, मौलवी या फाजिल की पदवियाँ दी जाती थी जो विद्यार्थी केवल अरबी की शिक्षा प्राप्त करते थे उन्हें कुरान के अतिरिक्त मुहम्मद साहब की जीवनी से सम्बन्धित ग्रन्थ कुरान की टीकाएँ तसउफ्फ दर्शन तथा अन्य विषयों का अध्ययन करना पड़ता था। इस काल में शिक्षा प्रणाली में शिक्षा संस्थाओं का महत्वपूर्ण स्थान था। सम्पन्न परिवारों के घरों की बैठकों में परिवार व आसपास के शिशु प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए आते थे। इस वैठक को 'मकतब' कहते थे। इस मकतब के शिक्षक के भरण पोषण का उत्तर दायित्व उस परिवार पर ही रहता था जिस परिवार के बच्चे वहाँ शिक्षा ग्रहण करने के लिए आते थे। वे भी इसकी आर्थिक सहायता करते थे। शिक्षा का दूसरा केन्द्र मदरसा था। राज्य द्वारा स्थापित मदरसों को राज्य की ओर से वित्तीय सहायता मिलती थी ताजुल मआसिर के रचयिता **हसन निजामी** के अनुसार मुहम्मद गौरी ने अजमेर में अनेक मदरसों की स्थापना की। भारत में यह मदरसे अपने ही ढंग के थे लखनौती में मुहम्मद बिन बख्तियार खिलजी ने अपने मदरसों की स्थापना की इल्तुतमिश ने मुहम्मद गौरी के नाम पर दिल्ली में मुइज्जी मदरसे की स्थापना की। इसी नाम का एक मदरसा बदायूं में स्थापित हुआ। रजिया ने नासिरिया मदरसे की स्थापना दिल्ली में की। वामिनहाज को उसका आचार नियुक्त किया। कड़ाके कवि मुतहर ने अपनी दीवान में लिखा है कि फिरोज शाह ने अनेक मदरसों की स्थापना की उसने स्वयं दिल्ली के हौज-ए-खास के पास फिरोजशाही मदरसा देख कर उसका वर्णन किया। जलालुद्दीन रूमी इस मदरसे के प्राचार्य थे वह कुरान को 7 नियमों में पढ़ सकते थे तथा 14 विधान जानते थे। हदीस के पांच प्रसिद्ध संग्रहों का उन्हें ज्ञान था। यहाँ के विद्यार्थियों को तफसीह, फिकह व हदीस पढ़ाया करते थे। सिकन्दर लोदी ने मथुरा व नरवल में मदरसो की स्थापना की। इसी काल में उसने सम्भल में मदरसा स्थापित किया तथा वहाँ शेख अब्दुल्ला को प्राचार्य नियुक्त किया। इसी प्रकार देश के विभिन्न भागों में मुसलमानों ने अनेक मदरसों की स्थापना की। सुबह-उल्ल-असह

के लेखक के अनुसार केवल दिल्ली में हजारों मदरसे थे। जिनमें से एक हजार मदरसे शफियों तथा हनफियों के थे।

शिक्षा का तृतीय महत्वपूर्ण केन्द्र सूफी सन्तों की खानकाह थी। अजमेर में शेख मोइनुद्दीन चिश्ती की खानकाह दिल्ली में शेख निजामुद्दीन औलिया की खानकाह सीदी मौला की खानकाह शिक्षा के सुप्रसिद्ध केन्द्र थे। दिल्ली व उसके समीप लगभग 2,000 खानकाह सूफी सन्तों की थी। जहाँ देश-विदेश से विद्यार्थी सूफी मत व आध्यात्मिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए आते थे। इस काल में प्रत्येक शहर में उपरोक्त तीन प्रकार की शिक्षा संस्थाएं थी। इस काल में विद्यार्थियों को राज्य की ओर से वित्तीय सहायता तथा वजीफे दिए जाते थे। उनके पाठ्यक्रम में कुरान, हदीस, तसुउफ्फ, तफसीर, ज्योतिशास्त्र, दर्शन, गणित, फिकह, न्याय-शास्त्र, काव्य-शास्त्र, व्याकरण, प्राकृतिक दर्शन, धर्मशास्त्र सुलेख आदि अनेक विषय हुआ करते थे। विद्यार्थियों को शिक्षा देने के लिए देश-विदेश से दार्शनिक व शिक्षक आते रहते थे। शिक्षा के प्रसार के साथ-साथ इस काल में साहित्य के विभिन्न विषयों का भी अत्यधिक विकास हुआ। 1206 ई० के उपरान्त मंगोल आक्रमणों के कारण फारस मध्य एशिया से अनेक दार्शनिको, विद्वानों, साहित्यकारों, न्यायविदो तथा कवियों ने दिल्ली में ही नहीं वरन उत्तरी भारत के विभिन्न भागों में शरण ली। दिल्ली के सुल्तानों ने समय-समय पर उन्हें प्रश्रय दिया। इस काल में फारसी साहित्य का विशेष रूप से विकास हुआ। फारसी राज्य भाषा थी। इस काल के महान कवियों में अमीर खुसरो का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। पद्य साहित्य उनकी विशेष देन है। फिरस्ता के अनुसार उन्होंने गद्य और पद्य में 12 पुस्तके लिखी है किंतु उनमें से अनेक नष्ट हो गई। 12 वीं शताब्दी के अन्तिम दशक में तुर्क आक्रमणकारियों ने हिन्दू मंदिरों, बौद्ध विहारों तथा विश्वविद्यालयों पर आक्रमण कर शिक्षा के इन महान केंद्रों को विध्वंस कर दिया। तुर्की आक्रमणकारियों का झंझावात निकल जाने के उपरान्त एक बार पुनः मठों, मंदिरों, पाठशालाओं, टोली में 'हिन्दू शिक्षा' दी जाने लगी। प्रारम्भिक तथा उच्च शिक्षा टोला में दी जाती थी। यहाँ विद्यार्थी 8 वर्ष से लेकर 10 वर्ष तक अध्ययन किया करते थे। हिन्दू परिवारों में बालक की शिक्षा 5 या 6 वर्ष की आयु में प्रारम्भ होती थी। उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम में संस्कृत, साहित्य, भाषा काव्य, व्याकरण, न्याय, दर्शन, वेद, चिकित्सा शास्त्र, इतिहास, भूगोल, संगीतशास्त्र, संगीत, भक्तियोग, अलंकार, ओसतंत्र, सूत्र आदि विषय होते हैं। इस काल में हिन्दू शिक्षा के महान केन्द्र बनारस, मिथिला, नदिया, कश्मीर, विक्रमशिला, गुजरात

आदि थे। बनारस वेदान्त संस्कृत साहित्य व व्याकरण की शिक्षा का महान केन्द्र था। इस काल में शिक्षा का महत्व केवल उच्च वर्ग व मध्यम वर्ग में ही था। इस काल में शिक्षा एवं साहित्य की अत्यधिक प्रगति हुई। दिल्ली के सुल्तानों में लगभग सभी पढ़े-लिखे थे। प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से किसी न किसी प्रकार से शिक्षा को प्रोत्साहन देते रहे। दास वंश के संस्थापक कुतुबुद्दीन ऐबक ने निशा में प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त की। वहाँ उसने अरबी व फारसी का अध्ययन किया। उसने तुर्किस्तान में फखरुद्दीन कूफी से कुरान पढ़ना-लिखना सीखा। इल्तुतमिश महान विद्वान व शिक्षाविद था। उसने अपने जेष्ठ पुत्र महमूद को उपयुक्त शिक्षा प्रदान करने हेतु राजधानी दिल्ली के निकट लोनी गाँव में रखा। बलवन ने अपने पुत्रों की शिक्षा के पूर्ण प्रबन्ध किये और उसने उन्हें सर्फ नई की शिक्षा दिलवाई। उसने उन्हें इतिहास भी पढ़ावाया। बलवन के पुत्रों में शाहजादा मुहम्मद की शिक्षा एवं साहित्य में अत्यधिक रुचि थी। उसने प्रख्यात कवियों की कृतियों से कविताओं का एक संकलन तैयार किया वह साहित्यिक गोष्ठियों का आयोजन किया करता था। जिस में मुख्यतः कवि भाग लिया करते थे। उसने राज दरबार में कवियों तथा साहित्यकारों का जमघट लगा रहता था। उसके सेवक कुशलता पूर्वक शाहनामा दिवान-ए-शनाई, दीवान-ए-खाकानी एवं खम्सा पढ़ सकते थे। उसकी उपस्थिति में इन कृतियों पर बाद-विवाद किया करते थे। उसने अमीर हसन व अमीर खुसरो को प्रश्रय दे रखा था। अलाउद्दीन खिलजी स्वयं पढ़ा लिखा नहीं था किन्तु उसने अपने पुत्रों को परम्परागत इस्लामी शिक्षा दिलवाई थी। मुहम्मद तुगलक अपनी विद्वता तथा विभिन्न विषयों के ज्ञान के लिए प्रसिद्ध था। वह स्वयं एक महान लेखक व कवि था अपनी लेखन शैली के लिए वह अपने युग के साहित्यकारों व कवियों से कहीं आगे था। वह सुलेख, भौतिकशास्त्र, तर्कशास्त्र, ज्योतिषशास्त्र, गणित, चिकित्साशास्त्र, दर्शन, कुरान, हदीस फिक तथा अनेक विधाओं का प्रकाण्ड पण्डित था। उसके उत्तराधिकारी फिरोजशाह की कृति फुतूहाते फिरोजशाही से ज्ञात होता है कि वह महान साहित्यकार एवं विद्वान था। वह विद्यार्थियों व शिक्षकों को वेतन, अनुदान, पेंशन दिया करता था। उसने मदरसा-ए-फिरोजशाही की स्थापना की। उसमें देश-विदेश के शिक्षक नियुक्त किए। उन्होंने शिक्षा को प्रोत्साहन दिया। लोदी वंश के संस्थापक बहलोल लोदी ने इस्लामी कानून का गहन अध्ययन किया था उसका पुत्र सिकन्दर लोदी गुलरूख के नाम से कविताएं लिखता था वह कवियों के साथ वाद-विवाद किया करता था। उसने सूफी शेख समाउद्दीन देहलवी से अरबी व्याकरण पर निजाम सर्फ नामक ग्रन्थ का अध्ययन किया। वह अपनी कविताओं की रचना

करके शेख जमाली को भेजा करता था। उसने 8000-9000 कविताओं का एक दीवान लिखा। जहाँ तक स्त्रियों की शिक्षा का प्रश्न है, उन्हें शिक्षा देने का चलन नहीं था। पर्दा प्रथा के कारण उन्हें घर में ही थोड़ी बहुत शिक्षा दी जाती थी। समाज के उच्च वर्गों में ही शिक्षा का प्रचलन था किन्तु इस काल में राज्य की भाषा फारसी होने के कारण समाज के अन्य वर्गों को इस भाषा को सीखकर राज्य में विभिन्न पदों पर कार्य करना प्रारम्भ किया। मुगलकाल में भी मुस्लिम शिक्षा का मुख्य उद्देश्य आत्मा की शुद्धि, संतुलित आचरण, उत्तम व्यवहार व मानव के सभी गुणों का विकास करना था। मुगल काल के शिक्षाविदों के विचार में इन उद्देश्यों की प्राप्ति केवल धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा प्रदान करके ही की जा सकती थी। मुगल साम्राट स्वयं शिक्षित थे अतः उन्होंने शिक्षा के प्रसार की ओर विशेष रूप से ध्यान दिया। अकबर महान प्रथम मुगल सम्राट था जिसने शिक्षा प्रणाली में इस प्रकार के परिवर्तन किए कि धार्मिक एवं धर्म निरपेक्ष शिक्षा दोनों ही साथ-साथ दी जा सके।

पूर्वकाल की भाँति मुगल काल में प्राथमिक शिक्षा मस्जिदों से संलग्न मकतबों में या निजी व्यक्तियों के घरों में स्थापित मकतबों में दी जाती थी। तत्पश्चात उच्च शिक्षा, विशेष कर इस्लामी विधि तथा धर्मशास्त्र की शिक्षा सूफी सन्तों के खानकाहों में मिलती थी। इन खानकाहों में परिपक्व अवस्था में मुसलमानों को माध्यमिक व उच्च शिक्षा प्राप्त होती थी। इसके अतिरिक्त सम्पन्न मुसलमानों की सहायता से मस्जिदों से संलग्न मकतब व मदरसे भी स्थापित किए जाते थे। यहाँ मुहल्ले के लड़के और लड़कियाँ शिक्षा प्राप्त किया करते थे। इन संस्थाओं में माध्यमिक एवं प्राथमिक शिक्षा दी जाती थी। यदा-कदा अमीर और शासक भी खानकाहों की स्थापना कर उनको अनुदान दिया करते थे ताकि यहाँ मुसलमानों को शिक्षा मिल सके। साम्राज्य के विभिन्न भागों में अनेक आनुवंशिक शिक्षित परिवार थे, सदस्य निःशुल्क अपने घरों में शिक्षा दिया करते थे। उनके व्यक्तिगत निवास स्थान पर धीरे-धीरे शिक्षा केन्द्र बन जाया करते थे। इस काल में शिक्षा प्रदान करने का कार्य प्रशासन का न होकर व्यक्तिगत संस्थाओं का था। हालांकि प्रशासन इस कार्य के लिए विद्वानों, शिक्षाविदों, अध्यापकों आदि को वजीफे, पेंश, अनुदान देने में कभी पीछे नहीं रहता था।

1.1.4.3 आधुनिक काल में उच्च शिक्षा

शिक्षा का सर्वोच्च स्तर विश्वविद्यालय की शिक्षा है। 'विश्व' शब्द इस बात की ओर संकेत करता है कि सारे विश्व के विद्यालयों के स्तर, शैक्षिक मान्यताएँ तथा लक्ष्य एक होते हैं। विश्वविद्यालय छात्रों तथा अध्यापकों का एक समूह है। इसका एकमात्र उद्देश्य ज्ञान द्वारा सत्य की खोज करना तथा पूर्णता की प्राप्ति है। किसी देश की संपन्नता या भाग्य उस देश के विश्वविद्यालयों से जुड़ा होता है। विश्वविद्यालयों के दूषित होने से सम्पूर्ण राष्ट्र दूषित हो जाता है। भारत में आधुनिक शिक्षा का श्रीगणेश यूरोप ईसाई मिशनरियों द्वारा हुआ। इस देश में सर्वप्रथम पुर्तगालियों का प्रवेश हु। ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने सर्वप्रथम 1781 में कलकत्ता में 'कलकत्ता मदरसा' की स्थापना की। इस मदरसे में मुस्लिम उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम एक साथ चलाए गए। 1791 में ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने बनारस में बनारस संस्कृत कॉलेज की स्थापना की। जिसमें हिन्दू उच्च शिक्षा और इंग्लैंड की उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम एक साथ चलाए गए। इसके बाद 18 साल में उन्होंने कलकत्ता में केवल इंग्लैंड की उच्च शिक्षा प्रणाली पर आधारित 'फोर्ट विलियम कॉलेज' की स्थापना की। इस कॉलेज में अंग्रेजी भाषा एवं साहित्य और यूरोपीय ज्ञान विज्ञान के साथ-साथ भारतीय भाषाओं, भारतीय इतिहास और हिन्दू -मुस्लिम कानून की शिक्षा दी जाती थी।

1.1.4.4 ब्रिटिश शासन और शिक्षा का परिदृश्य

1772 वारेन हेस्टिंग ने कम्पनी शासित भारत के गवर्नर बनने पर कलकत्ते के मुसलमानों के निवेदन पर 1781 में कलकत्ता मदरसे की स्थापना की। इस मदरसे में 7 वर्षीय उच्च शिक्षा की व्यवस्था की गई। इसके पाठ्यक्रम में अरबी, फारसी और मुस्लिम कानून की शिक्षा के साथ-साथ अंग्रेजी भाषा और साहित्य, अंकगणित और रेखा गणित तर्कशास्त्र, नक्षत्र शास्त्र और दर्शन को रखा गया। इसमें शिक्षा का माध्यम अरबी था। इसके 10 वर्ष बाद 1791 में बनारस के तत्कालीन रेजिडेंस जानेथन डंकन ने बनारस में 'बनारस संस्कृत विश्वविद्यालय' की स्थापना की। इस कॉलेज में 7 वर्षीय उच्च शिक्षा की व्यवस्था की गई। इसके पाठ्यक्रम में संस्कृत हिन्दी हिन्दू धर्म एवं दर्शन, हिन्दू कानून के साथ-साथ अंग्रेजी भाषा एवं साहित्य, अंकगणित, रेखागणित,तर्कशास्त्र,नक्षत्रशास्त्र,दर्शन और इतिहास विषयों को रखा गया इन दोनों ही कालेजों में आधुनिक

माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा की व्यवस्था थी। 1798 में जब लार्ड बेलजली भारत के गवर्नर जनरल नियुक्त हुए उन्होंने 1800 कलकत्ता के यूरोपीय शिक्षा पद्धति पर आधारित फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की जिसमें संस्कृत,हिन्दी,अरबी,फारसी और अंग्रेजी सभी भाषाओं में और अंकगणित, रेखागणित, इतिहास, भूगोल, राजनीति शास्त्र तर्कशास्त्र,दर्शन शास्त्र आदि अनेक विषयो की शिक्षा की व्यवस्था की गई। 1817 में ईसाई मिशनरियों ने सिरामपुर में सिरामपुर कॉलेज की स्थापना की तथा इसके पश्चात भाषा साहित्य एवं ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा की व्यवस्था की। इसी वर्ष राजा राममोहन राय ने कलकत्ता में हिन्दू कॉलेज की स्थापना की इसमें बगला, संस्कृत, अंग्रेजी इतिहास, भूगोल, गणित एवं ज्योतिष विषयों की शिक्षा की व्यवस्था की गई। 1821 में गवर्नर **एलफिन्सटन** ने पूना में संस्कृत कॉलेज की स्थापना की जिसमें संस्कृत भाषा साहित्य के साथ-साथ अंग्रेजी भाषा साहित्य और पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा की व्यवस्था की गई। 1854 में बुड़ का घोषणा पत्र प्रकाशित हुआ। इसमें शिक्षा को विभिन्न स्तरों प्राथमिक, माध्यमिक और विश्वविद्यालययी शिक्षा में विभाजित करने की घोषणा की गई।

1.1.4.5 विश्वविद्यालयों की स्थापना एवं विकास

शिक्षा निर्देश पत्र की से पहले ही भारत में विश्वविद्यालयों की स्थापना के पक्ष में जनमत बनता जा रहा था। उच्च शिक्षा के प्रसार ने परीक्षाएं आयोजित करने की किसी व्यवस्था की आवश्यकता पैदा कर दी। कलकत्ता में डलहौजी सरकार द्वारा एक नए कालेज की स्थापना पर विचार हो रहा था। जिसका नाम 'प्रेसीडेंसी कॉलेज' रखा जाना था और जिसका उद्देश्य उच्च शिक्षा देना था। अक्टूबर 1853 में उन्होंने लिखा- "मुझे इसमें कोई सन्देह नहीं कि एक समय आएगा हांलाकि शायद इसमें अभी कुछ देर हो कि प्रेसीडेंसी कालेज जब आर्थिक सहायता और छात्रवृत्तियो से समृद्ध होकर अपनी ख्याति बढा चुका होगा तब वह अपना प्रभाव क्षेत्र स्थानीय सीमाओं से भी बहुत दूर तक बढ़ा लेगा और जब इसमें अन्य नगरों के अत्यंत विख्यात विद्वान आ जाएंगे और इसके साथ एक मेडिकल कालेज बन जाएगा तथा विज्ञान और कला के प्रोफ़ेसर इसमें होंगे तो यह अपने आप को उस स्तर तक ला चुका होगा कि वह एक भारतीय विश्वविद्यालय का स्थान ले सके।" कुछ लोग उच्च शिक्षा के विरोधी भी थे जिन्हें विश्वविद्यालय की स्थापना करने काब विचार पसंद नहीं था। स्वयं सर

चार्ल्स वुड को इस बात की आशंका थी कि यदि भारती शिक्षा पाकर प्रभुत्व को और तीक्ष्ण बुद्धि हो गए तो वे खतरनाक हो सकते हैं। शिक्षा के निर्देश पत्र तैयार करते समय बुड ने अप्रैल 1854 में डलहौजी को चेतावनी दी थी कि मेरा ख्याल है कि भारत के लोगों को उच्च शिक्षा देकर और उनके भविष्य के लिए नौकरियों की व्यवस्था न करके हम अपने आप को कमजोर बना रहे हैं। सच्ची बात तो यह है कि हम उन्हें शिक्षा से वंचित नहीं रख सकते, इसलिए हमें अपने कमजोर होने की संभावना पर ध्यान देना चाहिए लेकिन फिर भी इस बात के पक्ष में हूँ कि हमें उच्च शिक्षा के बजाय शिक्षा देने का प्रयत्न करना चाहिए। कुछ ही दिनों बाद उन्होंने फिर लिखा, 'मैं समझता हूँ कि इन बहुत पढ़े लिखे लोगों को नौकरियां न मिली तो इनके अशान्त हो जाने की आशंका है।' और हम नौकरियों का प्रबन्ध सबके लिए नहीं कर सकते। इन व्यक्तिगत विचारों के बावजूद बुड़ ने अपने शिक्षा निर्देश पत्र में विश्वविद्यालयों के पक्ष में सिफारिश की। लेकिन विश्वविद्यालयों के संबंध में जो कुछ कहा गया था वह बहुत स्पष्ट और परस्पर विरोधी था। भारत सरकार को इन निर्देशों के अनुसार विश्वविद्यालय कानून तैयार करने में बड़ी कठिनाई दिखाई दी। कोर्ट आफ डायरेक्टर्स से स्पष्टीकरण की आवश्यकता थी। 1855 ई०में एक योजना तैयार करने के लिए समिति की नियुक्ति हुई जिसने अपना काम 1856 ई० में पूरा कर लिया। समिति ने जो रिपोर्ट दी उनमें व्यवस्था यह थी कि लंदन विश्वविद्यालय मैट्रिकुलेशन की परीक्षा के बराबर एक परीक्षा होनी चाहिए, विश्वविद्यालयों से संबद्ध कालेजों के छात्रों की परीक्षा के आधार पर कला,चिकित्सा, विज्ञान लॉ और सिविल इंजीनियरिंग की डिग्रियां प्रदान करने की व्यवस्था की, और साथ ही समिति की रिपोर्ट में कहा गया था कि परीक्षाएं लेने के लिए कुछ नियम हो लार्ड केनिन की सरकार ने समिति की योजना स्वीकार कर ली और कलकत्ता विश्वविद्यालय के लिए एक बिल का प्रारूप तैयार किया। **सर जेम्स कालविल** ने विधान परिषद में यह बिल पेश किया और गवर्नर जनरल की अनुमति प्राप्त होने पर यह 24 जनवरी 1857 को कानून बन गया। उसी साल बंबई और मद्रास विश्वविद्यालयों के लिए भी ऐसे ही एक्ट कुछ आवश्यक परिवर्तनों के साथ पास किए गए। इस प्रकार भारत के तीन पहले विश्वविद्यालय भारत की पहली महान क्रान्ति वाले वर्ष 1857 ई० में अस्तित्व में आए इन एक्टो की भूमिका में घोषणा की गई कि ये विश्वविद्यालय (क), " ब्रिटेन की महारानी की प्रजा के सभी वर्गों को नियमित और उदार शिक्षा प्राप्ति के लिए प्रोत्साहित करने और (ख) साहित्य, कला तथा विज्ञान में जिन लोगों ने प्रवीणता प्राप्त कर ली उनकी परीक्षाएं लेकर शैक्षणिक डिग्रियों से उन्हें सम्मानित करने

के लिए बनाए जाएंगे। विश्वविद्यालयों के प्रबन्ध के बारे में एक्टो में व्यवस्था की कि प्रत्येक विश्वविद्यालय की एक सीनेट होगी जिसमें एक कुलपति, एक उपकुलपति और सदस्य होंगे जो सब पदेन तथा मनोनीत होंगे चांसलर अथवा कुलपति के पद पर गवर्नर जनरल या प्रेसीडेंसियों के गवर्नर होंगे वाइस चांसलर यानी उपकुलपतियों की नियुक्ति गवर्नर जनरल और उनकी परिषद करेगी गवर्नर जनरल लॉर्ड कैनिंन कलकत्ता विश्वविद्यालय के पहले कुलपति और **सर जेम्स विलियम काल्विन** उसके पहले उपकुलपति बने। विश्वविद्यालय के सभी मामलों का प्रबन्ध और निरीक्षण का काम सीनेट के हाथ में था। उसे नियम बनाने या संशोधन करने, परीक्षाएं आयोजित करने, विश्वविद्यालय के सभी परीक्षकों, अधिकारियों और कर्मचारियों की नियुक्तियां करने अथवा उन्हें नौकरियों से निकालने के अधिकार थे। सीनेट को यह भी अधिकार दिया गया कि वह कार्यपालिका के अधिकारों वाली एक सिंडीकेट बनाने के लिए नियम तैयार कर सकती है। इन नव स्थापित विश्वविद्यालयों में मुख्य कमी यह थी कि यह मूलतः ऐसे विश्वविद्यालय बनाए जाने थे इनके साथ विभिन्न कालेजों को संबद्ध किया जाना था। उनका मुख्य कार्य, अपने अधीन आने वाले विभिन्न संबद्ध कालेजों के लिए नियम तैयार करना और उनके कार्य का परीक्षण करना, उनका पाठ्यक्रम तैयार करना तथा विभिन्न परीक्षाएं आयोजित करना था। स्वयं विश्वविद्यालयों में अध्यापन कार्य नहीं होना था जिन लोगों ने शुरू में भारतीय विश्वविद्यालयों की स्थापना का विचार प्रस्तुत किया था उनका लक्ष्य तो यह था कि इन विश्वविद्यालयों के विभिन्न विभागों में उच्च शिक्षा का अध्यापन कार्य हो। यहाँ तक कि शिक्षा निर्देश पत्र में भी अध्यापक के लिए विभिन्न विभागों की स्थापना की काफी गुंजाइश रखी गई थी लेकिन जिन बातों ने सरकार को इन विश्वविद्यालयों को शुरू करने में केवल संबद्ध कालेजों वाले विश्वविद्यालय बनाने के लिए ही बाध्य किया उनमें मुख्य बात धन थी। सरकार, भारत को कम से कम खर्च पर विश्वविद्यालयों की सुविधा देना चाहती थी। विश्वविद्यालयों का सबसे बड़ा गुण उच्च शिक्षा की प्रणाली को संगठित रूप देने में योगदान करना था। प्रान्त के विभिन्न कालेजों को एक समान प्रणाली को अधीन लाया गया उनके शैक्षणिक कार्यों का समन्वय तथा सुनयोजन किया गया। उन पर परीक्षाओं की एक प्रणाली लागू की गई, एक ही केन्द्र से परीक्षाएं आयोजित की गई और एक ही तरह की डिग्रियां दी गई इस प्रकार शैक्षणिक गतिविधियों में एकरूपता और नियमितता लाने की जिम्मेवारी विश्वविद्यालयों की हो गई विश्वविद्यालय किसी एक निश्चित क्षेत्र के अन्दर शैक्षणिक ढांचे का

केन्द्र बिन्दु बन गया। शुरू में कलकत्ता विश्वविद्यालय के अधीन बंगाल में 14 कॉलेज और उत्तर पश्चिम प्रान्तो में 4 कॉलेज थे। बंबई और मद्रास विश्वविद्यालयों के अधीन प्रारम्भ में केवल तीन कालेज थे। बाद के वर्षों में इनकी संख्या बढ़ने लगी थी।

1857 ई० में विश्वविद्यालय गठन कानूनों में उन डिग्रियों के नाम थे जो ये विश्वविद्यालय दे सकते थे लेकिन जल्दी ही महसूस किया गया कि नए डिप्लोमा और डिग्री की जरूरत पड़ेगी इसलिए 1807 ई० में भारतीय विश्वविद्यालय कानून यानी इंडियन यूनिवर्सिटी एक्ट पास किया गया जिसके अन्तर्गत विश्वविद्यालयों को अधिकार मिल गया कि वे नियम बनाकर नए डिप्लोमा और डिग्रियां दे सकते हैं। 1857 में जिस ढंग के विश्वविद्यालय बनाए गए थे उसके कारण वे कुछ सीमित दायरे में रहकर ही काम करते थे वे विभिन्न कालेजों को अपने साथ संबद्ध करने और परीक्षाएं लेने की संस्थाएं मात्र थे और बौद्धिक विकास की व्यापक मार्गों को नहीं समझ सकते थे। कला और विज्ञान विषयों के विभिन्न क्षेत्रों में उच्च स्तरीय अनुसंधान कार्य, विश्वविद्यालयों के क्षेत्र के बाहर की बात थे। अधिकारियों का सामान्य कार्य, परीक्षाएं आयोजित करना और संबद्ध कालेजों की परिस्थितियों का निरीक्षण करना था। इसलिए वे केवल संचालक संस्थाओं का प्रबन्ध समितियों का ही कार्य कर रहे थे इसलिए राष्ट्र के व्यापक हित में उच्च शिक्षा के लिए वास्तविक मार्गदर्शन एक ऐसा स्वप्न बना रहा जो आगे चलकर शायद कभी साकार हो सकता था सीनेट की सदस्य संख्या बढ़ रही थी लेकिन तत्कालीन नियमों और परिस्थितियों के अधीन विश्वविद्यालयों के कार्यों का प्रबन्ध काफी बुद्धिमत्ता से नहीं चलाया जा सकता था। 1857ई० से 1882 ई० तक कलकत्ता, बंबई और मद्रास के विश्वविद्यालय भारत के 3 प्रथम विद्यालयों के रूप में काम करते रहे। इस अवधि के दौरान पंजाब में स्थानीय भाषा के माध्यम से प्राच्य शिक्षा के अध्ययन के लिए एक विश्वविद्यालय के पक्ष में जनमत विकसित किया इन्हीं प्रस्तावों के अनुरूप 1869 ई० में लाहौर में एक विश्वविद्यालय कालेज स्थापित किया गया। जिसका दर्जा 1882 ई० में बढ़ाकर विश्वविद्यालय का कर दिया गया और इसे एक विशेष एक्ट के द्वारा पंजाब विश्वविद्यालय कहा गया हालांकि यह एक्ट 1857 ई० के विश्वविद्यालयों की तरह का था। लेकिन इसमें एक प्राच्य विद्या विभाग और प्राच्य विद्या की डिग्रियों की व्यवस्था थी विश्वविद्यालय में ऐसे छात्रों के लिए जो कला की विधियों की अनेक डिग्रियों की भाँति प्राच्य विद्या का अध्ययन पूर्ण कर लेते थे उन्हें बैचलर, मास्टर और डॉक्टर की उपाधियां देने की व्यवस्था की गई थी।

लेकिन इनके लिए शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी नहीं बल्कि देशी भाषा था। इसमें अरबी ,संस्कृत और फारसी की भाषाएं पास करने वाले छात्रों को साहित्यिक उपाधियां देने की व्यवस्था थी यह विश्वविद्यालय देशी भाषाओं में प्रवीणता और उच्च प्रवीणता की विभिन्न परीक्षाएं आयोजित करता था यह मुस्लिम और हिन्दू कानून तथा चिकित्सा शास्त्र के छात्रों को देशी नामों की उपाधियां भी प्रदान करता था। विश्वविद्यालय को अध्यापन कार्यों के लिए प्रोफेसरों और अन्य अध्यापकों की नियुक्ति करने का अधिकार था। भारत में शिक्षा की स्थिति की जांच हेतु 1882 ई० में जब भारतीय शिक्षा आयोग की नियुक्ति हुई तो वर्तमान विश्वविद्यालयों की स्थिति में सुधार लाने और नए विश्वविद्यालयों की स्थापना करने की आवश्यकता महसूस हो गई।

1857 की क्रान्ति को दबाने के बाद जब 1858 में लॉर्ड कैनिन ब्रिटिश भारत के प्रथम गवर्नर जनरल नियुक्त हुए तब तीन विश्वविद्यालय 27 सामान्य कालेज 3 मेडिकल कॉलेज और 1 इंजीनियरिंग कॉलेज था 1880 में लार्ड रिपन ब्रिटिश भारत के गवर्नर जनरल एवं वायसराय हुए उन्होंने 1882 में भारतीय शिक्षा आयोग हण्टर कमीशन की नियुक्ति की। इस आयोग ने सुझाव दिया कि उच्च शिक्षा के लिए सहायता अनुदान राशि बढ़ाई जाए तथा उच्च शिक्षा का पाठ्यक्रम विस्तृत किया जाए। नए नए विषयों की शिक्षा की व्यवस्था की जाए। 1902 में विश्वविद्यालय व महाविद्यालय क्रमश: 5179 तथा 23009 हो गए। फिर 1902 में तत्कालीन गवर्नर जनरल और वायसराय कर्जन ने भारतीय विश्वविद्यालय आयोग का गठन किया। इस आयोग द्वारा बताए गए निम्न उपाय बहुत कारगर साबित हुए।

- विश्वविद्यालय में शिक्षण कार्य शुरू किया जाए।
- नए कालेजों को मान्यता देने में कठोरता बरती जाए।

1904 में कर्जन ने भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम की घोषणा की इसमें विश्वविद्यालयों की कार्यप्रणाली सुनिश्चित हुई। 1913 में ब्रिटिश सरकार ने शिक्षा नीति सम्बन्धी नया प्रस्ताव प्रकाशित किया। जिसके परिणाम स्वरूप 1916 में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय और मैसूर विश्वविद्यालय तथा 1917 में पटना विश्वविद्यालय की स्थापना की गई 1917 में कलक्त्ता विश्वविद्यालय आयोग (सैडलर कमिशन) की नियुक्ति की गई। इस आयोग में नए विश्वविद्यालयों की स्थापना और उन्हें तथा स्वायतत्ता प्रदान करने और उनमे व्यावसायिक पाठ्यक्रम-कृषि, कानून, आयुर्विज्ञान, इंजीनियरिंग और शिक्षण प्रशिक्षण आदि शुरू करने पर बल दिया। इसी समय 1918

में उस्मानिया, 1920 में ढाका, 1921 में अलीगढ़, 1922 में लखनऊ और दिल्ली, 1923 में नागपुर, 1926 आन्ध्र, 1927 में आगरा विश्वविद्यालय की स्थापना की गई। फिर 1930 में अन्नामलाई, 1937 में ट्रावनकोर, 1943 में उत्कल, 1946 में सागर और 1947 में राजस्थान विश्वविद्यालय की स्थापना की गई। देश का बंटवारा होने से अब 19 भारत में हैं तथा तीन विश्वविद्यालय पाकिस्तान में चले गए।

1.1.4.6 स्वतंत्र भारत में उच्च शिक्षा का विकास

15 अगस्त 1945 में जब हमारा देश स्वतंत्र हुआ। 1948 में हमारी सरकार ने विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (राधाकृष्णन कमीशन) की नियुक्ति की। इस आयोग में उच्च शिक्षा के सभी पहलुओं पर गंभीरता से विचार किया। इसके सुझावों के आधार पर उच्च शिक्षा में सुधार की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। 1951 से हमारे देश के सभी विकास कार्य योजनाबद्ध तरीके से शुरू किए गए। पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत उच्च शिक्षा के विकास को गति प्रदान करने का प्रयास किया गया।

- ❖ **प्रथम पंचवर्षीय योजना में (1951-56)** में शिक्षा पर कुल 153 करोड रुपए व्यय किए गए। जिनमें से 14 करोड़ विश्वविद्यालयी शिक्षा पर व्यय किए गए। इस योजना में 20 करोड़ रूपये तकनीकी शिक्षा पर व्यय किए गए। सरकार ने 1953 में विश्वविद्यालय अनुदान समिति को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के रूप में समुन्नत किया। उससे अगले वर्ष 1954 में ग्रामीण उच्च शिक्षा समिति का गठन किया गया।
- ❖ **द्वितीय पंचवर्षीय योजना(19560-61)**मे शिक्षा पर पुलिस 273 करोड़ रुपए व्यय किए गए। जिनमें से 48 करोड़ विश्वविद्यालयी शिक्षा पर व्यय किए गए। उच्च शिक्षा पर 49 करोड़ रुपए उच्च तकनीकी शिक्षा पर व्यय किए गए। 1961 में विश्वविद्यालयों की संख्या बढ़कर 45 हो गई महाविद्यालयों की संख्या बढ़कर 1799 हो गई।
- ❖ **तृतीय पंचवर्षीय योजना(1961-66)** में शैक्षिक योजनाओं पर कुल 589 करोड रुपए व्यय किए, जिनमें से 87 करोड़ रुपये विश्वविद्यालयी शिक्षा पर व्यय किए गए। तकनीकी योजना के कुल 125

करोड़ रूपये में से 65 करोड़ उच्च तकनीकी शिक्षा पर व्यय किए गए। 1968 में ग्रामीण उच्च शिक्षा समिति ने ग्रामीण उच्च शिक्षा संस्थाओं की स्थापना पर बल दिया।

- **चतुर्थ पंचवर्षीय योजना(1969-74)** की शैक्षिक योजनाओं पर कुल 786 करोड रुपए व्यय किए गए, जिनमें से 195 करोड रुपए विश्वविद्यालयी शिक्षा पर व्यय किए गए। इस योजना के दौरान विज्ञान, कृषि, चिकित्सा और तकनीकी शिक्षा के प्रसार एवं उन्नयन के लिए विशेष प्रयास किए गए।
- **पांचवी पंचवर्षीय योजना(1974-79)** में शैक्षिक योजनाओं पर कुल 912 करोड़ रूपये व्यय किए गए, जिनमें से 205 करोड़ रुपये विश्वविद्यालयी शिक्षा पर व्यय किए गए। साथ ही 107 करोड़ रुपये तकनीकी शिक्षा के उन्नयन पर व्यय किए गए, जिसमें 55 करोड़ तकनीकी शिक्षा के विकास पर व्यय किए गए। कालेजों में सांध्यकालीन शिक्षा की व्यवस्था की गई।
- **छठी पंचवर्षीय योजना (1980-85)** में शैक्षिक योजना में खर्च कुल 2530 करोड़ रूपये में 559 करोड़ रूपये विश्वविद्यालय शिक्षा पर व्यय किए गए। तकनीकी शिक्षा पर व्यय कुल 273 करोड़ रुपए में 130 करोड़ रूपये उच्च तकनीकी शिक्षा के विकास पर व्यय किए गए। इस योजना में रोजगारपरक शिक्षा पर बल दिया गया।
- **सातवीं पंचवर्षीय योजना (1985-89)** में शैक्षिक योजना पर व्यय कुल 7633 करोड़ रुपये में से 1201 करोड़ रुपए विश्वविद्यालयी शिक्षा पर व्यय किए गए, तथा तकनीकी शिक्षा पर कुल 1083 करोड़ रूपये व्यय किए गए, जिसमें से उच्च तकनीकी शिक्षा पर व्यय 550 करोड़ व्यय किए गए। इसी योजना के दौरान दिल्ली में 'इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय' की स्थापना की गई और दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों का विकास किया गया।
- **आठवीं पंचवर्षीय योजना (1992-97)** में शैक्षिक योजनाओं के कुल व्यय 19600 करोड़ रुपये में 1516 करोड़ रुपए विश्वविद्यालय शिक्षा पर और तकनीकी शिक्षा के 2786 करोड़ रुपए में 1300 करोड़ रुपये उच्च तकनीकी शिक्षा पर व्यय किए गए। इस दौरान नए-नए व्यावसायिक तकनीकी एवं प्रबन्धन शिक्षा पाठ्यक्रम शुरू किए गए।

❖ **नवीं पंचवर्षीय योजना (1997-2002)** में शैक्षिक योजनाओं के कुल व्यय 20381.6 करोड़ रुपये व्यय किए गए तथा तकनीकी शिक्षा के व्यय 2373.5 करोड़ रुपये में से 2270.9 करोड़ व्यय किए गए। परिणाम स्वरूप 2011 तक विश्वविद्यालयों की संख्या बढ़कर 254 हो गई।

❖ **दसवीं पंचवर्षीय योजना (2002- 2007)** में शिक्षा के लिए 42850 करोड रूपयों का प्रावधान किया गया था, जिनमें से 3607 करोड़ रुपये उच्च शिक्षा और 4300 करोड़ रुपए तकनीकी शिक्षा के लिए आवंटित किए गए थे। इस योजना का लक्ष्य उच्च शिक्षा का विस्तार करना नए-नए पाठ्यक्रम शुरू करना, उच्च तकनीकी शिक्षा संस्थानों को साधन संपन्न बनाना एवं उच्च तकनीकी शिक्षा का स्तर उठाना।

❖ **ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना (2007-2012)** उच्च शिक्षा के विकास को लेकर काफी प्रयास किए गए। जिससे उच्च शिक्षा के स्तर को ऊपर उठाकर इसको एक नई दिशा दी जा सके।

❖ **बारहवीं पंचवर्षीय योजना (2012- 2017)** में उच्च शिक्षा स्तर पर लैंगिक समानता लाने के लिए, विश्वविद्यालयों को आधुनिक स्वरूप प्रदान करने के लिए तथा शिक्षकों को बेहतर कौशल विकास करने के लिए विभिन्न प्रकार की योजनाएँ बनाई गई हैं।

पंचवर्षीय योजनाओं के द्वारा उच्च शिक्षा के क्षेत्र में काफी सुधार करने का प्रयास किया गया । शिक्षा के क्षेत्र में उच्च शिक्षा की स्थिति काफी संतोषजनक नहीं है परन्तु फिर भी पंचवर्षीय योजनाओं द्वारा गुणात्मक परिवर्तन हुए। वर्तमान परिदृश्य में उच्च शिक्षा में सूचना तकनीकी के प्रयोग पर काफी कार्य किया जा रहा है जिससे आज शिक्षा एक आम विद्यार्थी की पहुँच मे आ रही है ।

1.1.5 भाषा ज्ञान का माध्यम

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देश में भाषा' यह एक व्यापक चर्चा का विषय बना है- एक तरफ देश में **मातृभाषा** का महत्व कम होता दिखाई दे रहा है। विश्व में विगत 40 वर्षों में लगभग 150 अध्ययनों के निष्कर्ष हैं कि मातृभाषा में ही शिक्षा होनी चाहिए, क्योंकि बालक को माता के गर्भ से ही मातृभाषा के संस्कार प्राप्त होते हैं। भारतीय वैज्ञानिक सी.वी.श्रीनाथ शास्त्री के अनुभव के अनुसार अंग्रेजी माध्यम से इंजीनियरिंग की

शिक्षा प्राप्त करने वाले की तुलना में भारतीय भाषाओं के माध्यम से पढ़े छात्र, अधिक वैज्ञानिक अनुसंधान करते हैं।राष्ट्रीय मस्तिष्क अनुसंधान केन्द्र की डॉ नन्दिनी सिंह के अध्ययन (अनुसंधान) के अनुसार, अंग्रेजी की पढ़ाई से मस्तिष्क का एक ही हिस्सा सक्रिय होता है, जबकि हिन्दी की पढ़ाई से मस्तिष्क के दोनों भाग सक्रिय होते हैं। सर आइजेक पिटमैन ने कहा है कि संसार में यदि कोई सर्वांग पूर्ण लिपि है तो वह देवनागरी है। विदेशी भाषा के माध्यम से पढ़ाई, अनुसंधान, पुस्तकें आदि आधुनिकता के भी विरूद्ध है, क्योंकि आधुनिक-ज्ञान, समाज के सभी वर्गो तक अपनी भाषा में ही पहुँचाया जा सकता है। लेकिन दूसरी तरफ आज दुनिया के लगभग 170 देशों में किसी न किसी रूप में हिन्दी पढ़ायी जाती है। विश्व के 32 से अधिक देशों के विश्वविद्यालयों में संस्कृत पढ़ाई जा रही है। इंग्लैण्ड के सेंट जेम्स विद्यालय में 6 वर्ष तक संस्कृत पढ़ना अनिवार्य है। पहले भारत में भी जहाँ कहीं हिन्दी का विरोध (राजनैतिक आदि कारणो से) था या जहाँ हिन्दी का प्रयोग कम माना जाता था जैसा कि तमिलनाडु, मिजोरम, नागालैण्ड आदि। अब इन राज्यों में भी हिन्दी बोलने-सिखाने हेतु हिन्दी स्पीकिंग क्लासेस बड़ी मात्रा में प्रारम्भ हुए हैं। अरूणाचल राज्य की एक प्रकार से राजभाषा हिन्दी है तथा नागालैण्ड राज्य ने द्वितीय राजभाषा करके हिन्दी को मान्यता दी है। दक्षिण हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा आदि की हिन्दी परीक्षाओं में भारी संख्या में लोग सहभागी हो रहे है। वास्तव में भारतीय भाषाओं को अंग्रेजी से चुनौती नहीं है, बल्कि अंग्रेजी मानसिकता वाले भारतीयों से है। हमें हिन्दी की या भारत की किसी भाषा की वकालत नहीं करनी है, लेकिन राष्ट्रहित की दृष्टि से जो वैज्ञानिक एवं तर्कसम्मत है, उसकी वकालत अवश्य करनी है। मातृभाषा सीखने, समझने एवं ज्ञान की प्राप्ति में सरल है। पूर्व राष्ट्रपति डॉ अब्दुल कलाम ने स्वयं के अनुभव के आधार पर कहा है कि ''मैं अच्छा वैज्ञानिक इसलिए बना, क्योंकि मैंने गणित और विज्ञान की शिक्षा मातृभाषा में प्राप्त की (धरमपेठ कॉलेज नागपुर)।'' अंग्रेजी भाषा माध्यम में पढ़ाई के समय अतिरिक्त श्रम करना पड़ता है। मेडिकल या इंजीनियरिंग पढ़ने हेतु पहले अंग्रेजी सीखनी पड़ती है बाद में उन विषयों का ज्ञान प्राप्त होता है। पण्डित मदन मोहन मालवीय अंग्रेजी के ज्ञाता थे। उनकी अंग्रेजी सुनने अंग्रेज विद्वान भी आते थे ।लेकिन उन्होंने कहा था कि''मैं 60 वर्ष से अंग्रेजी का प्रयोग करता आ रहा हूँ, परन्तु बोलने में हिन्दी जितनी सहजता अंग्रेजी में नहीं आ पाती। इसी प्रकार विश्व कवि रविन्द्र नाथ ठाकुर ने कहा है:- ''यदि विज्ञान को जन-सुलभ बनाना है तो मातृभाषा के माध्यम से विज्ञान की शिक्षा दी जानी चाहिए।''

महात्मा गाँधी का कथन- "विदेशी माध्यम ने बच्चों की तंत्रिकाओं पर भार डाला है, उन्हें रट्टू बनाया है, वह सृजन के लायक नहीं रहे। विदेशी भाषा ने देशी भाषाओं के विकास को बाधित किया है।

"आज हमारे देश के कुछ तथाकथित विद्वानों द्वारा यह भी तर्क दिया जाता है, कि बिना अंग्रेजी के व्यक्ति या देश का विकास संभव नहीं है। लेकिन दुनिया के किसी भी महापुरूष ने यह बात नहीं कही है। अमरीका के बिल क्लिंटन से बराक ओबामा तक के राष्ट्रप्रमुखों ने अपने छात्रों को सम्बोधित करते हुए यह अवश्य कहा कि गणित और विज्ञान की पढ़ाई अच्छी करिये अन्यथा भारत और चीन के छात्र आपको पीछे छोड़ देंगे। उन्होंने अंग्रेजी के बारे में नहीं कहा। विश्व के आर्थिक एवं बौद्धिक दृष्टि से सम्पन्न जैसे अमरीका, रशिया, चीन, जापान, कोरिया, इंग्लैण्ड , फ्रांस, जर्मनी, स्पेन, इजरायल आदि देशों में जन समाज, शिक्षा एवं शासन-प्रशासन की भाषा वहां की अपनी भाषा है। इजरायल के 16 विद्वानों ने नोबल पुरस्कार प्राप्त किए है। सभी ने अपनी मातृभाषा हिब्रू में ही कार्य किया है। इसी प्रकार माइक्रो साफ्ट के सेवानिवृत वरिष्ठ वैज्ञानिक संक्रात सानू ने अपनी पुस्तक में दिये गये तथ्यों के आधार पर यह कहा है कि विश्व में सकल घरेलू उत्पाद में प्रथम पंक्ति के 20 देशों में सारा कार्य वह अपनी भाषा में ही कर रहे हैं, जिसमें चार देश अंग्रेजी भाषी है, क्योंकि उनकी मातृभाषा अंग्रेजी है। वे आगे लिखते है कि विश्व के सकल घरेलू उत्पाद में सबसे पिछड़े हुए 20 देशों में विदेशी भाषा में या अपनी और विदेशी दोनों भाषा में उच्च शिक्षा दी जा रही हैं तथा शासन-प्रशासन का कार्य भी इसी प्रकार किया जाता है। इसका तात्पर्य यह है कि जब तक भारत में शिक्षा, प्रतियोगी परीक्षाएं एवं न्यायालयों सहित शासन-प्रशासन का कार्य अपनी भाषा में नहीं होगा तब तक देश आगे नहीं बढ़ सकता।

नीपा के पूर्व निदेशक श्री प्रदीप जोशी के अनुभव के अनुसार विश्व के ख्याति प्राप्त अणु वैज्ञानिक एवं जापान के हिरोशिमा विश्वविद्यालय के कुलपति अंग्रेजी नहीं जानते। अपने देश में यह भी तर्क दिया जाता है कि वर्तमान वैश्वीकरण के युग में विदेश जाने हेतु अंग्रेजी का ज्ञान आवश्यक है। भारत से हर वर्ष लगभग दो लाख लोग विदेश जाते हैं। उसमें भी सभी अंग्रेजी भाषा वाले देशों में नही जाते। इतने लोगों के लिए करोड़ो छात्रों पर अनिवार्य रूप से अंग्रेजी थोपना, यह अन्याय एवं अत्याचार नहीं तो और क्या है ? वैसे भी किसी भी भाषा को सीखना कोई कठिन कार्य नहीं है। किसी भी भाषा को 3 से 6 महीने में सीखा जा सकता है। दूसरी ओर मात्र अंग्रेजी के ज्ञान के कारण विश्व की अन्य भाषाओं के साहित्य में उपलब्ध ज्ञान का लाभ अपने देश को प्राप्त नहीं

हो पा रहा है। रशियन, जर्मन भाषा में विज्ञान की पुस्तकें अधिक मात्रा में उपलब्ध हैं। इसी प्रकार अच्छे दार्शनिक जर्मन में हुए हैं एवं काव्य- साहित्य तथा पुरातत्व का अधिक साहित्य फ्रांस में प्राप्त है। यह भी तर्क दिया जाता है कि उच्च शिक्षा एवं विशेषकर विज्ञान और तकनीकी विषयों की पुस्तकें, अपनी भाषा में उपलब्ध नहीं हैं। किसी भी भाषा की पुस्तकों का अनुवाद करना कोई कठिन कार्य नहीं है, परंतु हमारी मानसिकता भी इसी प्रकार की बनी है कि अंग्रेजी का साहित्य ही श्रेष्ठ है और उसकी नकल करके कार्य चलाया जा रहा है। इस कारण से मौलिक चिन्तन के आधार पर अपने देश की आवश्यकतानुसार पुस्तकें, अनुसंधान आदि अकादमिक कार्य बहुत ही कम हो रहा है। हमारी अच्छाइयों और विशेषताओं का महत्त्व भी हमको ध्यान में नही आता। जैसे प्रयाग (इलाहाबाद) का सफल कुम्भ मेला या मुम्बई का डिब्बा प्रबन्धन, ये भी एक श्रेष्ठ प्रबन्धन के नमूने हैं। यह बात जब विदेश से लोग इस पर अध्ययन-अनुसंधान करने आए तब हमारे भारतीय प्रबन्धन संस्थान के विद्वानों को इसका महत्व ध्यान में आया। भारत के ख्याति प्राप्त अधिकतर वैज्ञानिकों ने अपनी शिक्षा मातृभाषा में ही प्राप्त की है। जिसमें प्रमुख रूप से जगदीश चन्द्र बसु, श्रीनिवास रामानुजन, डॉ अब्दुल कलाम आदि। इसी प्रकार वर्तमान में विभिन्न राज्यों की बोर्ड की परीक्षाओं में उच्च अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी, मातृभाषा में पढ़ने वाले ही अधिक हैं। शिक्षा के विभिन्न आयोगों एवं देश के महापुरूषों ने भी मातृभाषा में शिक्षा होनी चाहिए, ऐसे सुझाव दिये हैं। महात्मा गाँधी ने ठीक ही कहा हैः-'' बच्चों के मानसिक विकास के लिए मातृभाषा उतनी ही आवश्यक है जितना शारीरिक विकास के लिए माँ का दूध'' पिछले 175 वर्षों की अंग्रेजी शिक्षा से देश को काफी नुकसान हो रहा है। बालकों के मस्तिष्क पर अंग्रेजी के कारण बोझ बढ़ा है। यह एक प्रकार से उन पर अत्याचार है। इस कारण से उनका विकास ठीक ढंग से नहीं हो पा रहा है। वे न तो ठीक से अंग्रेजी सीख पाते हैं और न ही मातृभाषा। इसी प्रकार समय, परिश्रम और धन का भी अपव्यय हो रहा है। शिक्षा, सार्वत्रिक एवं सर्वस्पशीय नहीं हो पा रही है। हमारे यहाँ अंग्रेजी और गणित में सबसे अधिक बच्चे विफल होते हैं। विदेशी भाषा में जानकारी या कुछ मात्रा में ज्ञान प्राप्त हो सकता है। लेकिन ज्ञान-सृजन नहीं हो सकता। इसी प्रकार शोधकार्य में भी वैश्विक स्तर पर हम पिछड़ रहे हैं। अपने देश में शोधकार्य और साहित्य सृजन अधिकतर अंग्रेजी में होने से अपने देश के लोगों के बदले विदेश के लोग उनका ज्यादा लाभ उठा रहे हैं। हमारे देश के विद्वान विदेशों पर निर्भर हो रहें हैं। आज देश में अंग्रेजी, उच्च वर्ग की भाषा है और भारतीय भाषाएँ सामान्य लोगों की

हैं, जिसके कारण देश में दो वर्ग खड़े हो गए हैं। विदेशी भाषाओं में मात्र अंग्रेजी के ज्ञान के कारण हम सारी दुनिया को अंग्रेजी चश्में से ही समझने का प्रयास करते हैं। वास्तव में दुनिया को ठीक से समझने एवं अच्छे सम्बन्ध स्थापित करने हेतु कम से कम आठ भाषाओं का ज्ञान आवश्यक है- रशियन, चाइनीज, जापानी, स्पेनिस, जर्मन, अंग्रेजी, अरबी, फ्रांसीसी है। अंग्रेजी का अधिक प्रभुत्व (प्रचलन) उन्ही देशों में ज्यादा है जो कभी अंग्रेजो की सरकार के अधीन (गुलाम) थे। अन्य देश अपनी-अपनी भाषा को महत्व दे रहे हैं। एक हम है कि अंग्रेजी की गुलामी ढ़ोते चले आ रहे हैं। यह कहना उचित ही लगता है कि अंग्रेजी शोषण की भाषा बन गई है। चिकित्सा, इंजीनियरिंग न्याय एवं शासन-प्रशासन के स्तर पर सर्वत्र अंग्रेजी के प्रयोग के कारण भारत के लगभग 95 प्रतिशत लोग उसे समझ नहीं पाते। अंग्रेजी पुस्तकों का देश में 2000 करोड़ रूपये से अधिक का व्यवसाय है। फ्रांसीसी, जापानी, जर्मनी बोलने वाले 2 प्रतिशत से कम लोग होने के बावजूद उनकी दुनिया में प्रतिष्ठा है, जबकि हिन्दी बोलने वाले लगभग 70 करोड से अधिक होने के बाद भी हम दुनिया में अपमानित हैं। उदाहरण-विगत दिनों में अमरीका एवं आस्ट्रेलिया में भारतीय छात्रों की प्रताड़ना की अनेक घटनाएँ सामने आई हैं। भाषा संस्कृति और संस्कारों की संवाहिका होती है। भाषा के पतन से संस्कृति व संस्कारों का भी पतन हो रहा है। भाषा बदलने से मूल्य भी बदल जाते हैं। भाषा संस्कृति का अधिष्ठान है। वर्तमान में भारत में जिस प्रकार अंग्रेजी का स्थान है, उसी प्रकार सन् 1362 तक ब्रिटेन में फ्रांसीसी का स्थान था। फिनलेन्ड में 100 वर्ष पूर्व स्वीडिश भाषा चलती थी, रशिया में जार के जमाने में फ्रांसीसी भाषा का दबदबा था। इन सभी देशों में वहां की जनता एवं शासकों की इच्छा शक्ति के कारण, आज वहां अपनी भाषाओं में सारा कार्य हो रहा है, आवश्यकता है अपने देश की जनता में इस प्रकार की इच्छाशक्ति जागृत करने की। इसकी शुरूआत स्वयं से करनी पड़ेगी। इस हेतु सभी स्थानों पर अपने हस्ताक्षर अपनी भाषा में करें। किसी भी भाषा में लिखें या बोलें तब 'भारत'– शब्द का प्रयोग करें, इण्डिया का नहीं। कार्य व व्यवहार में अपनी भाषा का ही उपयोग करें। अपने बालकों को मातृभाषा में ही पढा़यें। अपने संगठन, संस्था के स्तर पर सारा कार्य व्यवहार अपनी ही भाषा में करें। अपने बालकों को मातृभाषा माध्यम के विद्यालय में ही पढाएं। घर, कार्यालय, दुकान में नाम पट्ट एवं पट्टिकाएं अपनी भाषा में ही लिखे। अपने व्यक्तिगत पत्र, आवेदन पत्र, निमंत्रण-पत्र आदि भी मातृभाषा या भारतीय भाषा में लिखें या छपायें। यह एक लम्बी लड़ाई है। इस हेतु समग्रता से प्रयास करना होगा। प्रथम देशव्यापी जन-जागरण

हेतु गोष्ठी, परिचर्चा, कार्यशाला, परिसंवादों के आयोजन के माध्यम से समाज में अंग्रेजी के बारे में भ्रम फैलाया गया है उसको दूर करके अपनी भाषाओं की वैज्ञानिकता एवं तार्किकता को पुनः स्थापित करना होगा। दूसरा भारतीय भाषाओं में अनुवाद एवं साहित्य सृजन तथा अनुसंधान हेतु शोध केन्द्रों की स्थापना करनी होगी। जहाँ भी सरकार के स्तर पर भाषा के कानून का भंग किया जा रहा है या भारतीय भाषाओं को अपमानित किया जा रहा है, उसको रोकने के प्रयास करने होगें और कानूनी लड़ाई भी लड़नी होगी। देश की संसद में भाषा के प्रश्न पर व्यापक चर्चा हो, इस हेतु भारतीय भाषाओं के प्रति निष्ठा, प्रेम रखने वाले राजनैतिक पक्षों या सांसदो को एक मंच पर लाकर प्रयास करना होगा। हिन्दी और भारतीय भाषाओं को शिक्षा के माध्यम कराने के साथ-साथ उसे रोजगार से भी जोड़ना होगा। उच्चतम न्यायालय एवं उच्च न्यायालय में राज्य की राजभाषा एवं संघ की राजभाषा हिन्दी में कार्य हो, इस हेतु भाषा प्रेमी वकीलों का भी एक मंच बने। सभी भर्ती (प्रतियोगी) परीक्षाओं में अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त करके उसके साथ-साथ हिन्दी और भारतीय भाषाओं को महत्व मिले, इस हेतु देश के छात्र संगठनों एवं छात्रों का भी एक मोर्चा बने। इन सारे कार्यों को क्रियान्वित करने हेतु भाषा प्रेमी सभी नागरिकों एवं सामाजिक, राजनैतिक नेतृत्व एवं संस्था, संगठनों को एक मंच पर लाकर इस संघर्ष को आगे बढ़ाना होगा तथा निरन्तर संघर्ष करना होगा। वह ध्रुव सत्य है कि विजयश्री भारतीय भाषाओं को मिलेगी। (उर्वशी के संरक्षक श्री अतुल कोठारी शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के राष्ट्रीय सचिव हैं।शिक्षा बचाओ आन्दोलन को आरम्भ करने के साथ ही आपने अनेक शैक्षणिक समितियों के माध्यम से शीर्ष दायित्वों का निर्वहन किया है। अनेकानेक व्याख्यानों , कार्यशालाओं तथा सम्पादक के रूप में आपका पर्यावरण की शिक्षा , मूल्याधारित शिक्षा पर विशेष ध्यान रहा है।)

1.1.5.1 भाषा द्वारा क्षेत्र परिस्थियों का ज्ञान

भाषा विचारों को व्यक्त करने का एक प्रमुख साधन है। भाषा मुख से उच्चारित होने वाले शब्दों और वाक्यों आदि का वह समूह है, जिनके द्वारा मन की बता बतलाई जाती है। भाषा की सहायता से ही किसी समाज विशेष या देश के लोग अपने मनोगत भाव अथवा विचार एक-दूसरे पर प्रकट करते हैं। दुनिया में हजारों प्रकार की भाषाएं बोली जाती हैं। हर व्यक्ति बचपन से ही अपनी मातृभाषा या देश की भाषा से तो परिचित होता है

लेकिन दूसरे देश या समाज की भाषा से नहीं जुड़ पाता। भाषा विज्ञान के जानकारों ने यूं तो भाषा के विभिन्न वर्ग स्थापित करके उनमें से प्रत्येक की अलग-अलग शाखाएं बनाई हैं। यथा, हमारी ¨हदी भाषा, भाषा विज्ञान की दृष्टि से भारतीय आर्य शाखा की एक भाषा है। ब्रजभाषा, अवधी, बुंदेलखंडी आदि इसकी उप भाषाएं हैं। पास-पास बोली जाने वाली अनेक उप भाषाओं में बहुत कुछ साम्य होता है और उसी साम्य के आधार पर उनके वर्ग या कुल स्थापित किए जाते हैं। मानव समाज के साथ ही भाषा का भी बराबर विकास होता आया है। इसी विकास के कारण भाषाओं में सदा परिवर्तन होता रहता है। सामान्यत: भाषा को वैचारिक आदान-प्रदान का माध्यम कहा जा सकता है। भाषा अभिव्यक्ति का सर्वाधिक विश्वसनीय माध्यम है। यही नहीं, यह हमारे समाज के निर्माण, विकास, अस्मिता, सामाजिक व सांस्कृतिक पहचान का भी महत्वपूर्ण साधन है। भाषा के बिना मनुष्य अपूर्ण है और अपने इतिहास और परंपरा से विछिन्न है। भाषा और लिपि भाव व्यक्तिकरण के दो अभिन्न पहलू हैं। एक भाषा कई लिपियों में लिखी जा सकती है जबकि ¨हदी, मराठी, संस्कृत, नेपाली आदि सभी देवनागरी में लिखी जाती हैं। भाषा के महत्व को मनुष्य ने लाखों साल पहले पहचानकर उसका निरंतर विकास किया है। भाषा में ही हमारे भाव, राज्य, वर्ग, जातीयता और प्रांतीयता झलकती है। इस झलक का संबंध व्यक्ति की मानवीय संवेदना और मानसिकता से भी होता है। जिस व्यक्ति के जीवन का उद्देश्य और मानसिकता जिस स्तर की होगी, उनकी भाषा के शब्द और उनके मुख्यार्थ भी उसी स्तर के होंगे। समाज में रहकर व्यापार या लोगों से बातचीत के लिए मनुष्य के पास भाषा ही एकमात्र माध्यम है। मनुष्य को सभ्य और पूर्ण बनाने के लिए शिक्षा जरूरी है और सभी प्रकार की शिक्षा का माध्यम भाषा ही है। साहित्य, विज्ञान, अर्थशास्त्र आदि सभी क्षेत्रों में प्रारंभिक से लेकर उच्चतर शिक्षा तक हर स्तर पर भाषा का महत्व स्पष्ट है। जीवन के सभी क्षेत्रों में किताबी शिक्षा हो या व्यवहारिक शिक्षा, यह भाषा के द्वारा ही प्राप्त की जा सकती है। विश्व में विज्ञान से लेकर भाषा विज्ञान तक सभी क्षेत्रों में नए-नए शोध होते रहते हैं। इनमें अध्ययन व शोध लेखन के लिए नए-नए शब्द रचे जाते हैं। इन शब्दों से संचय भाषा के द्वारा सामाजिक-वैज्ञानिक विकास की अभिव्यक्ति होती है। भाषा के बिना लिखित साहित्य का अस्तित्व ही संभव नही है। वेद, पुराण, उपनिषद् से लेकर तुलसीदास आदि का साहित्य भाषा के कारण इतने सालों तक सुरक्षित रहकर आज तक भी हमें अध्ययन के लिए प्रेरित करता है। साहित्यकार ऐसी भाषा को आधार बनाते हैं, जो उनके पाठकों व श्रोताओं की संवेदनाओं के साथ

एकाकार करने में समर्थ हों। हमें अपने बच्चों को अपनी मातृ भाषा के महत्व को समझाना होगा। हमें अपनी परंपरा का वास्तविक चित्र उन्हें दिखाना होगा। माता के अलावा संस्कार का तीसरा स्रोत बच्चे का वह प्राकृतिक व सामाजिक परिवेश है जिसमें वह जन्म लेता है और पलता-बढ़ता है। यह परिवेश उसके आहार-व्यवहार, शरीर के रंग-रूप के साथ ही आदतें भी बनाता है। सामाजिक परिवेश के अंतर्गत परिवार, मोहल्ला, गांव और विद्यालय के साथी, सहपाठी, मित्र, पड़ोसी व शिक्षक आते हैं। पवित्र भावों और आस्था का सूत्र ही अपने पूर्वजों के प्रति कृतज्ञता और पूज्य भाव के लिए प्रेरित करता है। यही सूत्र सामाजिक आचरण का नियम कहलाता है। डा. रजनी रानी शंखधार, प्रधानाचार्या, रघुनाथ गर्ल्स इंटर कालेज मेरठ गोस्वामी तुलसीदास की ये पंक्तियां भाषा के महत्व को समझाने के लिए काफी हैं। भाषा से ही संस्कार जुड़े होते हैं। वर्तमान पीढ़ी अपनी भाषा से दूर होने के साथ ही संस्कारों से भी दूरी बना रही है, जिससे पाश्चात्य संस्कृति का बोलबाला बढ़ रहा है। हम जिस भाषा को महत्व देते हैं उसी भाषा की संस्कृति सीखते-समझते हैं। इसके लिए बच्चों को अपनी भाषा से जोड़े रखना बेहद जरूरी है। हमारी भाषा ही हमें पीढ़ियों से जोड़ती है। हमारी भाषा ¨हदी दुनिया में दूसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। बावजूद इसके आधुनिकता की आंधी में युवा पीढ़ी ¨हदी से ही दूर होती जा रही है। हालांकि सोशल मीडिया पर बढ़ती ¨हदी सक्रियता ने लोगों को अपनी भाषा की ओर से फिर से मोड़ने और जोड़ने का काम किया है। इससे जहां ¨हदी भाषा के प्रयोग का चलन बढ़ा है वहीं विश्व पटल पर भी देश के प्रतिनिधियों ने देश की भाषा को स्थापित करने में पूरा योगदान दिया है। बोलचाल की भाषा में ¨हदी से अधिक अंग्रेजी का इस्तेमाल उचित नहीं है। जानकारी भले ही दोनों भाषाओं की हो लेकिन अपनी भाषा पर गर्व करना चाहिए और संवाद करते रहना चाहिए।

1.1.5.2 भाषा के माध्यम से विभिन्न देशों की सांस्कृति राजनैतिक आर्थिक ज्ञान

वस्तुतः मनुष्य भाषा का व्यवहार स्वयं से ही बातचीत करने के लिए नहीं करता, भाषा एक से अधिक मनुष्यों के बातचीत करने का माध्यम है। इसीलिए एक व्यक्ति विभिन्न परिस्थितियों में अपनी बोली में चाहे जितना परिवर्तन कर ले, वह जिस समाज में रहता है उसमें उसकी बोली अवश्य समझी जाएगी और इसी ढंग से वह दूसरों की बोली को भी समझेगा। भाषा भी संस्कृति का अंग होती है। इसलिए भाषा के विकास का अध्ययन संस्कृति के विकास के आलोक में होना चाहिए। भाषा चिन्तन की अनेक समस्याओं की तरह भाषा

की उत्पत्ति भी भाषा वैज्ञानिकों के लिए एक गम्भीर चुनौती का विषय है। कुछ लोगों का मानना है कि मनुष्य का निर्माण किसी आध्यात्मिक शक्ति ने किया है और ऐसे लोग भाषा को भी ईश्वर कृत मानते हैं किन्तु अब यह मत बहुत प्रभावी नहीं रहा है। अधिकांश विद्वान प्रकृति और समाज के अन्य तत्वों की तरह भाषा को भी विकास मान मानते हैं किन्तु उनका प्रबल मत है कि मनुष्य में बुद्धि तत्व विशेष था इसलिए पशुओं या अन्य जीव धारियों में सिर्फ मनुष्य ही भाषा का निर्माण कर सका। इस सम्बन्ध में सोवियत वैज्ञानिक 'पावलोव' की स्थापना ध्यान देने योग्य है कि "स्थूल चिन्तन पशु में भी होता है और विचार प्रक्रिया के निम्नतम धरातल पर पशु और मानव में अन्तर नहीं है मनुष्य भाषा की रचना दो कारणों से कर सका उसके जीवन की परिस्थियाँ पशुओं से भिन्नता पशु भी ध्वनि संकेतों से काम लेते हैं मानव अपनी भाषा रचना का कार्य इसी पशु-स्तर से आरम्भ करता है। दूसरा कारण उसकी शारीरिक विशेषताएं हैं जिनसे वह ध्वनि-संकेतों को रचने और उनका व्यवहार करने में पशुओं से अधिक सक्षम हुआ है। किसी ध्वनि-विशेष से किसी वस्तु अथवा कार्य का सम्बन्ध जोड़ना यह व्यवहार पशु और मानव दोनों उन्होंने देखा जाता है और वहीं से भाषा की उत्पत्ति आरम्भ होती है।"

डॉ०भीमराव अम्बेडकर ने अपनी उच्च शिक्षा अंग्रेजी माध्यम से पूरी की लेकिन उनकी राजनीतिक चेतना भारत जैसे देश में अंग्रेजी के प्रचार-प्रसार की पक्षधर नहीं थी। ब्रिटिश शासनकाल में लगभग संपूर्ण भारतीय राजनैतिक नेतृत्व की शिक्षा-दीक्षा अंग्रेजी माध्यम से हुई थी और डॉ० म्बेडकर इसके अपवाद नहीं थे। उस दौर में भारतीय नेतृत्व के समक्ष दो चुनौतियां थीं – शासकों से अंग्रेजी में संवाद करना (क्योंकि वे इसी भाषा को समझते थे) और स्कूली शिक्षा से भी वंचित करोड़ों देशवासियों को उनकी भाषा में संबोधित करना। गांधी, भाषा को लेकर स्पष्ट थे। वे गुजराती थे लेकिन हिन्दी के पक्षधर थे और लोगों को हिन्दी में संबोधित करते थे। यदि गांधी अंग्रेजी में भाषण देते तो शायद उनकी देशव्यापी स्वीकार्यता नहीं बन पाती। भारतीय संदर्भ में भाषा के प्रश्न को दो कालों में विभाजित कर देखा जाना चाहिए – ब्रिटिश शासनकाल और स्वतंत्र भारत। भारत की स्वतंत्रता के बाद सत्ताधारियों पर दबाव था कि शासकीय कार्य भारतीय भाषाओं में संपन्न किये जायें और इन भाषाओं के माध्यम से ही पठन-पाठन की व्यवस्था हो। यानी सत्ता का ढांचा तो अंग्रेजी-परस्त था, लेकिन नेतृत्व पर दबाव था कि वह भारतीय भाषाओं में सुने और बोले और यह जान ले कि देर-सबेर उसे अंग्रेजी को त्यागना होगा। राजनीतिक परिवर्तन का सार इसमें निहित होता है कि सत्ता का रूपांतरण, जन के अनुरूप हो

सके। सत्ता चाहती है कि नेतृत्व को अपने रूप में ढाल ले। राजनीति के इस द्व्न्द्व को समझना महत्वपूर्ण है। सत्ता के जन के अनुरूप रूपांतरण में यह भी निहित है कि शासक वर्ग, लोगों की चेतना की भाषा को समझने के लिए मजबूर हो। इसीलिए अगर किसी भाषा को चुना जाता है तो वह उसकी लिपि के कारण नहीं होता बल्कि वह सत्ता के राजनीतिक-सामाजिक-आर्थिक आधार से जुड़ा होता है यह धारणा गलत है कि डॉ० अम्बेडकर अंग्रेजी के पक्षघर थे। भाषा को लेकर उनकी राजनीतिक दृष्टि बहुत स्पष्ट थी और यह तथ्य, भाषावार राज्यों के गठन पर हुई बहस में उनके भाषणों से जाहिर होता है। उन्होंने अपनी बात इतने सुस्पष्ट शब्दों में रखी कि उसकी दो व्याख्याएं की ही नहीं जा सकतीं। डॉ० अम्बेडकर ने बहस के दौरान कहा कि भाषा के आधार पर प्रान्तों के पुनर्गठन की मांग को स्वीकार कर लेने पर भी ऐसी संवैधानिक व्यवस्था होनी चाहिए कि केन्द्र सरकार की राजभाषा, सभी प्रान्तो की राजभाषा मानी जाए। केवल इसी आधार पर उन्होंने भाषावार प्रान्तो की मांग को स्वीकार किया। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि वह भाषा हिन्दी ही हो सकती है। उनके अनुसार, राज्य की भाषा हिन्दी होगी, परन्तु जब तक भारत इस परिवर्तन के लिए तैयार न हो जाये, अंग्रेजी का इस्तेमाल होता रहेगा।

इस प्रकार, देश के लोगों के लिए एक नई भाषा का निर्माण और सत्ता को उसकी भाषा छोडऩे के लिए बाध्य करने का राजनीतिक संघर्ष शुरू हुआ। इसे इस तरह से भी देखा जा सकता है कि यह एक भाषा – हिन्दी – की स्वीकार्यता जनता में बढ़ाने का राजनीतिक कार्यक्रम था –उस जनता में, जो गुजराती या मराठी को भी उतनी ही सहजता से स्वीकार कर लेती। दूसरी तरफ हमें यह भी ध्यान में रखना होगा कि सत्ता और शासक वर्ग, देश की एक भाषा बनाने की राजनीतिक प्रक्रिया को बाधित करने के लिए तत्पर था। यदि बहुत विस्तार में नहीं भी जाना चाहते हों तो संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि एक ओर हिन्दी का एक भारतीय रूप सृजित करने का राजनीतिक कार्यक्रम था तो दूसरी इसे रोकने के प्रयास। हिन्दी के निर्माण की यात्रा को देखें तो यह साफ़ हो जायेगा कि वह सहजता से जटिलता की ओर धकेली गई। यह जटिलता, वास्तव में, एक भाषा के निर्माण को रोकने और शासक वर्ग की भाषा को बनाए रखने की राजनीति रही है। हिन्दी को संस्कृतनिष्ठ बनाना, उसके भारतीयकरण की प्रक्रिया को बाधित करना था। ठीक उसी तरह, जैसे भूमंडलीकरण के बाद, उसे अंग्रेजी निष्ठ बनाने का राजनीतिक कार्यक्रम चलाया जा रहा है। हिन्दी का मराठी, तेलुगू, गुजराती, पंजाबी, बांग्ला, कश्मीरी

आदि से शब्द उधार लेकर जो विस्तार होना था, वह नहीं हुआ। वह शासक वर्ग की ऐसी भाषा के रूप में विकसित की गई, जिसे विस्थापित करने का पहले से ही फैसला किया जा चुका था। पहले संस्कृत शासक वर्ग की भाषा थी, अब उसका स्थान अंग्रेजी ने ले लिया। शासक वर्ग में भाषा को लेकर सहमति थी, जो कि राजनीतिक प्रक्रियाओं में अभिव्यक्त हुई। किसी देश की संस्कृति उसकी सम्पूर्ण मानसिक निधि को सूचित करती है। यह किसी खास व्यक्ति के पुरुषार्थ का फल नहीं, अपितु असंख्य ज्ञात तथा अज्ञात व्यक्तियों के भगीरथ प्रयत्न का परिणाम होती है। सब व्यक्ति अपनी सामर्थ्य और योग्यता के अनुसार संस्कृति के निर्माण में सहयोग देते हैं। संस्कृति की तुलना आस्ट्रेलिया के निकट समुद्र में पाई जाने वाली मूँगे की भीमकाय चट्टानों से की जा सकती है। मूँगे के असंख्य कीड़े अपने छोटे घर बनाकर समाप्त हो गए। फिर नए कीड़ों ने घर बनाये, उनका भी अन्त हो गया। इसके बाद उनकी अगली पीढ़ी ने भी यही किया और यह क्रम हजारों वर्ष तक निरन्तर चलता रहा। आज उन सब मूगों के नन्हे-नन्हे घरों ने परस्पर जुड़ते हुए विशाल चट्टानों का रूप धारण कर लिया है। संस्कृति का भी इसी प्रकार धीरे-धीरे निर्माण होता है और उनके निर्माण में हजारों वर्ष लगते हैं। मनुष्य विभिन्न स्थानों पर रहते हुए विशेष प्रकार के सामाजिक वातावरण, संस्थाओं, प्रथाओं, व्यवस्थाओं, धर्म, दर्शन, लिपि, भाषा तथा कलाओं का विकास करके अपनी विशिष्ट संस्कृति का निर्माण करते हैं। भारतीय संस्कृति की रचना भी इसी प्रकार हुई है।

1.1.5.3 भाषा के माध्यम से विज्ञान तकनीकी का ज्ञान

हिन्दी तथा अन्य आधुनिक भारतीय भाषाओं को प्रशासन, शिक्षा तथा परीक्षा का माध्यम बनाने का सपना तथा संकल्प स्वंतत्रता प्राप्ति के बाद भारत के संविधान निर्माताओं ने बहुत सूझ-बूझ तथा विधार मथन के पश्चात् भारत की जनता के सम्मुख रखा। यह संकल्प, यह सपना भारत की सांस्कृतिक तथा भाषायी विविधता को ध्यान में रखकर लिया गया एक आदर्श ऐतिहासिक फैसला था। यह एक ऐसा संकल्प था, जो भारत की मिट्टी में जन्मी प्रज्ञा को ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में मौलिकता प्रदान करने तथा भारतीयता को सुरक्षित रखने के लिए लिया गया था। यह राष्ट्रीय एकता तथा सामाजिक विकास के लिए आवश्यक था तथा एक ऐसा

भविष्यगामी फैसला था जिसमें 'सर्वेभवन्तु सुखिनः' की भावना निहित थी। जब कोई सपना देखा जाता है, जब कोई संकल्प लिया जाता है, जब कोई आदर्श सामने रखा जाता है, तो उसे मूर्तरूप देने के लिए कारगर योजनाओं और उनके क्रियान्वयन की आवश्यकता भी होती है। संविधान की 351वीं धारा में हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के लिए जो विधान किए गए, उन्हें कार्यरूप देने के लिए सरकार ने कई योजनाएं बनाई जिसमें वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली का विकास, मानकीकरण तथा एकरूपता की महत्वाकांक्षी योजना भी थी जो बाद में चलकर भारत सरकार की शिक्षा नीति में भी सम्मिलित की गई।

स्वतंत्रता के समय ज्ञान की विभिन्न विधाओं में अंग्रेजी भाषा का वर्चस्व था तथा परिश्रम से लिए हुए उधार के ज्ञान के लिए एक ऐसी शब्दावली भारतीय भाषाओं में विकसित करनी थी जिसका जन्म भारत की मिट्टी में नहीं हुआ था। इसी कारण यह एक सहज प्रयास न होकर कुछ अप्राकृतिक स्वरूप ग्रहण करने के लिए बाध्य थी। इस सायास और नियोजित प्रयास में तकनीकी पर्यायों या समानर्थी शब्दों का विधान किया जाना था। ऐसे पर्याय, जो अन्वेषक या विद्वान की कृति नहीं, बल्कि विषय विशेषज्ञ तथा भाषाविद् द्वारा मूल तकनीकी संकल्पना की सूचना अनूदित भाषा में संप्रेक्षित कर सके। शब्दावली निर्माण की इस असहज प्रक्रिया ने उस समय कई विसंगतियों को जन्म दिया। कई विद्वानों ने उस समय वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली के विकास का काम प्रारंभ कर दिया। कुछ विद्वानों ने शब्दावली को संस्कृतनिष्ठ करना चाहा, तो कुछ ने इसे उर्दू-फारसी और हिन्दुस्तानी कही जाने वाली भाषा में ढालना चाहा। उस समय कुछ ऐसे भी विद्वान थे जिन्होंने अंग्रेजी के तकनीकी शब्दों को देवनागरी में लिप्यांतरण करके स्वीकार करने की पेशकश रखी परंतु इन सबसे वैज्ञानिक तथा तकनीकी विषयों के बहुयामी तथा विशाल शब्द भंडार को अपनी भाषा के व्याकरण, उसकी प्रकृति तथा विद्यार्थियो, प्राध्यापकों, शोधार्थियों, अनुवादकों, ग्रन्थ लेखकों की आकांक्षाओं की पूर्ति नहीं हो रही थी और जिस ढंग से लोग शब्दावली का निर्माण कर रहे थे उससे संविधान की गरिमा में निहित आशय की पूर्ति भी नहीं हो रही थी। एक ही तकनीकी शब्द के कई-कई पर्याय उपलब्ध होने से एक ऐसी अराजक स्थिति उत्पन्न हो गई जिसने शब्दावली निर्माण के नियोजन तथा प्रबन्धन की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित किया। ऐसे में भारत सरकार ने यह कार्य अपने हाथ में लेना ही उचित समझा और 1 अक्टूबर 1961 को स्थाई आयोग के रूम में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना राष्ट्रपति के आदेश के अधीन की गई। पद्म विभूषण

प्रोफेसर दौलत सिंह कोठारी जैसे स्वप्नद्रष्टा, प्रसिद्ध शिक्षाविद् तथा मूर्धन्य वैज्ञानिक को आयोग का पहला अध्यक्ष बनाकर भारत सरकार ने यह सिद्ध किया कि वे वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली के विकास हेतु गंभीर प्रयास के लिए कटिबद्ध है।

प्रो. कोठारी ने वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली के विकास के लिए समन्वयवादी दृष्टिकोण को अपनाया तथा शब्दावली निर्माण, उसकी समीक्षा एवं समन्वयन के लिए कुछ ऐसे महत्वपूर्ण सिद्धांतों का निरूपण किया जिसके पालन करने से भारत की सामसिक संस्कृति भाषायी विविधता, राष्ट्रीय एकता तथा अस्मिता को सुरक्षित रखते हुए ज्ञान-विज्ञान की विभिन्न शाखाओं की आधुनिक तथा आधुनिकतम आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली को विकसित करने में किसी प्रकार की कोई रुकावट नहीं आ सहती थी। अपनी स्थापना से अब तक के वर्षों में शब्दावली आयोग ने ज्ञान की विभिन्न शाखाओं, यथा-विज्ञान, मानविकी, समाजशास्त्र, कृषि, आयुर्विज्ञान तथा इंजीनियरिंग इत्यादि में लगभग 8 लाख तकनीकी शब्दों के हिन्दी पर्याय निर्धारित कर उन्हें विभिन्न शब्द संग्रहों तथा परिभाषा कोशों के रूप में प्रकाशित किया है। साथ ही साथ सन् 1968 में ग्रन्थ निर्माण की योजना के अन्तर्गत 15 राज्यों में 'ग्रन्थ अकादमी' तथा 'पाठ्य पुस्तक मंडलों' की स्थापना की है जिससे कि हिन्दी के साथ-साथ भारत की अन्य आधुनिक भाषाओं में तकनीकी शब्दावली का विकास तथा पाठ्य-पुस्तक का प्रकाशन किया जा सके। शब्दावली आयोग तथा विभिन्न राज्यों में स्थापित ग्रन्थ अकादमियों तथा पाठ्य-पुस्तक मंडलों के समन्वित प्रयास से अब तक लगभग 12 हजार पाठ्य-पुस्तकों का प्रकाशन किया जा चुका है। इसके अतिरिक्त पूरक सामग्री के रूप में ग्रन्थ मालाओं, चयनिकाओं तथा पत्र-पत्रिकाओं की एक लंबी सूची प्रस्तुत की जा सकती है। अखिल भारतीय शब्दावली, विभागीय शब्दावलियाँ तथा प्रशासनिक शब्दावली अपने आप में आयोग के अनूठे प्रयास है। शब्दावली आयोग ने कप्यूटरीकृत राष्ट्रीय शब्दावली बैंक की स्थापना भी की है। विश्वविद्यालयों में पढ़ाया जाने वाला अब ऐसा कोई विषय नहीं होगा या प्रयोजनमूलक हिन्दी की ऐसी कोई विधा अब नहीं बची है जिसकी अंग्रेजी आधारित संकल्पनाओं को व्यक्त करने वाले हिन्दी पर्याय स्थिर न हो गए हों। आयोग की अखिल भारतीय शब्दावली योजना के अन्तर्गत 18 शब्दावलियाँ प्रकाशित की जा चुकी हैं जिसमें 20,000 ऐसे शब्दों को विषयवार संकलित किया गया है जिन्हें अखिल भारतीय शब्दावली के रूप में स्वीकार किया जा सकता है।

विज्ञान में उच्च-स्तरीय लेखन को प्रोत्साहित करने के लिए आयोग विज्ञान की त्रैमासिक पत्रिका 'विज्ञान गरिमा सिंधु' का प्रकाशन करता है। मानविकी तथा समाज विज्ञान विषयों में इसी उद्देश्य से 'ज्ञान गरिमा सिंधु' नामक पत्रिका का प्रकाशन भी जनवरी 2000 से प्रारंभ किया गया है।

1.1.5.4 भाषा के माध्यम से शैक्षणिक विकास

भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा बच्चे स्वयं से और दूसरों से बात करते हैं। शब्दों से ही वे अपने यथार्थ का सृजन तथा उसकी समझ बनाना शुरू करते हैं। सीखने की प्रक्रिया के लिए भाषा को समझने और उसे स्पष्ट तथा प्रभावी ढंग से उपयोग करने की क्षमता हासिल करना आवश्यक है। भाषा केवल संवाद का ही साधन नहीं है – यह वह माध्यम भी है जिसके द्वारा हम अधिकांश ज्ञान हासिल करते हैं। यह एक ऐसी व्यवस्था है जो काफी हद तक हमारे आसपास के यथार्थ को हमारे मन में निरूपित करने के लिए ढाँचों में व्यवस्थित करती है – यह हमारी पहचान को नाना प्रकार से चिह्नित करती है, और समाज में एक स्थान भी दिलाती है।
राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.) 2005, मनुष्यों में भाषा की नैसर्गिक क्षमता होने की धारणा का समर्थन करती है। बच्चे अपनी भाषा या भाषाओं में वैचारिक सम्प्रेषण की योग्यता लेकर ही स्कूल आते हैं। वे स्कूल में हजारों शब्दों के साथ प्रवेश करते हैं। उन नियमों पर भी उनका नियंत्रण होता है जो ध्वनियों, शब्दों, वाक्यों और सम्भाषण के स्तर पर भाषा के समृद्ध और जटिल ढाँचे को अनुशासित करते हैं। एन.सी.एफ. के अनुसार एक सृजनशील भाषा-शिक्षक द्वारा बहुभाषावाद का उपयोग एक संसाधन के रूप में कक्षा की शैक्षणिक योजना बनाने और लक्ष्य की प्राप्ति के लिए किया जाना बेहद जरूरी है। यह न केवल एक सहज उपलब्ध साधन का श्रेष्ठ उपयोग है, बल्कि यह सुनिश्चित करने का तरीका भी है कि प्रत्येक बच्चा अपने को कक्षा में सुरक्षित और स्वीकृत महसूस करे। साथ ही भाषाई पृष्ठभूमि के कारण कोई भी पिछड़ने न पाए।
एन.सी.एफ. का कहना है कि बुनियादी भाषाई कौशल प्रासंगिक विशेषताओं की दृष्टि से समृद्ध और संज्ञानात्मक अपेक्षाओं से रहित परिस्थितियों में व्यवहार करने के लिए पर्याप्त होते हैं, जैसे कि हमउम्र साथियों के साथ बातचीत करना। दूसरी ओर, प्रासंगिक विशेषताओं की दृष्टि से दरिद्र और ऐसी परिस्थितियाँ जिनमें संज्ञानात्मक

प्रयास अपेक्षित हो, जैसे कि किसी अमूर्त मुद्दे पर निबन्ध लिखना – में विकसित स्तर के कौशलों की आवश्यकता होती है।

अतः प्रथम भाषा की शिक्षा का लक्ष्य कक्षा में धीरे-धीरे बच्चों की संवादात्मक और संज्ञानात्मक क्षमताओं के विकास को सहारा देकर इन कौशलों को माँजना है। शुरुआती प्राथमिक स्तर पर, बच्चों की भाषाओं को वे जैसी हों वैसी ही स्वीकार करते हुए उन्हें सुधारने का काम कम से कम किया जाना चाहिए। कक्षा 3 में आने के बाद सीखने, और उच्च स्तरीय संवादात्मक कौशलों तथा विवेचनात्मक सोच विकसित करने के लिए वक्तृता और साक्षरता हमारे उपकरण होंगे। कक्षा 4 तक यदि बच्चे को समृद्ध और रुचिकर परिवेश उपलब्ध करा दिया जाए तो वह स्वयं सही वर्तनी व्यवस्था के मानक रूप और उसके नियमों को हासिल कर लेगा। लेकिन यह भी बेहद जरूरी है कि इस दौरान बच्चे की अपनी स्वाभाविक भाषा (या भाषाओं) को सराहने और उसका सम्मान करने का ध्यान रखा जाए। इस बात को भी स्वीकारना चाहिए कि त्रुटियाँ, सीखने की प्रक्रिया का अनिवार्य अंग होती हैं। बच्चे तभी अपने को सुधारते हैं जब वे ऐसा करने के लिए भीतर से राजी होते हैं। इसलिए त्रुटियों और 'कठिन बिन्दुओं' पर ध्यान केन्द्रित करने से कहीं ज्यादा अच्छा यह होगा कि बच्चों को सुबोध, रोचक और चुनौतीपूर्ण जानकारियाँ तथा सामग्री प्रदान करने पर समय लगाया जाए।

एन.सी.एफ. के अनुसार भाषा की शिक्षा सिर्फ भाषा की कक्षा तक सीमित नहीं होती। कोई भी विज्ञान, सामाजिक विज्ञान या गणित की कक्षा स्वतः ही भाषा की कक्षा भी होती है। किसी विषय को सीखने का अर्थ है उसकी शब्दावली सीखना, अवधारणाओं को समझना और उनके बारे में विवेचनात्मक चर्चा करना या लिखना। साथ ही साथ भाषा की कक्षा कुछ अनोखे अवसर प्रदान करती है। कहानियाँ, कविताएँ, गीत और नाटक बच्चों को उनकी सांस्कृतिक विरासत से जोड़ते हैं, और उन्हें अपने खुद के अनुभवों को समझने तथा दूसरों के प्रति संवेदनशील बनाने में मदद करते हैं। स्पष्ट और अक्सर उबाऊ, व्याकरण के पाठों की तुलना में बच्चे ऐसी गतिविधियों से बिना किसी प्रयास के कहीं अधिक व्याकरण हासिल कर लेते हैं।

भरपूर जानकारी वाले संवादात्मक वातावरण भाषा सीखने की बुनियादी शर्त हैं। बच्चों को प्रदान की जा रही जानकारियों में पाठ्यपुस्तकें, सीखने वालों के द्वारा चुनी गई पाठ्यसामग्री और कक्षा का पुस्तकालय जिसमें विविध प्रकार की किताबें हों; मुद्रित (उदाहरण के लिए नन्हे सीखने वालों के लिए बड़े आकार की पुस्तकें);

एक से अधिक भाषाओं में समानान्तर किताबें और सामग्री; संचार माध्यमों का सहयोग (सीखने वालों के लिए पत्रिकाएँ/ समाचारपत्रों के स्तम्भ, और रेडियो/ऑडियो कैसेट); और "प्रामाणिक" सामग्री।

भाषा ज्ञान के मूल्यांकन के सम्बन्ध में एन.सी.एफ. का कहना है कि इसका किसी विशेष निर्धारित पाठ्यक्रम में उपलब्धियों से जुड़ा होना जरूरी नहीं है, इसके बजाय उसका उद्देश्य भाषा की दक्षता का आकलन करना होना चाहिए। सतत मूल्यांकन में सीखने वाले की प्रगति का लेखाजोखा भी रखा जा सकता है। भाषा में दक्षता के लिए राष्ट्रीय कसौटियाँ विकसित किए जाने की जरूरत है। एनसीएफ दसवीं कक्षा के स्तर पर विद्यार्थियों के फेल होने का एक प्रमुख कारण(गणित के साथ-साथ) अँग्रेजी के होने के पर भी विमर्श करता है।

संवाद में भागीदारी और अभिव्यक्ति कौशल जैसे भाषाई पहलुओं के बजाय अधिकांश भाषा-शिक्षक बोलना सिखाने के प्रशिक्षण को शुद्धता से जोड़ते हैं। एनसीएफ इस तथ्य पर भी गौर करता है कि, "हमारी व्यवस्था में कक्षा में बात करने को नापसन्द किया जाता है, और शिक्षक की बहुत सी ऊर्जा बच्चों को शान्त रखने में या उनके उच्चारणों को सही करवाने में खर्च होती है। यदि शिक्षक बच्चे की वाचालता को एक व्यवधान की तरह देखने के बजाय उसे एक संसाधन की तरह देखें तो इससे प्रतिरोध और नियन्त्रण के दुष्चक्र को अभिव्यक्ति और प्रतिउत्तर के चक्र में बदलने का मौका मिलेगा। बातचीत को संसाधन की तरह कैसे उपयोग किया जाए, इस बारे में ज्ञान का विशाल भण्डार उपलब्ध है। शिक्षकों के सेवापूर्व तथा सेवाकालिक प्रशिक्षणों में उन्हें उस ज्ञान से अवगत कराया जाना चाहिए।"

सीखने-सिखाने की सामग्री और गतिविधियाँ ऐसी होना चाहिए जो बच्चों के बीच में छोटे-छोटे सामूहिक वार्तालापों को प्रोत्साहित करें। चीजों को तुलनात्मक तथा सापेक्षिक ढंग से देखने, सोच-विचार करने और स्मरण करने, अनुमान लगाने और चुनौती देने, आँकने और मूल्यांकन करने की उनकी क्षमताओं को पोषित करें। श्रवणीय संसाधन और गतिविधियाँ ऐसी हों जो विद्यार्थियों में ध्यान देने, दूसरे व्यक्ति के दृष्टिकोण को सराहने, कथन के प्रवाह से जुड़े रहने और जो कहा जा रहा है उसके तात्पर्य के बारे में लचीली परिकल्पनाएँ गढ़ने की क्षमताओं को विकसित करने पर केन्द्रित हों।

एन.सी.एफ. की दृष्टि में कहानी कहना न केवल स्कूल-पूर्व की शिक्षा के लिए उपयुक्त है, बल्कि बाद में भी इसका महत्व बना रहता है। मुँह से बोले जाने वाले विवरणात्मक सम्भाषण की तरह कहानियाँ तर्कपूर्ण समझ

की नींव रखती हैं। साथ ही वे कल्पनाशक्ति को विस्तार देती हैं और कथापात्रों के माध्यम से, व्यक्ति की उसके जीवन से बहुत दूर की परिस्थितियों में परोक्ष भागीदारी करने की क्षमता को बढ़ाती हैं।

पढ़ने को भाषा शिक्षण के एक केन्द्रीय क्षेत्र की तरह तो सहज ही स्वीकार कर लिया जाता है। परन्तु स्कूलों के पाठ्यक्रम में जानकारी ग्रहण करने और उसे याद करने का इतना अधिक बोझ लाद दिया जाता है कि बच्चों को सिर्फ आनन्द के लिए पढ़ने का मौका ही नहीं मिलता। हर व्यक्ति को उसके मानसिक रुझान के अनुरूप पढ़ने के अवसर हर स्तर पर सुलभ कराये जाना चाहिए ताकि पढ़ने की संस्कृति को बढ़ावा मिले। शिक्षकों को स्वंय ऐसी संस्कृति का वाहक बनकर उदाहरण पेश करना चाहिए।

एन.सी.एफ. इस ओर भी ध्यान खींचता है कि अधिकांश शिक्षक बच्चों के शुद्ध लिखने पर ही जोर देते हैं। उनके अपने विचारों और अनुभूतियों की अभिव्यक्ति को बहुत महत्वपूर्ण नहीं माना जाता। जिस प्रकार कच्ची उम्र में उच्चारण का अनुशासन लाद देने से बच्चों का अपनी बोली में मुक्त भाव से बात करने का उत्साह घुटकर रह जाता है, उसी प्रकार यांत्रिक ढंग से शुद्ध लेखन का आग्रह अपने विचार व्यक्त करने और संप्रेषित करने के लिए लेखन का उपयोग करने की आकांक्षा को अवरुद्ध कर देता है। शिक्षकों को इस बात के लिए प्रशिक्षित करने की जरूरत है कि वे लेखन को उसी दायरे की विधा मानें जिसमें कलात्मक अभिव्यक्ति आती है। वे उसे एक दफ्तरी कौशल की तरह देखना बन्द करें। प्राथमिक वर्षों के दौरान बात करने, सुनने और पढ़ने से जुड़ी संवेदन शक्तियों के साथ ही लिखने की क्षमताओं को भी समेकित ढंग से विकसित किया जाना चाहिए। स्कूली शिक्षा के माध्यमिक और उच्च स्तर पर, कौशल विकसित करने के प्रशिक्षण अभ्यास की तरह, विषयों के नोट्स बनाने पर समुचित ध्यान दिया जाना चाहिए। ब्लैकबोर्ड, पाठ्यपुस्तकों या कुंजिय़ों से नकल टीपने की प्रवृत्ति को काफी हद तक दूर करने में इससे मदद मिलेगी। पत्र और निबन्ध लेखन जैसे कार्यों में घिसी-पिटी परिपाटी को तोड़ना भी जरूरी है, ताकि कल्पनाशक्ति और मौलिकता को शिक्षा में ज्यादा महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का अवसर दिया जा सके।

1.1.6 हिन्दी भाषा का विकास

हिन्द भाषा का इतिहास लगभग एक हजार वर्ष पुराना माना गया है। सामान्यतः प्राकृत की अन्तिम अपभ्रंश अवस्था से ही हिन्दी साहित्य का आविर्भाव स्वीकार किया जाता है। उस समय अपभ्रंश के कई रूप थे और उनमें सातवीं-आठवीं शताब्दी से ही 'पद्य' रचना प्रारम्भ हो गयी थी। हिन्दी भाषा व साहित्य के जानकार अपभ्रंश की अंतिम अवस्था 'अवहट्ट' से हिन्दी का उद्भव स्वीकार करते हैं। चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' ने इसी अवहट्ट को 'पुरानी हिन्दी' नाम दिया।

साहित्य की दृष्टि से पद्यबद्ध जो रचनाएँ मिलती हैं वे दोहा रूप में ही हैं और उनके विषय, धर्म, नीति, उपदेश आदि प्रमुख हैं। राजाश्रित कवि और चारण नीति, शृंगार, शौर्य, पराक्रम आदि के वर्णन से अपनी साहित्य-रुचि का परिचय दिया करते थे। यह रचना-परम्परा आगे चलकर शौरसेनी अपभ्रंश या प्राकृताभास हिन्दी में कई वर्षों तक चलती रही। पुरानी अपभ्रंश भाषा और बोलचाल की देशी भाषा का प्रयोग निरन्तर बढ़ता गया। इस भाषा को विद्यापति ने 'देसी भाषा' कहा है, किन्तु यह निर्णय करना सरल नहीं है कि 'हिन्दी' शब्द का प्रयोग इस भाषा के लिए कब और किस देश में प्रारम्भ हुआ। हाँ, इतना अवश्य कहा जा सकता है कि प्रारम्भ में 'हिन्दी' शब्द का प्रयोग विदेशी मुसलमानों ने किया था। इस शब्द से उनका तात्पर्य 'भारतीय भाषा' का था।

1.1.6.1 प्रिंट मीडिया-समाचार पत्र-पत्रिकाएँ, पुस्तके जनरल बुकलेट आदि

हिन्दी पत्रकारिता की शुरुआत बंगाल से हुई और इसका श्रेय राजा राममोहन राय को दिया जाता है। राजा राममोहन राय ने ही सबसे पहले प्रेस को सामाजिक उद्देश्य से जोड़ा। भारतीयों के सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, आर्थिक हितों का समर्थन किया। समाज में व्याप्त अंधविश्वास और कुरीतियों पर प्रहार किये और अपने पत्रों के जरिए जनता में जागरूकता पैदा की। राय ने कई पत्र शुरू किये। जिसमें अहम हैं-साल 1780 में प्रकाशित ‘बंगाल गजट’। बंगाल गजट भारतीय भाषा का पहला समाचार पत्र है। इस समाचार पत्र के संपादक गंगाधर भट्टाचार्य थे। इसके अलावा राजा राममोहन राय ने मिरातुल, संवाद कौमुदी, बंगाल हैराल्ड पत्र भी निकाले और लोगों में चेतना फैलाई। 30 मई 1826 को कलकत्ता से पंडित जुगल किशोर शुक्ल के संपादन में निकलने वाले ‘उदन्त मार्तण्ड’ को हिन्दी का पहला समाचार पत्र माना जाता है।

इस समय इन गतिविधियों का चूँकि कलकत्ता केन्द्र था इसलिए यहाँ पर सबसे महत्वपूर्ण पत्र-पत्रिकाएँ - उद्दंड मार्तंड, बंगदूत, प्रजामित्र मार्तंड तथा समाचार सुधा वर्षण आदि का प्रकाशन हुआ। प्रारम्भ के पाँचों साप्ताहिक पत्र थे एवं सुधा वर्षण दैनिक पत्र था। इनका प्रकाशन दो-तीन भाषाओं के माध्यम से होता था। 'सुधाकर' और 'बनारस अखबार' साप्ताहिक पत्र थे जो काशी से प्रकाशित होते थे। 'प्रजा हितैषी' एवं बुद्धि प्रकाश का प्रकाशन आगरा से होता था। 'तत्वबोधिनी' पत्रिका साप्ताहिक थी और इसका प्रकाशन बरेली से होता था। 'मालवा' साप्ताहिक मालवा से एवं 'वृतान्त' जम्मू से तथा 'ज्ञान प्रदायिनी पत्रिका' लाहौर से प्रकाशित होते थे। दोनों मासिक पत्र थे। इन पत्र-पत्रिकाओं का प्रमुख उद्देश्य एवं सन्देश जनता में सुधार व जागरण की पवित्र भावनाओं को उत्पन्न कर अन्याय एवं अत्याचार का प्रतिरोध/विरोध करना था। हालाँकि इनमें प्रयुक्त भाषा (हिन्दी) बहुत ही साधारण किस्म की (टूटी-फूटी हिन्दी) हुआ करती थी। सन् 1868 ई. में भारतेंदु हरिश्चंद्र ने साहित्यिक पत्रिका कवि वचन सुधा का प्रवर्तन किया। और यहीं से हिन्दी पत्रिकाओं के प्रकाशन में तीव्रता आई। पत्र-पत्रिकाएँ मानव समाज की दिशा-निर्देशिका मानी जाती हैं। समाज के भीतर घटती घटनाओं से लेकर परिवेश की समझ उत्पन्न करने का कार्य पत्रकारिता का प्रथम व महत्त्वपूर्ण कर्त्तव्य है। राजनीतिक-सामाजिक चिंतन की समझ पैदा करने के साथ विचार की सामर्थ्य पत्रकारिता के माध्यम से ही उत्पन्न होती है। पत्रकारिता ने युगों से अपने इस दायित्व का निर्वाह किया तथा दायित्व-निर्वहन की समस्त कसौटियों को पूर्ण करते हुए समय-समय पर अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज की। यह अध्ययन करना अपने-आप में अत्यंत रोचक है कि पत्रकारिता की यह यात्रा कब और कैसे आरंभ हुई और किन पड़ावों से गुजरकर राष्ट्रीयता के मिशन से व्यावसायिकता तक की यात्रा को उसने संपन्न किया।

आशादी से पूर्व का युग राष्ट्रीयता औरराष्ट्रीय चेतना की अनुभूति के विकास का युग था। इस युग का मिशन और जीवनका उद्देश्य एक ही था : स्वाधीनता की चाह और प्राप्ति का प्रयास। इस प्रयास के तहत् ही हिन्दीपत्र-पत्रिकाओं का आरंभ हुआ। इस संदर्भ में इस तथ्य को भी ध्यान में रखना होगा कि हिन्दी क्षेत्रों के बाहर भी विशेषकर हिन्दीतर भाषी क्षेत्रों में भाषाको राष्ट्रीय अस्मिता का वाहक मानकर सभी पत्रकारों ने हिन्दी को ही अपनी 'भाषा' के रूप में चुना और हिन्दी भाषा के पत्र-पत्रिकाओं के संवर्धन में अपना योगदान दिया। भारतेंदु के आगमन से पूर्व ही पत्रकारिता का आरंभ हो चुका था। हिन्दी भाषा का प्रथम समाचार-पत्र 'उदन्त मार्तण्ड'

30 मई, 1826 को कानपुर निवासी पं॰ युगल किशोर शुक्ल ने निकाला। सुखद आश्चर्य की बात यह थी कि यह पत्र बंगाल से निकला और बंगाल में ही हिन्दी पत्रकारिता के बीज प्रस्पुफटित हुए। 'उदन्त मार्तण्ड' का मुख्य उद्देश्य भारतीयों को जागृत करना तथा भारतीयों के हितों की रक्षा करना था। यह बात इसके मुख पृष्ठ पर छपी पंक्ति से ही ज्ञात होती है: यह उदन्त मार्तण्ड अब पहले पहल हिंदुस्तानियों के हित के हेतु जो आज तक किसी ने नहीं चलाया। समाचार-पत्रों एवं पत्रिकाओं का मूल उद्देश्य सदैव जनता की जागृति और जनता तक विचारों का सही संप्रेषण करना रहा है। महात्मा गांधी की पंक्तियाँ हैं : समाचार पत्र का पहला उद्देश्य जनता की इच्छाओं, विचारों को समझना और उन्हें व्यक्त करना है। दूसरा उद्देश्य जनता में वांछनीय भावनाओं को जागृत करना है। तीसरा उद्देश्य सार्वजनिक दोषों को निर्भयतापूर्वक प्रकट करना है। समाचार-पत्र और पत्रिकाओं ने इन उद्देश्यों को अपनाते हुए आरंभ से ही भारतीयों के हित के लिए विचार को जागृत करने का कार्य किया। बंगाल से निकलने वाला 'उदन्त मार्तण्ड' जहाँ हिन्दी भाषी शब्दावली का प्रयोग करके भाषा-निर्माण का प्रयास कर रहा था वहीं काशी से निकलने वाला प्रथम साप्ताहिक पत्र 'बनारस अखबार' पूर्णतया उर्दू और फारसीनिष्ठ रहा।

1.1.6.2 इलेक्ट्रानिक मीडिया -

जिस प्रकार देश में फसलों का उत्पादन बढ़ाने के लिए हरित क्रांति आई थी दुग्ध उत्पादन के क्षेत्र को बढ़ाने के लिए श्वेत क्रांति चलाए गए उसी प्रकार इस सदी में जिस प्रकार से इण्टरनेट का प्रयोग किया जाता है तो ऐसा लगता है मानो वर्तमान समय इण्टरनेट क्रांति का है क्योंकि इसके क्षेत्र में नित नए-नए आविष्कार और सुविधाएं जिस गति से आ रही हैं तो इस का विकास सुदूर क्षेत्रों तक भी हो जाएगा इसके अलावा 3G और 4G जैसी सुविधाएं भी क्षेत्र में क्रांति का आभास कराती हैं इण्टरनेट सुविधा की उपलब्धता इण्टरनेट का उपयोग इसके लिए बनाए गए विन ब्राउज़र द्वारा किया जा सकता है जैसे विंडोज एक्सप्लोरर गूगल क्रोम मोज़िला फायरफॉक्स आदि जो संस्था उपभोक्ताओं को इण्टरनेट की सुविधा उपलब्ध कराती है उसे इण्टरनेट सर्विस प्रोवाइडर आईएसपी कहते हैं भारत में यह सुविधा देने वाली कुछ बड़ी कंपनियां हैं बीएसएनल वोडाफोन एयरटेल आइडिया एयरटेल

1.1.7 हिन्दी शिक्षण की कठिनाइयाँ / समस्याएँ

हमारी पाठ्यपुस्तकें और यहाँ तक कि कहानी की किताबें भी सामान्यतया मुख्यधारा की भाषा में या राज्य की मानक भाषा में होती हैं। पर अक्सर सामाजिक रूप से पिछड़े समुदायों से आने वाले बच्चों की भाषाई पृष्ठभूमि (बोलियों, शब्दावली और विन्यास की दृष्टियों से) भिन्न होती है। ऐसे बच्चों को स्कूल से जोड़ने वाले पुलों की जरूरत है। उनके और उनके परिवारों के लिए न केवल उनका स्कूल आना एक नई बात होती है, बल्कि अक्सर तो जिस नई दुनिया में वे आ पहुँचते हैं उसमें ठीक से स्थापित होने के लिए उन्हें एक नई भाषा की भी आवश्यकता पड़ती है। ज्ञात से अज्ञात की इस यात्रा का दिशानिर्देशन काफी सावधानी से किए जाने की जरूरत होती है। इस पूरे दौर में ,जब वह घर से स्कूल की दुनिया और फिर मुख्य धारा की मानक भाषा की दुनिया की ओर बढ़ता है, बच्चे के भाषाई विकास की जिम्मेदारी कक्षा 1 तथा 2 के शिक्षकों की होती है।

हमारी प्राथमिक स्कूल व्यवस्था कई मान्यताओं के आधार पर बनाई गई है।

मान्यता 1: बच्चे छः साल की उम्र में स्कूल जाना शुरू करते हैं।

मान्यता 2: बच्चे नियमित रूप से स्कूल जाते हैं।

मान्यता 3: हर साल उन्हें जितना सीखना है, वे वाकई में उतना सीख जाते हैं। आने वाले हर नए साल में शिक्षक उस कक्षा के लिए निर्धारित पाठ्यपुस्तक के पहले अध्याय से प्रारम्भ करता है। यह माना जाता है कि सीखने की प्रक्रिया में बच्चे रैखिक ढंग से प्रगति करते हैं। हर साल उस कक्षा विशेष के लिए नियत विषयवस्तु और सामग्री को पूरा पढ़ाया जाना रहता है। हर साल सीखने की दृष्टि से बच्चे के ज्ञान संसार में बहुत सा "मूल्यवान ज्ञान" जुड़ता जाता है।

इनमें से प्रत्येक मान्यता अधिकांश भारत के लिए, विशेष रूप से सरकारी स्कूलों के बच्चों के लिए, सही नहीं है। कई बच्चे छः साल से पहले ही स्कूल आना शुरू कर देते हैं और कई उसके काफी बाद स्कूल में प्रवेश करते है।[1] उपस्थिति के आँकड़े भी पूरे देश में बदलते रहते हैं। यह कहना अनुचित नहीं होगा कि उत्तर भारत के कई राज्यों में प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों की उपस्थिति अनियमित होती है। इसलिए उनके एक कक्षा से दूसरी में बढ़ने की निरन्तरता के प्रति भी आश्वस्त नहीं हुआ जा सकता। भारत के प्राथमिक स्कूलों में जाने वाले आधे बच्चों की माताएँ खुद कभी स्कूल नहीं गई होतीं; इसे देखते हुए परिवार में पढ़ाई सम्बन्धी कोई मदद मिलने

का कतई भरोसा नहीं किया जा सकता। अक्सर तो किसी को पता ही नहीं होता कि कब कोई बच्चा पढ़ाई में पिछड़ गया है और कितना पिछड़ गया है, या कि उसने प्रारम्भिक कक्षाओं में कुछ बुनियादी ज्ञान हासिल किया भी है या नहीं। शिक्षा सत्र के दौरान 'कोर्स' या पाठ्यपुस्तकों की सामग्री को पूरा करने की मजबूरी शिक्षकों को धकेलती रहती है। [2.]

लेकिन उन बच्चों का क्या होता है जो पर्याप्त प्रगति नहीं कर पाते? हमारी स्कूल व्यवस्था में पिछड़ जाने वाले बच्चों के लिए कोई ऐसे अन्तर्निहित सुधारात्मक ढाँचे नहीं हैं जो उन बच्चों को पहचानें, उनकी समस्याओं को चिन्हित करें और उनकी मदद करने के लिए उपाय करें। कक्षा 1 से आगे बढ़ते ही पाठ्यपुस्तकों की गति काफी तेज होने लगती है, नतीजतन कक्षा 2 के बाद से अनेक बच्चे बहुत पीछे छूटने लगते हैं।

पिछले एक दशक से *प्रथम* ने अनेक राज्यों में शासकीय स्कूल तंत्रों और ग्रामीण समुदायों के साथ काम किया है। हमें लगता है कि प्राथमिक कक्षाओं में पढ़ने की प्रक्रियाओं को तेज करने के लिए संगठित कार्यवाही की जाने की जरूरत है, ताकि कमजोर बच्चों को आगे बढ़कर अपने साथियों के साथ कदम मिलाकर चलने का एक चुनौतीपूर्ण अवसर मिल सके। और इस तरह प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकीकरण के द्वार वाकई में उनके लिए खुल जाएँ। पढ़ना सीखना शिक्षा के लिए पहला और सबसे आवश्यक कदम है। धारा प्रवाह ढंग से पढ़ने में सक्षम हुए बिना कोई बच्चा किसी भी स्कूल या शैक्षिक कार्यक्रम में आगे नहीं बढ़ सकता। इसी प्रकार बुनियादी अंकगणित में ठोस आधार के बिना भी बच्चों के लिए स्कूल में आगे बढ़ना सम्भव नहीं है। उनके सीखने को मजबूती और रफ्तार देने के लिए स्कूल के भीतर और बाहर, दोनों जगह बड़े पैमाने पर सघन प्रयास किए जाने की जरूरत है, ताकि भारत के बच्चे शिक्षा के प्राथमिक चरणों में संतोषजनक और सतत प्रगति कर सकें।

प्रथम के वर्तमान *रीड इण्डिया* (भारत पढ़े) अभियान का लक्ष्य है 2010 तक सभी भारतीय बच्चे प्रवाहपूर्वक पढ़ने लगें और आत्मविश्वासपूर्वक बुनियादी अंकगणित करने लगें। राज्य सरकारों और ग्रामसभाओं के सहयोग से, वर्तमान में यह अभियान 300 से अधिक ग्रामीण जिलों में सक्रिय है। बच्चों के सीखने को मजबूती प्रदान करने के लिए मौजूदा संसाधनों को उत्प्रेरित करना और शैक्षिक ढाँचों को ऊर्जावान बनाना इस अभियान का उद्देश्य है। हमारी आशा है कि बच्चे अपेक्षित स्तर से भी आगे दूर तक जाएँगे।

रीड इण्डिया अभियान के प्रमुख तत्व सीधे-सरल हैं: पहला, बुनियादी सीखना सुनिश्चित करने पर ध्यान देने के लिए प्रतिदिन समय देना जरूरी है। इसके लिए छुट्टियों में भी समय निकाला जाना आवश्यक है। उदाहरण : स्कूल में प्रतिदिन एक 'वाचन का पीरियड' होना, और गर्मियों के महीनों में समुदाय के बीच वाचन के लिए प्रतिदिन एक समय तय करना। दूसरा, बच्चों को पढ़ने और सीखने के लिए उपयुक्त सामग्री की निरन्तर आपूर्ति किया जाना जरूरी है। तीसरा, वयस्कों को बच्चों के साथ काम करने की जरूरत है; ये वयस्क आमतौर पर शिक्षक तथा गाँव के स्वेच्छा से आगे आए लोग होते हैं। इन वयस्कों को प्रशिक्षण और बच्चों के साथ काम करने के दौरान जमीनी सहयोग प्रदान किया जाता है। चौथा, लक्ष्यों की ओर बच्चों की प्रगति पर लगातार नजर रखने की जरूरत है ताकि काम की प्रक्रिया और दिशा में जरूरी सुधार किए जा सकें।

अभियान के सघन चरण के बाद, अगले चार-छः महीनों के लिए उसकी अनुवर्ती योजना बनाया जाना बहुत महत्वपूर्ण है ताकि बच्चों के सुधरे हुए वाचन और अंकगणित के स्तरों को, और उनकी रुचि को बनाए रखा जा सके। अभियान की वास्तविक प्रक्रिया एकदम सीधी और स्पष्ट है। हमने उसे "कमाल" (कम्बाइण्ड एक्टिविटीज़ फॉर मैक्सिमाइज़्ड लर्निंग – अधिकतम सीखने के लिए संयुक्त गतिविधियाँ) नाम दिया है। इन बच्चों के साथ कुछ इस तरह की गतिविधियाँ की जाती हैं।

कहानी सुनाना: यह छोटे बच्चों का मन लगाने वाला एक मजेदार तरीका है। कहानी सुनाने से बच्चों को पात्रों, कथानकों, और घटनाओं से परिचित होने में, तथा ये कहानी में किस तरह एक सूत्र में बन्धे रहते हैं, इसका बोध होने में सहायता मिलती है। बच्चों के पढ़ना सीखने के भी पहले कहानी के प्रवाह का बोध विकसित होना उनके लिए एक महत्वपूर्ण कदम होता है।

जोर से पढ़ना: बच्चों को जोर से पढ़कर कुछ सुनाना "वाचन" को जीवन्त बनाने के सबसे अच्छे तरीकों में से एक है। वाचन का "नमूना" पेश करना महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे बच्चे यह प्रत्यक्ष अनुभव कर सकते हैं कि "अच्छे से पढ़ने" का क्या मतलब है। स्पष्ट उच्चारणों के साथ पढ़े जा रहे हर शब्द के नीचे उँगली रखते जाने से बच्चों को शब्द की आवाज से उसके दिखाई देने वाले स्वरूप का सम्बन्ध जोड़ने में, और साथ ही साथ उसे कहानी के समग्र सन्दर्भ से जोड़ने में मदद मिलती है।

यदि शिक्षक और बच्चों के पास उसी किताब की प्रतियाँ हों और वे साथ-साथ उसे पढ़ें तो यह सबसे अच्छा रहता है। बच्चों के लिए शिक्षक जैसा बनने की, और वह जो करता है उसे करने की इच्छा करना बहुत स्वाभाविक बात है। इसलिए बच्चों का नकल की तरह "झूठमूठ" का वाचन करते दिखाई देना कोई असमान्य बात नहीं है। वास्तविक पढ़ने की ओर बढ़ने में यह पहला महत्वपूर्ण कदम है।

चर्चाएँ और बातचीत: बच्चों को जो कहानियाँ कक्षा में सुनाई गई हैं, या उन्होंने सुनी हैं, उनके बारे में उनमें आपस में बातचीत और चर्चाओं को प्रोत्साहित करने से पाठ/कहानी को वास्तविक जीवन से, और उनके स्वयं के अनुभव से जोड़ने में मदद मिलती है। "बात करना" आसान नहीं है। कई अध्यापक बच्चों को आपस में बात करने के काबिल बनाने के बजाय उन्हें सिर्फ भाषण के ढंग से "सम्बोधित" करते हैं। बातचीत करने वाली गतिविधियों का ढाँचा तैयार करने के लिए नियोजन और अभ्यास की जरूरत होती है। मौखिक अभिव्यक्ति के अवसर इस तरह निर्मित किए जाना चाहिए कि सभी बच्चे उनमें भाग ले सकें। इससे समग्र बोध और जानकारी की समझ मजबूत बनती है।

चित्र बनाना और घसीटकर लिखना: छोटी उम्र से बच्चों को पैंसिल को कागज पर घसीटकर स्वयं को अभिव्यक्त करने को प्रोत्साहित करने से लेखन-पूर्व के कौशल निर्मित करने में सहायता मिलती है। शुरू में बच्चे ऐसे आकार और आकृतियाँ बनाएँगे जो शायद आसानी से पहचानी नहीं जा सकतीं। लेकिन किसी बच्चे से यह पूछने का छोटा सा उपाय करने से कि "यह क्या है?" उसे सोचने व व्यक्त करने में मदद मिलती है। वयस्क सहायक बस उसे चित्र के आगे लिखकर दे सकता है। समय के बीतने के साथ वे ज्यादा पहचाने जा सकने वाले और सुनी या पढ़ी गई कहानी से ज्यादा जुड़े हुए चित्र बनाने लगते हैं। महत्वपूर्ण बात यह है कि हर बच्चे की अभिव्यक्ति उसकी अपनी हो, और किसी की नकल न हो, तथा हर चित्र के साथ ही, वह क्या है, इसके बारे में बच्चे और बड़े व्यक्ति के बीच में चर्चा भी हो।

कूटानुवाद (प्रतीकों का अर्थ समझना): अक्षरों और शब्दों के खेल, ध्वनियों को लिपि चिन्हों से जोड़ने के बुनियादी कौशलों को निर्मित करने का एक आसान तरीका होते हैं। ऐसे कई खेल हैं जो अक्षरों के कार्डों और वर्णमाला के चार्टों की मदद से मौखिक रूप से खेले जा सकते हैं। कूटानुवाद करना या ध्वनि-चिन्ह सम्बन्धों

को अपनेआप समझने लगना पढ़ना सीखने का और ज्ञात तथा अज्ञात पाठ्यांशों से निपट पाने का आत्मविश्वास हासिल करने की प्रक्रिया का एक अतिमहत्वपूर्ण अंग है।

पुस्तकालय और वाचनकक्ष – पुस्तकों तक पहुँच: पुस्तकों में रुचि बनाए रखने के लिए आयु के अनुरूप, नाना प्रकार की, अच्छे चित्रों से सजी किताबों और पाठ्यसामग्री तक बच्चों की पहुँच को सुगम बनाना निहायत जरूरी है ताकि बच्चे किसी भी समय आसानी से और आजादी से ऐसी सामग्री को देख सकें।

प्रारम्भिक कक्षाओं में भाषाई विकास की चुनौती यही है कि पूरे वर्ष के लिए कक्षा की ऐसे प्रभावपूर्ण गतिविधियों को कैसे रचा जाए जो उपरोक्त सभी बुनियादी तत्वों को समेकित ढंग से समाहित करती हों।

बच्चों को बात करने और कागज पर अपने को व्यक्त करने के विविध प्रकार के अवसर भी बार-बार मिलना चाहिए। यह लिखने और पढ़ने के लिए उनकी पूर्व तैयारी करवाते हैं। भाषा के समग्र विकास के लिए इन गतिविधियों को मिलेजुले रूप में करना कारगर होता है: "करो-कहो-पढ़ो-लिखो"। इन गतिविधियों के ऐसे गठजोड़ – जैसे हर शब्द के नीचे उँगली रखते हुए उसे जोर से पढ़ना, पढ़े जा रहे पाठ्यांश पर चर्चा करना, आम शब्दों को पकड़ना, उन्हें लिखना, कहानी पर आधारित तस्वीरें बनाना – ये सभी मिलकर बातचीत करने, पढ़ने और लिखने के लिए मजबूत आधार तैयार करते हैं।

बच्चे व्यक्तिगत रूप से सीखते हैं। पर वे समूहों में भी अच्छे से सीखते हैं। कभी-कभी उन्हें चीजों को खुद करके आजमाने के लिए सामग्री और अवसर भी दिए जाना जरूरी है। और कभी उनके सक्रिय बने रहने के लिए ढाँचों की जरूरत होती है। आज के छोटे बच्चों के रूपान्तरित होकर आत्मविश्वास से भरे कल के योग्य जिज्ञासु वक्ता, पाठक, लेखक और विद्यार्थी बनने में इन सब गतिविधियों का दूरगामी प्रभाव होता है।

क्या बड़े पैमाने पर तेजी से परिवर्तन हो सकता है ? पिछले कुछ वर्षों में हमें कई बड़े राज्यों, जैसे मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, हिमाचल प्रदेश और महाराष्ट्र में पढ़ने के बुनियादी स्तरों में उल्लेखनीय परिवर्तन दिखाई देते हैं।[3] ये महत्वपूर्ण और बड़े परिवर्तन कई कारकों का परिणाम हैं: सीखने के सघन और स्पष्ट लक्ष्य, सरकार के भीतर दृढ़ नेतृत्व, इन लक्ष्यों को हासिल करने के लिए शिक्षकों के प्रशिक्षण और उन्हें दिए जाने वाले क्षेत्र-सहयोग में तालमेल, तथा गाँव के स्तर पर पढ़ने के अभियान को सहयोग देने के लिए लोगों की बड़ी संख्या में भागीदारी।

यदि कुछ राज्य थोड़े ही समय में पढ़ने के बुनियादी स्तरों में बड़े बदलाव ला सकते हैं, तो इससे हमें पता चलता है कि हमारे मौजूदा सीमित संसाधनों के साथ भी यह सम्भव है।

हमारी कक्षा में हम सिद्धार्थ की कहानी के अगले पैराग्राफ पर पहुँच गए हैं। मैं पहले जोर से पैराग्राफ को पढ़ती हूँ। फिर मैं पैराग्राफ को दोबारा हर शब्द के नीचे अपनी उँगली रखते हुए पढ़ती हूँ। कक्षा देख सकती है कि मैं क्या कर रही हूँ। यहाँ भी कुछ कठिन शब्द हैं। हम उन्हें बोलकर देखते हैं। हम उसके बारे में बात करते हैं जो मैंने अभी पढ़ा है। हमारी कहानी में देवदत्त आ गया है। वह सिद्धार्थ से कहता है कि हंस उसका है क्योंकि उसने तीर मारकर हंस को जमीन पर गिराया। कहानी के देवदत्त और सिद्धार्थ की ही तरह मेरी कक्षा के बच्चे भी बहस करते हैं कि वह हंस किसका है। मैं उनकी बातें ध्यान से सुनती हूँ। फिर मैं पैराग्राफ को फिर से जोर से पढ़ती हूँ। बच्चे सुनते हैं और अपनी पाठ्यपुस्तकों में वाक्यों के साथ-साथ आगे बढ़ते हैं। मेरे पढ़ने के साथ-साथ पेज पर उनकी उँगलियाँ भी एक-एक शब्द पर आगे खिसकती हैं। "मेरे जैसा कौन पढ़ेगा?", मैं पूछती हूँ। एक छोटा बच्चा आगे आकर कक्षा के सामने आ जाता है, और अपनी किताब खोलकर उठाए हुए उसे पढ़ता है। आधे समय वह पढ़ता है और आधे समय पढ़ने का स्वांग करता है, पर उसका प्रयास प्रशंसनीय है। एक-एक करके बच्चे आगे आते हैं और पढ़ने का प्रयास करते हैं। हमारा दिन का काम समाप्त होता है। सब अपने बस्तों में अपनी चीजें रखते हैं और जाने की तैयारी करते हैं। जब मैं स्कूल के प्रांगण से बाहर जाते हुए बच्चों को देखती हूँ तो कई बच्चे हाथों में धनुष बाण लिए होने का और आकाश में अदृश्य हंसों पर निशाना लगाने का अभिनय कर रहे हैं। और कुछ अन्य बच्चे, जैसा हमने पढ़ा था, बगीचे में राजकुमार सिद्धार्थ की ही तरह टहल रहे हैं।

1.1.7.1 कक्षा में बहुभाषावाद

यह इकाई कई कक्षाओं की उस वास्तविकता के बारे में है जहाँ विद्यार्थियों की मातृभाषा और विद्यालय की भाषा समान नहीं होती है। ऐसी परिस्थितियों को अक्सर चुनौतीपूर्ण माना जाता है। इस इकाई का उद्देश्य बहुभाषावाद के प्रति जागरूकता और सकारात्मक समझ को उजागर करना है, जिसके अंतर्गत यह बात बताई गई है कि बहुभाषावाद के माध्यम से भाषा कक्षा में सभी विद्यार्थियों को एक साथ पढ़ायी जा सकती है। भारत सहित अधिकांश विश्व में बहुभाषी विद्यार्थी अपवाद नहीं बल्कि आदर्श हैं। एक से अधिक भाषा ज्ञान के

संज्ञानात्मक और व्यावहारिक लाभ के कई शोध और प्रमाण हैं। इस प्रकार का ज्ञान अध्यापन और शिक्षण का अद्भुत साधन है। चाहे किसी भी विषय में विशेषज्ञता हो, प्रत्येक शिक्षक को अपने सभी विद्यार्थियों के भाषा ज्ञान और कौशल की प्रशंसा, प्रचार और उसे निखारने के अवसरों की तलाश करनी चाहिए। एक भाषा और साक्षरता शिक्षक होने के नाते, ऐसा करना आपकी विशेष ज़िम्मेदारी है। यह इकाई दर्शाती है कि यह कैसे संभव है।

बहुभाषी प्रसंगों में प्रभावी कक्षा अभ्यासों के बारे में अंतर्राष्ट्रीय शिक्षण अनुसंधान की खोज के आधार पर समझने वाले तीन कथनः

- ❖ विद्यार्थी उस भाषा में सर्वश्रेष्ठ ढंग से सीखते हैं जिसे वे सबसे अच्छी तरह जानते हैं।
- ❖ शिक्षक उस भाषा में सबसे प्रभावी ढंग से पढ़ाते हैं जिसमें उनकी सबसे अच्छी पकड़ होती है।
- ❖ प्रथम भाषा में जितना अधिक अध्यापन और शिक्षण होता है, शैक्षणिक परिणाम भी उतने ही बेहतर होते हैं।

अब संभव हो, तो किसी साथी के साथ चर्चा करके नीचे दिए गए प्रश्नों का उत्तर दें:

- ❖ एक शिक्षक के रूप में, अपने दैनिक कक्षा अभ्यास के अंतर्गत इन कथनों को एकीकृत करने में किस प्रकार की चुनौतियाँ सामने आती हैं?
- ❖ क्या आपकी कक्षा में आपके और आपके विद्यार्थी, या विद्यार्थियों के बीच आपस में 'भाषा अंतर' की समस्या है? ऐसा है तोः यह आपके अध्यापन और उनके अधिगम को कैसे प्रभावित करता है? यह कक्षा में संबंधों को कैसे प्रभावित करता है?
- ❖ क्या आप अपने अध्यापन में अपने विद्यार्थियों की अन्य भाषाओं की स्वीकृति के लिए कुछ करते हैं? क्यों या क्यों नहीं?

उपरोक्त तीन कथन उस सकारात्मक प्रभाव के उन्नत साक्ष्य को दर्शाते हैं जिसके अंतर्गत मातृभाषा में लंबे समय तक शिक्षण प्रदान करने से विद्यार्थियों की उपस्थिति और उनकी दीर्घकालिक शैक्षणिक सफलता में महत्वपूर्ण वृद्धि होती है।

हो सकता है आपके विद्यालय में पूर्ण रूप से मातृभाषा आधारित शिक्षण संभव नहीं हो, फिर भी आप अपने शिक्षण अभ्यास में कई ऐसे छोटे-मोटे परिवर्तन ला सकते हैं जिससे कक्षा में आपके विद्यार्थियों द्वारा उपयोग की जाने वाली मातृभाषा के संसाधनों में वृद्धि की जा सके।

1.1.7.2 विदेशों में हिन्दी शिक्षण की समस्याएँ

सन 1998 के पूर्व ,मातृभाषियों की संख्या की दृष्टि से विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा के जो आंकड़े मिलते थे उनमें हिन्दी को तीसरे स्थान दिया जाता था। सन 1997 सैन्सस आफ इंडिया का भारतीय भाषाओ के विश्लेषण का ग्रंथ प्रकाशित होने तथा संसार की भाषाओं की रिपोर्ट तैयार करने के लिए यूनेस्को द्वारा सन 1998 में भेजी गई यूनेस्को प्रश्नावली के आधार पर उन्हें भारत सरकार के केंद्रीय हिन्दी संस्थान के तत्कालीन निदेशक प्रोफेसर महावीर सरन जैन द्वारा भेजी गई विस्तृत रिपोर्ट के बाद अब विश्व स्तर पर यह स्वीकृत है मातृभाषियों की संख्या की दृष्टि से संसार की भाषाओं में चीनी भाषा के बाद हिन्दी का दूसरा स्थान है चीनी भाषा के बोलने वालों की संख्या हिन्दी भाषा से अधिक है किंतु चीनी भाषा का प्रयोग क्षेत्र हिन्दी की अपेक्षा सीमित है अंग्रेजी भाषा का प्रयोग क्षेत्र हिन्दी की अपेक्षा अधिक है किंतु मातृभाषियों की संख्या अंग्रेजी भाषियों से अधिक है।

विश्व के लगभग 100 देशों में या तो जीवन के विविध क्षेत्रों में हिन्दी का प्रयोग होता है अथवा उन देशों में हिन्दी के अध्ययन अध्यापन की व्यवस्था है इन देशों को हम तीन वर्गों में विभाजित कर सकते हैं –

वे देश जिनकी भारतीय मूल के प्रवासी नागरिकों की आबादी अपने देश की जनसंख्या में लगभग 40% या उससे अधिक है

इस वर्ग में वह देश आते हैं जो हिन्दी को विश्व भाषा के रूप में सीखते

वह देश जिनमें हिन्दी-उर्दू मातृभाषियों की बड़ी संख्या निवास करती है इन देशों में भारत पाकिस्तान बांग्लादेश नेपाल भूटान आदि देशों के अप्रवासियों/ अनिवासियों की रहने वाली विपुल आबादी सम्पर्क भाषा के रूप में 'हिन्दी- उर्दू' का प्रयोग करती है, हिन्दी उर्दू की फिल्में देखती है गाने सुनती है टेलीविजन के कार्यक्रम देखती हैं।

“लाइनेक्स और ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर के जरिए इन संस्थाओं को हिन्दी का लोकलाइजेशन ग्रुप विकसित करना चाहिए जो हिन्दी भाषा की ध्वनि, लिपि, शब्द, भाषा प्रयोग आदि के संबंध में अपने विचार हिन्दी में दे सके हिन्दी में अभिलेख एवं ई-मेल अधिकाधिक भेज सके।”

1.1.8 हिन्दी भाषा और सूचना प्रौद्योगिकी

वर्तमान समय में अत्याधुनिक तकनीकी उच्च शिक्षा के लिए वरदान साबित हो रही हैं उसका इससे पूरी तरह प्रभावित है। वर्तमान समय में सर्वाधिक शैक्षिक उपकरण अत्याधुनिक तकनीकी पर आधारित हैं। तकनीकी के विकास से सूचनाओं का आदान-प्रदान काफी तीव्र गति से हो रहा है। सूचना को हम शिक्षा की संज्ञा नहीं दे सकते हैं। यह बात सत्य है की सूचना ज्ञान पर आधारित है परन्तु जरूरी नहीं है कि प्रत्येक सूचना का संबंध ज्ञान से हो,वर्तमान समय में अत्याधुनिक तकनीकी के विकास के फलस्वरूप सूचना क्रान्ति का विकास हुआ। सूचना का आदान-प्रदान शुगम होने से आम आदमी तक महत्वपूर्ण सूचनाओं की पहुँच सम्भव हो सकी है। जिसके परिणाम स्वरूप ज्ञान क्षेत्र में आशातीत उन्नति हुई है।

यूनेस्को के अनुसार सूचना प्रौद्योगिकी के अन्तर्गत वैज्ञानिक, प्रौद्योगिकीय और इंजीनियरिंग विषयों के अलावा सूचनाओं के आदान-प्रदान व प्रसंस्करण में काम आने वाली प्रबन्ध तकनीक उनका अनुप्रयोग, कम्प्यूटर तथा मनुष्यों और मशीनों से उनका तालमेल तथा इससे सम्बन्धित सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक मुद्दे आते हैं। तकनीकी उत्पादों का ऐसा ताना-बाना तैयार हो गया है, जिसमें सूचना प्रबन्ध को एक नया तकनीकी आयाम दिया गया है। ओ०ई०सी०डी० 1987 सूचना तकनीकी को एक ऐसा शब्द मानता है, जिसका प्रयोग सूचनाओं के संग्रहण प्रसंस्करण एवं प्रेषण में काम आने वाली तकनीकी के संदर्भ में किया जाता है। इसके अन्तर्गत कई उत्पादों और उस पार प्रक्रियाओं में उपयोग में लाई जाने वाली माइक्रो इलेक्ट्रॉनिक और इलेक्ट्रॉनिक एन्फो इलेक्ट्रानिक पर आधारित ऐसी तकनीकी शामिल है जिसका प्रभाव सेवा क्षेत्र में बढ़ता ही जा रहा है। इसके अलावा कम्प्यूटर कार्यालयों के इलेक्ट्रॉनिक उपयोग, दूरसंचार, औद्योगिक एवं कम्प्यूटर नियंत्रित मशीन इलेक्ट्रॉनिक उपकरण और उत्पाद शामिल हैं।

सूचना तकनीकी को ऐसे व्यवस्थित अध्ययन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। जिसका उपयोग निर्णय लेने की प्रक्रिया को अधिक अर्थ पूर्ण बनाने में तथा इसकी मदद से तथ्यों को उचित स्वरूप एवं आकार देने में किया जाता है। इस परिभाषा में ये सभी चीजें शामिल हैं जिनका उपयोग संगठन, प्रसंस्करण, संचार और सूचनाओं के उपयोग में किया जाता है। इस प्रकार देखा जाए तो सूचना तकनीकी सूचनाओं के कुशल प्रबन्धन एवं सॉफ्टवेयर के प्रयोग के रूप में की जाती हैं। सभी सूचनाओं के संग्रहण व पुनः प्राप्ति, प्रसंस्करण, संचार प्रसार और सामाजिक, आर्थिक, व सांस्कृतिक उत्थान के लिए इसका मिलजुलकर उपयोग करना इसके दायरे में आता है।

सूचना प्रौद्योगिकी की प्रकृति गतिशील है इसमें उच्च शिक्षा के विभिन्न पहलुओं के प्रबन्धन और इनमें सुधार की व्यापक संभावनाएं रहती हैं। आज हम ऐसी दुनिया में जीवन यापन कर रहे हैं। जो अत्याधुनिक तकनीकी पर आधारित है। जिसके फलस्वरूप केवल शिक्षा ही नहीं अपितु गुणवत्ता एवं विशेषज्ञता वाली शिक्षा से हम विश्व प्रतिस्पर्धा की किसी भी चुनौती से निपट सकते हैं। सूचना तकनीकी व्यक्ति में कौशल विकास करके उसमें उच्च पदस्थ होने के अवसर बढ़ा देती है। आधुनिक समाज ज्ञान पर आधारित समाज बनता जा रहा है। आज भारत दुनिया के अन्य देशों के सम्मुख विकास क्रम में वरीयता पाने के लिए प्रयासरत है। सबको साथ लेकर चलने वाले सामाजिक आर्थिक विकास के बिना ऐसा संभव नहीं हो सकता है। इसी कारण शिक्षा को केवल समाज के सभी वर्गों के सशक्तीकरण का ही नहीं अपितु अपेक्षित वर्गों के उत्थान का महत्वपूर्ण माध्यम माना जा रहा है और उपेक्षित वर्ग को शेष समाज की बराबरी पर लाने के सुनियोजित प्रयास किए जा रहे हैं। इसके अन्तर्गत गरीब उपेक्षित एवं दूर-दराज के छात्रों के लिए उच्च शिक्षा के अवसर उपलब्ध कराने के उपाय भी शामिल हैं।

1.1.8.1 वर्तमान परिदृश्य एवं उच्च शिक्षा

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होने के नाते अन्य प्राणियों की तरह ही पाशविक प्रवृत्तियोंबात हुई प्रवृत्तियों व विशिष्ट जैविक विरासत के साथ जन्म लेता है। उसे सामाजिक बनाना समाज का काम है। जो व्यक्ति समाज के सम्पर्क में नहीं रह सकता वह मनुष्य होते हुए भी पशुवत जीवन व्यतीत करता है। यह सार्वभौम सत्य

है कि मनुष्य समाज में रहकर ही सामाजिक प्राणी बन सकता है, और मनुष्य को सामाजिक प्राणी बनाने में शिक्षा का प्रमुख स्थान होता है। शिक्षा के माध्यम से ही मनुष्य में सामाजीकरण की प्रक्रिया पूर्ण हो पाती है।

शिक्षा के विकास में आज जिस प्रकार की शिक्षा समाज में प्रचलित हो रही है। उससे हमारे समाज को कोई नई विकास की गति नहीं मिल सकती है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में आज केवल साक्षरता ही प्रदान की जा रही है और यह साक्षरता केवल मनुष्य का मशीनीकरण कर रही है। इससे निकट भविष्य में जो परिणाम होगे वह काफी भयावह होंगे। जिस प्रकार किसी चाकू का प्रयोग फल काटने के लिए किया जाता है और उसी चाकू का प्रयोग किसी की जान लेने के लिए भी किया जा सकता है। जिस प्रकार से आज शिक्षा का व्यवसायीकरण किया जा रहा है। उस परिस्थिति में शिक्षक ही ऐसा माध्यम है जो वर्तमान शैक्षिक व्यवस्था में परिवर्तन ला सकता है। सूचना एवं संचार तकनीकी में भी शिक्षक को सजग रहने की आवश्यकता है। क्योंकि जैसा शिक्षक का व्यवहार या आचरण होगा विद्यार्थी भी उसी व्यवहार या आचरण का अनुसरण करेंगे। परंपरागत मूल्यों एवं वर्तमान संचार प्रौद्योगिकी में सामंजस्य लाकर एक ऐसी उदारवादी शिक्षा की व्यवस्था हमें करनी होगी जो विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा के बाद उनमें नैतिकता के विकास के साथ-साथ उनके तकनीकी कौशलो का भी विकास कर सके। शिक्षक को भी इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह जिस प्रकार से अपने ज्ञान का संप्रेषण करते हैं वह पूरी तरह से समाजोपयोगी होने के साथ व्यक्तित्व विकास को प्रभावी बना सके। ऐसा तभी संभव है जब शिक्षक अपने विषय के प्रति सजग एवं जागरूक होगा एवं उसका व्यक्तित्व प्रेरणादाई होगा।

1.1.8.2 सूचना प्रौद्योगिकी और शिक्षण व्यवस्था

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अध्यापन आमतौर पर सूचनाएं देने तक सीमित नहीं है। बल्कि वह उच्च शिक्षा के विद्यार्थियों में स्वावलंबन की भावना का विकास करता है। सूचनाएं देने के साथ-साथ उच्च शिक्षा स्तर पर शिक्षण में उचित पहलुओं को सम्मिलित करना एक मुख्य चुनौती है। उदाहरण के तौर पर बालक में तार्किक क्षमता का विकास, निर्णय लेने की क्षमता का विकास, आत्मनिरीक्षण मूल्यबोध का विकास, अध्ययन आदतों का विकास एवं मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति के विकास पर शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य होना चाहिए।

शिक्षा के लिए उपलब्ध बुनियादी ढांचे, कक्षा के आकार, अध्यापकों की उपलब्धता, उनके परीक्षण की व्यवस्था आदि को देखते हुए उच्च शिक्षा के तमाम लक्षयों को प्राप्त करना मुश्किल है। ये लक्ष्य बहु-आयामी है इसलिए इन्हें प्राप्त करने के लिए विभिन्न विधियों को समन्वित रूप से इस्तेमाल में लाना जरूरी है। सूचना प्रौद्योगिकी आज इसमें मददगार साबित हो सकती है। यह बात तो सर्वविदित है कि अद्यतन सूचनाएं देकर हमारी सूचना प्रौद्योगिकी गुणात्मक परिवर्तन ला सकती है क्योंकि इसके माध्यम से सूचना के विभिन्न स्रोतों तक हमारी पहुंच आसान हो जाती है। यह विभिन्न रूपों में सही-सही सूचनाएं विस्तृत रूप में उपलब्ध करा सकती हैं। सूचना तकनीकी विषय वस्तु को प्रस्तुत करने में विविधता के अवसर प्रदान करती है। जिससे अधिगमकर्ता को सीखने एवं ध्यान केंद्रित करने में सहायता मिलती है और इसके साथ-साथ विषय वस्तु को बेहतर तरीके से समझ सकता है। लचीलापन सूचना प्रौद्योगिकी की विशेषता है। परंपरागत विधियों और प्रक्रिया में सीखने वाले को लचीलापन की सुविधा यह सुविधा नहीं मिलती है । सीखने में श्रेष्ठता और कुशलता प्राप्त करने के लिए लचीलापन बेहद जरूरी है।

1.1.8.3 शिक्षण में तकनीकी साधनों का अनुप्रयोग

आज उच्च शिक्षा स्तर पर शिक्षा व्यवस्था की स्थिति काफी दयनीय होती जा रही है। इसमें सुधार के लिए तकनीकी संसाधन एक अच्छा विकल्प हो सकते हैं। उच्च शिक्षा में वित्तीय उलझनों के कारण योजनाएं बनाने वाले प्रशासकों, प्रबन्धकों और योजनाएं कार्यान्वित करने वाले अधिकारियों को संसाधनों के विकास और प्रबन्धन के किसी वैकल्पिक तरीके पर विचार करना होगा जिसमें सूचना तकनीकी को एक विकल्प के रूप में शामिल किया जा सकता है। सूचना तकनीकी का बेहतर एवं समुचित उपयोग करके विद्यार्थी, अध्यापक एवं शोधार्थी उच्च शिक्षा की स्थिति में गुणात्मक सुधार ला सकते हैं।

1.1.8.4 शिक्षक और शिक्षा में तकनीकी कौशल

सीखने अधिगम की गुणवत्ता के कई नियामक हैं। इसमें एक है- अध्यापक की गुणवत्ता। प्राचीन समय में यह मान्यता थी कि अध्यापक जन्मजात होते हैं। परन्तु आज यह धारणा बदल चुकी है। अन्य प्रशिक्षण संस्थानो की तरह अध्यापक प्रशिक्षण संस्थान भी खोले जा रहे हैं और इन को अत्याधुनिक बनाया जा रहा है। पहले स्कूल स्तर पर अध्यापन के इच्छुक लोगों को अध्यापन के विभिन्न पहलुओं का प्रशिक्षण दिया जाता था लेकिन अब कालेज और विश्वविद्यालय स्तर के अध्यापकों को भी प्रशिक्षण दिया जाने लगा है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्यापकों के कौशल विकास की अति आवश्यकता है लेकिन विभिन्न स्तर के अध्यापकों की संख्या इतनी अधिक है कि सभी स्तरो को प्रशिक्षण संस्थान इतनी बड़ी तादाद में अध्यापन के कौशल विकास की जिम्मेदारी पूरी नहीं कर सकते हैं। इसके कई कारण हैं जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं।

1- गुणात्मक प्रशिक्षण संस्थानों में कोई गुणात्मक या संस्थात्मक विस्तार नहीं हुआ है।

2- कुछ विशिष्ट क्षेत्रों में भारतीयों प्रशिक्षणार्थियों की ही कमी महसूस की गई है।

3- आधारभूत ढांचे से सम्बन्धित सुविधाओं का अभाव।

4- प्रशिक्षण व्यवस्था कार्यस्थल से दूर होना।

5- प्रशिक्षण संस्थानों की सीमित संख्या।

6- सीमित आर्थिक संसाधन।

उपर्युक्त कमियों को सूचना तकनीकी के माध्यम से दूर किया जा सकता है। समुचित शिक्षा के लिए पूरे देश को विभिन्न क्षेत्रों में बाटकर प्रत्येक क्षेत्र में संसाधन केन्द्र स्थापित करके इन केंद्रों पर इण्टरनेट सुविधा से युक्त कम्प्यूटर और दृश्य-श्रव्य साधन रिकॉर्डिंग प्रणाली जैसी आधुनिकतम सुविधाओं द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में आशातीत सुधार लाया जा सकता है।

1.1.8.5 सूचना तकनीकी का विस्तार

आज सूचना तकनीकी ने पूरी दुनिया को ग्लोबल विलेज में बदल दिया है क्योंकि आज मानव का सम्पर्क पूरी दुनिया में हो चुका है। वह किसी भी समय विश्व के किसी भी कोने में स्थित व्यक्ति से सम्पर्क स्थापित कर सकता है। किसी भी शैक्षिक समस्या पर चर्चा कर सकता है, विचार विमर्श कर सकता है, सूचना प्राप्त कर

सकता है और ऐसी सूचनाओं का ताजा उपयोग कर सकता है जो आसानी से उपलब्ध नहीं है। इससे स्पष्ट है कि आज हम दुनिया के किसी भी कोने तक आसानी से पहुंच सकते हैं। यह सब कम्प्यूटर एवं इण्टरनेट वॉइस मेल ईमेल वीडियो में आज के आविष्कार से संभव हुआ है।

1.1.9 कम्प्यूटर एवं इंटरनेट विषय सजगता का आधार हिन्दी कम्प्यूटिंग

वर्तमान समय में कम्प्यूटर एक बहुतउपयोगी तकनीकी यंत्र है। कम्प्यूटर की यह बहुउपयोगिता उसकी विस्तृत प्रणाली में शामिल है। आज कम्प्यूटर लगभग वह सभी कार्य कर सकता है जिसकी हमें अपने भौतिक जीवन में आवश्यकता है। हमारे पूर्वजों ने कई सारे ऐसे कार्य किए हैं जिनके परिणाम स्वरूप मानव सभ्यता के विकास में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए। आग, पहिया, कृषि तथा शून्य के अविष्कारों से मानव सभ्यता के विकास में काफी प्रगति हुई। ये सभी अविष्कार ईसा पूर्व हुए, उसके बाद अनेक भौगोलिक खोजें हुई जिनके परिणाम स्वरूप मानव की विश्व के कोने-कोने तक पहुँच हो गई। परिवहन के साधनों के विकास के साथ-साथ मानव एक स्थान से दूसरे स्थान तक आसानी से पहुँच सकने में सक्षम हो गया।

यूरोप की औद्योगिक क्रांति ने सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित किया इन्हीं सब खोजों, क्रांतियों एवं अविष्कारों के परिणाम स्वरूप मानव का जीवन सरल तथा शुभम बन गया।19वीं शताब्दी में एक ऐसी ही क्रांति सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हुई। सूचना प्रौद्योगिकी की इस क्रांति ने मानव समाज को सर्वाधिक प्रभावित किया। मनुष्य की दिनचर्या, सोचने-विचारने की शक्ति एवं उसके व्यवहार के तरीकों में काफी परिवर्तन आया। इस सूचना क्रांति का आधार कम्प्यूटर ही है। अपने प्रारम्भिक समय में यह कम्प्यूटर सामान्य मानव की पहुँच में नहीं था। यह केवल मनोवैज्ञानिक प्रयोगशालाओं तथा अनुसंधान केंन्द्रों तक ही सीमित था। उस समय इसका उपयोग मानव आसानी से नहीं पाता था। इसके अतिरिक्त इसका आकार भी अत्यधिक विस्तृत था। जिसके कारण इसका रख-रखाव आसानी से नहीं हो पाता था इसके परिणाम स्वरूप इसका तात्कालिक लाभ अत्यधिक सीमित था।

1.1.9.1 कम्प्यूटर की आधारभूत संकल्पना

कम्प्यूटर एक ऐसी युक्ति है जिसका अनुप्रयोग विभिन्न प्रकार के कार्यों को संपन्न करने में किया जाता है। कम्प्यूटर का यह नाम अंग्रेजी भाषा के कम्प्यूटर शब्द से लिया गया है। कम्प्यूटर शब्द का शाब्दिक अर्थ 'गणना करना' होता है। इस प्रकार हम संक्षेप में कम्प्यूटर को एक गणना करने वाला यंत्र कह सकते हैं। हिन्दी भाषा में कम्प्यूटर को 'संगणक' के नाम से जाना जाता है। संगत से तात्पर्य गणना करने वाले यंत्र से है परन्तु साधारण बोलचाल की भाषा में यह कम्प्यूटर नाम से ही प्रचलित है। साधारण रूप में कम्प्यूटर को एक ऐसी व्यवस्था माना जा सकता है जिसमें वैज्ञानिक एवं गणितीय क्रियाओं संपादित की जाती हैं। कम्प्यूटर एक साधारण कैलकुलेटर की तरह कार्य करता है। वस्तुतः कैलकुलेटर एक ऐसी व्यवस्था है जो प्रयोगकर्ता द्वारा दी गई संख्याओं पर गणितीय कार्य करके उपयुक्त परिणाम प्रदान करता है। कैलकुलेटर के तुलना में कम्प्यूटर की कार्यप्रणाली काफी मजबूत तथा विस्तृत है। कम्प्यूटर को उसका प्रयोगकर्ता कुछ आंकड़े देता है। इन आंकड़ों में अंक , चित्र, लेख तथा संख्याएं इत्यादि सम्मिलित रहते हैं। कम्प्यूटर को आंकड़े अथवा डेटा देने के उपरान्त आंकड़ों पर जो भी कार्य अथवा क्रिया होनी है उसकी सूचना निर्देश अथवा कमांड के रूप में कम्प्यूटर को दी जाती है। संक्षेप में यहां आंकड़ों पर किए जाने वाले कार्य अथवा क्रिया पूर्ण कर प्राप्त परिणाम प्रयोगकर्ता के समक्ष प्रस्तुत करता है।

कैलकुलेटर की अपेक्षा कम्प्यूटर का कार्य-क्षेत्र अत्यधिक व्यापक है। कैलकुलेटर मात्र सांख्यिकीय आकड़ों को ग्रहण करता है, जबकि अनेक प्रकार के आंकड़ों जैसे –टेक्ट अर्थात किसी भाषा में लिखा हुआ लेख, अंक, संख्या इत्यादि ग्रहण कर सकता है। इसके अतिरिक्त कम्प्यूटर उस पर विभिन्न प्रकार की क्रियाएं कर प्रथक-प्रथक स्वरूप तथा प्रारूप में प्राप्त आंकड़ों को मन-वांछित रूप प्रदान कर सकता है।

1.1.9.2 **कम्प्यूटर पर विभिन्न मत**

कम्प्यूटर एक उपयोगी तथा बहुरूपीय यंत्र है जिसके परिणामस्वरूप उसे परिभाषित किया जाना सरल नहीं है किंतु इस पर अनेक विद्वानों ने अपने मत व्यक्त किए हैं। कम्प्यूटर पर ऐसे ही कुछ मतों का विवरण निम्नलिखित है।

हेनरी ए० फोर्ड के अनुसार फोर्ड "कम्प्यूटर विद्युतीय तथा यांत्रिक कल पुर्जों के सम्मिलन से बनी एक ऐसी युक्ति है जिसमें अनेक निर्देश समाहित रहते हैं। किसी समस्या के हल के लिए कम्प्यूटर उपयोगकर्ता से आवश्यक आंकड़े ग्रहण करता है। उन आंकड़ों पर समस्या से संबंधित निर्देशों का पूर्व निर्धारित क्रम में अनुपालन करते हुए कार्य करता है तथा प्राप्त परिणाम को उपयुक्त स्वरूप में परिवर्तित करके प्रयोगकर्ता को प्रस्तुत करता है।"

1.1.10 हिन्दी कम्प्यूटिंग का इतिहास

मानव की बदलती परिस्थितियों के परिणाम स्वरूप उसको तीव्र गति से कार्य करने की आवश्यकता महसूस हुई, यही आवश्यकता कम्प्यूटर के विकास का आधार बनी। समय की बदलाव के साथ-साथ कम्प्यूटर के स्वरूप में भी परिवर्तन आता गया। कम्प्यूटर के विकास क्रम को निम्न चित्र द्वारा दर्शाया जा

सकता है

नेपियर बोन्स डिवाइस (1600)

स्लाइड रूल डिवाइस (1620)

मैकेनिकल डिजिटल कैल्कुलेटर (1642)

रेकनिंग मशीन (1671)

जेकार्ड लूम (1801)

डिफरेन्स इंजन (1822)

एनालिटिकल इंजन (1833)

मेटाकाल्फ कार्ड (1870)

सैंसस टेब्यूलेटर (1890)

पावर पंच कार्ड (1908)

मार्क–1(1944)

एटानसोफ बेरी कम्प्यूटर (1945)

एनिऐक (1946)

ट्रांजिस्टर (1948)

एडसेक (1949)

एडवेक (1950)

यूनिवेक (1951)

मिनी कम्प्यूटर (1960)

सुपर कम्प्यूटर (1974)

आई0बी0एम0पी0सी0 (1980)
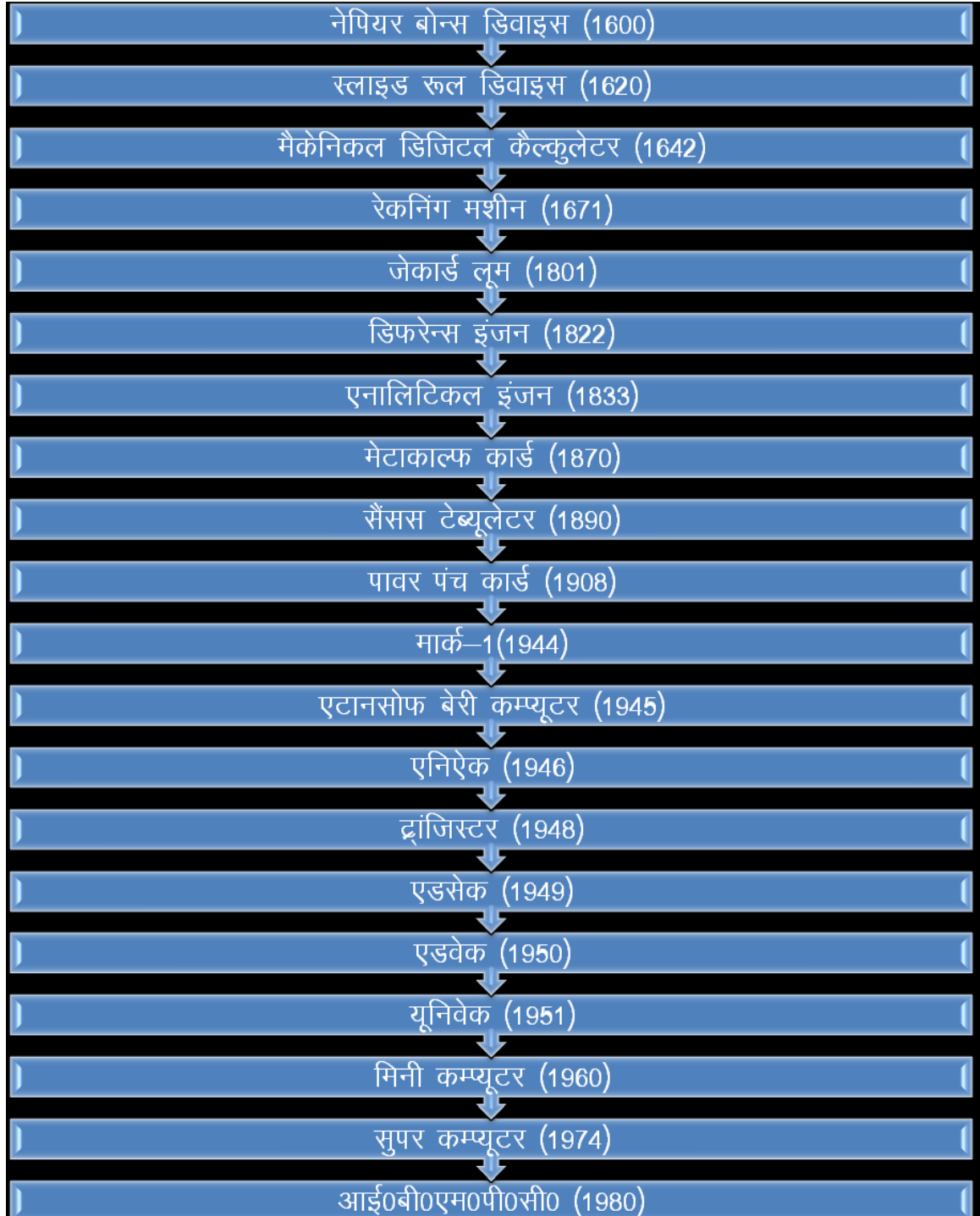
पहली पीढ़ी के कंप्यूटरों की शुरुआत 1951 के दशक में (VNIVACI) के साथ हुई। इनमें वेक्यूम ट्यूब का प्रयोग किया गया और इनकी मेमोरी तरल पारे और विद्दुती ड्रम्स की पतली नली से निर्मित की गयी थी।
1950 के दशक के अन्त में द्वितीय पीढ़ी के कंप्यूटरों में वेक्यूम ट्यूब्स की जगह ट्रांजिस्टरों ने ले ली और मेमोरी के लिए मैग्नेटिक कोर का निर्माण होने लगा। पहले की अपेक्षा परिणाम पहले की अपेक्षा कम्प्यूटर का आकार छोटा हो गया और विश्वसनीयता भी बढ़ गई।

तीसरी पीढ़ी के कंप्यूटरों की शुरुआत 1960 के दशक के मध्य में हुई। इनमें पहली बार इंटीग्रेटेड सर्किट(IBM 360 A CDC 6400) और ऑपरेटिंग सिस्टम का इस्तेमाल हुआ। इनमें ऑनलाइन सिस्टम का बड़े पैमाने पर विकास हुआ। इस समय के कंप्यूटरों में पंच कार्डस और विद्धुतीय टेप्स का इस्तेमाल कर बैच पर आधारित प्रोसेसिंग हुआ करती थी।

चौथी पीढ़ी के कंप्यूटरों की शुरुआत 1970 के दशक के मध्य में हुई। कम्प्यूटर के निर्माण में चिप का प्रयोग किया जाने लगा जिसके फलस्वरूप प्रोसेसर्स (माइक्रोप्रोसेसर) और निजी कंप्यूटर्स (पर्सनल कम्प्यूटर) अस्तित्व में आए इस समय के कम्प्यूरों में डिस्ट्रीब्यूटर प्रोसेसिंग और ऑफिस ऑटोमेशन की शुरुआत हुई। इस दौरान क्यूरी भाषाओं रिपोर्ट रायटर्स और स्प्रेडशीट्स की वजह से काफी संख्या में लोग कम्प्यूटर से जुड़े।

पांचवी पीढ़ी के कंप्यूटरों में कंप्यूटिंग के कई उपयोगी तरीकों-आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और ट्रयू डिस्ट्रीब्यूटेस प्रोसेसिंग को शामिल किया।

धीरे-धीरे कम्प्यूटर की तकनीकी में व्यापक सुधार होता गया इसके आकार में छोटापन, उपयोग में सरलता तथा मूल्य काफी कम हो गए।
मूल्यों में गिरावट के फलस्वरूप इसकी पहुंच घर घर में हो गई अब यह हर जगह आसानी से उपलब्ध हो जाता है तथा यह वैज्ञानिक एवं अनुसंधान कार्यो के अतिरिक्त व्यापारिक प्रतिष्ठानों, घर, कार्यालय, विद्यालयों इत्यादि की आवश्यक वस्तु बन चुका है। वर्तमान समय में कम्प्यूटर जटिल से जटिल कार्यों को सुगमता से संपादित कर रहा है। मानव की क्षमता से कई गुना अधिक एवं त्रुटिहीन कार्य कम्प्यूटर द्वारा कम समय में किया जा रहा है। कम्प्यूटर के प्रयोग से जहां एक ओर मानव की अमूल्य समय की बचत होती है वहीं दूसरी तरफ उसके कार्य में शत-प्रतिशत शुद्धता सुनिश्चित होती है। निश्चित ही वर्तमान समय में कम्प्यूटर के कार्य क्षेत्र

में विस्तार हो रहा है। इसका प्रयोग हमारे दैनिक जीवन की आवश्यकता बनता जा रहा है। वर्तमान में बैंक, रेल आरक्षण काउंटर, कार्यालय, विद्यालय इत्यादि स्थानों पर इनके प्रयोग के बिना कार्य हो पाना असंभव सा प्रतीत होता है।

वर्तमान में यह ज्ञान के आदान-प्रदान का सशक्त माध्यम है। आज इंटरनेट की सहायता से पृथ्वी पर "वसुधैव कुटुंबकम" की भावना चरितार्थ हो रही है। सुदूर स्थानों से हम सूचनाएं कम्प्यूटर में इंटरनेट के माध्यम से आसानी से प्राप्त कर लेते हैं आज कम्प्यूटर का उपयोग स्वास्थ्य विज्ञान तकनीक सेना, शिक्षक इत्यादि सभी क्षेत्रों में सफलतापूर्वक हो रहा है।

यह हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि कम्प्यूटर आज तकनीकी की दृष्टि से अत्यधिक उन्नत हो चुका है दिन- प्रतिदिन इसके नए आयाम स्थापित हो रहे हैं।

1.1..10.1 हिन्दी कम्प्यूटिंग की विकास यात्रा

हिन्दी कम्प्यूटिंग की आरम्भिक यात्रा पर नजर डाली जाए तो स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि हिन्दी कम्प्यूटिंग का इतिहास भी लगभग उतना ही पुराना है जितना कि कम्प्यूटर का। यह बात अलग है कि कम्प्यूटर में केवल अंग्रेजी का ही वर्चस्व बना रहा और हिन्दी कम्प्यूटिंग कहीं पीछे हाशिए पर चली गई। किन्तु धीरे-धीरे ही सही अब इस क्षेत्र में भी प्रगति हो रही है और डिजिटल दुनिया में हिन्दी भी अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करा रही है। सबसे पहले 1970-73 के बीच श्री आर. एम.के. सिन्हा और श्री एच.एन. महाबाला ने देवनागरी ऑप्टिकल कैरक्टर रिकग्रिशन (OCR) पर तथा श्री पी. बी. एच. एल. नरसिम्हन, श्री वी.राजारमन और श्री बी.प्रसाद ने की-बोर्ड और कोडिंग स्कीम विकसित करने पर काम किया। किन्तु कम्प्यूटरों की अधिक कीमत होने के कारण व्यावहारिक रूप से इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा। इस क्षेत्र में वास्तविक शुरुआत भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT) कानपुर के श्री आर. एम.के. सिन्हा और श्री एस. के. मलिक के प्रयासों से हु। उन्होंने 'एकीकृत देवनागरी कम्प्यूटर' के डिजाइन और विकास के प्रोजेक्ट पर काम किया और मात्र 8 महीने के अल्प समय में ही 'एकीकृत देवनागरी कम्प्यूटर' तैयार हो गया तथा 1983 में दिल्ली में आयोजित तीसरे विश्व हिन्दी सम्मेलन में इसका प्रदर्शन भी किया गया। इसके बाद बारी आई

'जिस्ट प्रौद्योगिकी' (Graphical and Intelligence based Script Technology- GIST) की जिसने भारतीय भाषाओं से संबंधित मशीन भाषाई इंटरफेस की जटिल समस्या को काफी हद तक सुलझा दिया। 1983 में ही सी-डैक (C-DAC) ने जिस्ट प्रौद्योगिकी को अपनाया और इसके बाद कम्प्यूटिंग के लिए हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के मानकीकरण (India Languages Standardization) का कार्य आरम्भ हुआ। इस तरह हिन्दी कम्प्यूटिंग की यह विकास यात्रा प्रगति के पथ पर चल पड़ी और एक के बाद एक साप्टवेयर अस्तित्व में आते गए। डिजिटल दुनिया में हिन्दी कम्प्यूटिंग की इस यात्रा को संक्षेप में इस टेबुल के माध्यम से समझा जा सकता है:-

1983 डॉस (DOC) हिन्दी आधारित कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी / सॉफ्टवेयरों का विकास आरम्भ

1986 सूचना एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिक कि विभाग (DOE) द्वारा भारतीय भाषाओं के लिए इनस्क्रिप्ट की-बोर्ड को मानक की-बोर्ड के रूप में मान्यता।

1991 यूनिकोड का आगमन जिसमें नौ भारतीय लिपियों देवनागरी, बंगाली, गुजराती, गुरुमुखी, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम तथा ओड़िया को शामिल किया गया। यह एक क्रांतिकारी बदलाव सिद्ध हुआ।

1993 माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस प्रोफेशनल के आने के बाद 8-बिट (bit) हिन्दी फॉन्टो (Hindi fonts) से विंडोज में हिन्दी वर्ड प्रोसेसिंग संभव।

1995 विंडोस के लिए सी-डैक द्वारा हिन्दी सहित अन्य भारतीय भाषाओं के समर्थन युक्त लीप ऑफिस(Leap office) श्री लिपि (Cdac shree Lipi) तथा अक्षर (Akshar) आदि वर्ड प्रोसेसरों का आगमन।

1996, 14 सितंबर को हिन्दी दिवस के अवसर पर तत्कालीन रक्षा मंत्री मुलायम सिंह यादव ने पीसी-डॉट के हिन्दी संस्करण का विमोचन किया जिसमें एक हिन्दी प्रोग्रामिंग भाषा भी शामिल थी।

2000 यूनिकोड के माध्यम से हिन्दी समाचार पत्रों के आगमन से इंटरनेट पर हिन्दी क्रांति की शुरुआत सीडैक के हिन्दी ऑपरेटिंग सिस्टम एंड इट्स की शुरुआत विंडोज 2000 एवं माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस के दक्षिण एशियाई संस्करण में हिन्दी समर्थन आरम्भ

2002 लिनक्स ऑपरेटिंग सिस्टम और अन्य प्रोग्रामों के हिन्दीकरण की शुरुआत।

2015 गूगल डॉक्स की ओसीआर (Googal Docs OCR) सुविधा में हिन्दी भाषा भी शामिल की गई।

1.1.10.2 हिन्दी कम्प्यूटिंग की विधियाँ

यूनिकोड के उदय के पश्चात कम्प्यूटर पर भारतीय भाषी टैक्स्ट इनपुट करना बहुत आसान हो गया है। इस कार्य हेतु कई विधियाँ उपलब्ध हैं, जिनमें से मुख्य हैं:-

इनस्क्रिप्ट

इनस्क्रिप्ट भारतीय भाषाओं हेतु मानक कुंजीपटल है। यह सी-डैक के द्वारा विकसित किया गया तथा भारत सरकार द्वारा मानकीकृत किया गया। आजकल यह सभी मुख्य ऑपरेटिंग सिस्टमों लिनक्स तथा मॅकिन्तोश शामिल हैं।

ध्वन्यात्मक लिप्यन्तरण

यह एक टाइपिंग विधि है जिसमें प्रयोक्ता हिन्दी (अथवा कोई इण्डिक) टैक्स्ट को रोमन में टाइप करता है तथा यह रियल टाइम में समकक्ष देवनागरी (अथवा इण्डिक लिपि) में ध्वन्यात्मक रूप से परिवर्तित हो जाता है। इस प्रकार का स्वचालित परिवर्तन ध्वन्यात्मक टैक्स्ट ऍटीटर, वर्ट प्रोसैसर तथा सॉफ्टवेयर प्लगइन के द्वारा किया जाता है। परन्तु सर्वश्रेष्ठ तरीका फोनेटिक आइऍमई का प्रयोग है जिसकी सहायता से टैक्स्ट किसी भी ऍप्लीकेशन में सीधे ही लिखा जा सकता है। फोनेटि ट्राँसिलिट्रेशन आधारित आइऍमई के उदाहरण हैं बरह आइऍमई, इण्डिक आइऍमई, गूगल इण्डिक लिप्यन्तरण आदि।

ये मुख्य रूप से दो प्रकार के होते हैं:-

- निश्चित लिप्यन्तरण स्कीम आधारित जैसे इण्डिक आइऍमई, बरह आइऍमई आदि।
- शब्दकोश आधारित जैसे गूगल इण्डिक लिप्यन्तरण, क्विलपैड आदि।

पहले प्रकार के औजार एक निश्चित लिप्यन्तरण स्कीम के आधार पर टैक्स्ट को भारतीय लिपि में बदलते हैं जबकि दूसरे प्रकार के औजार पहले रोमन में टाइप किये गये शब्द को एक शब्दकोश के साथ तुलना करते हैं और फिर उसे समकक्ष इण्डिक शब्द में बदलते हैं।

रेमिंगटन (टाइपराइटर)

यह कीबोर्ड लेआउट तब विकसित किया गया था जब कम्प्यूटरों का आविष्कार नहीं हुआ था या फिर उनमें भारतीय भाषाओं उपलब्ध नहीं थीं तथा भारतीय लिपियों में टाइप करने हेतु टाइपराइटर ही एकमात्र साधन थे। चूंकि टाइपराइटर यान्त्रिक (मैकेनिकल) थे एवं तथा उनमें स्क्रिप्ट प्रोसैसर इंजन शामिल नहीं हो सकता था, इसलिये हर चिह्न (वर्ण) को कुंजीपटल पर अलग से स्थान देना पड़ा जिसके परिणामस्वरुप काफी कठिन तथा सीखने में मुश्किल कीबोर्ड लेआउट बन गया। कम्प्यूटर पर काम करने के लिये इनस्क्रिप्ट मानक कीबोर्ड लेआउट बना जो कि रेमिंगटन की तुलना में अत्यन्त सरल है। यूनिकोड के अभ्युदय के साथ, रेमिंगटन लेआउट को विभिन्न सॉफ्टवेयर टाइपिंग औजारों में बैकअप कम्पैटिबिलिटी के तौर पर जोड़ा गया ताकि पुराने टाइपिस्टों को नये कीबोर्ड लेआउट न सीखना पड़े। आजकल यह लेआउट सिर्फ पुराने टाइपिस्टों कें द्वारा प्रयोग जो कि कई व्रषों के अभ्यास के कारण इसके अभ्यस्त हो चुके हैं। इण्डिक आइऍमई एक ऐसा टाइपिंग औजार है जिसमें रेमिंगटन लेआउट सम्मिलित है।

स्थानीयकरन

स्थानीकरण का अर्थ है सॉफ्टवेयरों, प्रचालन तन्त्रों, वॅबसाइटों आदि विभिन्न ऍप्लीकेशनों का भारतीय भाषाओं में अनुवाद करना। इस दिशा में विभिन्न समूह कार्य कर रहे हैं।

इण्डलिनक्स

इण्डलिनक्स एक स्वयंसेवक समूह है जो लिनक्स प्रचालन तन्त्र का भारतीय भाषाओं में अनुवाद करता है। इस समूह के प्रयासों से लिनक्स हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में लगभग पूरी तरह से स्थानीकृत कर ली गई है। यह समूह सराय नामक संस्था से वितपोषित होता है।

निपुण

निपुण एक ऑनलाइन सामूहिक अनुवाद तन्त्र है जो कि विभिन्न ऍप्लीकेशनों के हिन्दीकरण हेतु कार्यरत है। यह अक्षरग्राम नेटवर्क की एक परियोजना है। इण्डिक ब्लॉगिंग से अर्थ है इण्डिक अर्थात भारतीय भाषाओं में चिट्ठाकारी। भारतीय भाषाओं में चिट्ठाकारी को प्रोत्साहित करने हेतु विभिन्न प्रयास किये गये हैं।

अक्षरग्राम नेटवर्क

अक्षरग्राम नेटवर्क हिन्दी तकनीकिज्ञों का एक स्वयंसेवक समूह है जो कि हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के कम्प्यूटर तथा इण्टरनेट पर प्रचार-प्रसार के प्रति समर्पित है। यह समूह हिन्दी चिट्ठाकारी को प्रोत्साहित करने हेतु नारद आदि कई वॅबसाइटें तथा सेवायें संचालित करता है।

इण्डीब्लॉगीज

इण्डीब्लॉगीज एक भारतीय वॅब्लॉग पुरुस्कार है। यह भारत का पहला (२००३ में स्थापित) तथा खालिस देसी चिट्ठा पुरुस्कार है। पुरुस्कार विजेताओं का चयन भारतीय तथा भारतवंशी चिट्ठाकारों के द्वारा सार्वजनिक रूप से चुने जाते हैं।

1.1.10.2 हिन्दी कम्प्यूटिंग की-बोर्ड

मैकेनिकल टाइपराइटर पर हिन्दी में टाइप करने के लिये रेमिंगटन कीबोर्ड लेआउट का प्रयोग किया जाता है। यह अत्यंत कठिन लेआउट है, क्योंकि हर चिह्न के लिये अलग अलग कुंजियों को याद रखना पड़ता है, कम्प्यूटर की तरह इसमें संयुक्ताक्षर आदि एकाधिक कुंजियों के संयोजन से नहीं बनाये जा सकते। परन्तु मैकेनिकल युक्ति होने के कारण टाइपराइटर पर एकमात्र यही लेआउट सम्भव है।

वर्तमान में टाइपराइटर द्वारा हिन्दी टाइपिंग का स्थान कम्प्यूटर पर हिन्दी टाइपिंग ने ले लिया है तथा इसका प्रयोग बहुत ही कम देखने को मिलता है।

कम्प्युटर पर टाइपिंग

कम्प्यूटर पर टाइपिंग दो प्रकार की होती है-

- ❖ नॉन-यूनिकोड (ग़ैर-यूनिकोड)
- ❖ यूनिकोड

नॉन-यूनिकोड

यह विधि कम्प्यूटर पर यूनिकोड प्रणाली के आने से पहले प्रयोग की जाती थी। इसमें पुराने समय के हिन्दी फॉण्ट प्रयोग किये जाते थे। इस टाइपिंग का उपयोग सिर्फ छपाई आदि के कामों में ही होता है। किसी वर्ड

प्रोसैसर में हिन्दी का नॉन-यूनिकोड़ फॉण्ट चुनकर टाइप किया जाता है तथा उसका प्रिण्ट लिया जा सकता है। किसी अन्य कम्प्यूटर पर वह टैक्स्ट दिखने के लिये वह विशेष फॉण्ट इंस्टाल होना चाहिये अन्यथा हिन्दी टैक्स्ट की जगह सिर्फ कचरा (जंक टेक्स्ट) दिखता है।

कमियाँ

- ❖ इस तरीके से सिर्फ छपाई के लिये हिन्दी टाइप की जा सकती है तथा कम्प्यूटर पर अन्य जगहों पर हिन्दी का प्रयोग नहीं हो सकता।
- ❖ हर नॉन-यूनिकोड फॉण्ट का कीबोर्ड लेआउट अलग-अलग होता है। माना आपको कृतिदेव का अभ्यास है तो आप सुशा में टाइप नहीं कर सकते।

यूनिकोड

यूनिकोड हिन्दी टाइपिंग की नई विधि है। यूनिकोड की विशेषता है कि यह फॉण्ट एवं कीबोर्ड लेआउटों पर निर्भर नहीं करती। आप किसी भी यूनिकोड फॉण्ट एवं किसी भी कीबोर्ड लेआउट का प्रयोग करके हिन्दी टाइप कर सकते हैं। यूनिकोड फॉण्ट में लिखी हिन्दी देखने के लिये उस फॉण्ट विशेष का कम्प्यूटर में होना जरुरी नहीं है। किसी भी यूनिकोड हिन्दी फॉण्ट के होने पर हिन्दी देखी जा सकती है। अधिकतर नये ऑपरेटिंग सिस्टमों में यूनिकोड हिन्दी फॉण्ट बना-बनाया आता है।

1.2 समस्या का प्रदुर्भाव

1991 की जनगणना के अनुसार भारत वह उत्तर प्रदेश के कुल सकल जनसंख्या क्रमशः 85.63 तथा 13.91 साक्षरता दर ओं के संबंध में अध्ययन करने से विदित होता है कि भारत व उत्तर प्रदेश में साक्षरता का प्रतिशत भारत में 52.21% जिसमें 64.13 पुरुष तथा 39.29% महिलाएं थी जबकि विभिन्न अवलोकन करने परविदित होता है कि देश में स्वतंत्रता प्राप्ति के समय साक्षरता की दर मात्र 18.3% थी लेकिन वर्ष 2001 में साक्षरता का बढ़कर 65.38 हो गई और 2011 आते-आते भारत की कुल साक्षरता दर 64.83 से बढ़कर 69.3% हो गई जबकि उत्तर प्रदेश की साक्षरता दर 2011 में 67.68% उत्तर प्रदेश के बाँदा जनपद की कुल जनसंख्या वर्ष 2011 के अनुसार 155428 आंकी गई है और साक्षरता दर 82.05% है लेकिन पुरुषों के

मुकाबले महिलाओं की साक्षरता दर में अभी भीकाफी अंतर विद्यमान है हमारे देश में साक्षरता की अपेक्षा निरक्षरता में काफी सुधार हो रहा है लेकिन निरक्षरता का ग्राफ 18 से 25 वर्ष के बीच युवाओं में शहरों की अपेक्षा गांवों में अधिक है।

शिक्षा एवं राष्ट्र के राष्ट्र के विकास के मध्य धनात्मक संबंध है परंतु आज महाविद्यालय विद्यार्थियों में अशिक्षा का प्रतिशत काफी अत्यधिक देखने को मिला है वास्तव में आज 18-25 आयु वर्ग के छात्र एवं छात्राएं राजनीतिक जागरूकता में काफी पिछड़े हुए हैं। एक अध्ययन के अनुसार स्नातक स्तर पर राजनीतिक जागरूकता मात्र 30% ही मिली है अनेक राजनैतिक आंकड़े बताते हैं की युवाओं का मतदान के प्रति झुकाव शहरों की अपेक्षा गांव में कम है एवं लड़कियों की अपेक्षा लड़कों का झुकाव राजनीति में अधिक देखने को मिलता है जब हम आज 21वीं शताब्दी में पदार्पण करने जा रहे हैं किंतु आश्चर्य की बात है कि राजनीति में महिलाओं का योगदान मात्र 18% ही है जो एक तथा कथक शब्द कहे जाने वाले समाज के लिए शर्मनाक भी है 1986 की शिक्षा नीति में महिलाओं को राजनीति में बराबरी का दर्जा देने की बात कही गई थी लेकिन 15 व 16 वीं लोकसभा के आम चुनाव में भी महिलाओं का संसद में प्रतिनिधित्व 22% ही हो सका है जिसमें अभी बहुत सुधार की आवश्यकता है उपर्युक्त विवरण के आधार पर निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि प्रगति की गति विशेषता संविधान की अपेक्षाओं को दृष्टिगत रखते हुए राजनैतिक जागरूकता के क्षेत्र में बहुत धीमी है इसका प्रमुख कारण यह है कि युवाओं में राजनीतिक अधिकारों एवं कर्तव्यों के प्रति जागरूकता का अभाव होना है जो विशेषकर उच्च वर्ग की अपेक्षा निम्न वर्ग में ज्यादा है दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि भारत सरकार द्वारा उच्च शिक्षा के क्षेत्र में राजनीतिक जागरूकता संबंधित शिक्षा देने में पूर्ण रूप से सफल नहीं हो पा रही है जिससे महाविद्यालय स्तर पर अपव्यय और अवरोधन की समस्या बढ़ी है उपर्युक्त वर्णित तथ्यों के आधार पर उत्तर प्रदेश के संदर्भ में ऐसे शोध अध्ययन किए जाने की आवश्यकता अनुभूत की गई है जिससे महाविद्यालय विद्यार्थियों में राजनीतिक शिक्षा के द्वारा उनमें संविधान की जागरूकता एवं मतदान के प्रति रुचि उत्पन्न की जा सके इसलिए शोधार्थी को महाविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों में राजनीतिक जागरूकता के संबंध में अध्ययन करने की आवश्यकता अनुभूत की गई है प्रस्तुत समस्या द्वारा शोधार्थी ने यह जानने का प्रयास किया है कि उत्तर प्रदेश के बाँदा जनपद के विभिन्न महाविद्यालयों में राजनीतिक जागरूकता का स्तर जानने के

लिए स्नातक एवं परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों को चिन्हित किया गया है ताकि उनकी राजनैतिक जागरूकता की स्थिति का पता तथा छात्र एवं छात्राओं के बीच राजनीतिक जागरूकता के संबंध में अपने क्या विचार रखते हैं। एवं उनके शैक्षिक एवं व्यवसाय स्तर के आधार पर राजनीतिक जागरूकता मैं कितनी भिन्नता है। इन्हीं प्रश्नों के उत्तर जानने हेतु ही शोध के निमित्त प्रस्तुत समस्या का चयन किया गया है

1.3 अध्ययन का औचित्य

हिन्दी कम्प्यूटिंग के प्रति जागरूकता वर्तमान युग कम्प्यूटर का युग है फ्री भारतवर्ष का नजर दौड़ा कर देखें तो हम पाएंगे कि आज जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों में कम्प्यूटर का प्रवेश हो गया है बैंक रेलवे स्टेशन हवाई अड्डा का खाने बड़े बड़े उद्योगों कारखाने व्यवसाय हिसाब किताब रुपए गिनने की मशीन तथा कम्प्यूटर हो गई है अब भी यह कम्प्यूटर का प्रारंभिक प्रयोग में आने वाला समय इसके विस्तार फैलाव का संकेत देता है इसलिए महाविद्यालय स्तर पर छात्रों में जागरूकता फैलाने के लिए हिन्दी कम्प्यूटिंग की आवश्यकता महसूस की गई कम्प्यूटर में फाइलों की आवश्यकता कम कर दी है कार्यालय की सभी गतिविधियां फलौदी में बंद हो जाती हैं इसलिए फाइलों के स्टोरों की जरूरत अब नहीं रही है अब समाचार पत्र भी इण्टरनेट के माध्यम से पढ़ने की व्यवस्था हो गई है विश्व के किसी भी कोने में छपी पुस्तक फिल्म घटना की जानकारी इण्टरनेट पर ही उपलब्ध एक समय था जब कहते थे कि विज्ञान ने संसार को कुटुंब बना दिया है कम्प्यूटर ने तो मानो उसको अपने कमरे में उपलब्ध किया है

1.4 अध्ययन की आवश्यकता

शिक्षा का उद्देश्य समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति करना है1 अतः शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है। समाज अपनी संस्कृति एवं मूल्यों को शिक्षण द्वारा संचित करता है। ऐसे में शिक्षक की भूमिका अति महत्वपूर्ण हो जाती है, परन्तु शिक्षक अपने दायित्व का निर्वाह सफलतापूर्वक तभी कर सकता है जब उसे सभी आवश्यक सुविधाएँ प्राप्त हो शिक्षण संस्था में आवश्यक तकनीकी सुविधाओं के उपलब्ध होने से ही शिक्षा एवं शिक्षण में गुणात्मक सुधार हो सकता है। आज के सूचना एवं तकनीकी युग में हम अपनी और अपनी आने वाली पीढ़ी के बेहतर कल

के लिए शिक्षा के महत्व के बारे में सचेत एवं जागरूक हो गए हैं। इससे देश के सभी क्षेत्रों और समाज के सभी वर्गों में सभी स्तरों पर शिक्षा की माँग में भारी वृद्धि हुई है। शिक्षा की माँग समाज में एक नई व्यवस्था को बढ़ावा दे रही है जहाँ शिक्षा को ना केवल मनुष्य के बौद्धिक ताले को खोलने की सुनहरी चाबी के रूप में देखा जाता है, बल्कि यह भी माना जाता है कि उससे बेहतर भविष्य के महान अवसरों के द्वार को भी खोला जा सकता है। आज आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षा को वर्तमान स्थिति से बाहर निकल कर आना होगा। अधिकांश विद्यालय महाविद्यालय और विश्वविद्यालय संसाधनों के अभाव से जूझ रहे हैं। हमारी परम्परागत शिक्षण प्रणाली में आज गुणात्मक बदलाव की आवश्यकता है एक ऐसी व्यवस्था होनी आवश्यक है जो शैक्षणिक सूचनात्मकत, सामाजिक उत्तरदायित्व और शैक्षिक स्वायत्तता का संवर्धन करती हो। अन्यथा हमारे समक्ष शिक्षा का ऐसा विशाल बाजार बनने का खतरा उपस्थित हो सकता है जो लाभ कमाने वाला शिक्षा उद्योग तो होगा परन्तु शिक्षा प्रणाली के नाम पर कुछ भी नहीं। हमने 1947 में अपनी शिक्षा यात्रा की शुरुआत 12 प्रतिशत सक्षराता और 20 से भी कम विश्वविद्यालयों के साथ की थी। भारत को वर्ष 1951-52 तक अपने सकल घरेलू उत्पाद का मात्र 0.6 प्रतिशत ही शिक्षा पर व्यय कर रहा था। केवल 0.7 प्रतिशत लोग ही उच्च शिक्षा प्राप्त कर पाते थे। हमें यह जानकर राहत का अहसास होगा होता है कि आज हमारी साक्षरता दर 74 प्रतिशत है पुरुषों में साक्षारता दर 82 प्रतिशत है जबकि महिलाओं में यह दर 65 प्रतशत है 15-16 वर्ष की आयु के 83 प्रतशत किशोर विद्यालय जाते हैं और लगभग 15 प्रतिशत महाविद्यालय और विश्वविद्यालय पढ़ने जाते हैं। भारत शिक्षित जनशक्ति के लिहाज से अमेरिका यूरोपीय संघ और चीन के बाद विश्व की चौथी सबसे बड़ी शक्ति बन चुका है। यह उपलब्धि के स्वतन्त्रता के बाद पिछले 7 दशकों में देश में और सार्वजनिक क्षेत्र में 58,16000 प्राथमिक विद्यालयों,21,27000 माध्यमिक विद्यालयों, 33,000 महाविद्यालयों 550 से अधिक विश्वविद्यालयों का विशाल नेटवर्क काम करने से हासिल हुई है। आज हमारे विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में शैक्षिक व्यवस्था में सुधार एवं शिक्षकों को संचार एवं सूचना तकनीकी का अनुप्रयोग करने पर जोर दिया जा रहा है। विशेषज्ञों ने गुणवत्ता में सुधार लाने हेतु बेहतर पुस्तकालयों, प्रयोगशालाओं और शिक्षक स्तर सुधार की बेहतर व्यवस्था के साथ-साथ समय-समय पर पाठ्यक्रम समीक्षा को संस्था का रूप देने और उच्चतम स्तर पर अध्ययन प्रक्रिया में अंतर्विधायी सुविधा को प्रोत्साहन देने के लिए बार-बार माँग उठाई है। अन्यथा समुचित शिक्षा के लिए विद्यार्थियों को कुछ चुनिंदा शहरों और देशों में भेजने का दबाव

लगातार बढ़ता जाएगा। हमारी शैक्षिक संरचना के सभी स्तरों प्राथमिक, उच्चतर माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा के छात्रों एवं शिक्षकों में सृजनात्मकता एवं अभिरुचि के संवर्धन लिए के लिए सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के बेहतर प्रयोग से अध्ययन के नए तरीको के गहन खोज की तत्काल आवश्यकता है उच्च शिक्षा स्तर पर शिक्षकों द्वारा संचार तकनीकी के रूप में कम्प्यूटर एवं इण्टरनेट अनुप्रयोग द्वारा शिक्षण प्रक्रिया को लाभ क्या लाभ पहुँचता है? शिक्षकों के व्यक्तित्व के अनुसार उनका तकनीकी अनुप्रयोग कितना प्रभावित होता है? इन सब बातों को जानना आज नितान्त आवश्यक हो गया है। समाज के महाविद्यालयों एवं इण्टरनेट अनुप्रयोग सम्बन्धी कौशलों को जानने हेतु प्रस्तुत समस्या के अध्ययन की आवश्यकता महसूस की गई जिससे महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में शिक्षकों के कम्प्यूटर एवं इण्टरनेट अनुप्रयोग सम्बन्धी कौशलों को जानने हेतु प्रस्तुत समस्या के अध्ययन की आवश्यकता महसूस की गयी जिससे महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों को एक प्रगतिशील स्वरूप प्रदान किया जा सके और समाज की शिक्षा को संचार युग में एक नया आयाम प्रदान कर सके।

1.5 समस्या कथन

“महविद्यालयीन विद्यार्थियों में हिन्दी कम्प्यूटिंग के प्रति जागरूकता: एक अध्ययन (बाँदा जिले के विशेष सन्दर्भ में)”

कोई भी शोधकार्य किसी जिज्ञासा, समस्या अथवा प्रेरणा के प्रति वशीभूत होकर किया जाता है शोधार्थी महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में हिन्दी कम्प्यूटिंग के प्रति जागरूकता पर शोधकार्य करने के लिए प्रेरित हुआ जिसके अनेक कारण थे विशेष रूप से महविद्यालय स्तर पर हिन्दी कम्प्यूटिंग के प्रति जागरूकता का अभाव था महविद्यालय स्तर में हिन्दी कम्प्यूटिंग को बढ़ावा देने के लिए छात्र-छात्राओं में जागरूकता फैलाना जिससे विद्यार्थी हिन्दी कम्प्यूटिंग के प्रति जागरूक हो। महाविद्यालयों में हिन्दी कम्प्यूटिंग को बढ़ावा देने के लिए मोबाइल के माध्यम से इसको बढ़ाया जा सकता है। और स्नातक स्तर पर कम्प्यूटर विषय अनिवार्य कर देना चाहिए।

1.6 समस्या में निहित शब्दों की व्याख्या

किसी अध्ययन में समस्या या शोध कथन में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण से समस्या को विस्तार पूर्वक समझाया जा सकता है।

1.6.1 महाविद्यालय

महाविद्यालय वह प्रत्यय है जहां पर बड़ा विद्यालय भवन जिसमें साधारण विद्यालय के अतिरिक्त उससे ऊंची कक्षाओं के विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान की जाती है वर्तमान में कॉलेज लैटिन भाषा के कालीज़ीयम शब्द से मिलकर बना है जिसका अर्थ है डिग्री प्रदान करने वाले शैक्षणिक संस्थान अंग्रेजी भाषी देशों में निजी शैक्षणिक प्रणाली में द्वितीय किया माध्यमिक स्कूल के लिए भी किया जाता है अधिक विस्तृत रूप में यह किसी भी कॉलेज समूह का नाम हो सकता है उदाहरण के लिए एक निर्वाचन कॉलेज हथियारों का कॉलेज कार्डिनल ओं का कॉलेज उदाहरण के लिए अमेरिका एवं आयरलैंड में कॉलेज एवं विश्वविद्यालय शब्द को सामान्यता एक दूसरे के स्थान पर प्रयोग किया जा सकता है जबकि भारत में कॉलेज विश्वविद्यालय का एक छोटा शैक्षणिक संस्थान होता है जबकि यूनाइटेड किंग्डम कनाडा ऑस्ट्रेलिया एवं अन्य कॉमनवेल्थ देशों में कॉलेज शब्द का प्रयोग सामान्यता स्कूल एवं विश्वविद्यालय स्तर के मध्य के संस्थान के लिए किया जाता है

1.6.2 विद्यार्थी

विद्यार्थी वह व्यक्ति होता है जो कोई चीज सीख रहा होता है। विद्यार्थी दो शब्दों से मिलकर बना होता है-विद्या+अर्थी जिसका अर्थ होता है विद्या चाहने वाला। विद्यार्थी किसी भी आयु वर्ग का हो सकता है बालक, किशोर, युवा या वयस्क लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि वह कुछ सीख रहा होना चाहिए संस्कृत सुभाषित ओं में विद्या विद्यार्थी के बारे में बहुत अच्छी बातें कहीं गई है विद्यार्थी के पांच लक्षण होना चाहिए कौवे की तरह चेष्टा बगुले की तरह ध्यान कुत्ते की तरह नींद अल्पाहारी ग्रह त्यागी और सुख को त्यागने वाला विद्या को चाहने वाला आदि प्रमुख गुण एक विद्यार्थी में अवश्य रूप से विद्यमान होना चाहिए।

1.6.3 हिन्दी

हिन्दी विश्व की एक प्रमुख भाषा है एवं भारत की राजभाषा है। केन्द्रीय स्तर पर भारत में दूसरी आधिकारिक भाषा अंग्रेजी है। यह हिंदुस्तानी भाषा की एक मानकीकृत रूप है जिसमें संस्कृत के तत्सम तथा तद्भव शब्दों का प्रयोग अधिक है और अरबी-फ़ारसी शब्द कम हैं। हिन्दी संवैधानिक रूप से भारत की राजभाषा और भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। हालाँकि, हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा नहीं है, क्योंकि भारत के संविधान में कोई भी भाषा को ऐसा दर्जा नहीं दिया गया था। चीनी के बाद यह विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा भी है। विश्व आर्थिक मंच की गणना के अनुसार यह विश्व की दस शक्तिशाली भाषाओं में से एक है। हिन्दी और इसकी बोलियाँ सम्पूर्ण भारत के विविध राज्यों में बोली जाती हैं। भारत और अन्य देशों में भी लोग हिन्दी बोलते, पढ़ते और लिखते हैं।

हिन्दी शब्द का सम्बंध संस्कृत शब्द **सिंधु** से माना जाता है। 'सिंधु' सिंध नदी को कहते थे और उसी आधार पर उसके आस-पास की भूमि को सिन्धु कहने लगे। यह सिंधु शब्द ईरानी में जाकर 'हिंदू', हिन्दी और फिर 'हिंद' हो गया। बाद में ईरानी धीरे-धीरे भारत के अधिक भागों से परिचित होते गए और इस शब्द के अर्थ में विस्तार होता गया तथा हिंद शब्द पूरे भारत का वाचक हो गया। इसी में ईरानी का ईक प्रत्यय लगने से (हिन्द+ईक) 'हिन्दीक' बना जिसका अर्थ है 'हिन्द का'। यूनानी शब्द 'इन्दिका' या अंग्रेजी शब्द 'इंडिया' आदि इस 'हिन्दीक' के ही विकसित रूप हैं। हिन्दी भाषा के लिए इस शब्द का प्राचीनतम प्रयोग शरफुद्दीन यज्दी' के 'जफरनामा'(1424) में मिलता है।

1.6.4 कम्प्यूटिंग

सबसे पहले हिन्दी टाइप शायद वर्डस्टार (वर्जन III प्लस) जैसे एक शब्द संसाधक 'अक्षर' में आया। फिर विंडोज़ आया और पेजमेकर व वेंचुरा का समय आया। इस सारी यात्रा में कम्प्यूटर केवल प्रिंटिंग की दुनिया की सहायता भर कर रहा था। यूनिकोड के आगमन एवं प्रसार के पश्चात हिन्दी कम्प्यूटिंग प्रिंटिंग तक सीमित न

रहकर संगणन के विभिन्न पहलुओं तक पहुँच गयी। अब भाषायी संगणन के सभी क्षेत्रों में हिन्दी अपनी पहुँच बना रही है। हिन्दी कम्प्यूटिंग को वर्तमान स्थिति तक पहुँचाने में सरकार, अनेक संस्थाओं, समूहों एवं प्रोग्रामरों-डैवलपरों का योगदान रहा।

1.6.5 जागरूकता

जागरूकता यानि सजग जीवन-चैतन्य जीवन अर्थात् चिंतन पर आधारित जीवन, मंथन से निकला जीवन। जागरूकता यानि बाहरी संसार और भीतरी संसार की सम्पूर्ण जानकारी, उचित-अनुचित की जानकारी, जीवन की सच्चाई की जानकारी, मानव जीवन के औचित्य और उद्देश्य की जानकारी अर्थात् मैं कौन हूं की अच्छे से जानकारी को सीधे सरल शब्दों में जागरूकता कहते हैं। घर-परिवार की जानकारी रखना, समाज-देश की जानकारी रखना, दुनिया की जानकारी रखना, अपने परिचितों की जानकारी रखना, रोजगार के बारे में जानकारी रखना, किसी आर्थिक स्कीम की जानकारी रखना, सामाजिक-भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक जानकारी रखना, सारी सुख-सुविधाओं की जानकारी रखना और अपने हितों की जानकारी रखना जागरूकता की परिभाषा को पूर्ण नहीं करते हैं ये तो केवल निज स्वार्थों और भौतिक आदान-प्रदान तक सीमित हैं। जागरूकता का वास्तविकत आशय तो भीतर के संसार से है अर्थात् भीतर का संसार मैं-मेरे के सारे भेद मिटा देता है और मैं कौन हूं के अर्थ और उद्देश्य को अच्छे से समझा देता है। भीतर के संसार में मैं शून्य हो जाता है और मैं शून्य होने का सीधा सा मतलब है कि स्वार्थ शून्य हो गया, अहंकार शून्य हो गया, क्रोध शून्य हो गया, प्रतिशोध शून्य हो गया और दुनिया से लेना कम हो गया। जागरूकता का मतलब ईश्वर की सत्ता पर भरोसा, स्वयं की क्षमताओं पर भरोसा, दुनिया को देने की ललक, प्रेम से परिपूर्ण जीवन, सर्वकल्याण को समर्पित जीवन हर पल आनंद से ओत-प्रोत जीवन, सुंदर जीवन, सच्चा जीवन, शाश्वत जीवन और युगों-युगों को प्रेरित करने वाला जीवन। निश्छल प्रेम, निस्वार्थ कर्म ही जागरूकता का मर्म है जागरूकता का धर्म है। बेशक बाहरी संसार से संबंध रखिए, इसके आनंद लीजिए लेकिन शाश्वत सत्य तो यही है कि भीतर के संसार में परमानंद भरा है।

1.6.6 अध्ययन

अध्ययन, एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें बहुत से कारक शामिल होते हैं। सीखने वाला जिस तरीके से अपने लक्ष्यों की ओर बढ़ते हुए नया ज्ञान, आचार और कौशल को समाहित करता है ताकि उसके सीख्नने के अनुभवों में विस्तार हो सके, वैसे ही ये सारे कारक आपस में संवाद की स्थिति में आते रहते हैं।
पिछली सदी के दौरान शिक्षण पर विभिन्न किस्म के दृष्टिकोण उभरे हैं। इनमें एक है ज्ञानात्मक शिक्षण, जो शिक्षण को मस्तिष्क की एक क्रिया के रूप में देखता है। दूसरा है, रचनात्मक शिक्षण जो ज्ञान को सीखने की प्रक्रिया में की गई रचना के रूप में देखता है। इन सिद्धांतों को अलग-अलग देखने के बजाय इन्हें संभावनाओं की एक ऐसी श्रृंखला के रूप में देखा जाना चाहिए जिन्हें शिक्षण के अनुभवों में पिरोया जा सके। एकीकरण की इस प्रक्रिया में अन्य कारकों को भी संज्ञान में लेना जरूरी हो जाता है- ज्ञानात्मक शैली, शिक्षण की शैली, हमारी मेधा का एकाधिक स्वरूप और ऐसा शिक्षण जो उन लोगों के काम आ सके जिन्हें इसकी विशेष जरूरत है और जो विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से आते हैं।

1.6.7 बाँदा जनपद

बाँदा जनपद का मानचित्र परिशिष्ट 1 में दिया गया है।

बाँदा जनपद भारत के उत्तर प्रदेश राज्य का एक प्रमुख जनपद एवं लोकसभा क्षेत्र है। बाँदा जनपद केन नदी (यमुना की सहायक नदी) के पास स्थित है तथा यह मंडल का मंडल मुख्यालय भी है इस जनपद की जनसंख्या लगभग 2011 के अनुसार 154428 तथा जनसंख्या घनत्व 350 प्रति वर्ग किलोमीटर है तथा समुद्र तल से ऊंचाई 123 मीटर है इस जनपद में हिन्दी, उर्दू तथा बुंदेलखंडी भाषाएं प्रमुख रूप से बोली जाती हैं बुन्देलखण्ड यहाँ की प्रमुख मात्र भाषा है तथा लोक नृत्य "राई" एवं जनपद की साक्षरता दर 82.5% है तथा लिंग अनुपात 881 है। इस जनपद का पिन-210001 तथा टेलिफोन कोड -91-5192 एवं वाहन रजिस्ट्रेशन नंबर-UP-90 है।यह जनपद उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र में स्थित है इस जनपद का नाम महर्षि बामदेव के नाम पर बाँदा पड़ा जो महर्षि बामदेव की तपोभूमि है यह जनपद सड़क मार्ग एवं रेल मार्ग से अन्य बड़े शहरों से जुड़ा हुआ है जिनमें कानपुर प्रयाग राज तथा झांसी प्रमुख हैं। बाँदा जनपद मुख्यालय से चित्रकूट लगभग 60 किलोमीटर की दूरी पर है तथा कालिंजर भी 59 किलोमीटर की दूरी पर है जो दोनों स्थल ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण है बाँदा जनपद केन नदी के तल से

प्राप्त" गोमेद रत्न "के लिए प्रसिद्ध है एवं केन नदी में " सजर पत्थर" भी पाया जाता है जिसमें प्राकृतिक रूप से प्राकृतिक दृश्य बने रहते हैं यह कुदरत का बेहतरीन करिश्मा है ।विश्वविख्यात मदरसा "जामिया अरबिया हथौरा" यहाँ के हथौरा गांव में है जो बाँदा जनपद से 16 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है तथा बाँदा जनपद के प्रमुख मन्दिर मां महेश्वरी देवी का सात खंड का मन्दिर, संकट मोचन मन्दिर,, मां कालीदेवी मन्दिर तथा बामेश्वर मन्दिर आदि प्रमुख है तथा भूरा गढ़ दुर्ग ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण है जहां क्रांतिकारियों की शहादत की याद में हर वर्ष यहाँ मेला लगता है ।बाँदा जनपद में एक राज्य स्तरीय कृषि विश्वविद्यालय एवं राजकीय मेडिकल कॉलेज भी है तथा अन्य प्रमुख शैक्षणिक संस्थान भी है ; kalicharan institute of technology , पंडित जे.एन. स्नातकोत्तर महाविद्याल, राजकीय इंजीनियरिंग कॉलेज ,बाँदा पैरामेडिकल कॉलेज, राजा देवी महाविद्यालय तथा बाँदा जनपद से 33 किलोमीटर की दूरी पर अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज अतर्रा आदि प्रमुख शैक्षणिक संस्थान है जो प्रदेश स्तर पर अपनी एक विशेष पहचान बनाए हुए हैं इस जनपद में 5 तहसील हैं- बाँदा, अतर्रा, नरैनी, पैलानी तथा बबेरू आदि प्रमुख हैं। इस जनपद के वर्तमान सांसद श्री भैरव प्रसाद मिश्र है जो भारतीय जनता पार्टी से है तथा बाँदा शहर के वर्तमान चेयरमैन श्री मोहन साहू हैं।

1.7 अध्ययन के उदेश्य

जीवन के सभी कार्य सोद्धेश्य होते है क्योकि उद्देश्य के अभाव में जीवन दिशाहीन हो जाता है। किसी भी कार्य की सफलता उसके निर्धारित किये गये उद्देश्यों पर निर्भर करती है। उद्देश्यों एवं लक्ष्यों का निर्धारण ही कार्य को प्रगति प्रदान करता है। उद्देश्यों की स्पस्टता अध्ययन को सरल व सफल बना देती है। इसलिए प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने कुछ उद्देश्य निर्धारित किये है। ताकि शोधकर्ता को सही दिशा मिल सके। प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य निम्न है-

1. उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम में हिन्दी कम्प्यूटिंग के माध्यम से छात्र-छात्राओं के अध्ययन में रुचि उत्पन्न करना।

2. उच्चा शिक्षा के पाठ्यक्रम में हिन्दी कम्प्यूटिंग का उपयोग कर छात्र-छात्राओं को उसकी आवश्यकता का ज्ञान कराना।

3. महाविद्यालयीन शिक्षा में हिन्दी कम्प्यूटिंग द्वारा साहित्य के विभिन्न आयामों में छात्र-छात्राओं को पारंगत करना।

1.8 परिकल्पना

उपरोक्त उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु विशेष कर मुख्य उद्देश्य तृतीय के परिपेक्ष्य में निम्न परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया-

1. महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की हिन्दी कम्प्यूटिंग जागरूकता के मध्य सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

1.9 अध्ययन की सार्थक

कम्प्यूटर एवं इण्टरनेट आज मनुष्य की एक प्रमुख आवश्यकता बन चुकी है जिसके परिणाम स्वरूप आज प्रत्येक क्षेत्र में इसकी उपयोगिता एवं आवश्यकता बढ़ी है। शिक्षा के क्षेत्र में आज कम्प्यूटर एवं इण्टरनेट एक ऐसी व्यवस्था या युक्ति बनकर उभरा है जो कि शिक्षक एवं विद्यार्थियों की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सुगम सहज एवं रोचक बनाता है।

शिक्षक का व्यक्तित्व बहुआयामी होता है जो न केवल अपनी विषयवस्तु का उत्तम ज्ञाता होता है बल्कि उसके साथ-साथ नवाचारिक प्रवृत्तियुक्त, विचार, ग्रहणशील, समाजीकरण कुशल आजीविका सम्बन्धी दक्षतायुक्त, व्यवहारकुशल तथा आत्मविश्वासी होता है।

सामान्यतया देखने में आता है कि उच्च स्तर के शिक्षक व्याख्यान देने वर्णन करने विवरण देने अर्थात सूचना देने में ही अपनी दृष्टि केंद्रित रखते हैं। लेकिन उच्च शिक्षा का यही एकमात्र लक्ष्य उद्देश्य नहीं है। उच्च शिक्षा स्तर पर सूचना देने या जानकारी देने के साथ ही अन्य उद्देश्य है छात्रों की तर्कशक्ति विकसित करना, छात्रों की सोचने की क्षमता तीव्रतम करना निर्णय लेने की क्षमता का विकास करना तथा निर्णय देने अर्थात फैसला करने के योग्य बनाना उनमें समझने की क्षमता का विकास करना उनकी शब्दावली को विस्तार देना, बोलने की क्षमता का विकास करना, साथ ही साथ उनमें चारित्रिक एवं नैतिक गुणों का विकास करना एवं संप्रेषण कौशल को विकसित करने के साथ उनको आत्मनिर्भर बनाना आदि होता है। उच्च शिक्षा स्तर पर

उपरोक्त उद्देश्यों की प्रकृति बहुआयामी है अतः इनकी पूर्ति शिक्षक किसी एक विधि या तकनीकी के प्रयोग मात्र से ही नहीं कर सकता है। कम्प्यूटर तथा इण्टरनेट का प्रयोग करके शिक्षक कक्षा में उन उद्देश्यों की पूर्ति कर सकता है। कम्प्यूटर तथा इण्टरनेट के प्रति शिक्षकों की कितनी रुचि है साथ ही वह कम्प्यूटर का इण्टरनेट का कितना प्रयोग करते हैं तथा अध्यापन में कितनी वरीयता देते हैं कम्प्यूटर तथा इण्टरनेट से संबंधित समस्याएं हैं, आदि का अध्ययन करना ही इस शोध का लक्ष्य है।

उपरोक्त कथन के आलोक में वर्तमान परिपेक्ष्य के आधार पर उच्च शैक्षिक स्तर पर शिक्षक कम्प्यूटर तथा इण्टरनेट को अपने व्यक्तित्व में कितना समाहित करते हैं, शिक्षण कार्य में कितना महत्व देते हैं, साथ ही साथ इस तकनीकी को अन्य की अपेक्षा कितनी प्राथमिकता देते हैं, इसका कितना उपयोग करते हैं तथा इनसे सम्बन्धित उनके सामने क्या परेशानियां व समस्याएं आती हैं आदि को ज्ञात करना ही अध्ययन का मूल ध्येय है।

द्वितीय अध्याय-सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

2.1 प्रस्तावना

किसी भी शोध कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व यह ज्ञात होना अत्यावश्यक है कि उस क्षेत्र में कितना, कहाँ, कब एवं किस प्रकार का क्या-क्या शोधकार्य हो चुका है क्योंकि अनुसंधान का प्रथम चरण अनुसंधान के विषय से सम्बन्धित प्रकाशित तथा अप्रकाशित साहित्य का गहनता से अध्ययन करना होता है। विषय अथवा समस्या से सम्बन्धित सन्दर्भ साहित्य, शोध पत्र-पत्रिकाएं, लेखों, पुस्तकों आदि का अध्ययन

करना होता है। ऐसा करने से विषय की समस्या से सम्बन्धित जो भी अध्ययन हुए हैं, उसकी जानकारी मिल जाती है तथा आगे किस समस्या पर अनुसंधान किया जा सकता है, इसका भी पता चल जाता है। अतः एक अनुसंधानकर्ता के लिए यह आवश्यक हो जाता है, कि वह अपने क्षेत्र या विषय से सम्बन्धित साहित्य, पत्र-पत्रिकाओं का अध्ययन करें। कभी-कभी विवरण पढ़कर उसके प्रति हम संशकित हो उठते हैं, कि पठित विवरण सही है, अथवा नहीं। ऐसी स्थिति में उन पर पुनः शोध किया जा सकता है। इस स्थिति में प्रकाशित अनुसंधान की प्रक्रिया की ज्यों-की-त्यों पुनरावृति की जा सकती है। कभी-कभी पूर्व प्रकाशित अनुसंधान की विधि अथवा प्रदत्त संग्रह की प्रक्रिया दोषयुक्त प्रतीत होती है अथवा चरों का प्रभावशाली नियमन नहीं किया होता। इन सारी स्थितियों में अनुसंधानकर्ता पुनः उसी समस्या पर अध्ययन कर सकता है। ऐसे पूर्व प्रकाशित शोध यद्यपि समस्या के सरलतम स्रोत होते हैं किन्तु परिणामों की वैधता, मापन-विधि अथवा प्रदत्त संग्रह प्रक्रिया में संदेह होने पर इनसे सम्बन्धित नवीन समस्या की उत्पत्ति की जा सकती है। अतः शोधकार्य में सम्बन्धित साहित्य के पुनरावलोकन का कार्य बहुत महत्वपूर्ण होता है। अनुसंधानकर्ता अपने अनुसंधान कार्य को सही दिशा नहीं प्रदान कर सकता जब तक उसे यह पता नहीं हो, कि इस विषय पर या किस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है? इसके निष्कर्ष क्या है? एवं किस विधि से कार्य किया गया है? तब तक उसके अनुसंधान कार्य को सही मार्गदर्शन प्राप्त नहीं हो सकता। सम्बन्धित साहित्य के पुनरावलोकन के दो पक्ष होते हैं। प्रथम पक्ष के अन्तर्गत समस्या के क्षेत्र में प्रकाशित सामग्री को पहचानना तथा जिस भाग से हम पूरी तरह अवगत नहीं हैं, उसको पढ़ना आता है। इसके अन्तर्गत हम उन विचारों तथा परिणामों का विकास करते हैं, जिसके आधार पर हमारा अध्ययन किया जाएगा। द्वितीय पक्ष में शोध अभिलेख के भाग में इन विचारों को लिखना निहित है। यह भाग शोधकर्ता और पढ़ने वाले व्यक्तियों के लिए लाभकारी है जो शोधकर्ता के लिए उस क्षेत्र की भूमिका स्थापित करता है, और पढ़ने वालों के लिए आवश्यक शोधों का सारांश प्रस्तुत करता है।

अतः स्पष्ट है कि सम्बन्धित सम्पूर्ण साहित्य का पुनरावलोकन अनुसंधान प्रक्रिया का प्राथमिक आधार है तथा अनुसंधान के गुणात्मक स्तर के निर्धारण में एक महत्वपूर्ण कारक है। इस दृष्टि से सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन आगामी अध्ययन का न केवल एक योजना पथ है, बल्कि आधारभूत ढांचा भी है। उपयुक्त

विश्लेषण के उपरान्त हम सम्बन्धित साहित्य के पुनरावलोकन की अनुसंधान के क्षेत्र में निम्न बिन्दुओं के अनुसार उपयोगिता निश्चित करते हैं :-

1. इससे अनुसंधान में अनावश्यक दोहराव की क्रिया नहीं होती है।

2. अब तक किए गए शोध कार्यो के सम्बन्ध में अनुसंधानकर्ता को पूर्ण जानकारी प्राप्त हो जाती है।

3. शोध कार्य के वास्तविक प्राप्त तथ्यों की सूचना मिल जाती है।

4. इससे क्षेत्र विशेष में सूझ एवं अन्तदृष्टि विकसित होती है।

5. समस्या की परिसीमाएं भी सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा से ही निश्चित की जा सकती हैं।

6. नए विचार, सिद्धान्त और परिकल्पनाओं का ज्ञान हो जाता है।

7. अनुसंधानकर्ता को भावी अनुसंधान के क्षेत्रों का पता लगाने के सम्बन्ध में उचित निर्देशन मिलता है।

8. सम्बन्धित साहित्य के पुनरावलोकन से शोध कार्य के अध्यायों को महत्वपूर्ण एवं शैक्षिक बनाने में सहायता मिलती है।

इस प्रकार सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन किसी भी अनुसंधान की नींव होती है, जिसके आधार पर अनुसंधान रूपी भावी भवन खड़ा होता है। समस्याएं आना, समस्याओं के आधार पर उनके मूल समाधानों को खोजना मनुष्य की प्रकृति है। आवश्यकता, समस्या व विषय वस्तु के प्रति संवेदनशीलता है। मनुष्य की संवेदनशीलता की समस्या व उसके सोपान निश्चित करती है। इस दृष्टि से अनुसंधान के क्षेत्र में सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन में अनुसंधानकर्ता की संवेदनशीलता का बहुत महत्व होता है। जिसके कारण अनुसंधानकर्ता पूर्व में हुई गलतियों एवं अपूर्णताओं को अपनी पैनी निगाह से आगामी अध्ययनों में नवीन स्वरूप देकर सुधार सकता है।

2.2 उच्च शिक्षा के सन्दर्भ में हुए कतिपय शोध

बेकर (1985) ने अपने अध्ययन Attitudes of Maine Cooperative extension Sxtension Service Personal Towards Computerization में बताया कि कंप्यूटर के प्रति अभिवृत्ति, लिंग आयु या

सहयोगी कार्यकर्ताओं के बीच कार्य स्तरीय सम्बन्धों से सम्बन्धित नहीं है अपितु यह अभिवृत्ति,गणितीय योग्यता के परिपेक्ष्य से सम्बन्धित है।

वर्नेटी और हॉल (1986), ने अपने शोध पत्र Attitudes of elementary school students and teacher towards computers education में लिंग के आधार पर प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की कंप्यूटर अभिवृत्ति का अध्ययन किया जिसमें पाया की अभिवृत्ति मापनी के प्रति प्रतिक्रिया देने वाले पुरुष एवं महिला शिक्षकों के बीच कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

बैडमैन (1986) , ने शिक्षक सम्बन्धों (Teacher concerns) का CAI (Computer Assisted Instruction) तथा CMI (Computer Managed Instruction) एवं Interactive Video और वर्ड प्रोसेसिंग से सम्बन्धित करके मापन किया। इस अध्ययन से Wedman ने परिकल्पना की कि, शिक्षक शैक्षणिक परिकलन (Education Computing) को कई अलग-अलग नवीकरणों के संग्रह के रूप में देखते हैं, एक पूर्ण इकाई के रूप में नहीं। यह प्रत्यक्षीकरण, स्कूल पाठ्यक्रम कंप्यूटिंग के प्रभावी एकीकरण को धक्का लगा सकता है।

2.3 हिन्दी के सन्दर्भ में हुए कतिपय शोध

2.3 हिन्दी कम्पूटिंग के सन्दर्भ में हुए कतिपय शोध

- ❖ **शैलेन्द्र कुमार यादव (2016)** नें- “महाविद्यालय स्तर पर शिक्षण प्रशिक्षण विभाग के शिक्षकों में कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति अभिवृति एवं इसके व्यावहारिक अनुप्रयोगका तुलनात्मक अध्ययन” प्रस्तुत शोध का उद्देश्य महाविद्यालय शिक्षकों का कंप्यूटर शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति एवं अनुप्रयोग का अध्ययन करना था जिसके लिए प्रस्तुत शोध-पत्र में विवरणात्मक विधि के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि जनसंख्या के रूप में भिण्ड जनपद स्थित महाविद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षण प्रशिक्षण विभाग (बी०एड०) के शिक्षक एवं अन्य विभाग हिन्दी संस्कृत, इतिहास, भूगोल, राजनीति शास्त्र एवं जंतु विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान के शिक्षकों का चयन किया गया था इसके

लिए 25 महाविद्यालयों का चयन साधारण यादृच्छिक प्रतिचयन विधि से किया गया महाविद्यालय से न्यादर्श के रूप में सोद्देश्य प्रतिदर्श चयन विधि द्वारा 200 शिक्षकों का चयन किया गया। शोध उपकरण के रूप में तारेश भाटिया एवं सुरेन्द्र यादव द्वारा निर्मित “कंप्यूटर शिक्षा अभिवृत्ति मापनी (CEAS), एवं “कंप्यूटर अनुप्रयोग मापनी” (CAS), प्रयोग किया गया था। चरों पर कंप्यूटर शिक्षा अभिवृत्ति एवं अनुप्रयोग मापनी के क्रियान्वयन से प्राप्त प्राप्तांकों के विश्लेषण हेतु SPSS सॉफ्टवेयर द्वारा क्रांतिक अनुपात C.R. मूल्य की गणना की गई थी। निष्कर्ष में पाया गया कि लिंग एवं शैक्षिक पृष्ठभूमि के आधार पर शिक्षकों में कंप्यूटर शिक्षा अभिवृत्ति एवं अनुप्रयोग में सार्थक अन्तर था।

2.4 हिन्दी कम्प्यूटिंग के सन्दर्भ में समाचार एवं पत्र पत्रिकाएँ

लेखक- डॉ. कामता कमलेश

विगत कुछ वर्षों से हिन्दी का वैश्विक मंच विशाल से विशालतर होता जा रहा है। राष्ट्र संघ में हिन्दी की स्थापना का प्रयास विश्व हिन्दी सम्मेलनों का आयोजन आदि ऐसी घटनाएं हैं जिनसे हिन्दी की क्षमता का सहज ही ज्ञान हो जाता है। अब हिन्दी एक देशीय नहीं अपितु बहुदेशीय भाषा का रूप ले चुकी है। यही क्या बोलने वाले की दृष्टि से भी हिन्दी संसार की चतुर्थ बड़ी भाषा है। इस समय भारत से बाहर शताधिक विश्वविद्यालयों एवं संस्थानों में हिन्दी का पठन-पाठन इस बात का द्योतक है कि हिन्दी मात्र साहित्य की चीज नहीं वरन् वह हृदयों को जोड़ने वाली ऊर्जा भी है और प्रेम की गंगा भी वर्तमान समय में हिन्दी का लेखन एवं प्रचार प्रसार प्रायः दो रूपों में हो रहा है प्रथम के अन्तर्गत वो देश आते हैं जहां के लोग हिन्दी को एक विश्व भाषा के रूप में 'स्वांत: सुखाय’ सीखते, पढ़ते-पढ़ाते हैं। इसके अन्तर्गत रूस, अमेरिका, कनाडा, इंगलैण्ड, जर्मनी, इटली, बेल्जियम, फ्रांस, चैकोस्लोवाकिया, रूमानिया, चीन, जापान, नार्वे, स्वीडन, पोलैंड, ऑस्ट्रेलिया, मैक्सिको आदि देश आते हैं। दूसरे के अन्तर्गत वे देश आते हैं जहां भारत से जाने वाले प्रवासी भारतीय और भारतवंशी लोग बड़ी संख्या में निवास करते हैं जिनकी मातृ भाषा हिन्दी रही जो कि आजकल मॉरीशस फिजी, गुयाना, सूरीनाम, कीनिया, ट्रिनीडाड-टुबैगो, बर्मा, थाइलैंड, नेपाल, श्रीलंका, मलेशिया, दक्षिणी अफ्रीका आदि देशों में रह रहे हैं। इन्हें हिन्दी अपनी पैतृक-संपत्ति के रूप में मिली। इन दोनों प्रकार के देशों में हिन्दी का रचना संसार

बहुत ही विपुल एवं समृद्ध है। भाषा और साहित्य की कोई भौगोलिक सीमा नहीं होती। इसीलिए हिन्दी भारतीय संस्कृति 'वसुधैव कुटुम्बकम' को लक्ष्य करके प्रसारित हो रही है। विश्व की इस महान् भाषा के विकास के लिए विभिन्न भारतेतर देशों में संचार साधन के रूप में आकाशवाणी, दूरदर्शन के साथ साथ पत्र पत्रिकाओं का खुलकर सहयोग लिया जा रहा है।

2.4 समीक्षात्मक निष्कर्ष

तृतीय अध्याय- अध्ययन अभिकल्प

3.1 शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में चूँकि महाविद्यालयीन स्तर पर हिन्दी कम्प्यूटिंग से सम्बन्धित सूचनाएँ प्राप्त करने का प्रयास किया गया है। अत: शोध के इस सम्पूर्ण कलेवर को देखते ''वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि'' का अनुप्रयोग किया गया। इस शोध विधि के माध्यम से हिन्दी कम्प्यूटिंग का अध्ययन सुगमता से किया जा सकता। इस विधि में वस्तुनिष्ठता, वैधता एवं प्रमाणिकता के आधार पर संकलित किये गये प्रदत्तों एवं सूचनाओं की

विश्लेषणात्मक व्याख्या की जाती है। ऐसे पदत्त जिन्हे विश्वसनीय एवं प्रामाणिक उपकरणों के माध्यम से प्राप्त किये जाते है तथा जिनके विश्लेषण एवं व्याख्या में वैज्ञानिकता एवं वस्तुनिष्ठता निहित होती है।

शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान को अधिक विश्वसनीय एवं ठोस परिणामों की प्राप्ति हेतु कई विधियों का चयन करना होता है। शैक्षिक समस्याओं के समाधान हेतु सर्वेक्षण विधि सर्वाधिक प्रयोग की जाने वाली विधि है। प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है, क्योंकि यह विधि व्यक्ति विशेष से सम्बन्धित न होकर पूरे समूह से सम्बन्धित होती है और इसमें अधिक से अधिक व्यक्तियों को सम्मिलित किया जा सकता है। प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि को अपनाकर "प्राथमिक विद्यालयों में हरीतिमा वर्तमान परिदृश्य एवं भावी संभावनाएं चित्रकूट जिले में मऊ संकुल के विशेष सन्दर्भ में करने का प्रयास किया है।

3.2 अध्ययन समष्टि

अध्ययन जनसंख्या से तात्पर्य अध्ययन के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु वांक्षित निरीक्षणों से सम्बन्धित इकाइयों की कुल संख्या से है। वर्तमान अध्ययन के सन्दर्भ में अध्ययन की मूल जनसंख्या जिनमें से वांक्षित सूचनाएँ संकलित करनी है, बाँदा जनपद के अतर्रा महाविद्यालय के एम० एड०, बी०एड० की छात्र-छात्राओं से सम्बन्धित है।

3.3 प्रतिदर्श चयन

न्यादर्श किसी भी कार्य की आधारशिला है। यह आधार शिला जितनी सुदृढ़ होगी, अनुसंधान के परिणाम

उतरने ही विश्वसनीय एवं परिशुद्ध होंगे। प्रतिदर्श को तभी उपयुक्त माना जा सकता है, जब वह सम्पूर्ण समष्टि का सही प्रतिनिधित्व करें। किसी अनुसंधानकर्ता के लिए यह सम्भव नहीं है कि वह अल्प समय में सम्पूर्ण या समग्र के सभी व्यक्तियों एवं वस्तुओं को अपनी खोज या अध्ययन का विषय बना सके। अत: थोड़े व्यक्तियों, वस्तुओं या संस्थाओं आदि का चयन किया जाता है जो समग्र का पर्याप्त प्रतिनिधित्व कर सके, जिन पर किए गए

अध्ययन के आधार पर समग्र के लिए निष्कर्ष निकाले जा सके। प्रतिदर्श के माध्यम से कम समय पूँजी तथा कार्यकर्ताओं की सहायता से विस्तृत क्षेत्र में फैली हुई इकाइयों से सूचनाएं संग्रहित की जा सकती हैं तथा अध्ययन विषय का गहन अध्ययन सम्भव होता है। **गुड एवं हैट (1952) के अनुसार- "एक निर्दशन जैसा कि नाम से स्पष्ट है किसी विशाल सम्पूर्ण का छोटा प्रतिनिधि होता है।** प्रतिदर्श का आकार, अध्ययन की विधि तथा अध्ययन परिणामों के प्रयोग जिस समष्टि से प्रतिदर्श चुनना है उसकी विषमता पर निर्भर करता है। जिन अध्ययनों में वैक्तिक अध्ययन विधि का उपयोग किया जाता है, प्रतिदर्श में दस या इससे भी कम इकाइयाँ ली जा सकती हैं। जबकि प्रश्नावली विधि पर आधारित अध्ययनों में प्रतिदर्श का आकार अत्यधिक बड़ा होता है। आज तो प्रस्तुत शोध समस्या के सन्दर्भ में प्रतिनिधित्वकारी प्रतिदर्श के चयन के निमित्त निम्न सोपानों का अनुसरण किया गया।

3.6 न्यादर्श चयन विधि

वर्तमान शोध अध्ययन का उद्देश्य महविद्यालयीन विद्यार्थियों में हिन्दी कम्प्यूटिंग के प्रति छात्र एवं छात्राओं की जागरूकता अध्ययन करना है अतः शोध के निमित्त प्रतिदर्श चयन हेतु शोधार्थी ने अर्द्ध सम्भाव्य प्रतिदर्श प्रविधियों (Semi Probability Methods) को अपनाया। सम्बन्धित चित्रकूट जनपद के विभिन्न अतर्रा महविद्यालय का चयन उद्देश्य पूर्ण प्रतिदर्श चयन विधि द्वारा किया गया है। जबकि छात्र एवं छात्राओं का चयन यादृच्छिक विधि (Random Methods) द्वारा किया गया। स्पष्ट है कि शोध के सन्दर्भ में प्रतिदर्श चयन के निमित्त सम्भाव्य एवं असम्भाव्य दोनों हैं। प्रतिदर्श चयन में हमने अपनी सुविधानुसार प्रविधियों को अपनाया है।

3.7 शोध उपकरण

प्रत्येक अनुसंधान के सन्दर्भ में प्रदत्तों के संग्रह हेतु कतिपय शोध उपकरणों का प्रयोग किया जाता है। उपकरणों से प्राप्त नवीन एवं गुणात्मक प्रदत्त अनुसंधान में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। ये प्रदत्त ही अनुसंधान कार्य को सही अर्थ देने में सहायक होते हैं। विभिन्न उद्देश्यों के आधार पर भिन्न प्रकार की सूचनाये संकलित करने के लिए

भिन्न प्रकार के उपकरण उपयुक्त होते हैं। शोध उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अनुसंधानकर्ता इन उपकरणों में से एक अथवा एक से अधिक उपकरणों का प्रयोग कर सकता है। किसी भी अनुसंधान की सफलता उपयुक्त उपकरण चयन पर निर्भर करती है जिस प्रकार किसी मिस्त्री को एक इंजन या मशीन को ठीक करने के लिए अपने यन्त्र बाँक्स में से एक उपकरण यन्त्र की खोज करनी होती है ठीक उसी प्रकार किसी भी अनुसंधान के अन्तर्गत समस्या के अध्ययन हेतु अनुसंधानकर्ता को ऐसे उपकरण का चयन करना होता है जिसके आधार पर निम्नलिखित मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके-

1 अध्ययन समस्या के समुचित उत्तर की प्राप्ति हो सके।

2 अनुसंधान के वस्तुपरत परिणाम उपलब्ध हो सकें।

3 अध्ययन के विश्वसनीय परिणाम प्राप्त हो सके।

4 अध्ययन समस्या के वैध परिणाम प्राप्त हो सके

सारांशत: व्यावहारिक दृष्टि से उपकरण ऐसा होना चाहिए जिसके द्वारा अध्ययन में विशेष सुविधा रहे, उत्तरदाताओं से भावात्मक सम्बन्ध स्थापित करने में कठिनाई न हो तथा वांछित सूचनाएं विश्वसनीय एवं वैध रूप में प्राप्त हो। प्रायः अनुसंधान कार्य में दो प्रकार के उपकरण प्रयुक्त होते हैं-

1. मानवीकृत उपकरण
2. स्वनिर्मित उपकरण

वर्तमान शोधकार्य के सन्दर्भ में कोई मानवीकृत उपकरण उपलब्ध नहीं था। अतः शोधकार्य को पूर्ण करने हेतु शोधकर्ता द्वारा एक नवीन उपकरण निर्माण की आवश्यकता अनुभव की गई। फलस्वरूप शोधार्थी ने वर्तमान अध्ययन से सम्बन्धित नवीन उकरण निर्मित करने का निश्चय किया। उपकरण निर्माण में जिन सोपानों का अनुसरण किया गया उनका विवरण निम्नवत है-

3.7.1 प्रयुक्त उपकरण के प्रकारों का निर्धारण

वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि में सम्बन्धित सूचनाओं को संकलित करने के सन्दर्भ में मुख्यतः निम्न उपकरणों का प्रयोग किया जाता है।

1. अभिलेख निरीक्षण अनुसूची

2. प्रश्नावली

3. साक्षात्कार अनुसूची

4. प्राप्तांक अंक

महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में अध्ययन करने वाले एम०एड०, बी०एड० के छात्र छात्राओं के शैक्षिक व्यावसायिक स्तर तथा उनकी हिन्दी कम्प्यूटिंग का अध्ययन करने हेतु शोधार्थी द्वारा निम्न प्रकार के उपकरणों का प्रयोग करना सुनिश्चित किया गया।

1.हिन्दी कम्प्यूटिंग जागरूकता प्रश्नावली जागरुकता हिन्दी कम्प्यूटिंग जागरुकता प्रश्नावली में विभिन्न श्रोतों की सहायता लेते हुये शोधार्थी ने हिन्दी कम्प्यूटिंग जागरूकता प्रश्नावली के निर्माण हेतु निम्न क्षेत्रों को निर्धारित किया। महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में हिन्दी कम्प्यूटिंग / मोबाइल जगरुकता के अध्ययन से सम्बन्धित है।

3.8 परीक्षणों का प्रशासन

महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में हिन्दी कम्प्यूटिंग सम्बन्धित विद्यालयों के चयन हेतु सर्वप्रथम अतर्रा महाविद्यालय के प्राचार्य जी से सम्पर्क किया इसके बाद महाविद्यालय के शिक्षकों की सहायता लेकर महाविद्यालय में हिन्दी कम्प्यूटिंग सम्बन्धी जानकारी लिया गया इस उद्देश्य हेतु शोधार्थी ने स्वयं का परिचय प्रस्तुत किया तत्पश्चात शोध उद्देश्य से अवगत कराया।

सम्बन्ध-स्थापना के पश्चात महाविद्यालय एम०एड० एवं बी० एड० के छात्रों में सम्बन्धित प्रश्नावली को भराया गया इसके बाद उसको पूर्ण कराने के बाद परीक्षणों को एकत्रित कर लिया गया तथा सहयोग हेतु धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

3.9 परीक्षणों का फलांकन

किसी भी शोधकार्य से सम्बन्धित सूचनाये तभी सार्थक होती है जब ये परिणात्मक रूप में प्रस्तुत की जाये। क्योंकि किसी भी तथ्य को गुणात्मक रूप से समझने की अपेक्षा परिणात्मक रूप में समझना आसान होता

है। अध्ययन से सम्बन्धित सभी उपकरणों के प्रशासन के पश्चात शोधकर्ता ने उनसे प्राप्त सकारात्मक एवं नकारात्मक अनुक्रियाओं क्रमश: 'हाँ' व 'नहीं' आवृतियों को 1 अंक के माध्यम से गणना की शोधार्थी ने अभिमतावली के प्रत्येक 'हाँ' को फलांकन करते समय एक अंक दिया व 'नहीं' के लिए शून्य अंक प्रदान किया इसी प्रकार तो प्रत्येक 'हाँ' कथन पर एक अंक व 'नहीं' पर शून्य अंक दिया गया। पत्पश्चात प्राप्त अनुक्रियाओं को सारणीबद्ध किया गया एवं एवं व्यक्त किये गये अभिमतो का प्रतिशत मान प्राप्त किया गया।

3.9 सांख्यिकीय प्रविधियाँ

शोधार्थी द्वारा व्यक्त किए तथ्यों एवं उत्तरों का तब तक वैज्ञानिक अध्ययन नहीं किया जा सकता है जब तक कि उन्हें सांख्यिकी परीक्षण हेतु अंकों में परिवर्तित ना कर लिया जाए।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में पूर्व निर्धारित संस्थाओं से आंकड़ों का संकलन करने के पश्चात हिन्दी कंप्यूटिंग विषय के अनुप्रयोग हेतु तालिका बनायी गयी। परिकल्पना के परीक्षण के लिए एकत्रित किए गए आंकड़ों को तालिकाबद्ध कर विश्लेषण करने हेतु अनेक प्रकार की विश्लेषण तकनीकी प्रयुक्त की जाती हैं। प्रस्तुत शोध अध्ययन में भी आंकड़ों के विश्लेषण के लिए एवं उपयुक्त परिणाम के ज्ञात करने हेतु विभिन्न सांख्यिकीय विधियों का उपयोग किया गया है जो कि अध्ययन उद्देश्यों के अनुरूप परिवर्तित होत गयी।

शोध अध्ययन के उद्देश्य संख्या 1 से 2 तक में प्रतिशत तथा उद्देश्य संख्या 3 में में जहाँ पर प्रसरण विश्लेषण सार्थक आया वहाँ अन्तर जानने के लिए न्यूमैन- क्यूल परीक्षण का प्रयोग किया गया। सांख्यिकीय गणना हेतु कंप्यूटर की भी सहायता भी ली गई है।

शोध अध्ययन में न्यादर्शों के मध्य सार्थकता की जाँच करने के लिए सार्थकता के दो स्तर 0.05 तथा 0.01 है। प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्शों के मध्य अन्तर की सार्थकता की जाँच के लिए सार्थकता का 0.05 स्तर प्रयोग किया गया है। मध्यमानों के मध्य का अन्तर 0.05 स्तर पर सार्थक पाये जाने पर सम्बन्धित शून्य परिकल्पना को अस्वीकृत किया गया है तथा अन्तर सार्थक नहीं आने पर शून्य परिकल्पना को स्वीकृत किया गया है। उद्देश्य 3 में शिक्षकों की विषय सजगता से सम्बन्धित विभिन्न क्षेत्रों की समस्याओं हेतु सुझावात्मक माड्यूल शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

चतुर्थ अध्याय- प्रदत्तों का विश्लेषण एवं निर्वच

अनुसंधान कार्य का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या है। यही वह दिव्य दर्पण है जिसमें से मूल्यवान निष्कर्ष की छाया प्रतिबिम्बत होने लगती है।

विभिन्न उपकरणों द्वारा संकलित तथ्य चाहे कितने ही वैध तथा उपयुक्त क्यों ना हो, अव्यवस्थित ही होते हैं। उनको प्रयोजनशील एवं उपयोगी कार्य में प्रयुक्त करने से पूर्व सुव्यवस्थित एवं सुसंगठित अर्थात वर्गीकृत एवं सारणीबद्ध करने की आवश्यकता होती है। इसके अन्तर्गत प्रस्तुत जटिल कारकों को खण्डित करके सरल अंगों में विभाजित करना तथा व्याख्या के उद्देश्यों से उन अंगों को नवीन व्याख्या के सन्दर्भ में समायोजित करना होता है। इस सन्दर्भ में **लुण्डवर्ग (1951)** का कहना है कि-

"किसी भी समस्या का वैज्ञानिक विधि से अध्ययन करने का तात्पर्य संकलित संमकों का क्रमबद्ध अवलोकन, वर्गीकरण तथा निर्वचन करना है। हमारे प्रतिदिन के निष्कर्षों तथा वैज्ञानिक

विधियों में मुख्य अन्तर इसके सत्य, दृढ़ता तथा सत्यापन किए जाने की शक्ति, तथा विश्वसनीयता इत्यादि में है।"

अस्तु यह कहना उपयुक्त प्रतीत होता है कि अनुसंधान में सामान्यतः दो सोपान होते हैं प्रथम प्रदत्तों का संग्रह तथा द्वितीय प्रदत्तों का विश्लेषण। प्राप्त सामग्री अपने प्रारम्भिक रूप में बड़ी ही अस्पष्ट एवं जटिल होती है उसके विश्लेषण के पश्चात ही उपलब्धियों के माध्यम से निष्कर्ष तक पहुँचा जा सकता है।

अतः प्रस्तुत अध्ययन में स्वनिर्मित त्रि-प्रश्नावलियाँ यथा- विद्यालय सूचना प्रपत्र, विद्यालय हरितमा अवलोकन अनुसूची, हरीतिमा साक्षात्कार अनुसूची तथा विद्यालय में हरीतिमा अवलोकन मापनी के सन्दर्भ में संकलित प्रदत्तों एवं सूचनाओं का सावधानी पूर्वक गहन विश्लेषण किया गया है। जिसकी प्रस्तुति इस अध्याय में सुविधा के दृष्टिकोण से तीन भागों में की गई है।

प्रश्न (1) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति-

प्रश्न सं 1- क्या आपके पास एंड्राइड मोबाइल है?

तालिका सं 4.1

प्रश्न (1) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

श्रेणी	N	हाँ		नहीं	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
छात्र	68	63	92.65	5	7.35
छात्राएँ	22	22	100	0	0
कुल	90	85	94.44	5	5.55
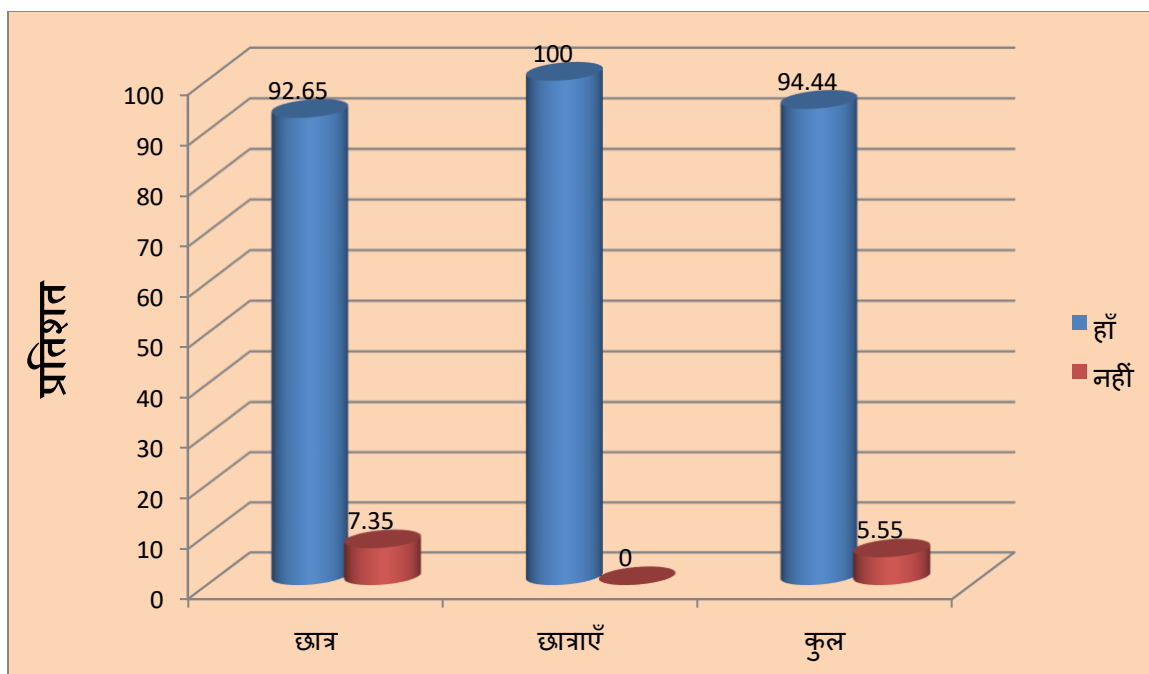
प्रश्न (1) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

चित्र सं 4.1

विश्लेषण

उक्त तालिका संख्या4.1 एवं चित्र संख्या 4.1से स्पष्ट है कि छात्राएँ एंड्राइड मोबाइल 100% उपयोग करती है। उनकी अपेक्षा छात्र कुछ कम 92.65% एंड्राइड मोबाइल का उपयोग करते है। तालिका संख्या 4.1में, इस प्रकार कुल 94.44%विद्यार्थी एंड्राइड मोबाइल का उपयोग करते हैं।

विवेचना

उपरोक्त तालिका के परिणामों से स्पष्ट है कि छात्र छात्राओं में एंड्राइड मोबाइल उपयोग करने के प्रतिशत में थोड़ा अंतर है,छात्राओं में इसका उपयोग 100% तथा छात्रों में 92.65% उपयोग करते पाया गया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि छात्रों की अपेक्षा छात्राएँ एंड्राइड मोबाइल का अधिक उपयोग करती हैं। छात्राओं के एंड्राइड मोबाइल का उपयोग स्तर अधिक होने का एक कारण यह भी हैं कि अधिकांश छात्राएँ शहरी क्षेत्रों से सम्बंधित है तथा छात्र ज्यादातर ग्रामीण क्षेत्रों से सम्बंधित हैं एवं उनकी आर्थिक स्थिति भी अच्छी नहीं हैं।

प्रश्न (2) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति-

प्रश्न सं 2- आपके मोबाइल की भाषा क्या है?

तालिका सं 4.2

प्रश्न (2) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

श्रेणी	N	अंग्रेजी		हिन्दी		अन्यभाषा	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
छात्र	68	58	52.29	09	13.23	1	0
छात्राएँ	22	22	100		0	0	0
कुल	90	80	88.89	10	11.11	0	0
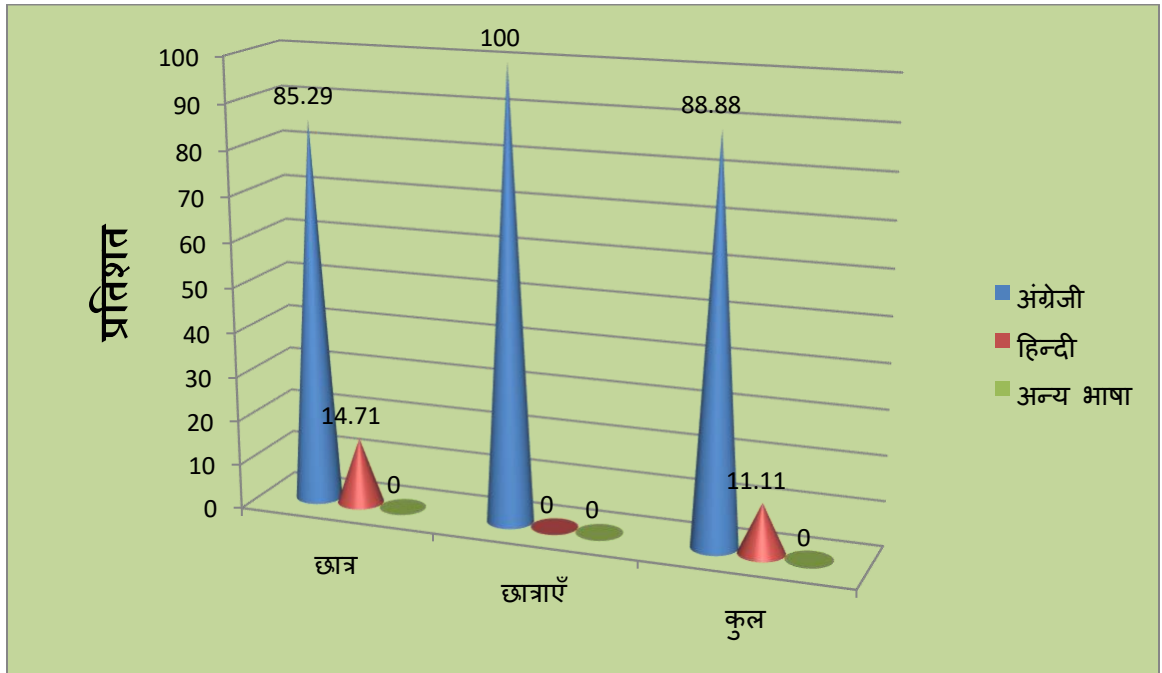
प्रश्न (2) केसन्दर्भमेंमहाविद्यालयीनविद्यार्थियोंकीस्थिति

चित्र सं 4.2

विश्लेषण

उक्त तालिका संख्या4.2 एवं चित्र संख्या 4.2से स्पष्ट है कि100% छात्राओं के मोबाइल की भाषा अंग्रेजी है। उनकी अपेक्षा छात्र कुछ कम 85.29% अंग्रेजी भाषा का उपयोग करते हैं। तालिका संख्या 4.2 के आधार पर कह सकतें है कि अधिकांश विद्यार्थी 88.88%अपने मोबाइल के संचालन में अंग्रेजी भाषा का चयन करतें हैं।

विवेचना

उपरोक्त तालिका परिणामों से स्पष्ट है कि छात्र-छात्राओं द्वारा अपने मोबाइल में भाषा का माध्यम अंग्रेजी तथा हिंदी चयन करने का प्रतिशत थोड़ा भिन्न- भिन्न है।छात्रों तथा छात्राओं में अंग्रेजी भाषा चयन का प्रतिशत क्रमशः85. 2 9% तथा 100% है। तथा मोबाइल में हिंदी भाषा का चयन 14.71% छात्र करते हैं जबकि कोई भी छात्रा अपने मोबाइल में हिंदी भाषा का चयन नहीं करती है। छात्राओं द्वारा अपने मोबाइल में अंग्रेजी भाषा का चयन 100% इसलिए है क्योंकि प्रारंभ से ही मोबाइल की भाषा अंग्रेजी रही है तथा हिंदी को मोबाइल की भाषा चयन करने में लोग असहज महसूस करते हैं जिसका प्रमुख कारण हिंदी की शब्दावली कठिन होना तथा उसके प्रयोग में कठिनाई होना है।

प्रश्न (3) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति-

प्रश्न सं 3- आपमोबाइल से अधिकांश कार्य किस भाषा में करना पसंद करते हैं?

तालिका सं 4.3

प्रश्न (3) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

श्रेणी	N	अंग्रेजी		हिन्दी		अन्यभाषा	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
छात्र	68	52	76.47	17	25	0	0
छात्राएँ	22	22	100	0	0	0	0

कुल	90	74	82.22	17	18.89	0	0
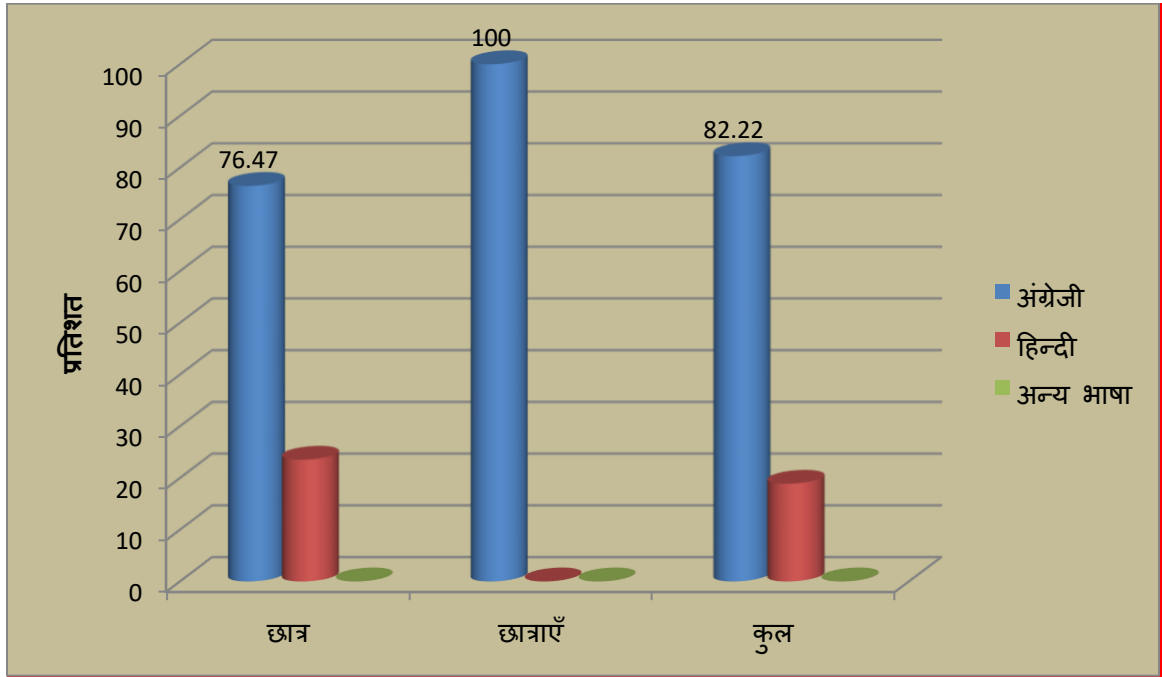
प्रश्न (3) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

चित्र सं 4.3

विश्लेषण

उक्त तालिका संख्या 4.3 एवं चित्र संख्या 4.3 से स्पष्ट है कि छात्राएं 100% तथा छात्र 76.47% अंग्रेजी भाषा का उपयोग करना पसंद करते हैं।

हिंदी भाषा में कार्य करना अंग्रेजी की अपेक्षा कम छात्र पसंद करते हैं जबकि छात्राएं बिल्कुल भी हिंदी भाषा में कार्य नहीं करती हैं। 23.53% छात्र हिंदी भाषा में कार्य करना पसंद करते हैं। इस प्रकार कुल 82.22% छात्र अंग्रेजी भाषा में तथा 18.18%छात्र हिंदी भाषा में कार्य करना पसंद करते हैं।

विवेचना

उपरोक्त तालिका के परिणामों से स्पष्ट है कि छात्राएं 100% मोबाइल का कार्य अंग्रेजी भाषा में करना पसंद करती हैं। जबकि 76. 47% छात्र मोबाइल कार्य कार्य अंग्रेजी भाषा में करना पसंद करते हैं। हिंदी भाषा के माध्यम से मोबाइल का कार्य मात्र 23.5 3% छात्र ही करते हैं, और कोई भी छात्रा हिंदी भाषा में अपने मोबाइल में कार्य नहीं करती। इससे स्पष्ट है कि हिंदी अभी भी मोबाइल उपयोग करने की प्रचलित भाषा नहीं बन पाई है, और दूसरा कारण यह है कि अंग्रेजी भाषा मोबाइल में प्रारंभ से ही उपयोग होती रही है।

प्रश्न (4) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति-

प्रश्न सं 4- आप अपनेमोबाइल में संपर्क(Contact)किस भाषा में संचित (Save) करते हैं?

तालिका सं 4.4

प्रश्न (4) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

श्रेणी	N	अंग्रेजी		हिन्दी		अन्यभाषा	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
छात्र	68	55	80.89	12	17.64	1	1.47
छात्राएँ	22	22	100	0	0	0	0
कुल	90	77	85.56	12	13.33	1	1.11

.
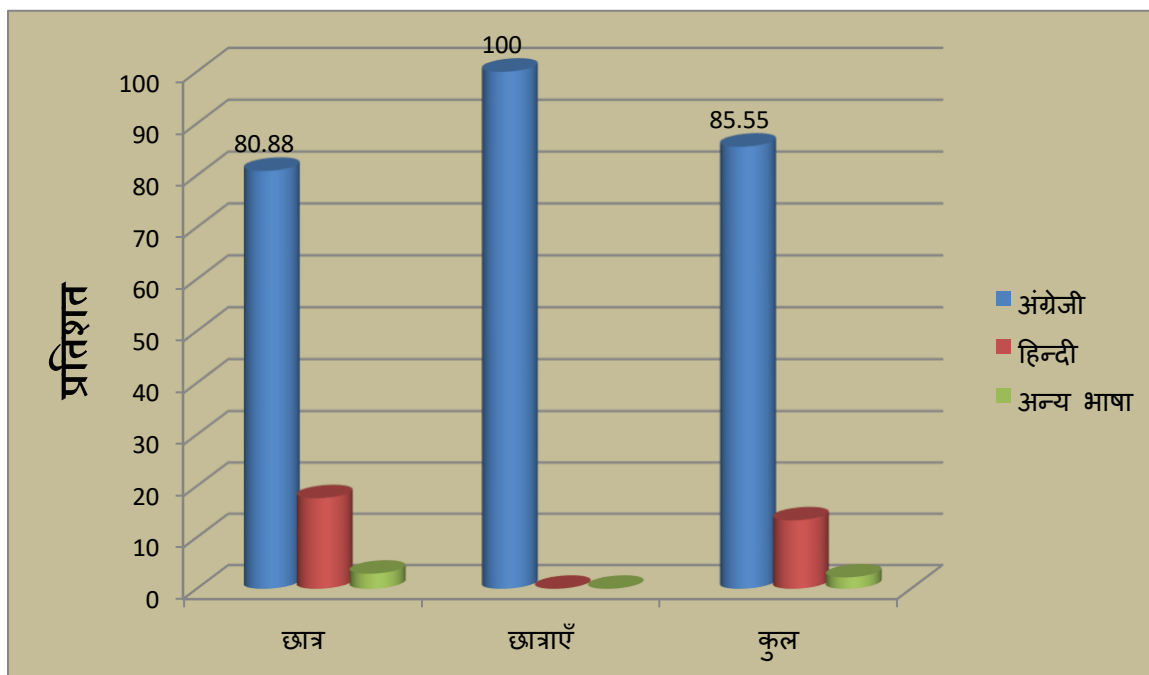
प्रश्न (4) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

चित्र सं 4.4

विश्लेषण

उपर्युक्त तालिका संख्या 4.4 एवं चित्र संख्या 4.4 से स्पष्ट है कि 80.88% छात्र अपने संपर्क अंग्रेजी भाषा में सुरक्षित रखते हैं और 100% छात्राएं अपने संपर्क अंग्रेजी भाषा में सुरक्षित करती हैं। हिंदी भाषा में 17.64% छात्र ही अपने संपर्क से सहेजते हैं जबकि कोई भी छात्रा अपने संपर्क हिंदी भाषा में सुरक्षित नहीं करती है। 2.94% छात्र अन्य भाषाओं में अपने संपर्क सुरक्षित करते हैं परंतु कोई भी छात्रा अन्य भाषा का प्रयोग नहीं करती है।

कुल 85.55% विद्यार्थी अंग्रेजी भाषा में अपने संपर्क सुरक्षित करते हैं और 13.33% विद्यार्थी हिंदी भाषा में अपने संपर्क सुरक्षित करते हैं तथा 2.22% छात्र अन्य भाषाओं में अपने संपर्क सुरक्षित करते हैं।

विवेचना

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि अंग्रेजी भाषा में संपर्क सहेजने का कार्य 100% छात्राओं तथा 80.88% छात्रों द्वारा किया जाता है तथा कुछ छात्र है जो कि हिंदी भाषा में एवं अन्य भाषा में अपने संपर्क सहेजते हैं, इससे स्पष्ट है कि हिंदी भाषा के माध्यम से मोबाइल कार्य करने में कठिनाई होती है।

प्रश्न सं 5-मोबाइल अनुप्रयोग में हिन्दी के स्थान पर अँग्रेजी की प्रधानता का कारण है-

(i)अँग्रेजी में काम करना सरल है-

तालिका सं 4.5

प्रश्न (5)(i) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

श्रेणी	N	सहमत		असहमत	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
छात्र	68	61	89.71	7	10.29
छात्राएँ	22	21	95.45	1	4.55
कुल	90	82	91.11	8	8.89
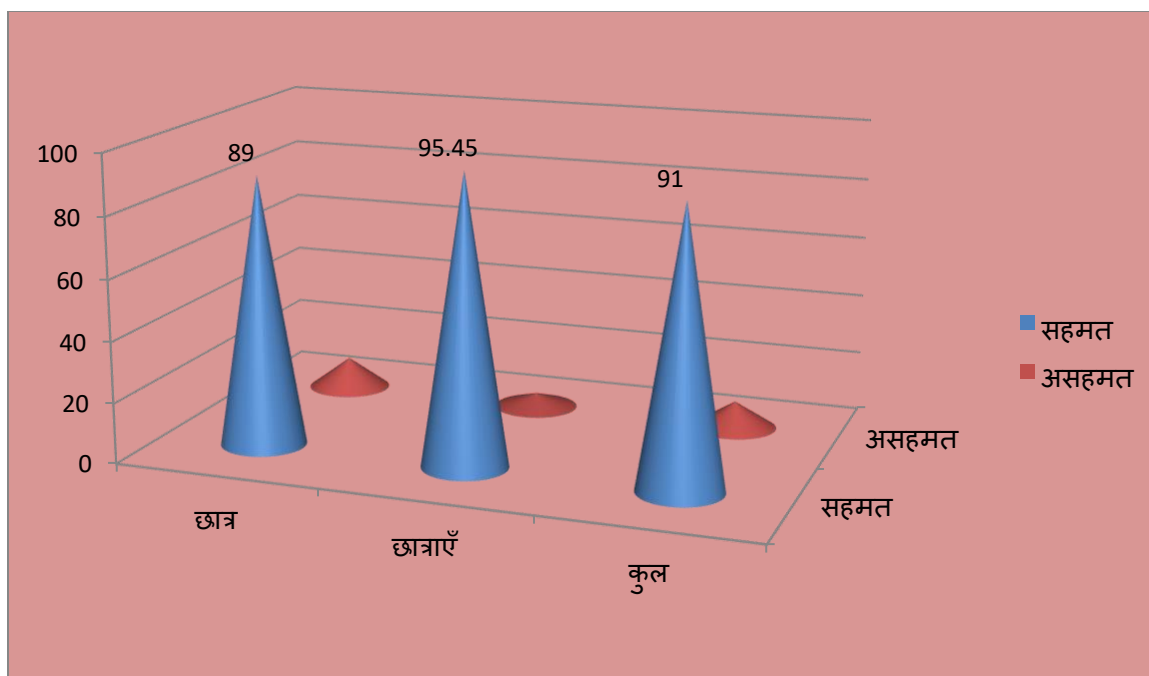
प्रश्न (5)(i) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

चित्र सं 4.5

विश्लेषण

उपरोक्त तालिका संख्या 4.5 एवं चित्र संख्या 4.5 से स्पष्ट है कि "मोबाइल के अनुप्रयोग में हिंदी के स्थान पर अंग्रेजी की प्रधानता का कारण अंग्रेजी में काम करना सरल है।" इस कथन के साथ 89.7% छात्र तथा 95.45% छात्राएं सहमत हैं जबकि इसके विपरीत 10.29% छात्र तथा 4.54%छात्राएँ असहमत हैं। कुल विद्यार्थी 91.11% इस कथन के साथ सहमत तथा 8.81% असहमत हैं।

विवेचना

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है की मोबाइल अनुप्रयोग में हिन्दी के स्थान पर अंग्रेजी की प्रधानता का कारण यह है कि 91.11% विद्यार्थी अंग्रेजी में काम करना चाहते हैं तथा 8.81%विद्यार्थी हिन्दी में करना चाहते हैं। इससे स्पष्ट है कि हिन्दी की अपेक्षा विद्यार्थियों को अंग्रेजी में मोबाइल अनुप्रयोग करना आसान है।

(ii) अँग्रेजी के स्थान पर हिन्दीमें प्रयुक्त तकनीकी शब्द क्लिष्ट(कठिन)हैं-

तालिका सं 4.5.1

प्रश्न (5)(ii) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

श्रेणी	N	सहमत		असहमत	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
छात्र	68	59	86.76	9	13.24
छात्राएँ	22	18	81.82	4	18.18
कुल	90	77	85.56	13	14.44
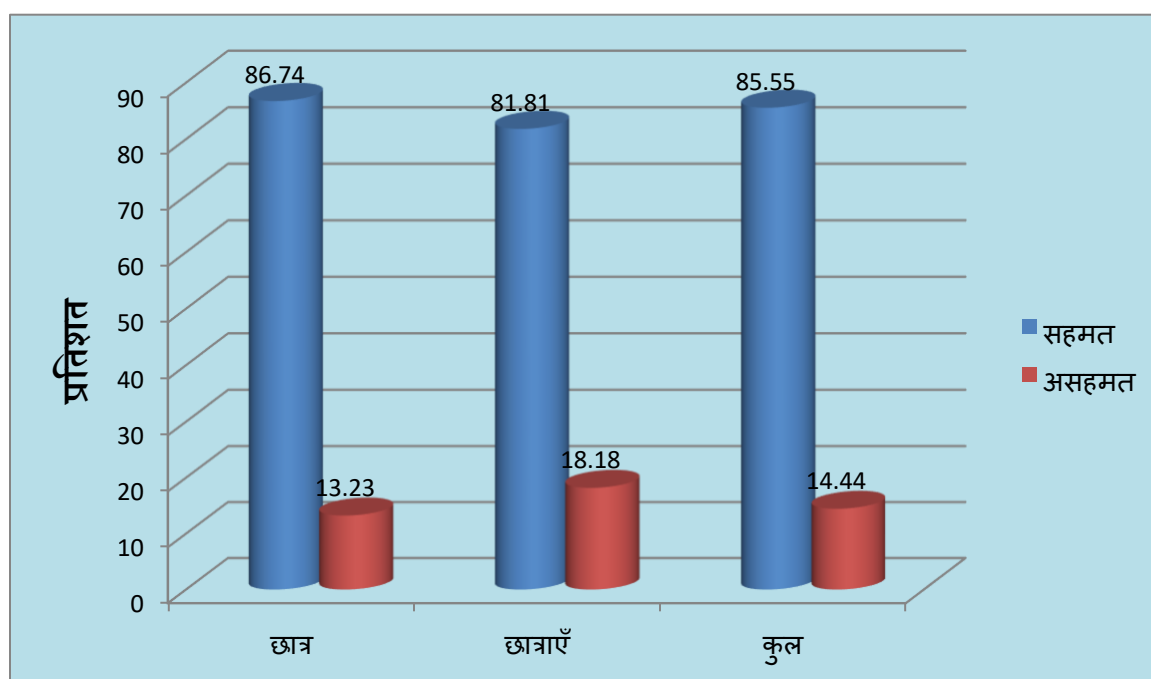
प्रश्न (5)(ii) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

चित्र सं 4.5.1

विश्लेषण

उपरोक्त तालिका संख्या 4.5.1एवं चित्र संख्या 4.5.1से स्पष्ट है कि "मोबाइल के अनुप्रयोग में हिंदी के स्थान पर अंग्रेजी की प्रधानता का कारण अँग्रेजी के स्थान पर हिन्दीमें प्रयुक्त तकनीकी शब्द क्लिष्ट(कठिन)हैं।" इस कथन के साथ86.74% छात्र तथा 81.81% छात्राएं सहमत हैं जबकि इसके विपरीत 13.23% छात्र तथा 18.18%छात्राएँ असहमत हैं।

कुल विद्यार्थी 85.55% इस कथन के साथ सहमत तथा 14.44% असहमत हैं।

विवेचना

उपरोक्त निष्कर्ष से स्पष्ट है कि मोबाइल अनुप्रयोग में अंग्रेजी की अपेक्षा हिंदी को कठिन मानने वाले विद्यार्थी 85.55% सहमत हैं तथा 14.44% विद्यार्थी असहमत हैं अतः यह स्पष्ट है कि सभी विद्यार्थियों में से कुछ विद्यार्थी ही मोबाइल अनुप्रयोग में हिंदी को महत्व देते हैं।

(iii) अँग्रेजी का कुंजीपटल(Keyboard) छोटा एवं प्रयोग में सरल है-

तालिका सं 4.5.2

प्रश्न (5)(iii) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

श्रेणी	N	सहमत		असहमत	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
छात्र	68	58	85.29	10	14.71
छात्राएँ	22	20	90.91	2	9.09
कुल	90	78	86.67	12	13.33
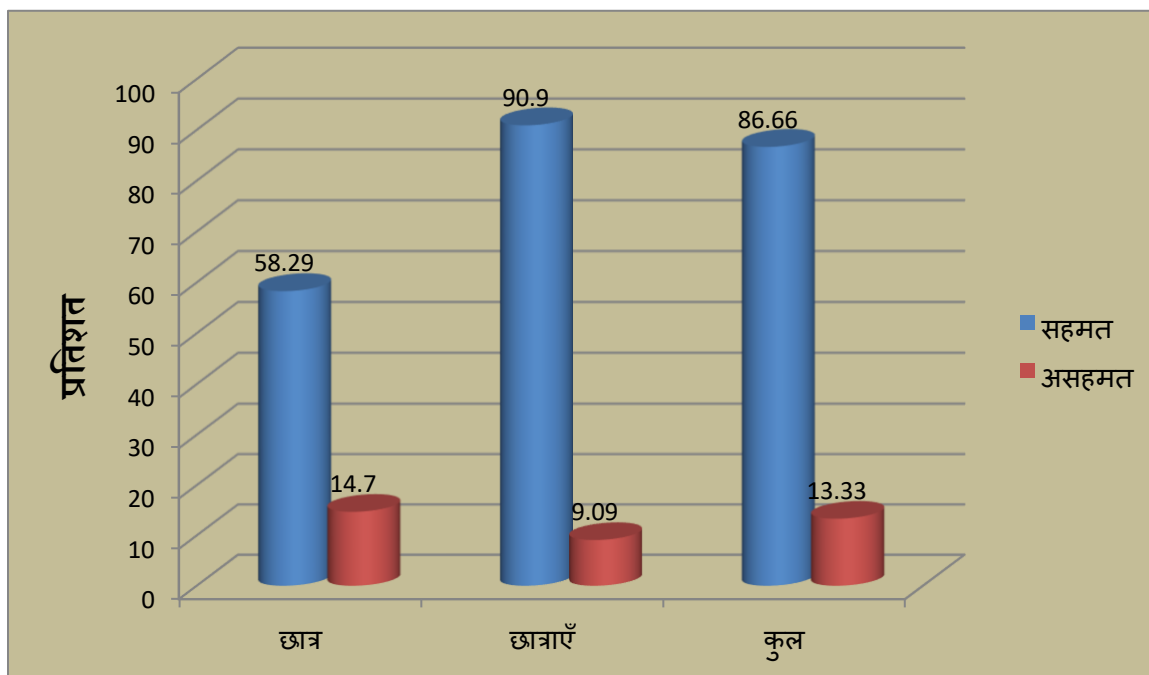
प्रश्न (5)(iii)के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

चित्र सं 4.5.2

विश्लेषण

उपरोक्त तालिका संख्या 4.5.2एवं चित्र संख्या 4.5.2से स्पष्ट है कि "मोबाइल के अनुप्रयोग में हिंदी के स्थान पर अंग्रेजी की प्रधानता का कारण अँग्रेजी का कुंजीपटल(Keyboard) छोटा एवं प्रयोग में सरल है।" इस कथन के साथ85.29% छात्र तथा 90.90% छात्राएं सहमत हैं जबकि इसके विपरीत 14.7% छात्र तथा 9.09%छात्राएँ असहमत हैं।कुल विद्यार्थी 86.66% इस कथन के साथ सहमत तथा 13.33% असहमत है।

विवेचना- उक्त तालिका से यह स्पष्ट है कि मोबाइल अनुप्रयोग में 86.66% विद्यार्थी अंग्रेजी कुंजीपटल को हिंदी की अपेक्षा उपयोग में सरल मानते हैं तथा इसके विपरीत 13.33% विद्यार्थी उक्त निष्कर्ष से असहमत हैं इसका कारण यह है कि अंग्रेजी की तुलना में हिंदी का कुंजीपटल उपयोग में सरल नहीं है

(iv)हिन्दी का कुंजीपटल(Keyboard)बड़ा होने के कारण आपको प्रयोग में कठिनाई होती है-

तालिका सं 4.5.3

प्रश्न (5)(iv) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

श्रेणी	N	सहमत		असहमत	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
छात्र	68	51	75	17	25
छात्राएँ	22	14	63.64	8	36.36
कुल	90	65	72.22	25	27.78
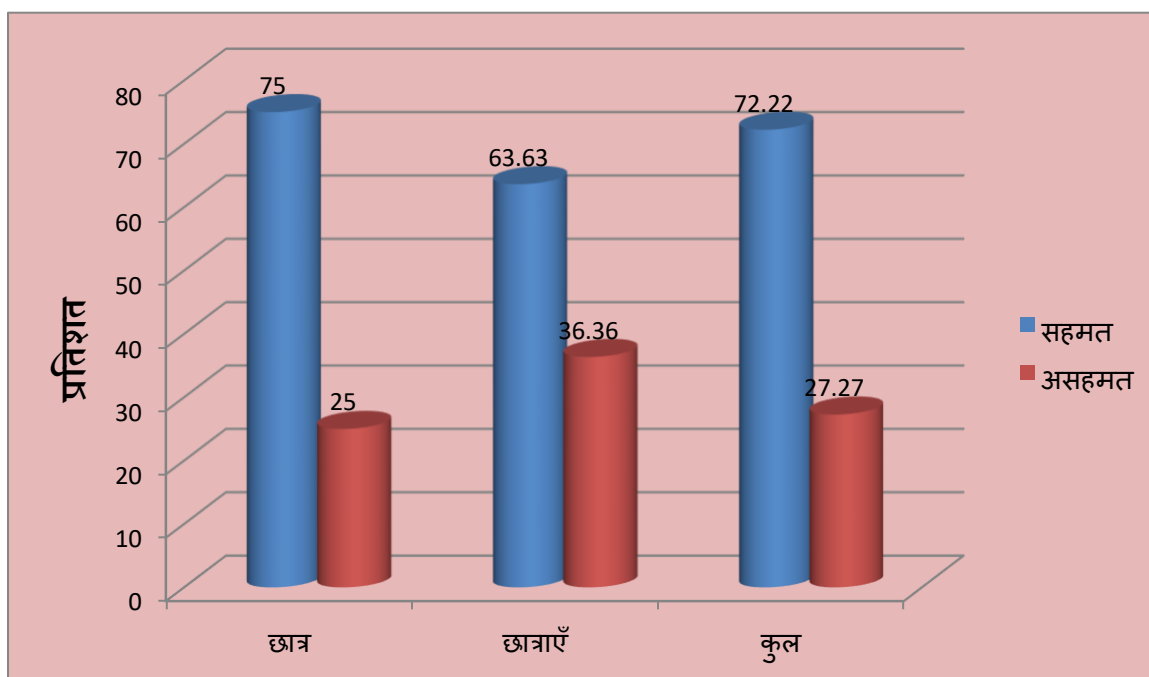
प्रश्न (5)(iv)के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

चित्र सं 4.5.3

विश्लेषण

उपरोक्त तालिका संख्या 4.5.3एवं चित्र संख्या 4.5.3से स्पष्ट है कि “मोबाइल के अनुप्रयोग में हिंदी के स्थान पर अंग्रेजी की प्रधानता का कारणहिन्दी का कुंजीपटल(Keyboard)बड़ा होने के कारण आपको प्रयोग में कठिनाई होती है।” इस कथन के साथ75.00% छात्र तथा 63.63% छात्राएँ सहमत हैं जबकि इसके विपरीत 25% छात्र तथा 36.36%छात्राएँ असहमत हैं।कुल विद्यार्थी 72.22% इस कथन के साथ सहमत तथा 27.27% असहमत हैं।

विवेचना

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि कुल विद्यार्थियों में से 72.22% मोबाइल अनुप्रयोग से संबंधित कुछ विद्यार्थी 27.27% इस बात से असहमत हैं।अतः इसका यही कारण है कि हिंदी कुंजीपटल के स्थान पर अंग्रेजी कुंजीपटल की प्रधानता है।

(v)मेरा मानना है की अंग्रेजी में काम करने पर दूसरे लोग मुझे सम्मान की दृष्टि से देखेंगे-

तालिका सं 4.5.4

प्रश्न (5)(v) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

श्रेणी	N	सहमत		असहमत	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
छात्र	68	49	72.06	19	27.94
छात्राएँ	22	5	22.73	17	77.27
कुल	90	54	60	36	40
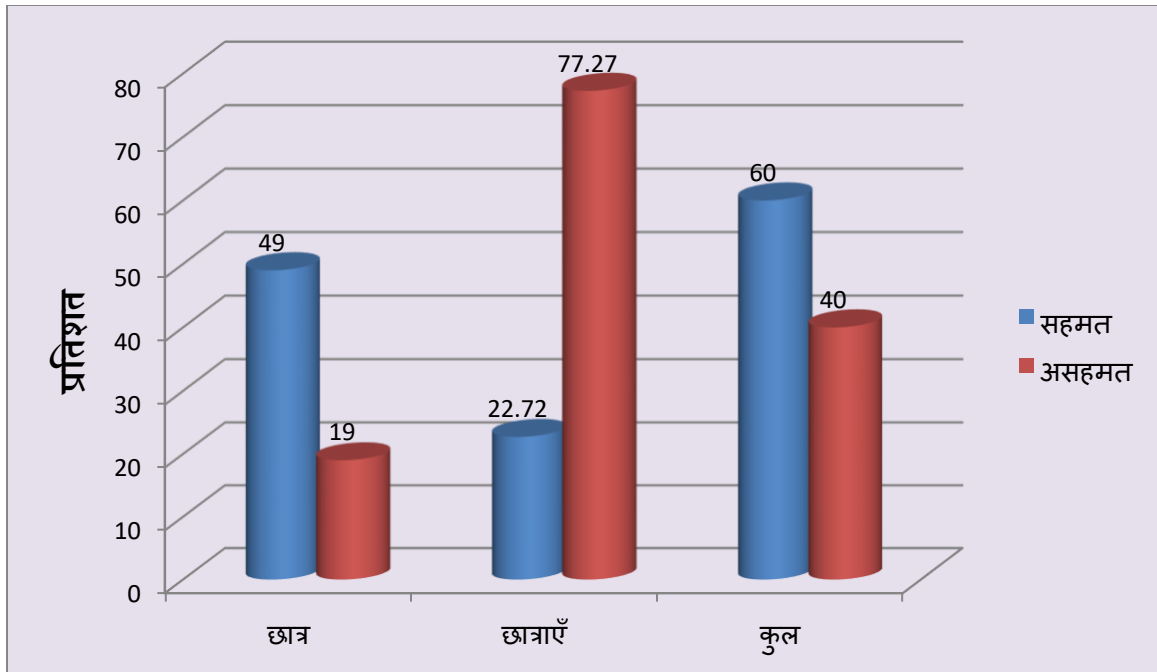
प्रश्न (5)(v)के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

चित्र सं 4.5.4

विश्लेषण

उपरोक्त तालिका संख्या 4.5.4एवं चित्र संख्या 4.5.4से स्पष्ट है कि “मोबाइल के अनुप्रयोग में हिंदी के स्थान पर अंग्रेजी की प्रधानता का कारणमेरा मानना है कि अंग्रेजी में काम करने पर दुसरे लोग मुझे सम्मान की दृष्टि से देखेंगे।” इस कथन के साथ 49.00% छात्र तथा 22.72% छात्राएँ सहमत हैं जबकि इसके विपरीत 19.00% छात्र तथा 77.27%छात्राएँ असहमत हैं।

कुल विद्यार्थी 60.00% इस कथन के साथ सहमत तथा 40.0% असहमत हैं।

विवेचना

उपरोक्त तालिका के परिणामों से स्पष्ट है कि छात्र-छात्राओं में कुल विद्यार्थी-60% मोबाइल अनुप्रयोग से संबंधितहै उनका मानना यह है कि अंग्रेजी में काम करने पर मुझे सम्मान की दृष्टि से देखा जाएगा तथा कुछ छात्र-छात्राएं-40% इस बात से असहमत हैं।इसका कारण यह है कि ऐसी संकुचित विचारधारा का उत्पन्न होना हिंदी में काम करने वालों के लिए चुनौती है।

(vi) मै समझता हूँ कि अंग्रेजी में काम करना अधिक शिक्षित होने का प्रतीक है-

तालिका सं 4.5.5

प्रश्न (5)(vi) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

श्रेणी	N	सहमत		असहमत	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
छात्र	68	31	45.59	37	54.41
छात्राएँ	22	3	13.64	19	86.36
कुल	90	34	37.78	56	62.22
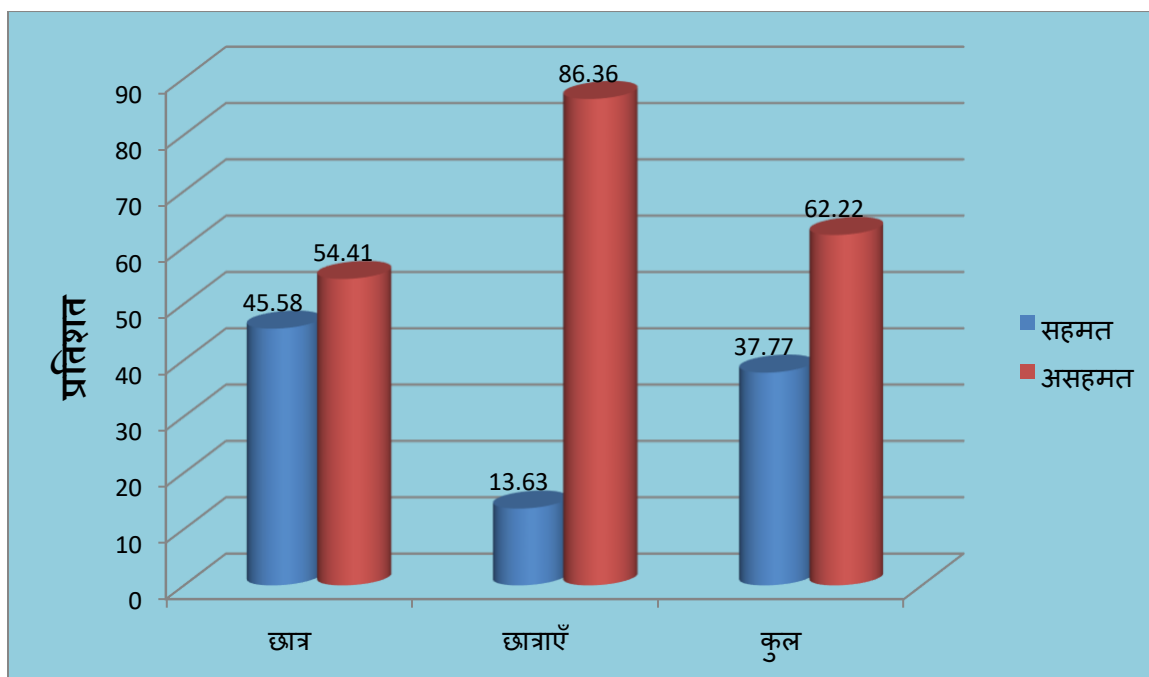
प्रश्न (5)(vi)के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

चित्र सं 4.5.5

विश्लेषण

उपरोक्त तालिका संख्या 4.5.5एवं चित्र संख्या 4.5.5से स्पष्ट है कि “मोबाइल के अनुप्रयोग में हिंदी के स्थान पर अंग्रेजी की प्रधानता का कारणमै समझता हूँ कि अंग्रेजी में काम करना अधिक शिक्षित होने का प्रतीक है।” इस कथन के साथ 45.58% छात्र तथा 13.63% छात्राएँ सहमत हैं जबकि इसके विपरीत 54.41% छात्र तथा 86.36%छात्राएँ असहमत हैं।

कुल विद्यार्थी 37.77% इस कथन के साथ सहमत तथा 62.22%विद्यार्थी इस के साथ असहमत हैं।

विवेचना

उपरोक्त तालिका के परिणामों से स्पष्ट है कि छात्र-छात्राओं में कुल विद्यार्थी 37.77% मोबाइल अनुप्रयोग से संबंधित तथ्य अंग्रेजी में काम करना अधिक शिक्षित होने का प्रतीक है के साथ सहमत हैं तथा 62.5% विद्यार्थी इस कथन के साथ असहमत हैं।

(vii) हिन्दी का प्रयोग अनपढ़/गवांर पिछड़े लोग करते हैं-

तालिका सं 4.5.6

प्रश्न (5)(vii) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

श्रेणी	N	सहमत		असहमत	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
छात्र	68	17	25	50	73.53
छात्राएँ	22	3	13.64	19	86.36
कुल	90	20	22.22	69	76.67
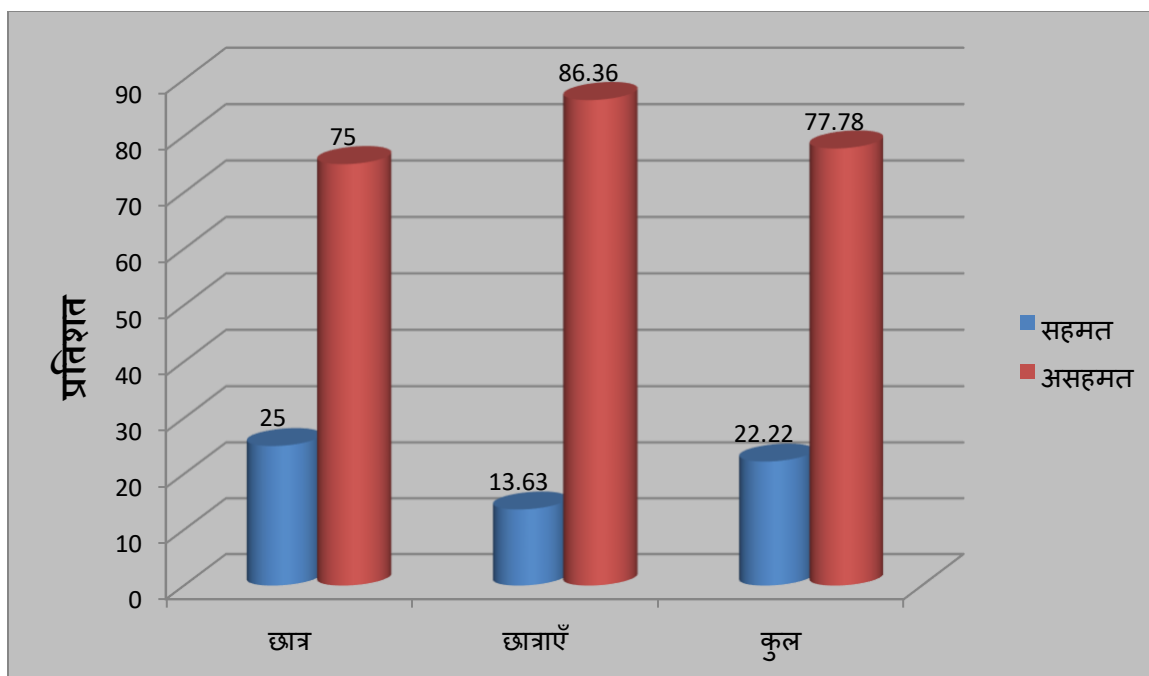
प्रश्न (5)(vii)के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

चित्र सं 4.5.6

विश्लेषण

उपरोक्त तालिका संख्या 4.5.6एवं चित्र संख्या 4.5.6से स्पष्ट है कि "मोबाइल के अनुप्रयोग में हिंदी के स्थान पर अंग्रेजी की प्रधानता का कारण ऐसी अवधारणा का होना है किहिन्दी का प्रयोग अनपढ़/गवांर पिछड़े लोग करते हैं।" इस कथन के साथ 25 %छात्र तथा 13.63% छात्राएँ सहमत हैं जबकि इसके विपरीत 75.00% छात्र तथा 86.36%छात्राएँ असहमत हैं।

कुल विद्यार्थी 22.22% इस कथन के साथ सहमत तथा 77.78%असहमत हैं।

विवेचना

उपरोक्त तालिका के परिणामों से स्पष्ट है कि छात्र-छात्राओं में कुल विद्यार्थी 22.22% इस कथन के साथ सहमत हैं कि हिंदी का प्रयोग अनपढ़/गवार पिछड़े लोग करते हैं जबकि इसके विपरीत 77.78% विद्यार्थी इस कथन से असहमत हैं।

(viii)राष्ट्रभाषा में काम करने पर गर्व की अनुभूति होनी चाहिए-

तालिका सं 4.5.7

प्रश्न (5)(viii) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

श्रेणी	N	सहमत		असहमत	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
छात्र	68	62	91.18	6	8.82
छात्राएँ	22	21	95.45	1	4.55
कुल	90	83	92.22	7	7.78
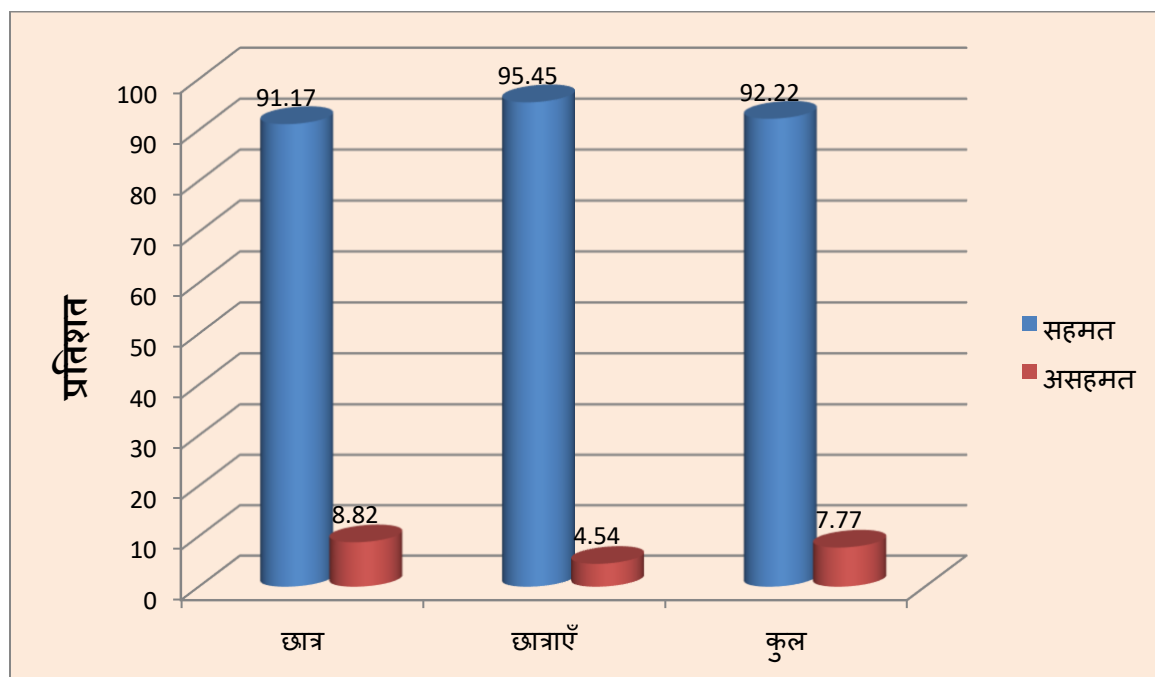
प्रश्न (5)(viii)के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

चित्र सं 4.5.7

विश्लेषण

उपरोक्त तालिका संख्या 4.5.7एवं चित्र संख्या 4.5.7से स्पष्ट है कि "मोबाइल के अनुप्रयोग में हिंदी के स्थान पर अंग्रेजी की प्रधानता का कारणराष्ट्रभाषा में काम करने पर गर्व की अनुभूति होनी चाहिए।" इस कथन के साथ 91.17%छात्र तथा 95.45% छात्राएँ सहमत हैं जबकि इसके विपरीत 8.82% छात्र तथा 4.54%छात्राएँ असहमत हैं।

कुल विद्यार्थी92.22% इस कथन के साथ सहमत तथा 7.77%असहमत हैं।

विवेचना

उपरोक्त तालिका के परिणामों से स्पष्ट है कि छात्र छात्राओं में कुल विद्यार्थी-92.22 प्रतिशत इस कथन के साथ सहमत हैं कि राष्ट्रभाषा में काम करने पर गर्व की अनुभूति होनी चाहिए जबकि इसके विपरीत 7.77% विद्यार्थी इस कथन के साथ असहमत हैं।

प्रश्न (6) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति-

प्रश्न सं 6- भारत की राष्ट्रभाषा क्या है?

तालिका सं 4.6

प्रश्न (6) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

श्रेणी	N	अंग्रेजी		हिन्दी		अन्यभाषा	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
छात्र	68	4	5.88	63	92.65	1	1.47
छात्राएँ	22	1	4.55	21	95.45	0	0
कुल	90	5	5.56	84	93.33	1	1.11
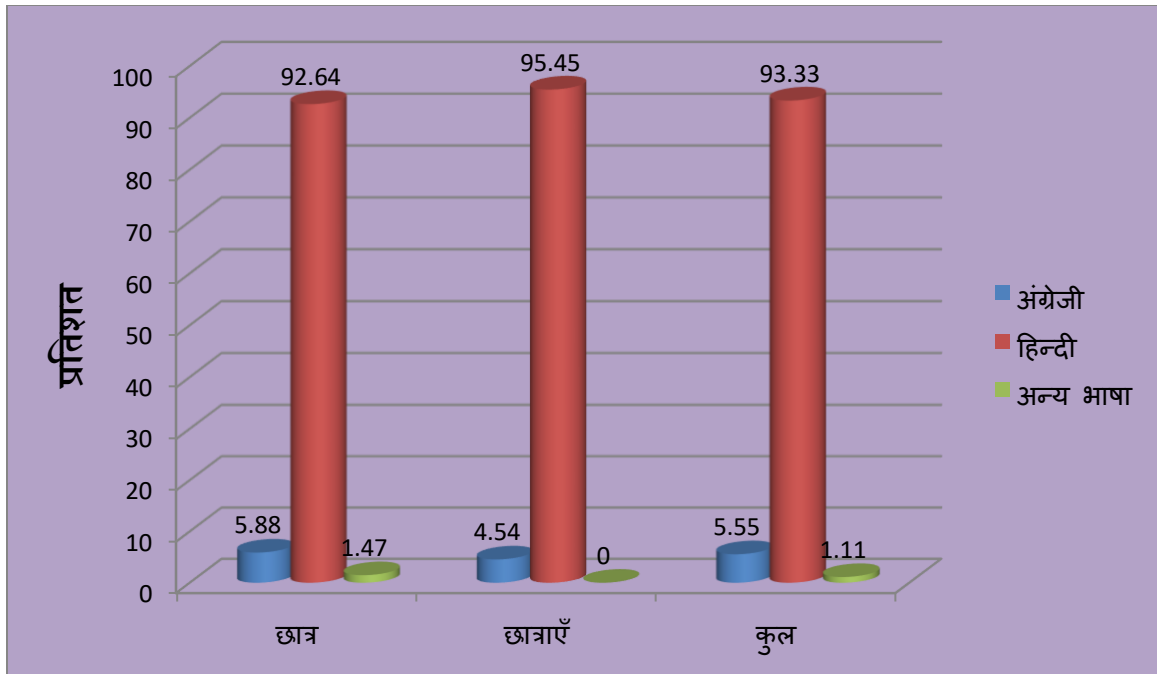
प्रश्न (6) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

चित्र सं 4.6

विश्लेषण

तालिका 4.6 तथा चित्र संख्या 4.6 से स्पष्ट है कि भारत की राष्ट्रभाषा हिंदी है जिसमें 92.64% छात्र तथा छात्राएं 94.45% हिंदी भाषा का चयन करते हैं तथा अंग्रेजी भाषा का चयन 5.88% छात्र तथा 4.54% छात्राओं ने किया है कुल विद्यार्थी 5.55% अंग्रेजी भाषा के विकल्प का चयन करते हैं तथा 93.33% विद्यार्थी हिंदी भाषा का विकल्प का चयन करते हैं तथा 1.11% विद्यार्थियों ने अन्य भाषा के विकल्प का चयन किया है।

विवेचना

उपरोक्त तालिका के परिणामों से स्पष्ट है कि छात्र-छात्राओं में हिंदी व अंग्रेजी भाषा प्रयोग करने मेंअंतर है 92.64% छात्रों ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा माना हैं जबकि 94.45% छात्राओं ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा बतलाया हैं।

अंग्रेजी भाषा का राष्ट्रभाषा के रूप में चयन 5.88% छात्र तथा 4.54% छात्राओं ने किया हैं और 1.47% छात्रों ने राष्ट्रभाषा के लिए अन्य भाषा के विकल्प का चयन किया हैं।

सम्पूर्ण विद्यार्थियों में 5.55% अंग्रेजी भाषा के विकल्प का चयन करते हैं तथा 93.33% विद्यार्थी हिंदी भाषा का विकल्प का चयन करते हैं तथा 1.11% विद्यार्थियों ने अन्य भाषा के विकल्प का चयन किया है। आंकड़ों से स्पष्ट है कि विद्यार्थी अंग्रेजी की अपेक्षा हिंदी का प्रयोग अधिक करते हैं इसी कारण भारत की राष्ट्रभाषा हिंदी है जबकि अंग्रेजी पश्चिमी देशों की भाषा हैं।

प्रश्न (7) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति-

प्रश्न सं 7-आपकी मातृभाषा क्या है?

तालिका सं 4.7

प्रश्न (7) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

श्रेणी	N	अंग्रेजी		हिन्दी		अन्यभाषा	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
छात्र	68	4	5.88	62	91.18	2	2.94
छात्राएँ	22	0	0	22	100	0	0
कुल	90	4	4.44	84	93.33	2	2.22
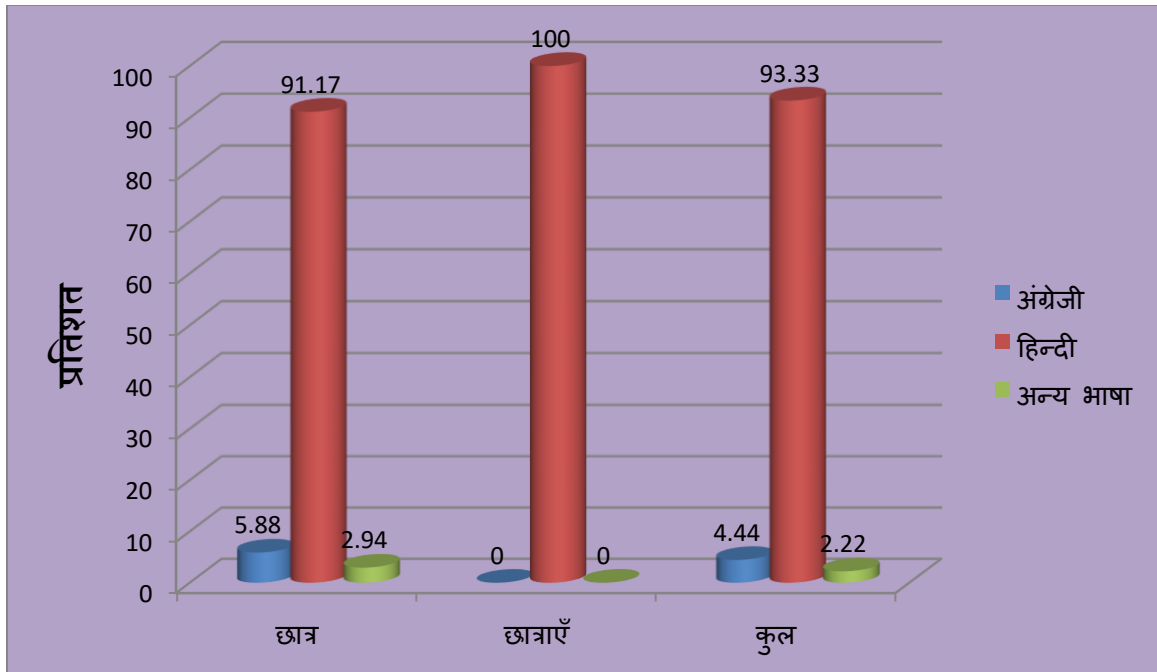
प्रश्न (7) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

चित्र सं 4.7

विश्लेषण

उक्त तालिका संख्या 4.7 से स्पष्ट है कि 91.17% छात्र तथा 100% छात्राएं अपनी मात्र भाषा के रूप में हिंदी भाषा के विकल्प का चयन करती हैं, 5.88% छात्र तथा 0% छात्राएं अपनी मातृभाषा के रूप में अंग्रेजी भाषा का चयन करती हैं। 2.94% छात्र तथा 0% छात्राएं अपनी मातृभाषा के रूप में अन्य भाषा के विकल्प का चयन करती हैं।कुल 93.33% विद्यार्थी हिंदी भाषा का चयन अपनी मातृभाषा के रूप में करते हैं,4.44% विद्यार्थी अपनी मात्र भाषा के रूप में अंग्रेजी भाषा का तथा शेष 2.22% विद्यार्थी अपनी मातृभाषा के रूप में अन्य भाषाओं का चयन करते हैं।

विवेचना

उपरोक्त तालिका के परिणामों से स्पष्ट है कि छात्र-छात्राओं में हिंदी भाषा व अंग्रेजी भाषा का उपयोग करने में काफी अंतर है जहाँ हिंदी का प्रयोग कुल विद्यार्थी 93.33% करते हैं वही अंग्रेजी का चयन कुल

विद्यार्थी 4.44% करते हैं इससे स्पष्ट है कि विद्यार्थी अंग्रेजी की अपेक्षा हिंदी भाषा का प्रयोग अधिक करते हैं क्योंकि यह कामकाज की भाषा के साथ-साथ बोलचाल की भाषा है इसलिए यह मातृभाषा है।

प्रश्न (8) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति-

प्रश्न सं 8-मातृभाषा में काम करने पर गर्व की अनुभूति होनी चाहिए-

तालिका सं 4.8

प्रश्न (8) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

श्रेणी	N	हाँ		नहीं		बिल्कुल नहीं	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
छात्र	68	62	61.18	5	7.35	1	1.47
छात्राएँ	22	22	100	0	0	0	0
कुल	90	84	93.33	5	5.56	1	1.11
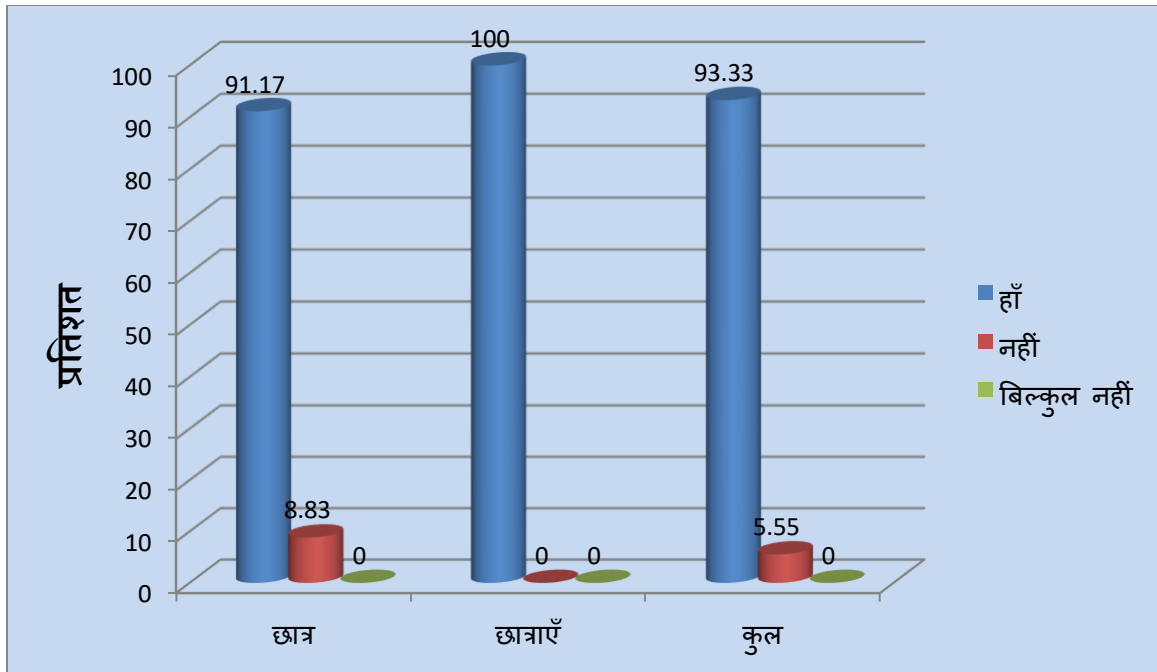
प्रश्न (8) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

चित्र सं 4.8

विश्लेषण

उक्त तालिका संख्या 4.8 तथा चित्र संख्या 4.8 से स्पष्ट है कि छात्र 91.17% तथा छात्राएं 100% मातृभाषा में काम करने पर गर्व की अनुभूति करते हैं। 8.83% छात्र तथा 0% छात्राएं मातृभाषा में कार्य करने में गर्व की अनुभूति नहीं करती है।इस प्रकार कुल 93.33% विद्यार्थी है जो मातृभाषा में कार्य में पर गर्व की अनुभूति करते हैं तथा इसके विपरीत 5.55% छात्र मातृभाषा में काम करने पर गर्व की अनुभूति नहीं करते हैं।

विवेचना

उपरोक्त तालिका के परिणामों से स्पष्ट है कि छात्र-छात्राओं में मातृभाषा में काम करने को लेकर थोड़ा अंतर है जहां कुल विद्यार्थी 93.33% मातृभाषा में काम करने पर गर्व की अनुभूति करते हैं जिसका कारण यह है कि हिंदी के राष्ट्रभाषा होने के साथ-साथ इसकी शब्दावली हमारे जीवन में बचपन से व्यावहारिक रूप में अपनाई जाती है परंतु 5.55% विद्यार्थी मातृभाषा में काम करने के पक्ष में नहीं हैं।

प्रश्न (9) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति-

प्रश्न सं 9-हिन्दी में कार्य करना देश की अस्मिता/राष्ट्र के गौरव का विषय है-

तालिका सं 4.9

प्रश्न (9) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

श्रेणी	N	हाँ		नहीं		बिल्कुल नहीं	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
छात्र	68	62	91.18	4	5.88	2	2.94
छात्राएँ	22	19	86.36	3	13.64	0	0
कुल	90	81	90	7	7.78	2	2.22
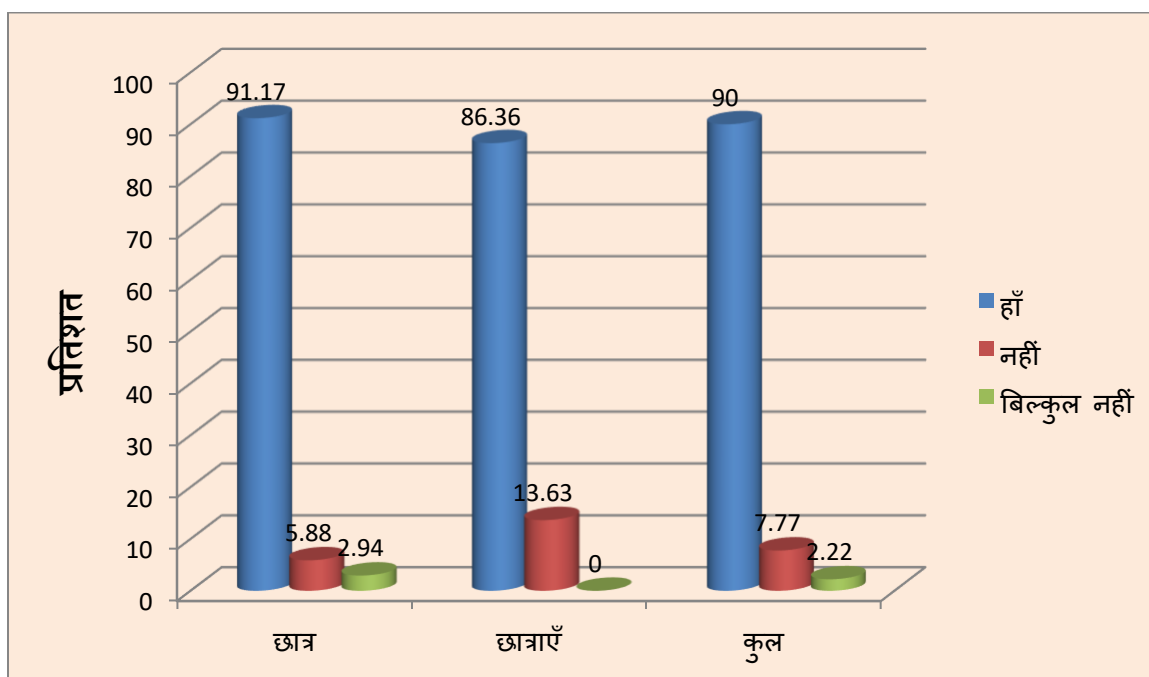
प्रश्न (9) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

चित्र सं 4.9

विश्लेषण

उक्त तालिका संख्या 4.9 तथा चित्र संख्या 4.9 से स्पष्ट है कि 91.17%छात्र तथा 86.36%छात्राओं का मत है कि हिन्दी में कार्य करना देश की अस्मिता एवं गौरव का विषय है। 5.88% छात्र तथा 13.63% छात्राएं हिन्दी में कार्य करने को अस्मिता एवं गौरव का विषय नहीं मानती। 2.94% छात्र एवं 0% छात्राएँ हिन्दी में कार्य करने को अस्मिता एवं गौरव का विषय बिल्कुल नही मानती हैं।इस प्रकार कुल 90.00% विद्यार्थी है जो हिन्दी में कार्य करने को अस्मिता एवं गौरव का विषय मानते हैं इसके विपरीत 7.77% विद्यार्थी हिन्दी में काम करने को अस्मिता एवं गौरव का विषय नही मानते तथा 2.22% छात्र ऐसे भी हैं जो हिन्दी भाषा में काम करने को अस्मिता एवं गौरव का विषय बिल्कुल नहीं मानते हैं।

विवेचना

उपरोक्त तालिका के परिणामों से स्पष्ट है कि छात्र-छात्राओं में हिंदी भाषा में काम करने को लेकर थोड़ा अंतर है जहां कुल विद्यार्थी 90.00% हिन्दी भाषामें काम करने पर अस्मिता एवं गौरव की अनुभूति करते हैं जिसका कारण है कि हिंदी के राष्ट्रभाषा होने के साथ-साथ इसकी शब्दावली हमारे जीवन में बचपन से व्यावहारिक रूप में अपनाई जाती है परंतु 7.77% विद्यार्थी हिन्दी भाषा में काम करने पर गर्व एवं अस्मिता का अनुभव नहीं करते हैं तथा 2.22% विद्यार्थी हिन्दी में कार्य करने को अस्मिता एवं गौरव का विषय बिल्कुल भी नहीं मानते हैं जिसका कारण उनकी हिन्दी के प्रति जागरूकता एवं हिन्दी भाषा के विषय में गलत पूर्वाग्रह है।

प्रश्न (10) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति-

प्रश्न सं 10-मोबाइल में हिन्दी में काम करना अत्यंत सरल सरल है-

तालिका सं 4.10

प्रश्न (10) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

श्रेणी	N	हाँ		नहीं		बिल्कुल नहीं	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
छात्र	68	18	26.47	47	69.12	3	4.41
छात्राएँ	22	7	31.82	15	68.18	0	0
कुल	90	25	27.78	62	68.89	3	3.33
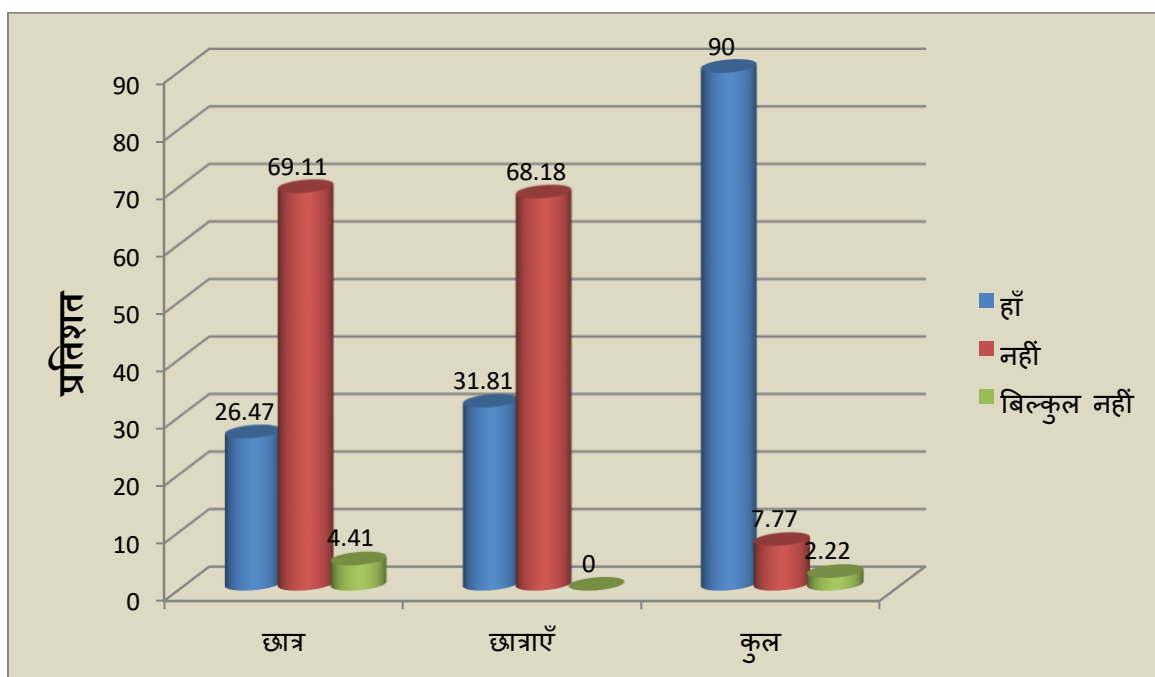
प्रश्न (10) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

चित्र सं 4.10

विश्लेषण

तालिका संख्या 4.10 एवं चित्र संख्या 4.10 से स्पष्ट है कि 26.47% छात्र तथा 31.81% छात्राएं मोबाइल में हिंदी में काम करने को अत्यंत सरल मानती हैं जबकि इसके विपरीत 69.11 छात्र तथा 68.18% छात्राएं मोबाइल में हिंदी में काम करने को सरल नहीं मानतीहैं। 4.41 प्रतिशत छात्र तथा 0% छात्राएं ऐसी हैं जिनका मानना है कि मोबाइल में हिंदी में काम करना सरल बिल्कुल नहीं है।

कुल 90% विद्यार्थी मोबाइल में हिंदी में काम करने को अत्यंत सरल मानते हैं जबकि इसके विपरीत 7.7% विद्यार्थी मोबाइल में कार्य करने को अत्यंत सरल नहीं मानते हैं तथा 2.2% विद्यार्थी ऐसे भी हैं जिनका मानना है कि मोबाइल में हिंदी में काम करना सरल बिल्कुल नहीं है।

विवेचना

उपरोक्त तालिका एवं चित्र के परिणामों से स्पष्ट है कि मोबाइल द्वारा हिंदी में काम करना अत्यंत सरल है तथा अधिकांश छात्र एवं छात्राएं मोबाइल में हिंदी में काम करते हैं परंतु कुछ छात्र एवं छात्राएं ऐसे हैं जो हिंदी की कार्यप्रणाली को न समझ पाने के कारण मोबाइल द्वारा हिंदी में कार्य करने को कठिन समझते हैं।

प्रश्न (11) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति-

प्रश्न सं 11-मोबाइल कम्प्यूटर के द्वारा हिन्दी में कार्य करने की सरलतम विधि है-

तालिका सं 4.11

प्रश्न (11) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

श्रेणी	N	कुंजीपटल		ध्वनि लेखन	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
छात्र	68	17	25	51	75
छात्राएँ	22	6	27.27	16	72.73
कुल	90	23	25.56	67	74.44
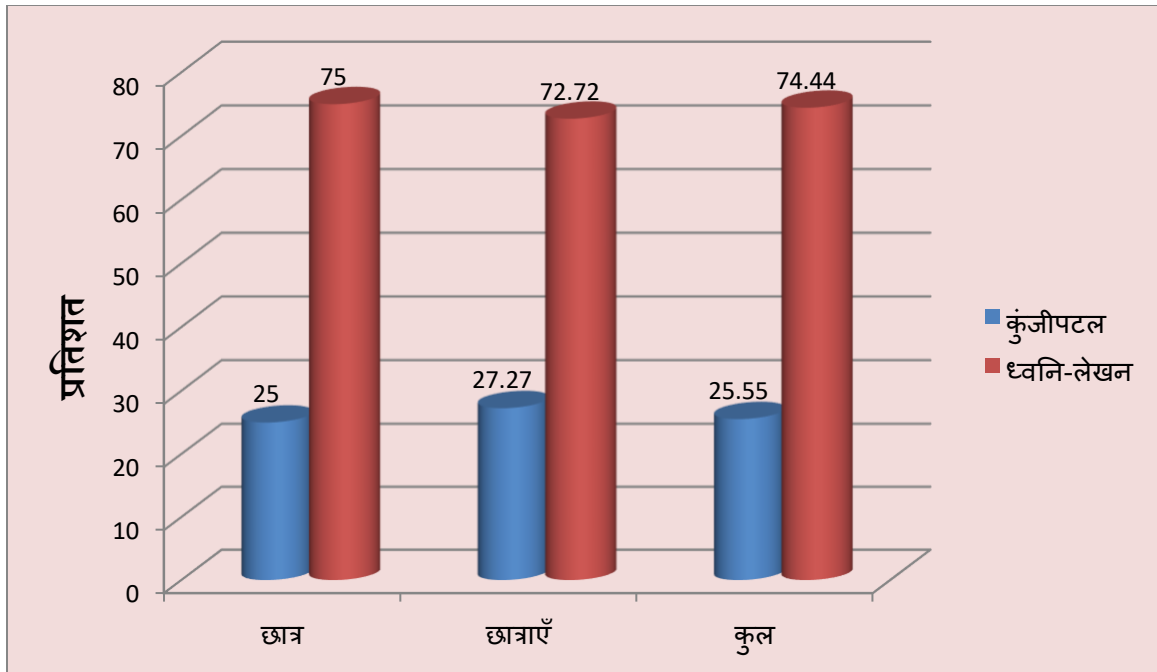
प्रश्न (11) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

चित्र सं 4.11

विश्लेषण

उपरोक्त तालिका संख्या 4.11 तथा चित्र संख्या 4.11 से स्पष्ट है कि 25% छात्र तथा 27.27% छात्राएं मोबाइल कंप्यूटर के द्वारा हिंदी में कार्य करने की सरलतम विधि कुंजीपटल को मानते हैं जबकि 75% छात्र था 72.72% छात्राएं मोबाइल कंप्यूटर के द्वारा हिंदी में कार्य करने की सरलतम विधि ध्वनि लेखन को मानते हैं कुल 25.55% विद्यार्थी कुंजीपटल को मोबाइल कंप्यूटर में काम करने की सरलतम विधि मानते हैं जबकि इसके विपरीत 74.44% विद्यार्थी ध्वनि लेखन को मोबाइल कम्प्यूटर में काम करने को सरल मानते हैं।

विवेचना

उत्तरोक्त तालिका के परिणामों से स्पष्ट है कि वह मोबाइल कंप्यूटर के द्वारा हिंदी में कार्य करने की सरलतम विधि ध्वनि लेखन है जिसका मुख्य कारण कुंजीपटल की अपेक्षा उसका उपयोग में सरल होना है जो कि समय और श्रम दोनों की बचत करता है।

प्रश्न (12) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति-

प्रश्न सं 12-क्या आपके मोबाइल में बोलकर लिखने(Voice-Typing) की सुविधा है-

तालिका सं 4.12

प्रश्न (12) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

श्रेणी	N	हाँ		नहीं		बिल्कुल नहीं	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
छात्र	68	52	76.47	14	20.59	2	2.94
छात्राएँ	22	19	86.36	3	13.64	0	0
कुल	90	71	78.89	17	18.89	2	2.22
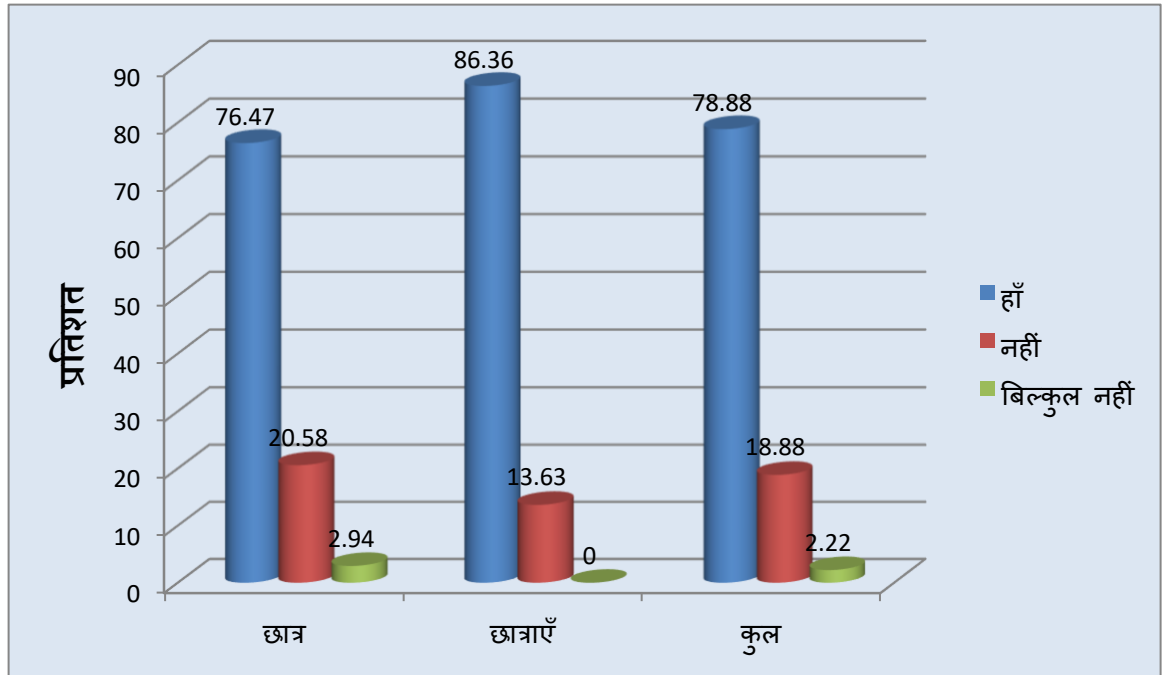
प्रश्न (12) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

चित्र सं 4.12

विश्लेषण

तालिका संख्या 4.12 एवं चित्र संख्या 4.12 से स्पष्ट है कि 76.47% छात्र तथा 86.36% छात्राएं मोबाइल में बोलकर लिखने की सुविधा का उपयोग करते है, 20.58% छात्र तथा 13.63% छात्राएं अपने मोबाइल में बोलकर लिखने की सुविधा का उपयोग नहीं करती हैं तथा 2.94% छात्र तथा 0% छात्राएं अपने मोबाइल में बोलकर लिखने की सुविधा का उपयोग बिलकुल नहीं करते हैं।

कुल 78.88% विद्यार्थी अपने मोबाइल में बोलकर लिखने की सुविधा का उपयोग करते है जबकि 18.88% विद्यार्थी अपने मोबाइल में बोलकर लिखने की सुविधा का उपयोग नहीं करते हैं तथा 2.22% विद्यार्थी ऐसे भी हैं जो बोलकर लिखने की सुविधा का उपयोग बिलकुल नहीं करते हैं।

विवेचना

उपरोक्त तालिका के परिणामों से स्पष्ट है कि कुछ विद्यार्थियों के पास एंड्रॉयड मोबाइल ना होने के कारण बोलकर लिखने की सुविधा का उपयोग नहीं करते हैं जबकि अधिकांश विद्यार्थी बोलकर लिखने की सुविधा का उपयोग करते हैं।

प्रश्न (13) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति-

प्रश्न सं 13-सामाजिक नेटवर्क(Social media) Whatsapp,फेसबुक इत्यादि में आपकी सन्देश की भाषा है-

तालिका सं 4.13

प्रश्न (13) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

श्रेणी	N	अंग्रेजी	रोमन हिन्दी	हिन्दी

				(आंग्ल लिपि)		(देवनागरी लिपि)	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
छात्र	68	43	63.23	12	17.65	13	19.12
छात्राएँ	22	18	81.82	1	4.55	3	13.64
कुल	90	61	67.78	13	14.45	16	17.78
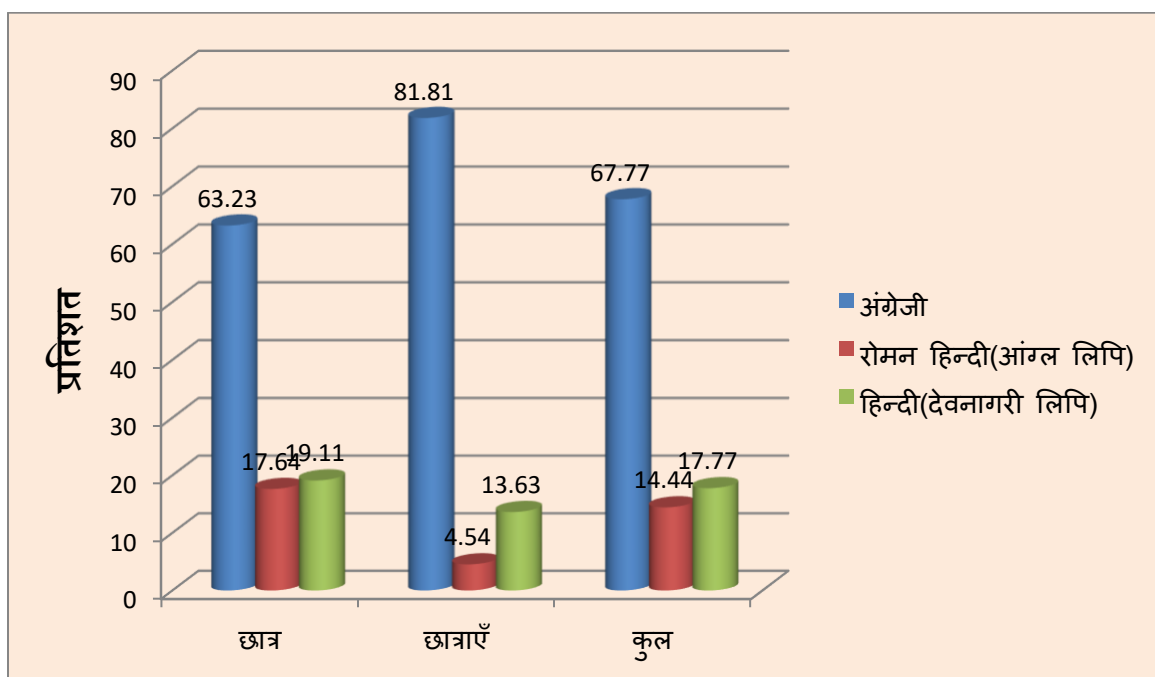
प्रश्न (13) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

चित्र सं 4.13

विश्लेषण

तालिका संख्या 4.13 तथा चित्र संख्या 4.13 से स्पष्ट है कि 62.23% छात्र तथा 81.81% छात्राएं सोशल मीडिया के उपयोग में अपने संदेश की भाषा अंग्रेजी रखती हैं, 17.64% छात्र तथा 4.54% छात्राएं आंग्ल लिपि की हिंदी में सोशल मीडिया में मैसेज भेजती हैं तथा 19.11% छात्र तथा 13.63% छात्राएं सोशल मीडिया मैसेज के उपयोग में हिंदी भाषा का उपयोग करती हैं।

कुल 67.77% विद्यार्थी अंग्रेजी भाषा में सोशल मीडिया के मैसेज भेजते हैं जबकि14.44% विद्यार्थी आंग्ल लिपि की हिंदी में तथा 17.77% विद्यार्थी हिंदी भाषा में सोशल मीडिया के मैसेज भेजते हैं

विवेचना

सोशल मीडिया फेसबुक इत्यादि में अंग्रेजी भाषा का उपयोग अधिक होता है क्योंकि अन्य भाषाओं में उपभोक्ताओं को कार्य करने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

प्रश्न (14) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति-

प्रश्न सं14-आप मोबाइल में किस भाषा में बात करते हैं-

तालिका सं 4.14

प्रश्न (14) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

श्रेणी	N	हिन्दी		अंग्रेजी		अन्य	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
छात्र	68	58	85.29	8	11.76	2	2.94
छात्राएँ	22	14	63.64	7	31.82	1	4.55
कुल	90	72	80	15	16.67	3	3.33
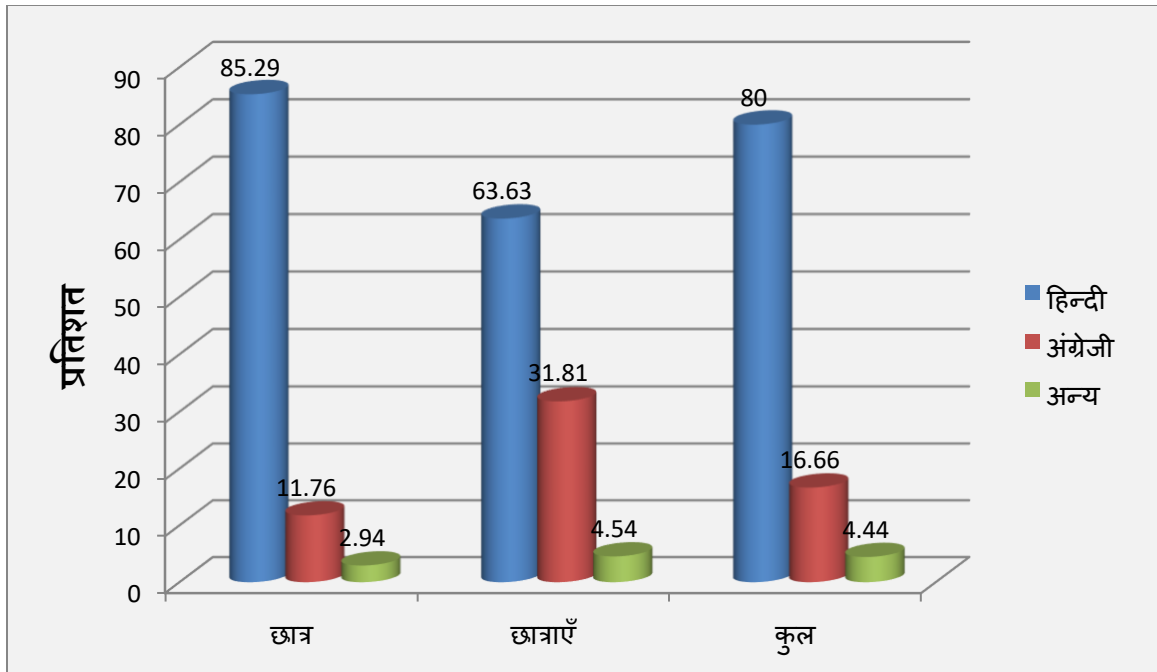
प्रश्न (14) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

चित्र सं 4.14

विश्लेषण

तालिका संख्या 4.14 तथा चित्र संख्या 4.14 से स्पष्ट है कि 85.29% छात्र तथा 63.63% छात्राएं अपने मोबाइल में हिंदी भाषा में बात करती हैं जबकि 11.76% छात्र तथा 31.81% अपने मोबाइल में अंग्रेजी भाषा में बात करते हैं तथा 2.94% छात्र तथा 4.54% छात्राएं अपने मोबाइल में अन्य भाषाओं में बात करती हैं।

इस प्रकार कुल 80% विद्यार्थी हिंदी भाषा में 16.66% विद्यार्थी अंग्रेजी भाषा में तथा 4.44% विद्यार्थी अन्य भाषाओं में अपने मोबाइल पर बात करते हैं।

विवेचना

मोबाइल में सर्वाधिक बातचीत करने के आंकड़े हिंदी भाषा में आए हैं उसका मुख्य कारण यह है कि हिंदी हमारी मातृभाषा है और हमने यह परीक्षण हिंदी भाषी क्षेत्र के महाविद्यालय में करवाया है।

प्रश्न (15) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति-

प्रश्न सं-15गूगल सर्च इन्जन में आप खोज(Search)करने हेतु प्रयोग करते है-

तालिका सं 4.15

प्रश्न (15) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

श्रेणी	N	अंग्रेजी		रोमन हिन्दी (आंग्ल लिपि)		हिन्दी (देवनागरी लिपि)	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
छात्र	68	49	72.06	8	11.76	11	16.18
छात्राएँ	22	15	68.18	5	22.73	2	9.09
कुल	90	64	71.11	13	14.44	13	14.44
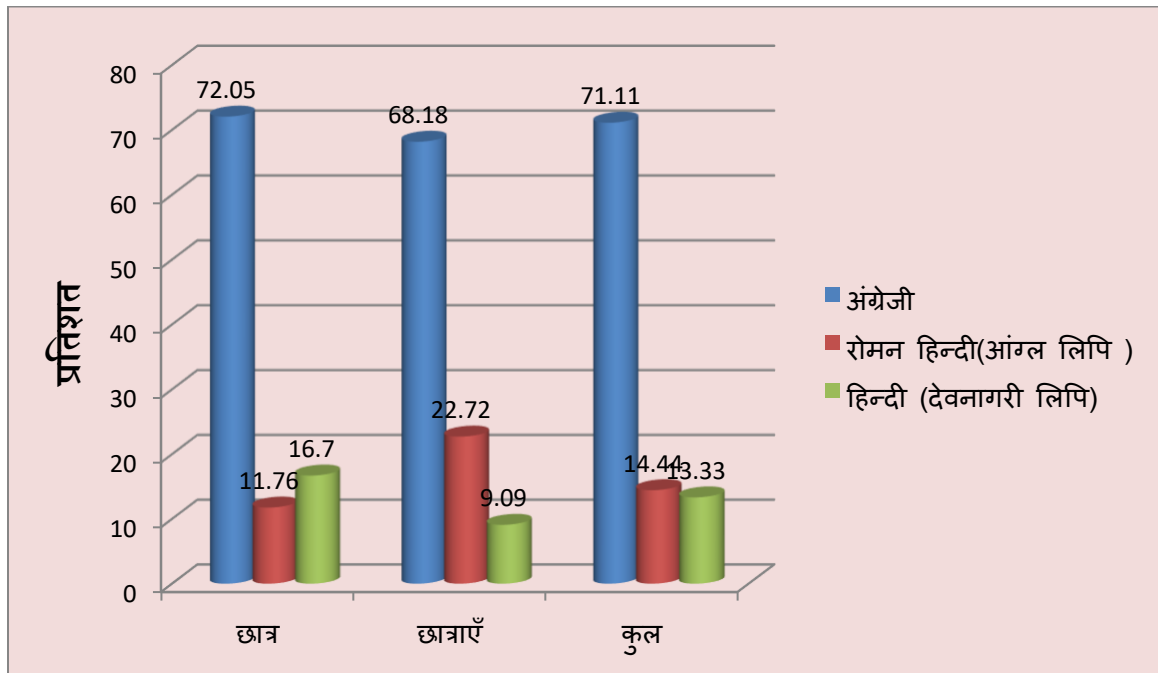
प्रश्न (15) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

चित्र सं 4.15

विश्लेषण

72.05% छात्र तथा 68.18% छात्राएं गूगल सर्च इंजन में खोज करने के लिए अंग्रेजी भाषा का उपयोग करती हैं जबकि 11.76% छात्र तथा 22.72 छात्राएं गूगल सर्च इंजन में खोज करने के लिए आंग्ल लिपि वाली का उपयोग करती हैं तथा 16.7% छात्र तथा 9.09% छात्राएं गूगल सर्च इंजन में खोज करने के लिए देवनागरी लिपि की हिंदी का उपयोग करती हैं।

इस तरह कुल 71.11% विद्यार्थी अंग्रेजी भाषा 14.44% विद्यार्थी आंग्ल लिपि वाली हिंदी तथा 13.33% विद्यार्थी देवनागरी लिपि वाली हिंदी का उपयोग गूगल सर्च में करते हैं।

विवेचना

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि गूगल सर्च इंजन में खोज करने हेतु अंग्रेजी भाषा का प्रयोग सर्वाधिक छात्र करते हैं इसका कारण यह है कि विद्यार्थियों को अन्य भाषा में सर्च करने में कठिनाई होती है तथा यह उनकी आदत में शामिल नहीं है।

प्रश्न (16) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति-

प्रश्न सं-16मोबाइल में गूगल सर्च हेतु आप प्रयोग करते है-

तालिका सं 4.16

प्रश्न (16) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

श्रेणी	N	अंग्रेजी कुंजीपटल		देवनागरी वर्चुअल कुंजीपटल		वाईस टाइपिंग हिन्दी		वाईस टाइपिंग अंग्रेजी	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%	आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
छात्र	68	45	66.18	8	11.76	12	17.65	3	4.41
छात्राएँ	22	14	63.64	4	18.18	2	9.09	2	9.09
कुल	90	59	65.56	12	13.33	14	15.56	5	5.56
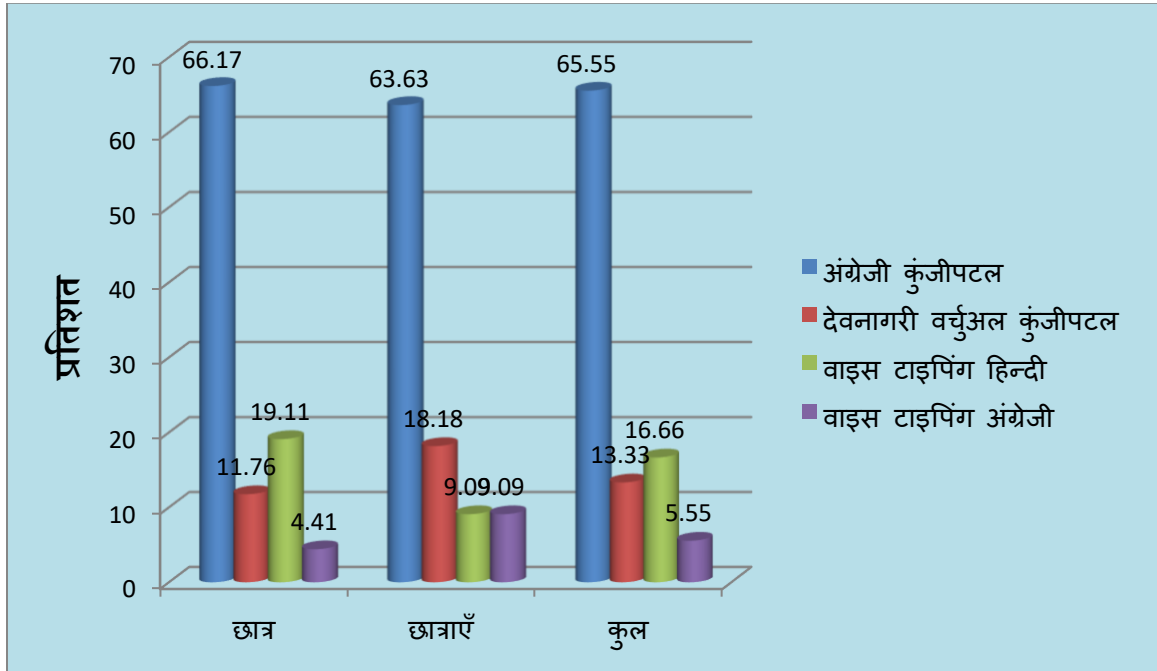
प्रश्न (16) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

चित्र सं 4.16

विश्लेषण

तालिका संख्या 4.16 तथा चित्र संख्या 4.16 से स्पष्ट है कि 66.17% छात्र तथा 66.63% छात्राएं मोबाइल में गूगल सर्च हेतु अंग्रेजी कुंजीपटल का उपयोग करती हैं,11.76% छात्र तथा 18.18% छात्राएं मोबाइल में गूगल सर्च क्षेत्र देवनागरी वर्चुअल कुंजीपटल का उपयोग करती हैं,19.11% छात्र था 9.09% छात्राएं मोबाइल में गूगल वॉइस टाइपिंग हिंदी का उपयोग करती हैं तथा 4.41% छात्र तथा 9.09%छात्राएँ मोबाइल में गूगल वॉइस टाइपिंग अंग्रेजी का उपयोग करती हैं।

इस तरह कुल 65.55% विद्यार्थी मोबाइल में गूगल सर्च हेतु अंग्रेजी कुंजीपटल 13.33% विद्यार्थी देवनागरी वर्चुअल कुंजीपटल 16.66% विद्यार्थी वॉइस टाइपिंग हिंदी तथा 5.55% विद्यार्थी वॉइस टाइपिंग अंग्रेजी का उपयोग करते हैं।

विवेचना

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि मोबाइल में गूगलसर्च हेतु सर्वाधिक छात्र अंग्रेजी कुंजी पटल का प्रयोग करते है इसका मुख्य कारण यह है कि देवनागरी वर्चुअल कुंजीपटल की सेटिंग सभी विद्यार्थियों को नहीं आती तथा गूगलसर्च में कठिनाई भी होती है इसी प्रकार वॉइस टाइपिंग हिंदी और वॉइस टाइपिंग अंग्रेजी में प्रमुख कारण मोबाइल सेटिंग के विषय में जानकारी न होना तथा स्वर विकलांगता हो सकती है।

प्रश्न (17) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति-

प्रश्न सं-17-लैपटॉप /कम्प्यूटर में गूगल सर्च हेतु आप प्रयोग करते है-

तालिका सं 4.17

प्रश्न (17) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

श्रेणी	N	अंग्रेजी कुंजीपटल		देवनागरी वर्चुअल कुंजीपटल		वाईस टाइपिंग अंग्रेजी	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
छात्र	68	45	66.18	10	14.71	13	19.12
छात्राएँ	22	15	68.18	1	4.55	6	27.27
कुल	90	60	66.67	11	12.22	19	21.11
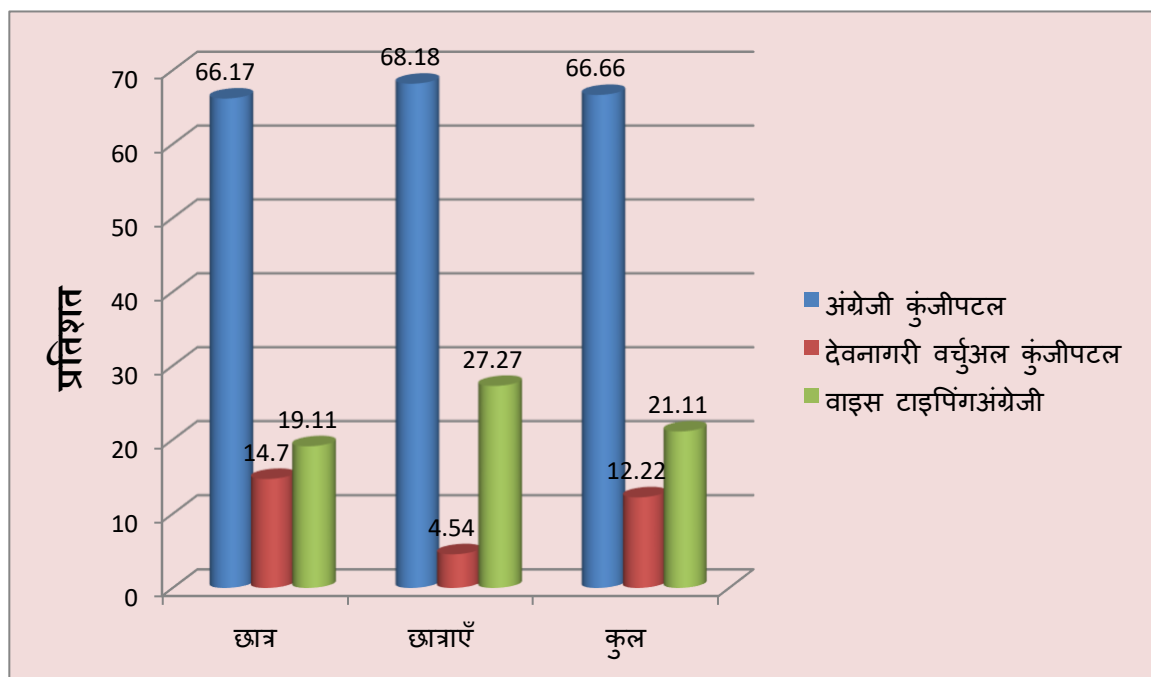
प्रश्न (17) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

चित्र सं 4.17

विश्लेषण

उपरोक्त तालिका संख्या 4.17 तथा चित्र संख्या 4.17 से स्पष्ट है कि 66.17% छात्र तथा 68.18% छात्राएं लैपटॉप/कंप्यूटर में गूगल सर्च हेतु अंग्रेजी कुंजीपटल का प्रयोग करती हैं,14.7% छात्र तथा 4.54% छात्राएं लैपटॉप/कंप्यूटर में गूगल सर्च हेतु देवनागरी वर्चुअल कुंजीपटल का प्रयोग करती हैं तथा 19.12% छात्र तथा 27.27% छात्राएं लैपटॉप/कंप्यूटर में गूगल सर्च हेतु वॉइस टाइपिंग अंग्रेजी का प्रयोग करती हैं।

विवेचना

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि लैपटॉप/कंप्यूटर में गूगल सर्च हेतु सर्वाधिक छात्र अंग्रेजी कुंजीपटल का उपयोग करते हैं कुछ छात्र वॉइस टाइपिंग अंग्रेजी का भी उपयोग करते हैं परंतु देवनागरी वर्चुअल कुंजीपटल

सभी छात्र उपयोग नहीं करते इसका मुख्य कारण देवनागरी वर्चुअल कुंजीपटल के विषय में विद्यार्थियों को जानकारी का अभाव है।

प्रश्न (18) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

-प्रश्न सं-18 आपके E-mail/G-mail की डिफाल्ट भाषा क्या है-

तालिका सं 4.18

प्रश्न (18) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थित

श्रेणी	N	अंग्रेजी भाषा		हिन्दी भाषा		अन्य भाषा	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
छात्र	68	58	85.29	8	11.76	2	2.94
छात्राएँ	22	16	72.73	4	18.18	2	9.09
कुल	90	74	82.22	12	13.33	4	4.44
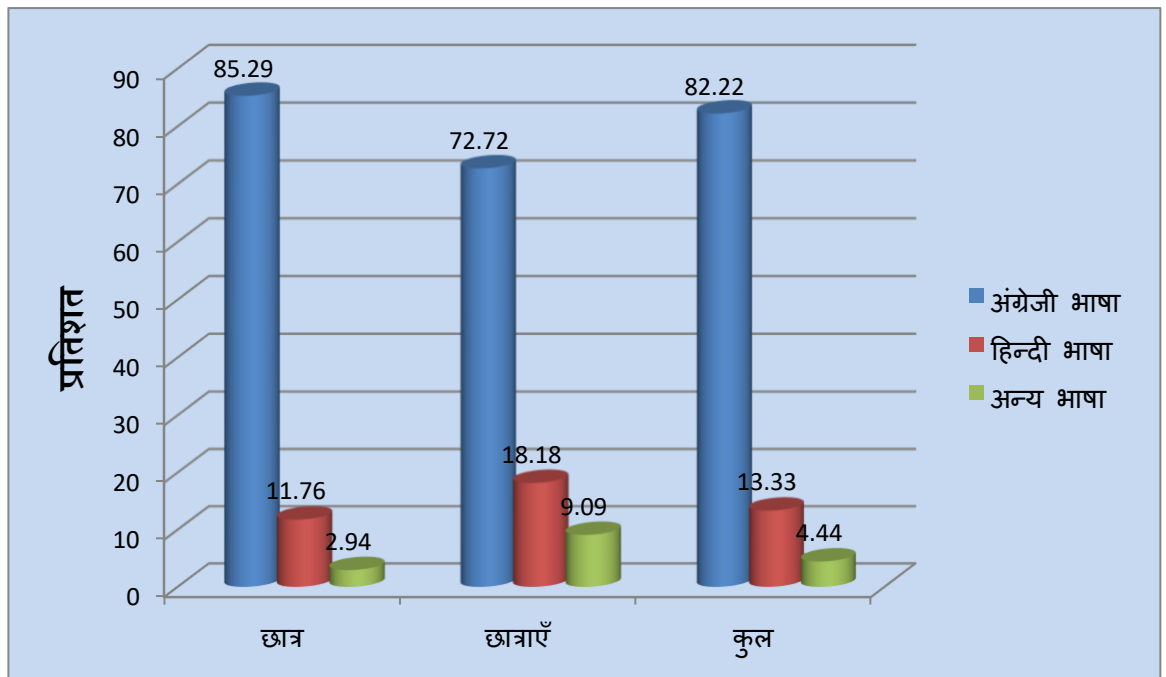
प्रश्न (18) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

चित्र सं 4.18

विश्लेषण

तालिका संख्या 4.18 तथा चित्र संख्या 4.18 से स्पष्ट है कि 85.29% छात्र तथा 72.72% छात्राओं ने अपने ई-मेल/जी-मेल की डिफ़ॉल्ट भाषा के रूप में अंग्रेजी भाषा के विकल्प का चयन किया है जबकि 11.76% छात्र तथा 18.18% छात्राएं अपने ई-मेल/जीमेल के डिफ़ॉल्ट भाषा के रूप में हिंदी भाषा के विकल्प का चयन करते हैं तथा 2.94% छात्र तथा 9.09% छात्राएं ऐसी भी हैं जिन्होंने अपने ई-मेल/जी-मेल की भाषा के रूप में अन्य भाषा के विकल्प का चयन किया है।

इस प्रकार कुल 82.22% विद्यार्थी अंग्रेजी भाषा,13.33%विद्यार्थी हिंदी भाषा तथा4.44% विद्यार्थी ई-मेल /जी-मेल की भाषा के रूप में अन्य भाषा का चयन करते हैं।

विवेचना

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि ई-मेल/जी-मेल की डिफ़ॉल्ट भाषा अंग्रेजी है तथा अधिकांश छात्रों ने अंग्रेजी का ही चयन किया है परंतु जानकारी के अभाव के कारण कुछ विद्यार्थियों ने हिंदी भाषा तथा अन्य भाषा का चयन ई-मेल/जी-मेल की डिफ़ॉल्ट भाषा के रूप में किया है।

प्रश्न (19) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति-

प्रश्न सं-19 आपके गूगल सर्च की डिफाल्ट भाषा है-

तालिका सं 4.19

प्रश्न (19) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

श्रेणी	N	अंग्रेजी भाषा		हिन्दी भाषा		अन्य भाषा	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
छात्र	68	49	72.06	17	25	2	2.94
छात्राएँ	22	15	68.18	6	27.27	1	4.55
कुल	90	64	71.11	23	25.56	3	3.33
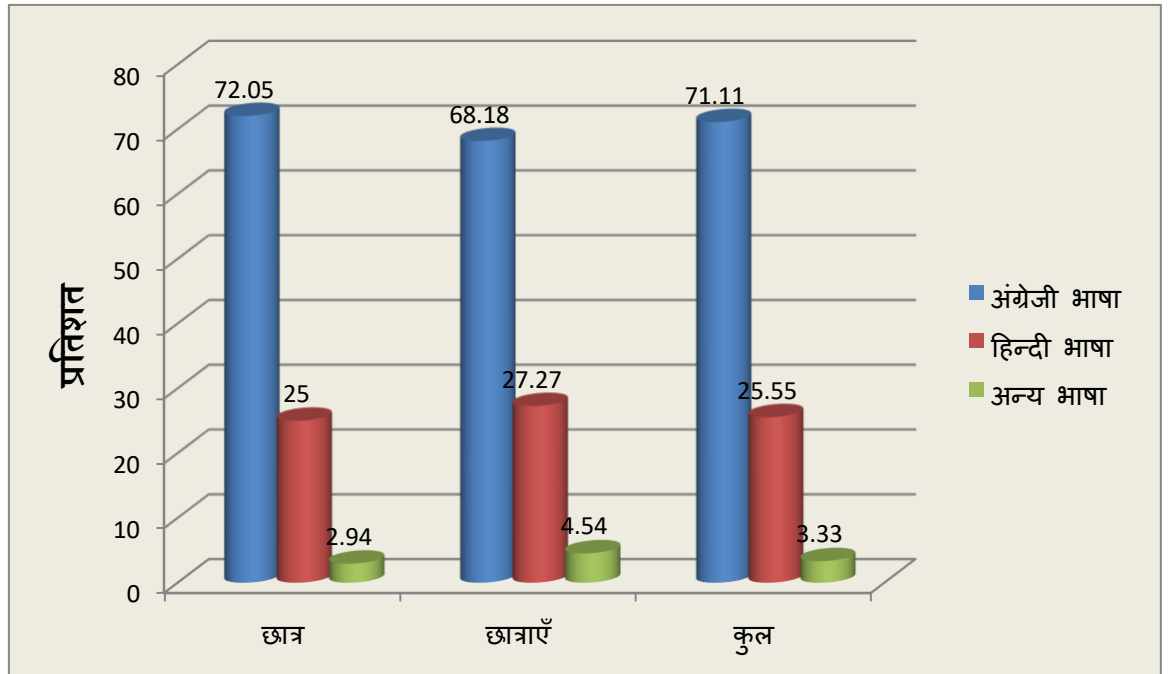
प्रश्न (19) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

चित्र सं 4.19

विश्लेषण

तालिका संख्या 4.19 तथा चित्र संख्या 4.19 से स्पष्ट है कि 72.05% छात्र तथा 68.18% छात्राओं ने गूगल सर्च की डिफ़ॉल्ट भाषा के रूप में अंग्रेजी भाषा के विकल्प का चयन किया है,25% छात्र तथा 27.27% छात्राओं ने गूगल सर्च की डिफ़ॉल्ट भाषा के रूप में हिंदी भाषा तथा 2.94 छात्र एवं4.54%छात्राओं ने अन्य भाषा के विकल्प का चयन किया है।

इस तरह कुल 71.11% विद्यार्थियों ने अपने गूगल सर्च की डिफ़ॉल्ट भाषा के रूप में अंग्रेजी भाषा, 25.55% विद्यार्थियों ने हिंदी भाषा तथा 3.33% विद्यार्थियों ने अन्य भाषा के विकल्प का चयन किया है

विवेचना

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि गूगल सर्च की डिफ़ॉल्ट भाषा अंग्रेजी है तथा अधिकांश छात्रों ने अंग्रेजी का ही चयन किया है परंतु जानकारी के अभाव के कारण कुछ विद्यार्थियों ने हिंदी भाषा तथा अन्य भाषा का चयन गूगल सर्च की डिफ़ॉल्ट भाषा के रूप में किया है।

प्रश्न (20) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति-

प्रश्न सं-20 ध्वनि (voice) के अंतर्गत (भाषाएँ और इनपुट) इन्टरनेट से जुड़े बिना बोली पहचाने(offline speech recognition) में डिफाल्ट भाषा कौन सी होती है-

तालिका सं 4.20

प्रश्न (20) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

श्रेणी	N	हिन्दी भाषा		अंग्रेजी भाषा	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
छात्र	68	24	35.29	44	64.71
छात्राएँ	22	9	40.91	13	59.09
कुल	90	33	36.67	57	63.33
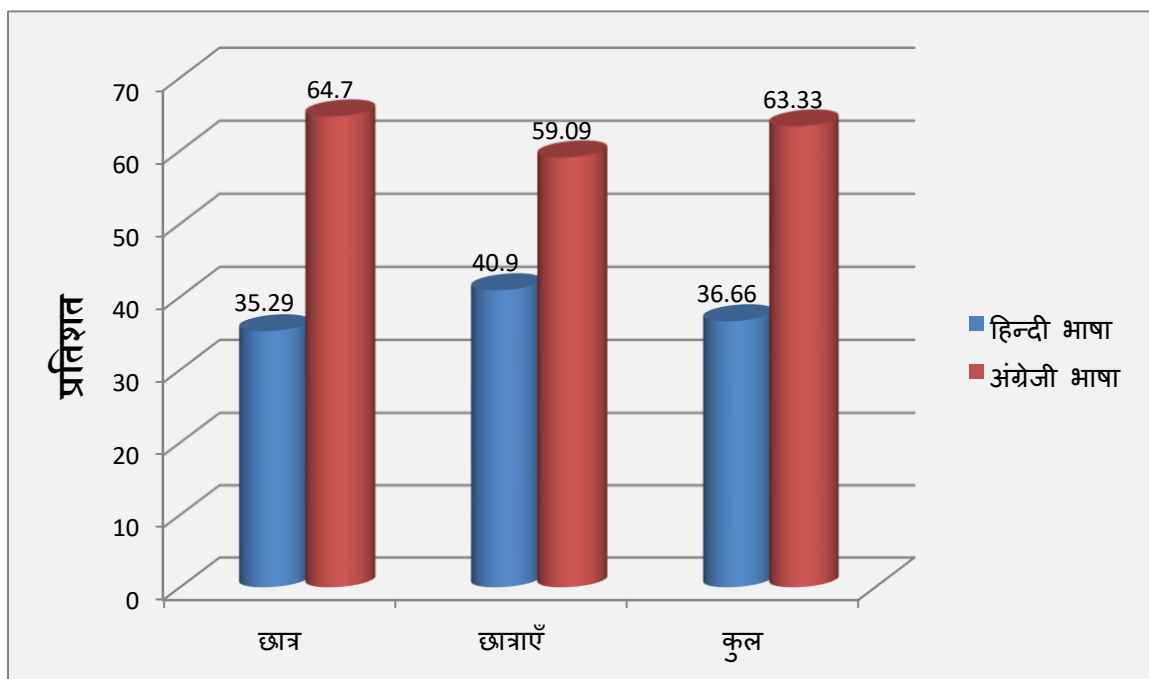
प्रश्न (20) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

चित्र सं 4.20

विश्लेषण

तालिका संख्या 4.20 तथा चित्र संख्या 4.20 से स्पष्ट है कि 35.29% छात्र तथा 40.9% छात्राओं ने ध्वनि के अंतर्गत इंटरनेट से जुड़े बिना बोली पहचानने में डिफ़ॉल्ट भाषा के रूप में हिंदी भाषा के विकल्प का चयन किया है तथा 64.7% छात्र तथा 59.09% छात्राओं ने अंग्रेजी भाषा के विकल्प का चयन किया है। इस प्रकार कुल 36.66% विद्यार्थी हिंदी भाषा तथा 63 .33% विद्यार्थियों ने अंग्रेजी भाषा के विकल्प का चयन ध्वनि के द्वारा इंटरनेट से जुड़े बिना बोली पहचानने में डिफ़ॉल्ट भाषा के रूप में किया है।

विवेचना

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि ध्वनि के अंतर्गत इंटरनेट से जुड़े बिना बोली पहचानने में डिफ़ॉल्ट भाषा अंग्रेजी है और अधिकांश विद्यार्थियोंने इस विकल्प का चयन भी किया है परंतु हिंदी भाषा के विकल्प का चयन करने वाले विद्यार्थियों की संख्या भी कम नहीं है जिसका मुख्य कारण विद्यार्थियों को ध्वनि एवं इंटरनेट से जुड़े पहलुओं का समुचित ज्ञान न होना है।

प्रश्न (21) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति-

प्रश्न सं-21 हिन्दी में इन्टरनेट से जुड़े बिना बोलकर लिखने की सुविधा चालू करने हेतु सभी (all) में click कर हिन्दी भाषा डाउनलोड करेंगे-

तालिका सं 4.21

प्रश्न (21) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

श्रेणी	N	सहमत		असहमत	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
छात्र	68	49	72.06	19	27.94
छात्राएँ	22	15	68.18	7	31.82
कुल	90	64	71.11	26	28.89
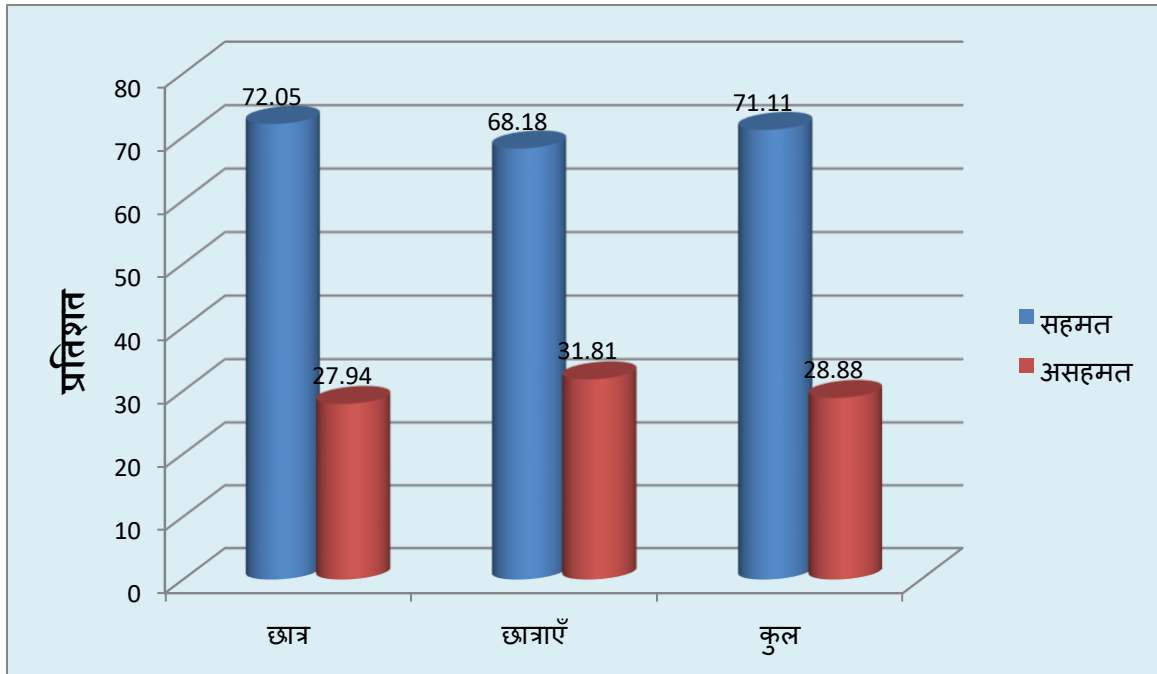
प्रश्न (21) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

चित्र सं 4.21

विश्लेषण

तालिका संख्या 4.21 तथा चित्र संख्या 4.21से स्पष्ट है कि "हिंदी में इंटरनेट से जुड़े बिना बोलकर लिखने की सुविधा चालू करने है तो सभी(all) में क्लिक कर हिंदी भाषा डाउनलोड करेंगे" इस कथन के साथ 72.05% छात्र तथा 68.18% छात्राएं असहमत हैं तथा 27.94% छात्र तथा 31.81% छात्राएं असहमत हैं। इस प्रकार कुल 71.11% विद्यार्थी इस कथन के साथ सहमत तथा 28.28% विद्यार्थी इस कथन के साथ असहमत है।

विवेचना

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि प्रश्न संख्या 21 में जो कथन कहा गया है वह सत्य है और यही कारण है कि सर्वाधिक विद्यार्थियों ने सहमति जताई है परंतु कुछ विद्यार्थियों ने जानकारी के अभाव में इस कथन के साथ असहमति जताई है।

प्रश्न (22) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति-

प्रश्न सं-22 हिन्दी मेंटाइपिंग से सम्बंधित कुंजीपटल का प्रकार है-

तालिका सं 4.22

प्रश्न (22) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

श्रेणी	N	इनस्क्रिप्ट		रेमिंगटन	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
छात्र	68	49	72.06	19	27.94
छात्राएँ	22	14	63.64	8	36.36
कुल	68	63	70	27	30
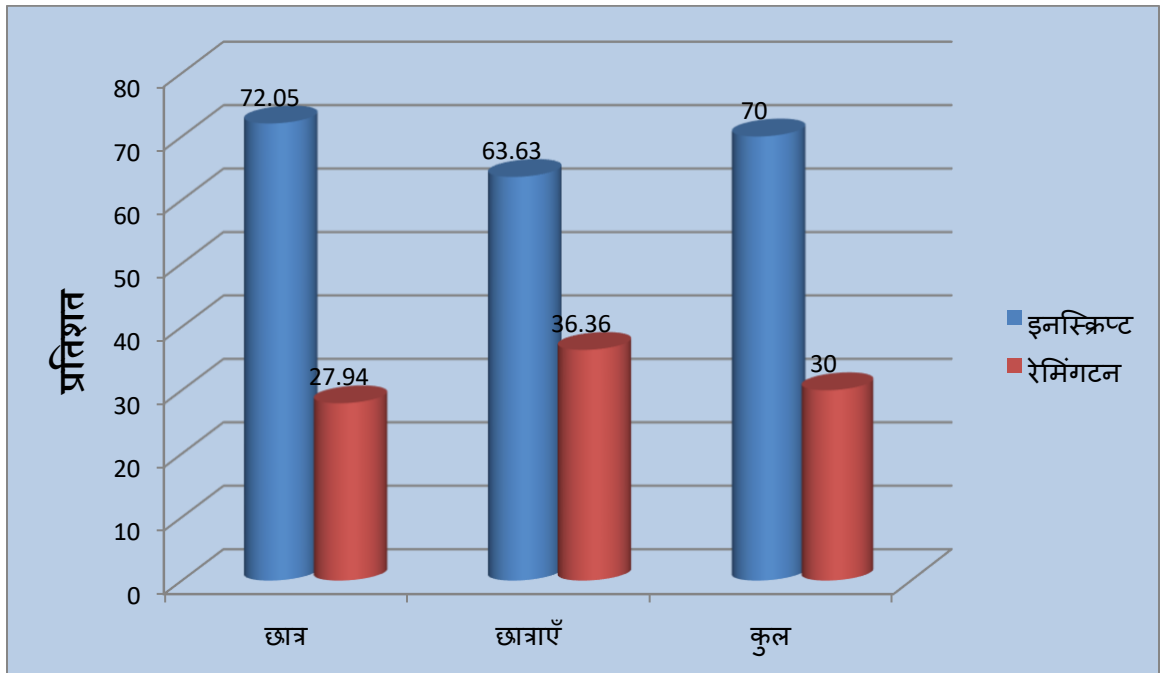
प्रश्न (22) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

चित्र सं 4.22

विश्लेषण

तालिका संख्या 4.22 तथा चित्र संख्या 4.22 से स्पष्ट है कि 72.05% छात्र तथा 63.63% छात्राएं हिंदी में टाइपिंग से संबंधित कुंजीपटल के प्रकार को इनस्क्रिप्ट प्रकार का मानती हैं तथा 27.94% छात्र तथा 36.36% छात्राएं हिंदी टाइपिंग से संबंधित कुंजीपटल को रेमिंगटन प्रकार का बतलाती हैं।

इस प्रकार कुल 70% विद्यार्थी हिंदी में टाइपिंग से संबंधित कुंजीपटल को इनस्क्रिप्ट प्रकार का तथा 30% विद्यार्थी रेमिंगटन प्रकार का मानते हैं।

विवेचना

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि सर्वाधिक विद्यार्थी हिंदी में टाइपिंग से संबंधित कुंजीपटल के प्रकार की जानकारी होने के कारण इनस्क्रिप्ट कुंजीपटल का चयन किया है इसके विपरीत कुछ विद्यार्थियों ने हिंदी में टाइपिंग से संबंधित कुंजीपटल के प्रकार की जानकारी के अभाव के कारण रेमिंगटन कीबोर्ड का चयन किया है।

प्रश्न (23) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति-

प्रश्न सं-23 गूगल वाइस टाइपिंग(Google voice typing)द्वारा बोलकर आसानी से हिन्दी टाइपिंग की जा सकती है -

तालिका सं 4.23

प्रश्न (23) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

श्रेणी	N	हाँ		नहीं	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
छात्र	68	63	92.65	5	7.35
छात्राएँ	22	18	81.82	4	18.18
कुल	90	81	90	9	10
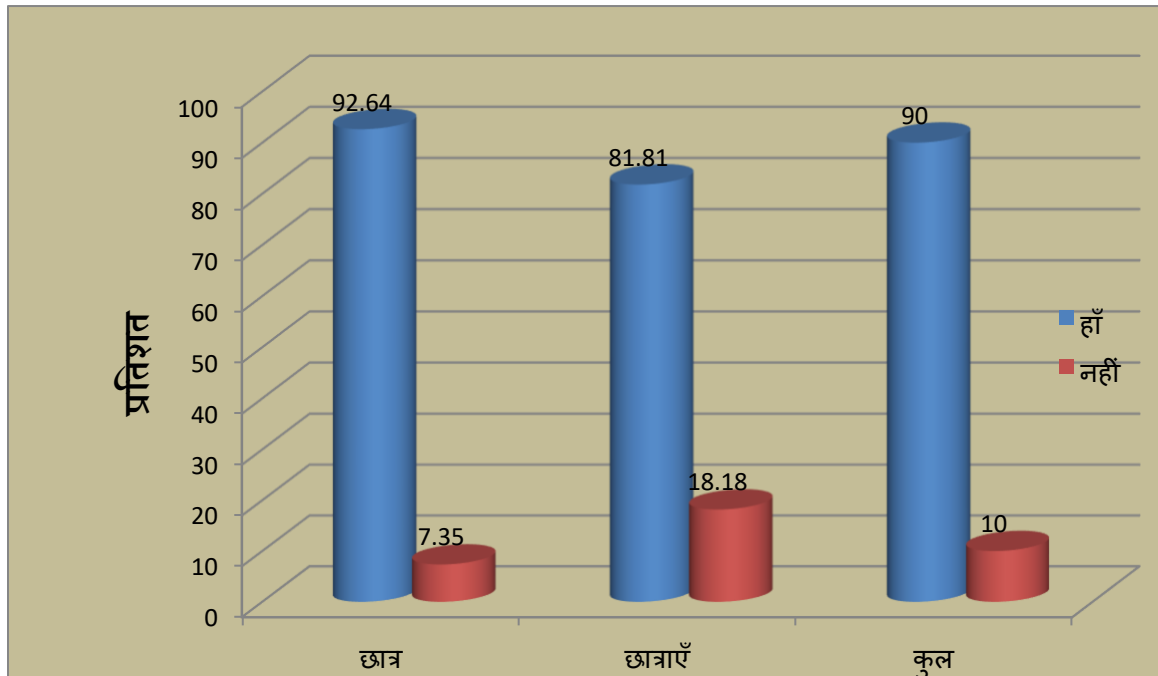
प्रश्न (23) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

चित्र सं 4.23

विश्लेषण

उपरोक्त तालिका संख्या 4.23 तथा चित्र संख्या 4.23 से स्पष्ट है कि 92.64 प्रतिशत छात्र तथा 81.81% छात्राओं का यह मानना है कि गूगल वॉइस टाइपिंग द्वारा बोलकर आसानी से हिंदी टाइपिंग की जा सकती है जबकि 7.35% छात्र तथा 18.18% छात्राओं का यह मानना है कि यह आसान नहीं है। इस प्रकार कुल 90% विद्यार्थियों का मानना है कि गूगल वॉइस टाइपिंग द्वारा बोलकर आसानी से टाइपिंग की जासकतीहै जबकि 10% विद्यार्थियों का मानना है कि यह आसान नहीं है।

विवेचना

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि अधिकांश विद्यार्थियों के पास एंड्रॉयड मोबाइल है तथा उन्हें गूगल वॉइस टाइपिंग द्वारा बोलकर हिंदी टाइपिंग करना आता है जिससे उन्होनें हाँ के विकल्प का चयन किया है इसके विपरीत कुछ विद्यार्थियों के पास एंड्रॉयड मोबाइल ना होने के कारण तथा वॉइस टाइपिंग की जानकारी के अभाव के कारण उन्होनें नहीं के विकल्प का चयन किया है।

प्रश्न (24) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति-

प्रश्न सं-24मोबाइल में बोलकर टाइप (voice typing) करने हेतु डिफाल्ट भाषा कौन सी होती है-

तालिका सं 4.24

प्रश्न (24) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

श्रेणी	N	हिन्दी भाषा		अंग्रेजी भाषा		अन्य भाषा	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
छात्र	68	42	61.76	24	35.29	2	2.94
छात्राएँ	22	10	45.45	9	40.91	3	13.64
कुल	90	52	57.78	33	36.67	5	5.56
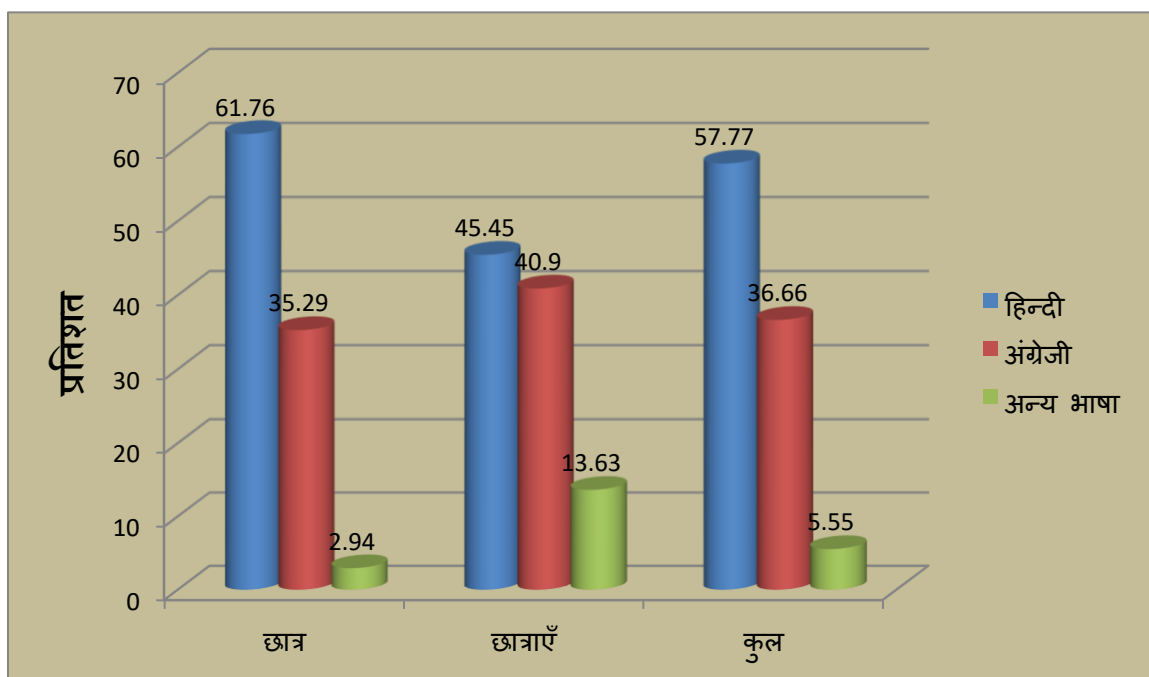
प्रश्न (24) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

चित्र सं 4.24

विश्लेषण

तालिका संख्या 4.24 एवं चित्र संख्या 4.24 से स्पष्ट है कि 61.76% छात्र तथा 45.45% छात्राएं मोबाइल में बोलकर टाइप करने हेतु डिफ़ॉल्ट भाषा हिंदी के विकल्प का चयन करती हैं,जबकि 35.29% छात्र एवं 40.9% छात्राएं अंग्रेजी का चयन करती हैं तथा 2.94% छात्र एवं 13.63% छात्राएं अन्य भाषा का चयन करती हैं। इस प्रकार कुल 57.77% विद्यार्थी मोबाइल में बोलकर टाइप करने के लिए हिंदी डिफ़ॉल्ट भाषा का प्रयोग करते हैं,जबकि 36.36%विद्यार्थी डिफ़ॉल्ट भाषा हेतु अंग्रेजी भाषा के विकल्प का चयन करते हैं तथा 5.55% विद्यार्थी अन्य भाषाओं को चुनते हैं।

विवेचना

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि अधिकांश विद्यार्थियों ने मोबाइल की डिफ़ॉल्ट भाषा के रूप में हिंदी भाषा तथा कुछ विद्यार्थियों ने अन्य भाषा के विकल्प का चयन किया है जो कि दोनों ही विकल्प गलत है जबकि लगभग 37%विद्यार्थियों ने मोबाइल की डिफ़ॉल्ट भाषा के रूप में अंग्रेजी भाषा का चयन किया है जो कि सही विकल्प है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि अधिकांश विद्यार्थियों को मोबाइल की डिफ़ॉल्ट भाषा के विषय में समुचित जानकारी नहीं है।

प्रश्न (25) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति-

प्रश्न सं-25 हिन्दी में बोलकर टाइप (Voice typing) करने हेतु भाषाओं (languages)में हिन्दी भाषा का स्थान होता है-

तालिका सं 4.25

प्रश्न (25) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

श्रेणी	N	प्रथम 20 भाषाओंमें		मध्यमें		अन्तिम 20 भाषाओंमें	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
छात्र	68	35	51.47	23	33.82	10	14.71

छात्राएँ	22	13	59.09	7	31.82	2	9.09
कुल	90	48	53.33	30	33.33	12	13.33
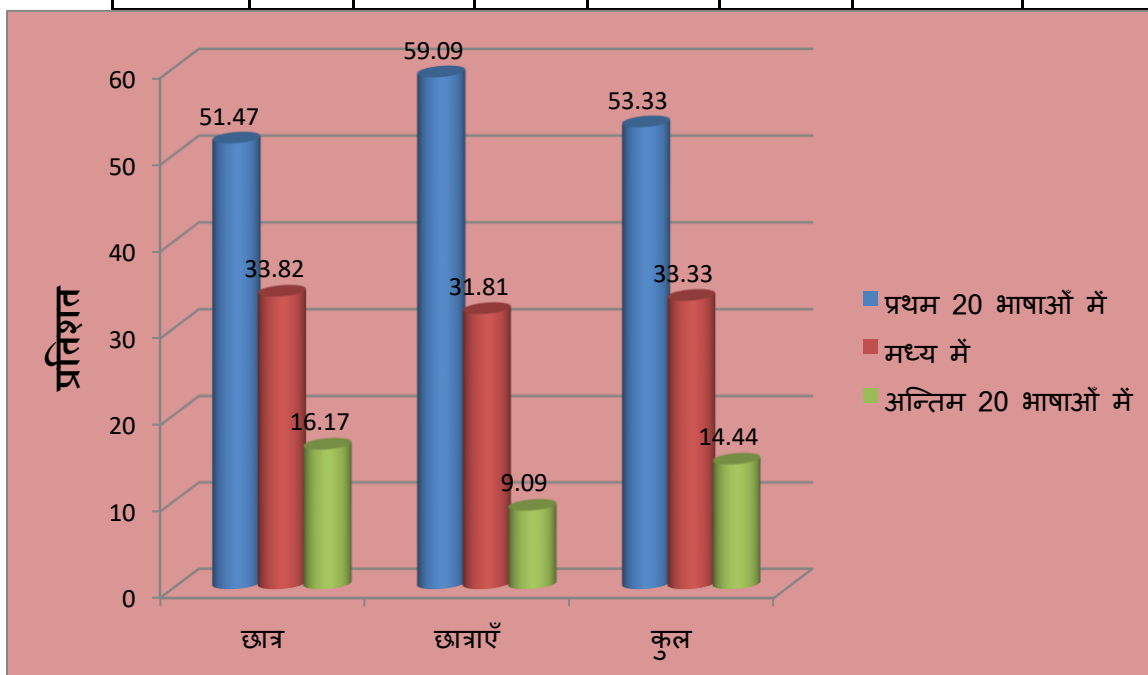
प्रश्न (25) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

चित्र सं 4.25

विश्लेषण

उपरोक्त तालिका संख्या 4.25 तथा चित्र संख्या 4.25 से स्पष्ट है कि 51.47% छात्र तथा 59.09% छात्राएं हिंदी में बोलकर टाइप करने हेतु भाषा में हिंदी भाषा को प्रथम 20 भाषाओं में स्थान देते हैं, 33.82% छात्र तथा 31.81% छात्राएं हिंदी भाषा को मध्य में तथा 16.17% छात्र तथा 9.09% छात्राएं हिंदी भाषा को अंतिम 20 भाषाओं में स्थान देते हैं।

इस प्रकार कुल 53.33%विद्यार्थी हिंदी भाषा को बोल कर टाइप करने हेतु भाषाओं में प्रथम 20 भाषाओं में स्थान देते हैं 33.33% विद्यार्थी मध्य में तथा 14.44% विद्यार्थी हिंदी भाषा को अंतिम 20 भाषाओं में स्थान देते हैं।

विवेचना

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि हिंदी में बोलकर टाइप करने हेतु भाषाओं में हिंदी भाषा का स्थान अंतिम 20 भाषाओं में है किन्तु जागरूकता के अभाव में अधिकांश विद्यार्थियों ने प्रथम 20 भाषाओं तथा मध्यम विकल्प का चयन किया है

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि हिंदी में बोलकर टाइप करने हेतु भाषाओं में हिंदी भाषा का स्थान अंतिम 20 भाषाओं में है किन्तु जागरूकता के अभाव में अधिकांश विद्यार्थियों ने प्रथम 20 भाषाओं तथा मध्यम विकल्प का चयन किया है।

प्रश्न (26) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति-

प्रश्न सं-26कम्प्यूटर पर हिन्दी टाइपिंग के प्रकार है-

तालिका सं 4.26

प्रश्न (26) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

श्रेणी	N	यूनिकोड		नॉन यूनिकोड		इनमें से दोनों		इनमें से कोई नहीं	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%	आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
छात्र	68	16	23.53	17	25	32	47.06	3	4.41
छात्राएँ	22	4	18.18	10	45.45	7	31.82	1	4.55
कुल	90	20	22.22	27	30	39	43.33	4	4.44
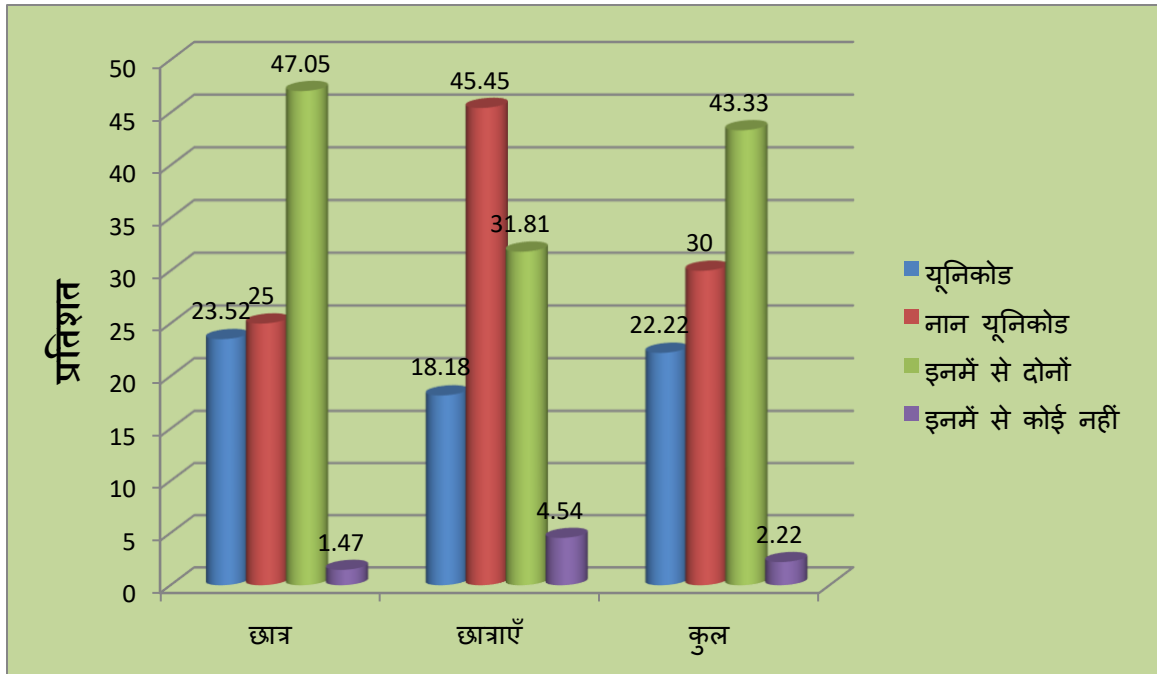
प्रश्न (26) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

चित्र सं 4.26

विश्लेषण

उपरोक्त तालिका संख्या 4.26 एवं चित्र संख्या 4.26 स्पष्ट है कि 23.52% छात्र तथा 18.18% छात्राएं कंप्यूटर पर हिंदी टाइपिंग के प्रकार में यूनिकोड विकल्प का चयन करती हैं, 25% छात्र तथा 45.45% छात्राएं नान यूनिकोड ऑप्शन का चयन करती हैं, 47.05% छात्र तथा 31.% छात्राएं इनमें से दोनों विकल्प का चयन करती हैं तथा 1.47% छात्र तथा 4.54% छात्राएं इनमें से कोई नहीं विकल्प का चयन करती हैं।

विवेचना

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि कंप्यूटर पर हिंदी टाइपिंग के प्रकार में "इनमें से दोनों विकल्प" सही है और अधिकांश विद्यार्थियों ने इसी विकल्प का चयन किया है किंतु जानकारी के अभाव के कारण कुछ विद्यार्थियों द्वारा कंप्यूटर के हिंदी टाइपिंग के प्रकार में यूनिकोड, नॉन यूनिकोड और इनमें से कोई नहीं विकल्प का चयन किया गया है।

प्रश्न (27) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति-

प्रश्न सं-27 हिन्दी टाइपिंग की नान यूनिकोड प्रणाली है-

तालिका सं 4.27

प्रश्न (27) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति-

श्रेणी	N	प्राचीन		नवीन	
		आवृति	%	आवृति	%
छात्र	68	35	51.47	33	48.53
छात्राएँ	22	5	22.73	17	77.27
कुल	90	40	44.44	50	55.56
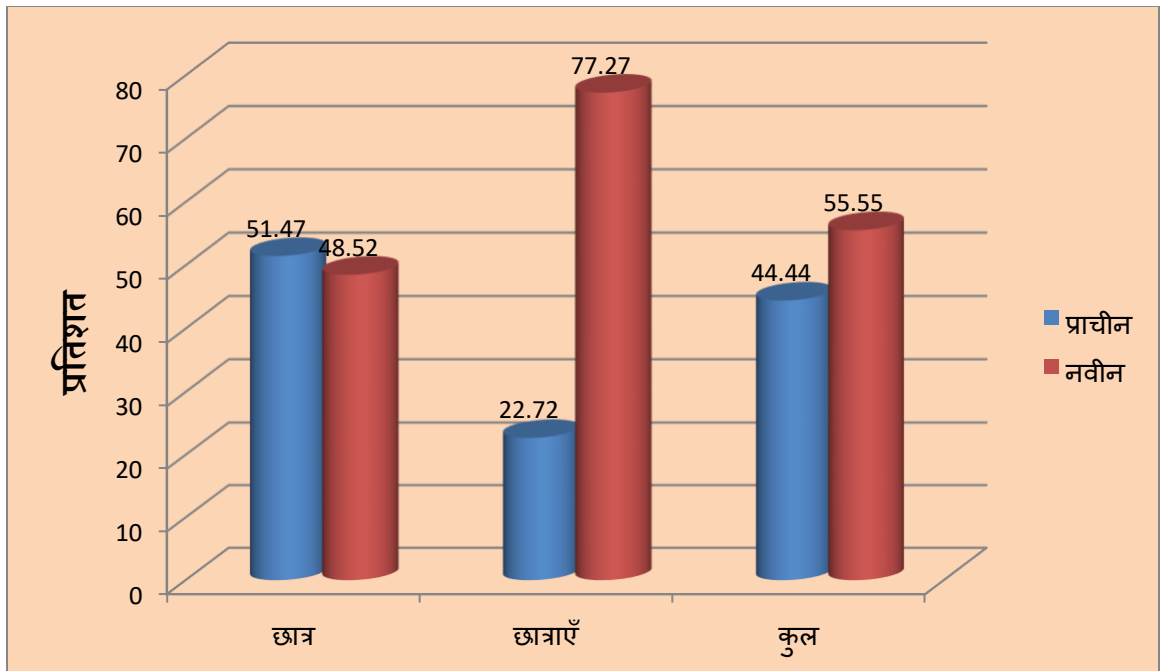
प्रश्न (27) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

चित्र सं 4.27

विश्लेषण

तालिका संख्या 4.27 तथा क्षेत्र संख्या 4.27 से स्पष्ट है कि हिंदी टाइपिंग के नान यूनिकोड प्रणाली को 51.47% छात्र तथा 22.72% छात्राएं प्राचीन प्रणाली मानते हैं जबकि 48.52%छात्र तथा 77.27%छात्राएँ इसे नवीन प्रणाली के रूप में स्वीकार करती हैं।इस प्रकार कुल 44.44% विद्यार्थी हिंदी टाइपिंग की नान यूनिकोड प्रणाली को प्राचीन प्रणाली मानते हैं जबकि 55.55% विद्यार्थी इसे नवीन प्रणाली के रूप में स्वीकार करते हैं।

विवेचना

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है किअधिकांश विद्यार्थियों ने हिंदी टाइपिंग की नान यूनिकोड प्रणाली के 'नवीन' विकल्प का चुनाव किया है और कुछ विद्यार्थियों ने 'प्राचीन' विकल्प का चुनाव किया है जबकि हिंदी टाइपिंग की नॉन यूनिकोड प्रणाली प्राचीन है। इसके विपरीत कंप्यूटर की जानकारी ना होने के कारण अधिकांश विद्यार्थियों ने नवीन विकल्प का चुनाव किया है जोकि गलत है।

प्रश्न (28) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति-

प्रश्न सं28-यूनिकोड हिन्दी टाइपिंग की नयी विधि है-

तालिका सं 4.28

प्रश्न (28) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

श्रेणी	N	सत्य		असत्य	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
छात्र	68	50	73.53	18	26.47
छात्राएँ	22	13	59.09	9	40.61

कुल	90	63	70	27	30
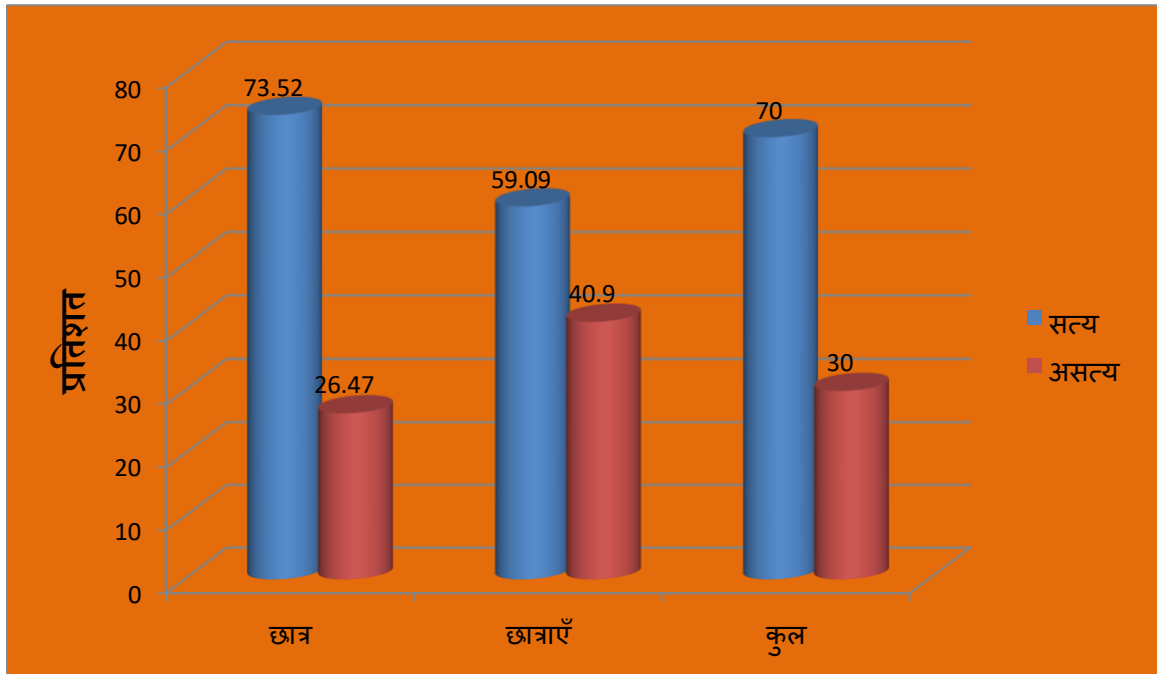
प्रश्न (28) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

चित्र सं 4.28

विश्लेषण

तालिका संख्या 4.28 तथा चित्र संख्या 4.28 से स्पष्ट है कि 73.52% छात्र तथा 59.09% छात्राएं इस कथन के 'सत्य' विकल्प का चयन करते हैं कि यूनिकोड हिंदी टाइपिंग की नई विधि है जबकि इसके विपरीत 26.47% छात्र तथा 40.9% छात्राएं इस कथन को असत्य स्वीकार करते हैं।

इस प्रकार कुल 70% विद्यार्थी इस कथन के 'सत्य' विकल्प का चयन करते हैं कि यूनिकोड हिंदी टाइपिंग की नई विधि है जबकि 30% विद्यार्थी इसे असत्य स्वीकार करते हैं।

विवेचना

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि अधिकांश विद्यार्थियों ने यूनिकोड हिंदी टाइपिंग की नई विधि है के विकल्प 'सत्य' का चयन किया है लेकिन कुछ विद्यार्थियों ने कंप्यूटर की जानकारी के अभाव के कारण यूनिकोड हिंदी टाइपिंग की नई विधि है के 'असत्य' विकल्प का चयन किया है जो कि गलत है।

प्रश्न (29) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति-

प्रश्न सं 29-किसी एक हिन्दी यूनिकोड फॉण्ट का नाम लिखिए-

तालिका सं 4.29

प्रश्न (29) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

श्रेणी	N	सत्य	
		आवृत्ति	%
छात्र	68	31	45.59
छात्राएँ	22	9	40.91
कुल	90	40	44.44
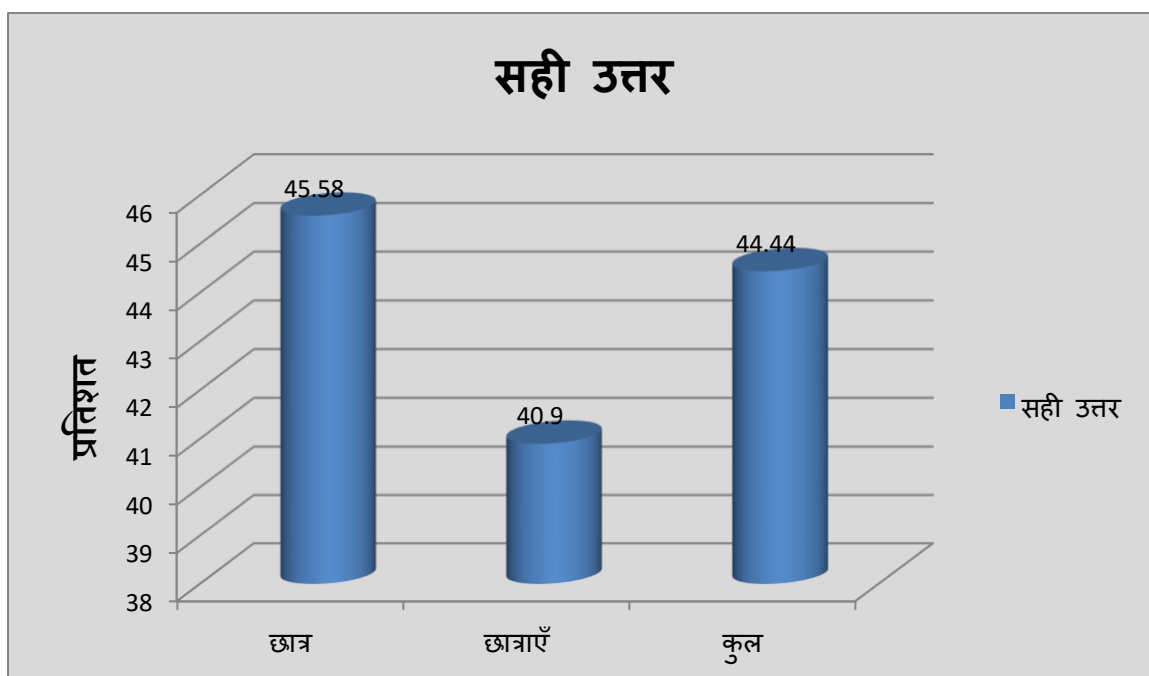
प्रश्न (29) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

चित्र सं 4.29

विश्लेषण

तालिका संख्या 4.29 तथा चित्र संख्या 4.29 से स्पष्ट है कि 'किसी एक हिंदी यूनिकोड फॉन्ट का नाम लिखिए' प्रश्न का सही उत्तर 45.58% छात्र तथा 40.9% छात्राओं ने दिया।

इस प्रश्न का कुल 44.44% विद्यार्थियों ने सही उत्तर दिया

विवेचना

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि अधिकांश छात्रों ने हिंदी यूनिकोड फॉण्ट का नाम गलत लिखा है इससे स्पष्ट है कि विद्यार्थियों को हिंदी यूनिकोड फॉन्ट के विषय में समुचित जानकारी नहीं है।

प्रश्न (30) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति-

प्रश्न सं 30-किसी एक हिन्दी नान यूनिकोड फॉण्ट का नाम लिखिए-

तालिका सं 4.30

प्रश्न (30) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

श्रेणी	N	सत्य	
		आवृत्ति	%
छात्र	68	16	23.53
छात्राएँ	22	8	36.36
कुल	90	24	26.67
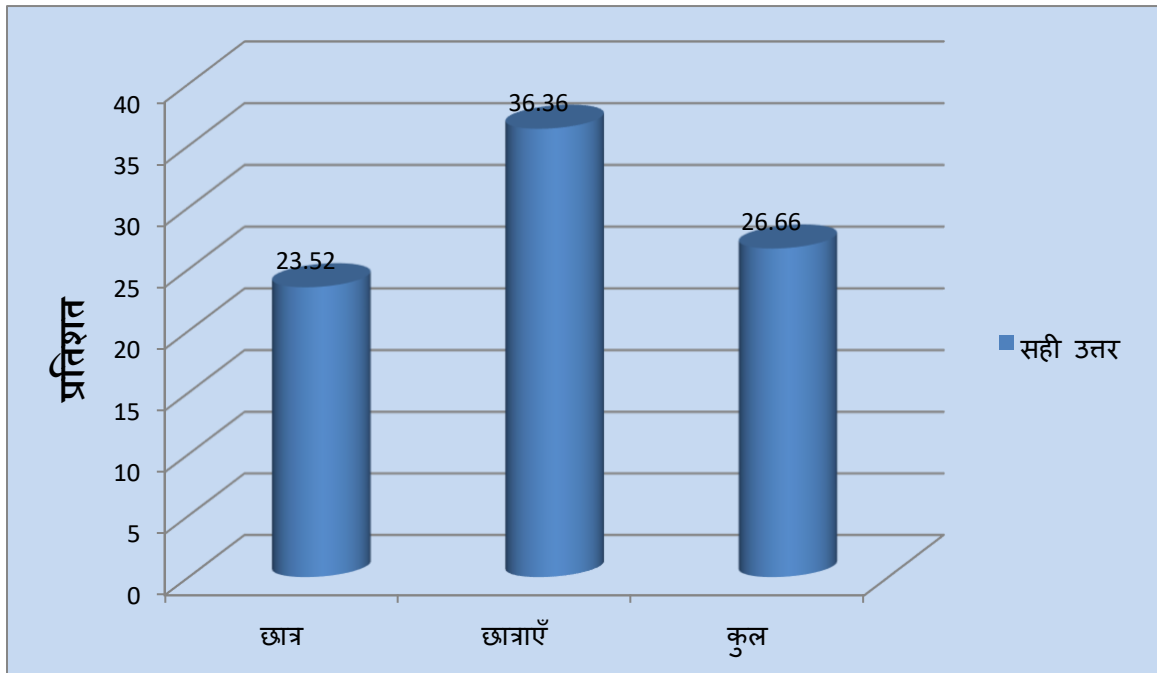
प्रश्न (30) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

चित्र सं 4.30

विश्लेषणतालिका संख्या 4.30तथा चित्र संख्या 4.30से स्पष्ट है कि 'किसी एक हिन्दी नान यूनिकोड फॉण्ट का नाम लिखिए' प्रश्न का सही उत्तर 23.52% छात्र तथा 36.36% छात्राओं ने दिया।

इस प्रश्न का कुल 26.66% विद्यार्थियों ने सही उत्तर दिया।

विवेचना

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि अधिकांश छात्रों ने हिंदी नॉन यूनिकोड फॉण्ट का नाम गलत लिखा है इससे स्पष्ट है कि विद्यार्थियों को हिंदी यूनिकोड नॉन फॉन्ट के विषय में समुचित जानकारी का अभाव है।

प्रश्न (31) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति-

प्रश्न सं31-हिन्दी टेक्स्ट की जगह सिर्फ कचरा(जंक टेक्स्ट) देखने की समस्या होती है-

तालिका सं 4.31

प्रश्न (31) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

श्रेणी	N	यूनिकोडफॉण्ट		नॉनयूनिकोडफॉण्ट	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
छात्र	68	27	39.71	41	60.29
छात्राएँ	22	9	40.91	13	59.09
कुल	90	36	40	54	60
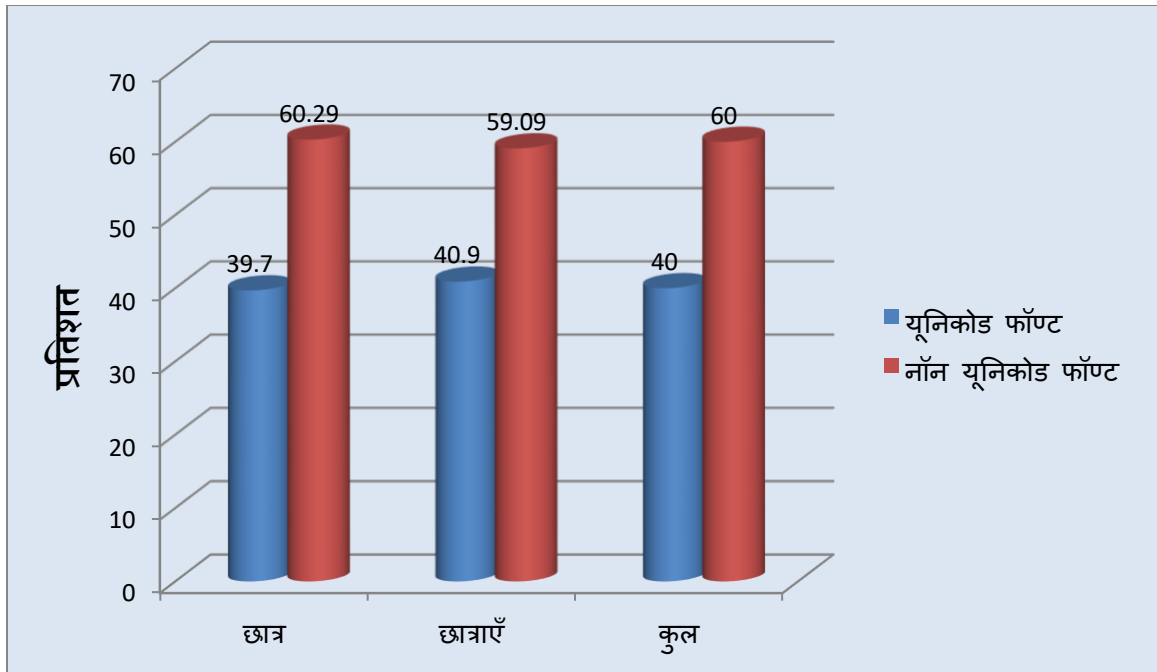
प्रश्न (31) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

चित्र सं 4.31

विश्लेषण

तालिका संख्या 4.31% तथा चित्र संख्या 4.31% से स्पष्ट है कि 39.7% छात्र तथा 40.9% छात्राओं ने 'हिंदी टेक्स्ट की जगह सिर्फ कचरा देखने की समस्या होती है' प्रश्न में यूनिकोड फॉन्ट का चयन किया है जबकि 60.29% छात्र तथा 59.09% छात्राओं नान यूनिकोड फॉन्ट के विकल्प का चयन किया है। इस प्रकार कुल 40% विद्यार्थियों ने 'हिंदी टेक्स्ट की जगह सिर्फ कचरा देखने की समस्या होती है' प्रश्न में यूनिकोड फॉन्ट का चयन किया है जबकि 60% विद्यार्थियों में नान यूनिकोड फॉन्ट के विकल्प का चयन किया है।

विवेचन

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 'हिंदी टेक्स्ट की जगह सिर्फ कचरा देखने की समस्या होती है' प्रश्न के उत्तर में अधिकांश छात्रों ने नॉन यूनिकोड फॉण्ट के विकल्प का चयन किया है जो कि सही उत्तर है जबकि छात्रों के एक बड़े समूह ने यूनिकोड फॉन्ट का चयन किया है जो कि सही उत्तर नहीं है विद्यार्थियों ने समुचित जागरूकता के अभाव में ऐसा किया है।

प्रश्न (32) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति-

प्रश्न सं 32-यूनिकोड फॉण्ट में लिखी हिन्दी किसी भी कम्प्यूटर पर देखी जा सकती है-

तालिका सं 4.32

प्रश्न (32) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

श्रेणी	N	सत्य		असत्य	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
छात्र	68	53	77.94	15	22.06
छात्राएँ	22	14	63.64	8	36.36
कुल	90	67	74.44	23	25.56
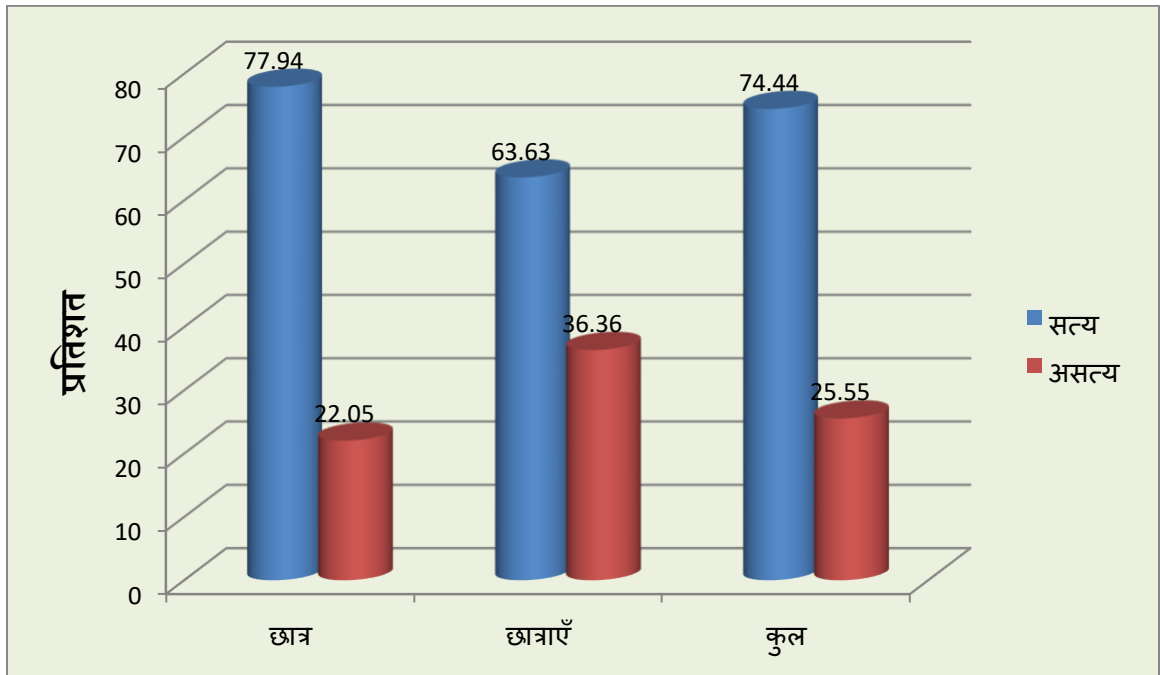
प्रश्न (32) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

चित्र सं 4.32

विश्लेषण

तालिका संख्या 4.32तथा चित्र संख्या 4.32से स्पष्ट है कि 77.94% छात्र तथा 63.63% छात्राएं इस कथन के ‘सत्य’ विकल्प का चयन करते हैं कि यूनिकोड फॉण्ट में लिखी हिन्दी किसी भी कम्प्यूटर पर देखी जा सकती है जबकि इसके विपरीत 22.05% छात्र तथा 36.36% छात्राएं इस कथन को असत्य स्वीकार करते हैं।

इस प्रकार कुल 74.44% विद्यार्थी इस कथन के ‘सत्य’ विकल्प का चयन करते हैं कि यूनिकोड हिंदी टाइपिंग की नई विधि है जबकि 25.55% विद्यार्थी इसे असत्य स्वीकार करते हैं।

विवेचना

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि अधिकांश विद्यार्थियों ने यूनिकोड फॉण्ट में लिखी हिन्दी किसी भी कम्प्यूटर पर देखी जा सकती है के विकल्प ‘सत्य’ का चयन किया है लेकिन कुछ विद्यार्थियों ने कंप्यूटर की जानकारी के अभाव के कारणयूनिकोड फॉण्ट में लिखी हिन्दी किसी भी कम्प्यूटर पर देखी जा सकती है के ‘असत्य’ विकल्प का चयन किया है जो कि गलत है।

प्रश्न (33) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति-

प्रश्न सं 33-हिन्दी के नॉन यूनिकोड फॉण्ट में देखने के लिए कम्प्यूटर में वह फॉण्ट इंस्टाल होना आवश्यक है-

तालिका सं 4.33

प्रश्न (33) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

श्रेणी	N	सत्य	असत्य

		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
छात्र	68	57	83.82	11	16.18
छात्राएँ	22	17	77.27	5	22.73
कुल	90	74	82.22	16	17.78
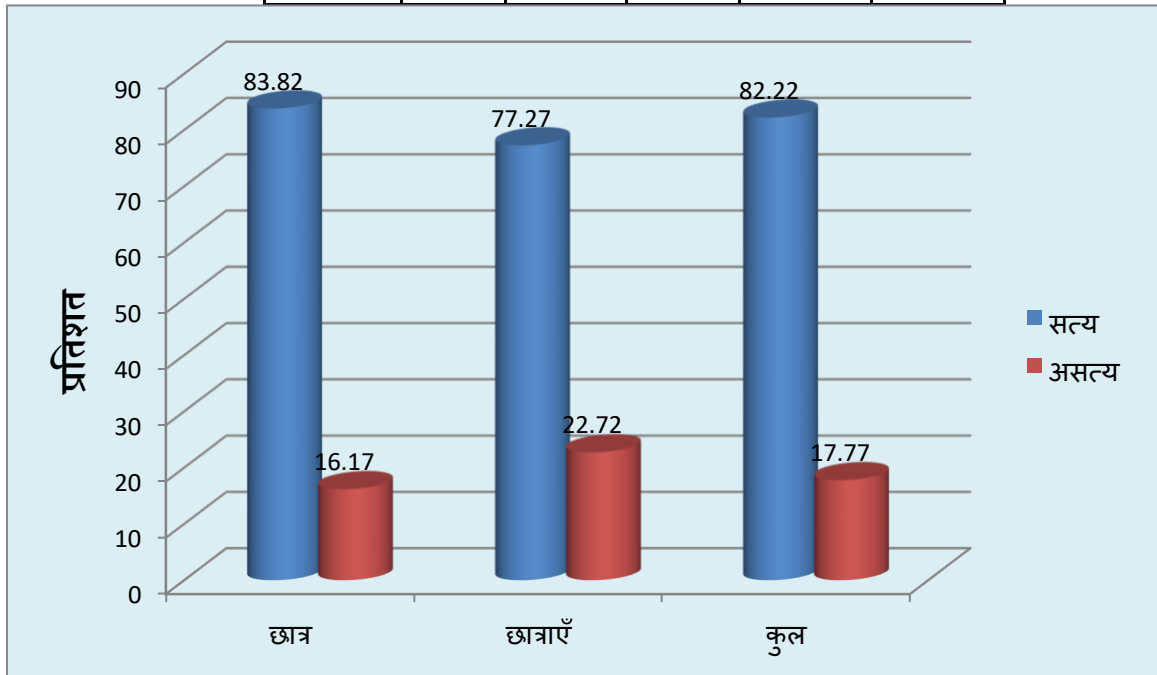
प्रश्न (33) के सन्दर्भमें महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

चित्र सं 4.33

विश्लेषण

तालिका संख्या 4.33तथा चित्र संख्या 4.33से स्पष्ट है कि 83.82% छात्र तथा 77.27% छात्राएं इस कथन के ‘सत्य’ विकल्प का चयन करते हैं कि हिन्दी के नॉन यूनिकोड फॉण्ट में देखने के लिए कम्प्यूटर में वह फॉण्ट इंस्टाल होना आवश्यक है जबकि इसके विपरीत 16.17% छात्र तथा 22.72% छात्राएं इस कथन को असत्य स्वीकार करते हैं।

इस प्रकार कुल 82.22% विद्यार्थी इस कथन के 'सत्य' विकल्प का चयन करते हैं कि हिन्दी के नॉन यूनिकोड फॉण्ट में देखने के लिए कम्प्यूटर में वह फॉण्ट इंस्टाल होना आवश्यक है जबकि 17.77% विद्यार्थी इसे असत्य स्वीकार करते हैं।

विवेचना

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि अधिकांश विद्यार्थियों ने हिन्दी के नॉन यूनिकोड फॉण्ट में देखने के लिए कम्प्यूटर में वह फॉण्ट इंस्टाल होना आवश्यक है के विकल्प 'सत्य' का चयन किया है लेकिन कुछ विद्यार्थियों ने कंप्यूटर की जानकारी के अभाव के कारणहिन्दी के नॉन यूनिकोड फॉण्ट में देखने के लिए कम्प्यूटर में वह फॉण्ट इंस्टाल होना आवश्यक है के 'असत्य' विकल्प का चयन किया है जो कि गलत है।

प्रश्न (34) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति-

प्रश्न सं 34-फॉण्ट के झमेले से मुक्त है-

तालिका सं 4.34

प्रश्न (34) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

श्रेणी	N	नॉन यूनिकोड		यूनिकोड	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
छात्र	68	34	50	34	50
छात्राएँ	22	12	54.55	10	45.45
कुल	90	46	51.11	44	48.89
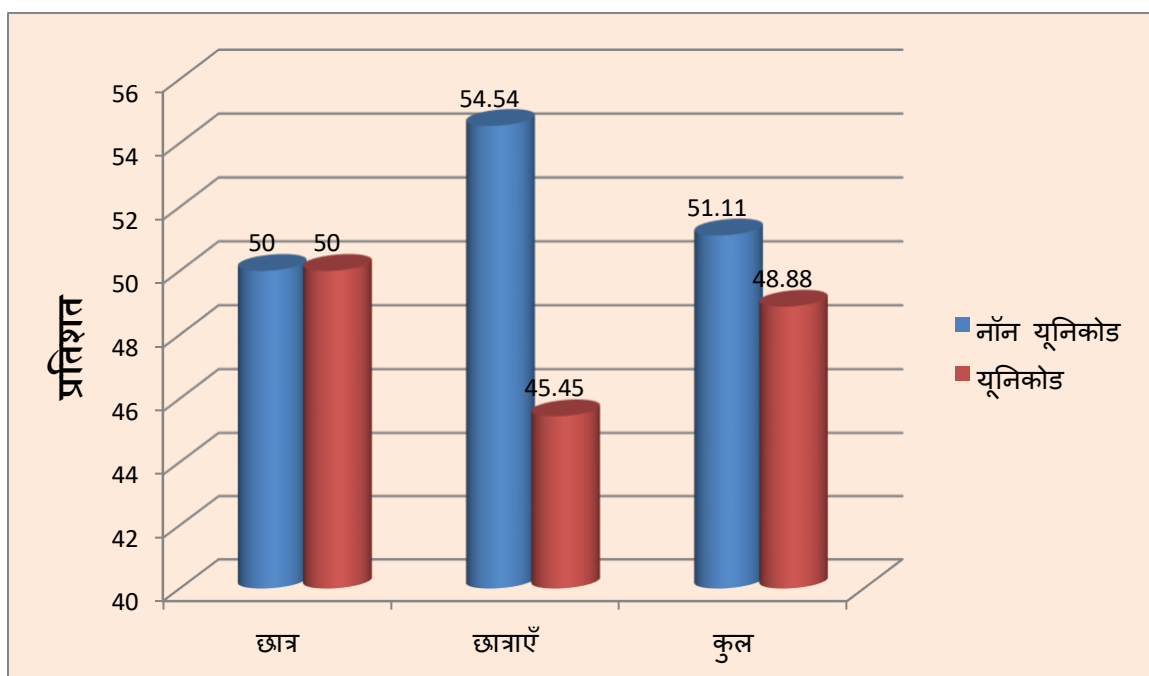
प्रश्न (34) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

चित्र सं 4.34

विश्लेषण

तालिका संख्या 4.34 तथा चित्र संख्या 4.34 से स्पष्ट है कि 50% छात्र तथा 54.54%छात्राएं प्रश्न फॉण्ट के झमेले से मुक्त है के उत्तर के रूप में नॉन यूनिकोड विकल्प का चयन करते हैं जबकि 50% छात्र तथा 45.45% छात्राएं यूनिकोड विकल्प का चयन करती हैं इस प्रकार कुल 51.11% विद्यार्थी इस प्रश्न के विकल्प नॉन यूनिकोड का चयन करते हैं जबकि 48.88% छात्र यूनिकोड विकल्प के साथ है।

विवेचना-उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 'फॉण्ट के झमेले से मुक्त है' प्रश्न के उत्तर के विकल्प के रूप में अधिकांश छात्रों ने नान यूनिकोड विकल्प का चयन किया है जबकि इसका सही उत्तर यूनिकोड है, विद्यार्थियों में फॉण्ट से संबंधित तकनीकी ज्ञान का अभाव है जिससे कारण उन्होंने गलत विकल्प का चयन किया है।

प्रश्न (35) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति-

प्रश्न सं 35- की बोर्ड ले आउट के झमेले से मुक्त है-

तालिका सं 4.35

प्रश्न (35) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

श्रेणी	N	नॉन यूनिकोड		यूनिकोड	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
छात्र	68	37	54.41	31	45.59
छात्राएँ	22	14	63.64	8	36.36
कुल	90	51	56.67	39	43.33
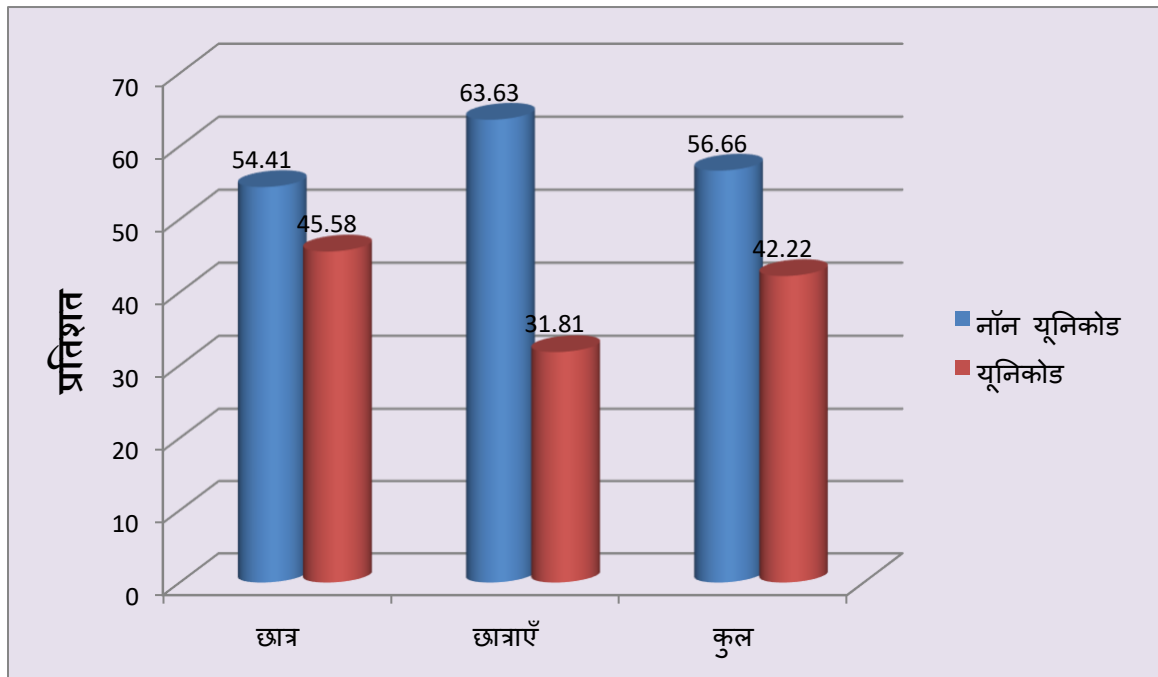
प्रश्न (35) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थि

चित्र सं 4.35

विश्लेषण-

तालिका संख्या 4.35तथा चित्र संख्या 4.35से स्पष्ट है कि 54.41% छात्र तथा 63.63%छात्राएं प्रश्न की बोर्ड ले आउट के झमेले से मुक्त है के उत्तर के रूप में नॉन यूनिकोड विकल्प का चयन करते हैं जबकि 45.58% छात्र तथा 31.81% छात्राएं यूनिकोड विकल्प का चयन करती हैं इस प्रकार कुल 56.66% विद्यार्थी इस प्रश्न के विकल्प नॉन यूनिकोड का चयन करते हैं जबकि 42.22% विद्यार्थी यूनिकोड विकल्प के साथ है।

विवेचनना-

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 'की बोर्ड ले आउट के झमेले से मुक्त है' प्रश्न के उत्तर के विकल्प के रूप में अधिकांश छात्रों ने नान यूनिकोड विकल्प का चयन किया है जबकि इसका सही उत्तर यूनिकोड है, विद्यार्थियों में फॉण्ट से संबंधित तकनीकी ज्ञान का अभाव है जिससे कारण उन्होंने गलत विकल्प का चयन किया है।

प्रश्न (36) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति-

प्रश्न सं 36- मोबाइल पर हिन्दी टाइपिंग का प्राचीन की बोर्ड

प्रश्न (36) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

श्रेणी	N	इनस्क्रिप्ट		रेमिंगटन		फोनेटिक		उपर्युक्त सभी	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%	आवृत्ति	%	आवृत्ति	%

छात्र	68	26	38.24	27	39.71	0	0	15	22.06
छात्राएँ	22	4	18.18	11	50	2	9.09	5	22.73
कुल	90	30	33.33	38	42.22	2	2.22	21	22.23
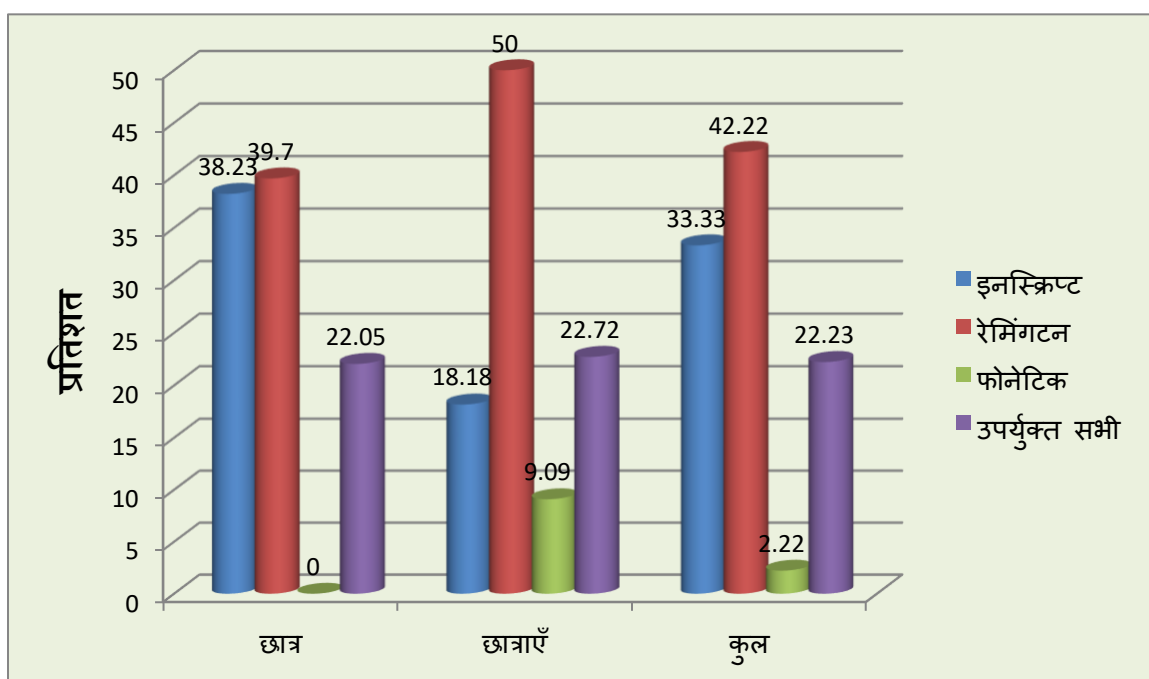
प्रश्न (36) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

चित्र सं 4.36

विश्लेषण-

तालिका संख्या 4.36 तथा चित्र संख्या 4.36 स्पष्ट है कि 38.23% छात्र एवं 18.18% छात्राओं ने मोबाइल पर हिंदी टाइपिंग के प्राचीन कीबोर्ड के रूप में इनस्क्रिप्ट विकल्प का चयन किया है, 39.7% छात्र तथा 50% छात्राओं ने रेमिंगटन, 0% छात्र तथा 9.09% छात्राओं ने फोनेटिक तथा 22.05% छात्र एवं 22.72% प्रतिशत छात्राओं ने उपर्युक्त सभी विकल्प का चयन किया है।

इस प्रकार कुल 33.33% विद्यार्थियों ने इनस्क्रिप्ट, 42.22% विद्यार्थियों ने रेमिंगटन, 2.22% विद्यार्थियों ने फोनेटिक तथा 22.23% विद्यार्थियों ने उपर्युक्त सभी विकल्प का चयन किया है।

विवेचना-

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि मोबाइल में हिंदी टाइपिंग का प्राचीन कीबोर्ड रेमिंगटन है जबकि विद्यार्थियों में तकनीकी ज्ञान का अभाव होने के कारण कुछ विद्यार्थियों ने इनस्क्रिप्ट, फोनेटिकआदि विकल्प का चयन किया है।

प्रश्न (37) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति-

प्रश्न सं 37- सभी भारतीय लिपियों हेतु समान कुंजीपटल है-

तालिका सं 4.37

प्रश्न (37) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

श्रेणी	N	इनस्क्रिप्ट		रेमिंगटन		फोनेटिक	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%	आवृत्ति	%

छात्र	68	23	33.82	28	41.18	17	25
छात्राएँ	22	8	36.36	7	31.82	7	31.82
कुल	90	31	34.44	35	38.89	24	26.67
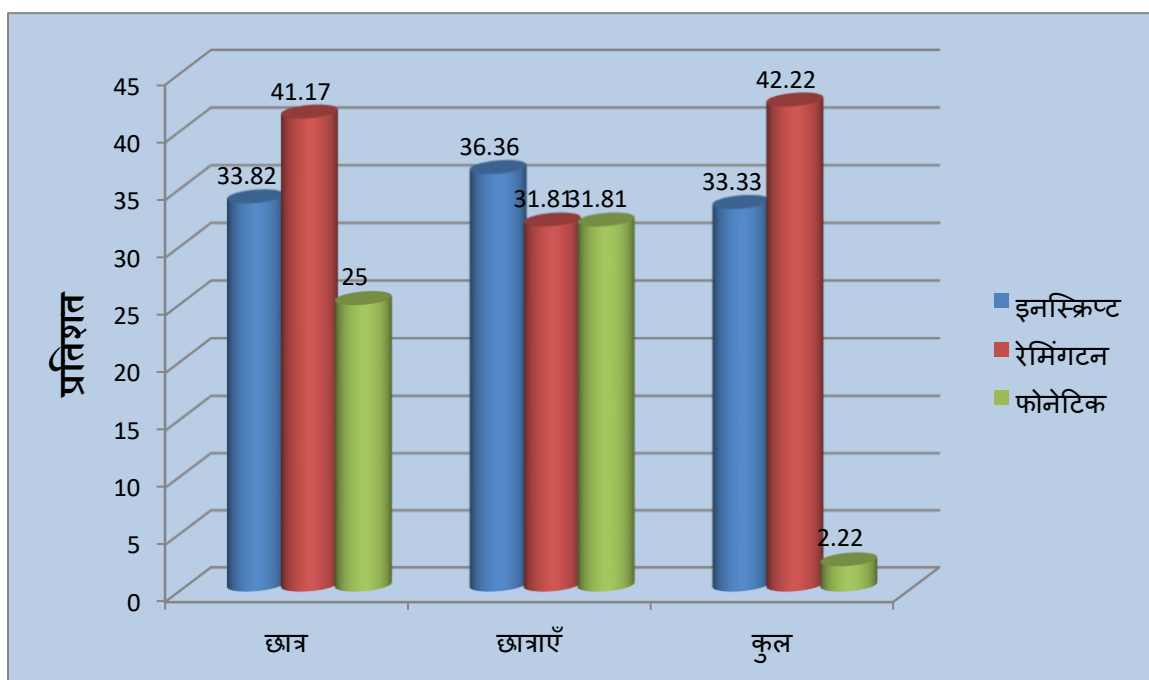
प्रश्न (37) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

चित्र सं 4.37

विश्लेषण-

तालिका संख्या 4.37 एवं चित्र संख्या 4.37 स्पष्ट है कि 37.82% छात्र और 36.36% छात्राओं ने इनस्क्रिप्ट,41.17% छात्र एवं 31.81% छात्राओं ने रेमिंगटन तथा 25% छात्र एवं 31.81% छात्राओं ने फोनेटिक कुंजीपटल के विकल्प का चयन किया है। इस प्रकार कुल 33.33 विद्यार्थियों ने इनस्क्रिप्ट, 42.22 विद्यार्थियों ने रेमिंगटन तथा 2.22 विद्यार्थियों ने फोनेटिक कुंजीपटल के विकल्प को चुना है।

विवेचना-

उक्त तालिका से स्पष्ट है कि सभी भारतीय लिपियों हेतुइनस्क्रिप्ट समान कुंजीपटल है जबकि कुछ विद्यार्थियों ने भारतीय लिपियों हेतु दूसरे कुंजीपटल का चयन किया है, इसका यही कारण है कि संबंधित विद्यार्थियों को विषय गत जानकारी का अभाव है।

प्रश्न (38) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति-

प्रश्न सं 38-निम्न कुंजीपटल है-

तालिका सं 4.38

प्रश्न (38) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

श्रेणी	N	इनस्क्रिप्ट		रेमिंगटन	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
छात्र	68	35	51.47	33	48.53
छात्राएँ	22	9	40.91	13	59.09
कुल	90	44	48.89	46	51.11
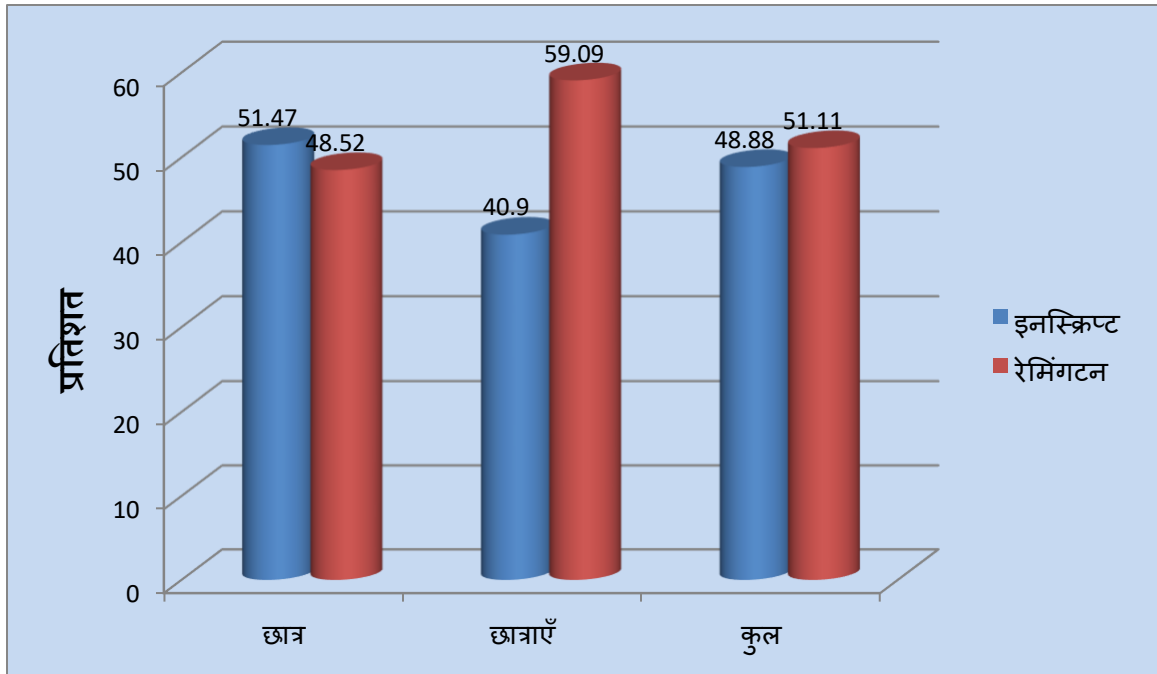
प्रश्न (38) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

चित्र सं 4.38

विश्लेषण-

तालिका संख्या 4.38 एवं चित्र संख्या 4.38 से स्पष्ट है कि 51.47% छात्र एवं 40.9% छात्राएं प्रश्न ‘निम्न कुंजी पटल है’ (दिए गए चित्र में) के विकल्प के रूप में इनस्क्रिप्ट तथा 48.52% छात्र एवं 59.09% छात्राएँ रेमिंगटन का चयन करती हैं।

इस प्रकार कुल 48.81 % विद्यार्थी इनस्क्रिप्ट एवं 51.11% विद्यार्थियों ने रेमिंगटन कुंजीपटल का चयन किया है।

विवेचना-

उक्त तालिका से स्पष्ट है कि अधिकांश छात्रों ने दिए गए चित्र को देखकर रेमिंगटन कुंजीपटल का चयन किया है जोकि सही है लेकिन विद्यार्थियों के एक बड़े समूह ने जानकारी के अभाव के कारण इनस्क्रिप्ट कुंजीपटल का चयन किया है जो सही विकल्प नहीं है।

प्रश्न (39) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति-

प्रश्न सं 39-हिन्दी टाइपिंग का प्राचीन की बोर्ड है-

तालिका सं 4.39

प्रश्न (39) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

श्रेणी	N	इनस्क्रिप्ट		रेमिंगटन		फोनेटिक	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
छात्र	68	28	41.18	30	44.12	10	14.71
छात्राएँ	22	8	36.36	10	45.45	4	18.18
कुल	90	36	40	40	44.44	14	15.56
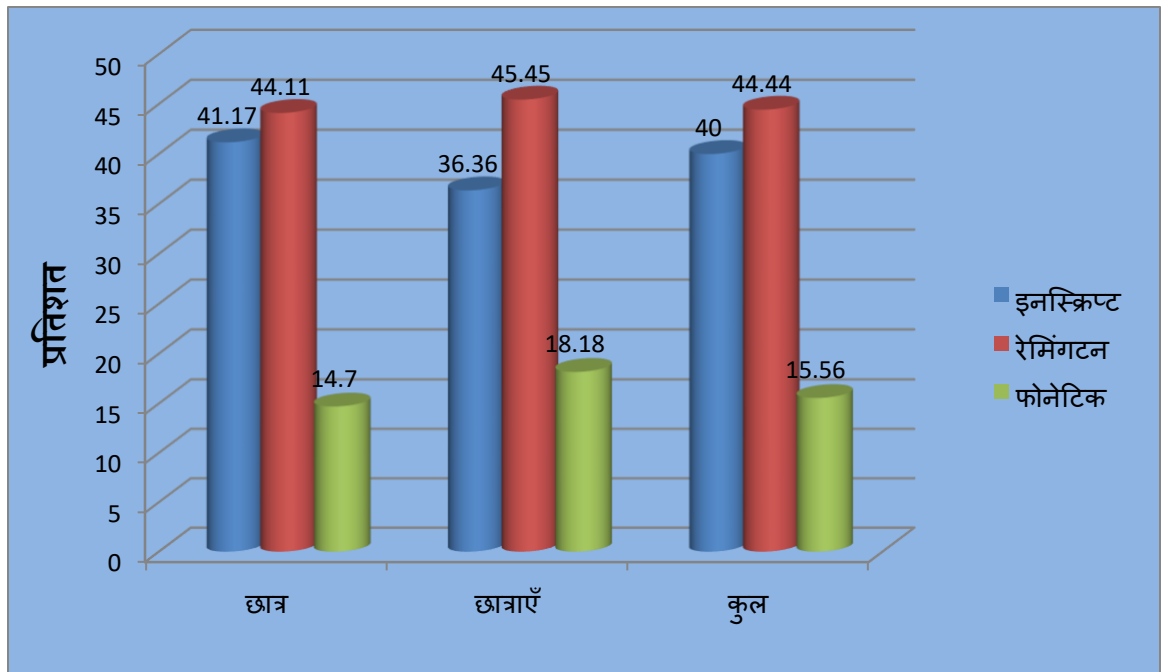
प्रश्न (39) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

चित्र सं 4.39

विश्लेषण-

तालिका संख्या 4.39 तथा चित्र संख्या 4.39 से स्पष्ट है कि 41.17% छात्र तथा 36.36% छात्राओं ने प्रश्न 'हिंदी टाइपिंग का प्राचीन कीबोर्ड है' के उत्तर के रूप में 'इनस्क्रिप्ट', 44.11% छात्र तथा 45.45% छात्राओं ने। रेमिंगटन तथा 14.7% छात्र एवं 18.18% छात्राओं ने फोनेटिक विकल्प का चयन किया है। इस प्रकार कुल 40% विद्यार्थी इनस्क्रिप्ट,44.44% विद्यार्थी रेमिंगटन तथा 15.56% परिषद विद्यार्थी फोनेटिक विकल्प का चयन करते हैं।

विवेचना-

उक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि हिंदी टाइपिंग का प्राचीन कीबोर्ड रेमिंगटन है जिसका चयन अधिकांश विद्यार्थियों द्वारा किया गया है इनमें से 40% विद्यार्थियों ने इनस्क्रिप्ट तथा 15.56% विद्यार्थियों ने फोनेटिक कीबोर्ड का चयन किया है जिसका कारण विद्यार्थियों में हिंदी टाइपिंग कीबोर्ड से सम्बंधित जानकारी का अभाव है।

प्रश्न (40) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति-

प्रश्न सं 40 निम्न कुंजीपटल है-

तालिका सं 4.40

प्रश्न (40) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

श्रेणी	N	इनस्क्रिप्ट		रेमिंगटन		फोनेटिक	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
छात्र	68	19	27.94	43	63.24	6	8.82
छात्राएँ	22	5	22.73	13	59.09	4	18.18
कुल	90	24	26.67	56	62.221	10	11.12
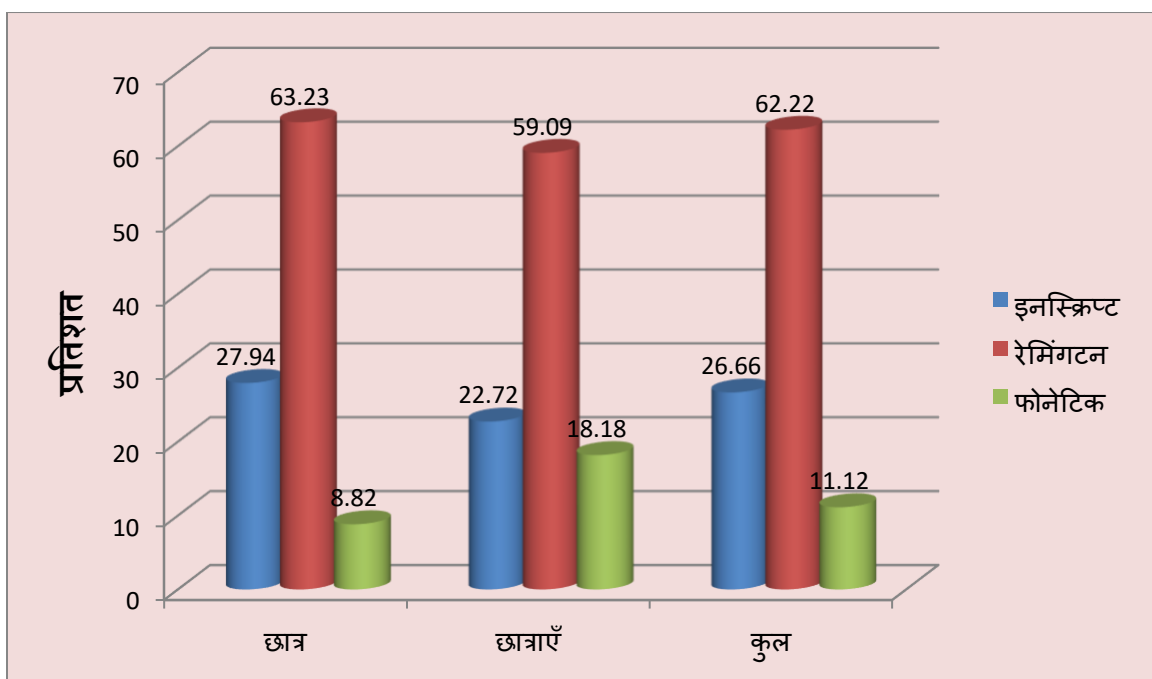
प्रश्न (40) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

चित्र सं 4.40

विश्लेषण-

तालिका संख्या 4.40एवं चित्र संख्या 4.40से स्पष्ट है कि 27.94% छात्र एवं 22.72% छात्राएं प्रश्न 'निम्न कुंजी पटल है' (दिए गए चित्र में) के विकल्प के रूप में इनस्क्रिप्ट, 63.23% छात्र एवं 59.09% छात्राएँ रेमिंगटन तथा 8.82% छात्रएवं 18.18% छात्राएँ फोनेटिक का चयन करती हैं।

इस प्रकार कुल 26.66%विद्यार्थीइनस्क्रिप्ट,62.22%विद्यार्थियों ने रेमिंगटन एवं12.12%विद्यार्थियों ने फोनेटिककुंजीपटलका चयन किया है।

विवेचना-

उक्त तालिका से स्पष्ट है कि अधिकांश छात्रों ने दिए गए चित्र को देखकर रेमिंगटन एवं इनस्क्रिप्ट कुंजीपटल का चयन किया है जोकि सही नहीं है, इसका सही उत्तर फोनेटिक है लेकिन विद्यार्थियों के एक बड़े समूह ने जानकारी के अभाव के कारण गलत विकल्पों का चयन किया है।

प्रश्न (41) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति-

प्रश्न सं41 हिन्दी टच टाइपिंग की प्रणालियाँ हैं-

तालिका सं 4.41

प्रश्न (41) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

श्रेणी	N	इनस्क्रिप्ट		रेमिंगटन		उपर्युक्त दोनों	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
छात्र	68	9	13.24	26	38.24	33	48.53
छात्राएँ	22	3	13.62	7	31.82	12	54.55
कुल	90	12	13.33	33	36.67	45	50.01
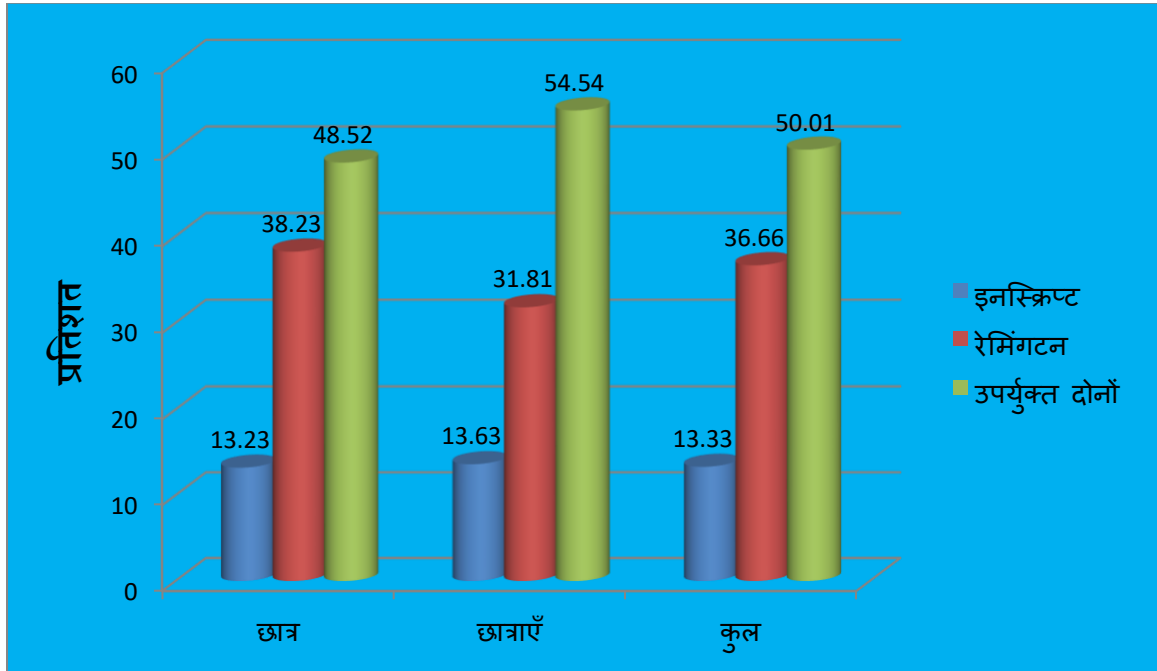
प्रश्न (41) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

चित्र सं 4.41

विश्लेषण-

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है की इनस्क्रिप्ट तथा रेमिंगटन दोनों हिंदी टच टाइपिंग की प्रणाली हैं किंतु विद्यार्थियों को उचित जानकारी ना होने के कारण गलत विकल्प का चयन किया है।

विवेचना-

तालिका संख्या 4.41 एवं चित्र संख्या 4.41से स्पष्ट है की 23.24% छात्र एवं 13.62% छात्राएंटच टाइपिंग की प्रणाली इनस्क्रिप्ट का प्रयोग करते हैं तथा 38.24% छात्र तथा 31.82% छात्राएं रेमिंगटन प्रणाली का प्रयोग करती हैं वहीं 48.53% छात्राएं तथा 54.55% छात्र उपरोक्त दोनों प्रणालियों का प्रयोग करते हैं कुल छात्र/छात्राएं 13.33% स्क्रिप्ट प्रणाली तथा 36.67% रेमिंगटन एवं 50.01% उपरोक्त दोनों प्रणालियों का प्रयोग करते हैं

प्रश्न (42) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति-

प्रश्न सं 42 निम्न कुंजीपटल हैं-

तालिका सं 4.42

प्रश्न (42) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

श्रेणी	N	हिन्दीमोबाइलकीबोर्ड		हिन्दीकीबोर्ड	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
छात्र	68	37	54.41	31	45.59
छात्राएँ	22	11	50	11	50
कुल	90	48	53.33	42	46.67
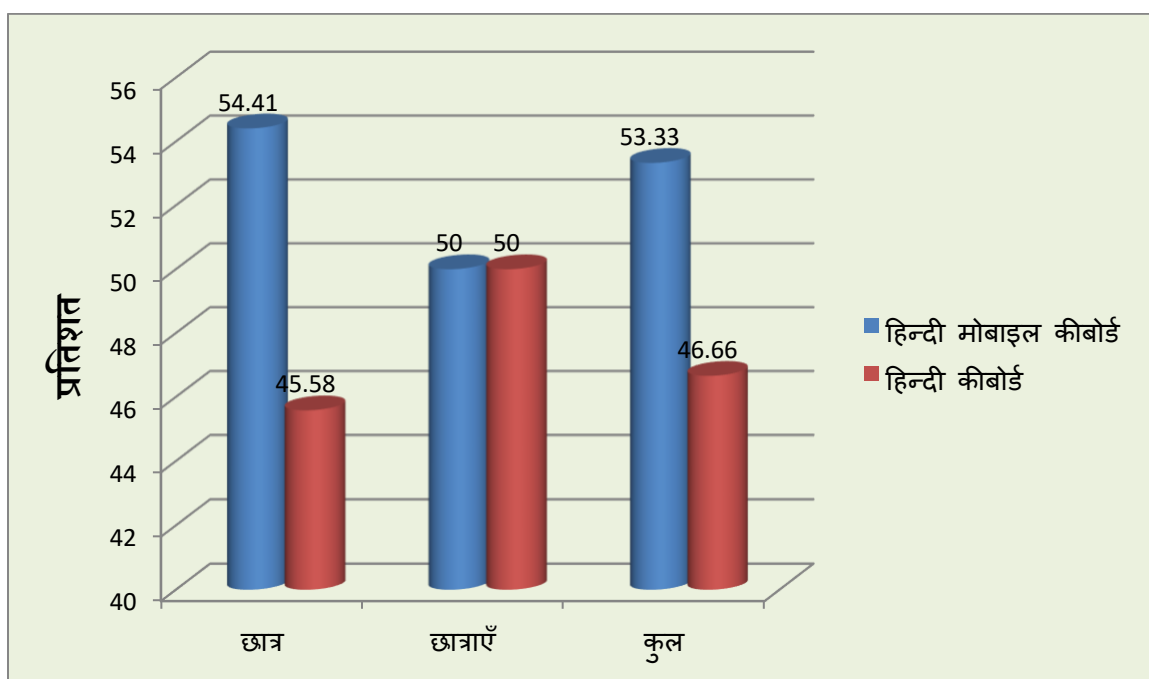
प्रश्न (42) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

चित्र सं 4.42

विश्लेषण-

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि कुंजीपटल के आकार एवं उसके टंकण की भाषा को समझ कर विद्यार्थी हिंदी मोबाइल
कीबोर्ड का चयन करते हैं जिन्हें विद्यार्थियों को उनके कार्यप्रणाली का पता नहीं है वे गलत विकल्प का चयन करते हैं

विवेचन-

तालिका संख्या 4.42 एवं चित्र सूची 4.42 से स्पष्ट है कि 54.41% छात्र ,50% छात्राएं, हिंदी मोबाइल कीबोर्ड कुंजीपटल का प्रयोग करते हैं हिंदी की बोर्ड कुंजीपटल का प्रयोग 45.59% छात्र तथा 50% छात्राएं करती हैं कुल विद्यार्थी 53.33% हिंदी कीबोर्ड 40.67% हिंदी कीबोर्ड का उपयोग करते हैं।

प्रश्न (43) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति-

प्रश्न सं 43गूगल हिन्दी इनपुट में लिखा जाता है-

तालिका सं 4.43

प्रश्न (43) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

श्रेणी	N	देवनागरीलिपिद्वारा		रोमनअंग्रेजीद्वारा	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
छात्र	68	44	64.71	24	35.29
छात्राएँ	22	13	59.09	9	40.91
कुल	90	57	63.33	33	36.67
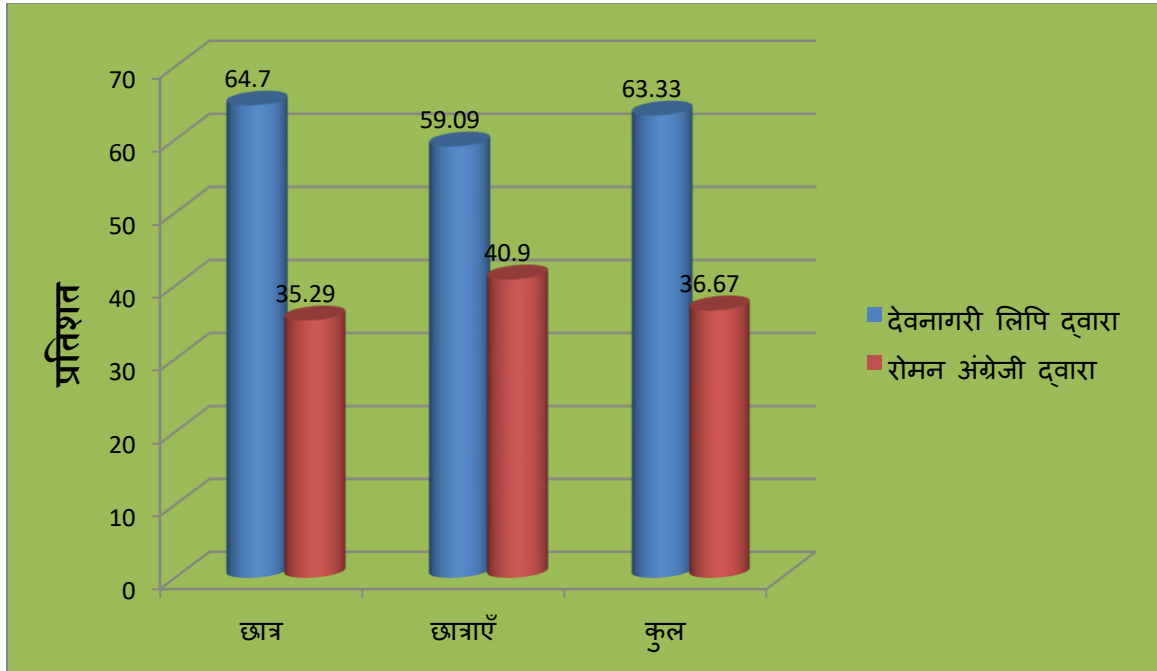
प्रश्न (43) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थित

चित्र सं 4.43

विश्लेषण-

तालिका संख्या 4.43 एवं चित्र सूची 4.43 से स्पष्ट है कि 64.71% छात्र एवं 59.09% छात्राएं गूगल हिंदी इनपुट में देवनगरी लिपि द्वारा लिखते हैं तथा 35.29% छात्र एवं 40.91% छात्राएं रोमन अंग्रेजी द्वारा लिखते हैं कुल विद्यार्थी 63.33% गूगल हिंदी इनपुट में देवनागरी लिपि द्वारा तथा 36.67% रोमन अंग्रेजी द्वारा लिखा जाता है

विवेचना-

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि गूगल हिंदी इनपुट द्वारा देवनागरी लिपि मे लिखा जाता है जबकि छात्रों को गूगल हिंदी इनपुट के बारे में जानकारी का न होने के कारण गलत विकल्प का चयन करते हैं।

प्रश्न (44) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति-

प्रश्न सं 44 बेमेल को अलग करे-

तालिका सं 4.44

प्रश्न (44) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

श्रेणी	N	मंगल		अपराजिता		कृतिदेव	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
छात्र	68	17	25	33	48.53	2	2.94
छात्राएँ	22	3	13.64	16	72.73	0	0
कुल	90	20	22.22	49	54.44	2	2.22
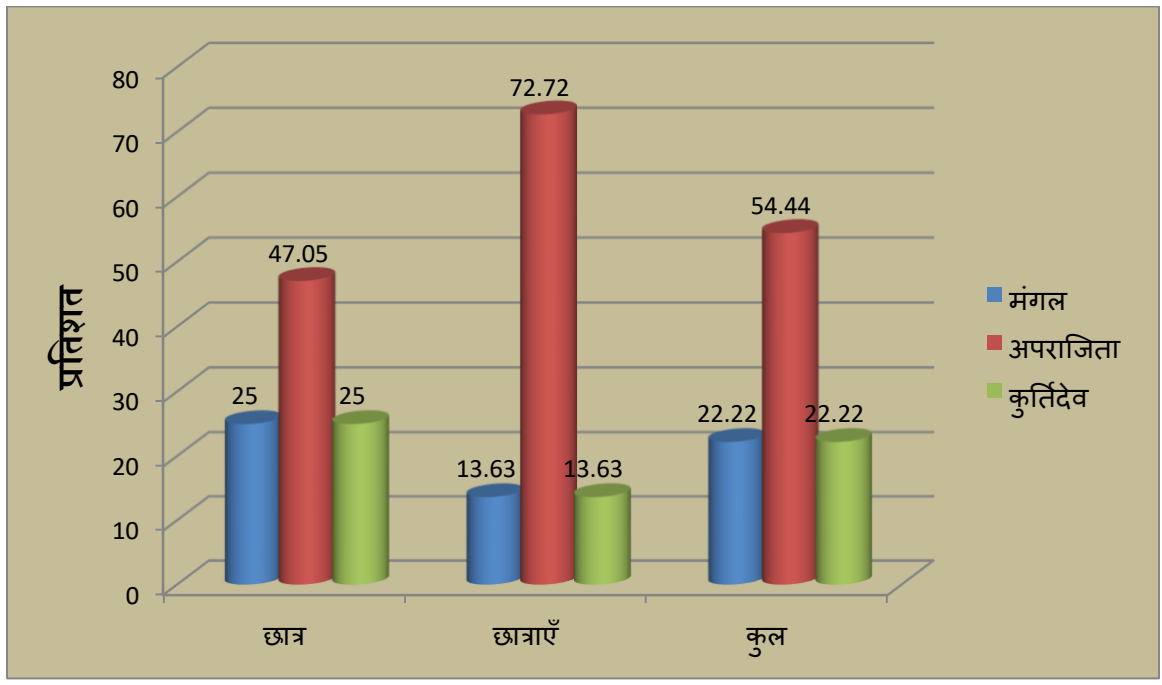
प्रश्न (44) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

चित्र सं 4.44

विश्लेषण-

उपरोक्त तालिका संख्या 4.44 एवं चित्र सूची संख्या 4.44 से स्पष्ट है कि छात्र मंगल फॉण्ट को 25%,अपराजिता फॉण्ट को 48.53% तथा कृतिदेव फॉण्ट को 2.94% सही करते हैं। जबकि छात्राएँ मंगल को 13.64%,अपराजिता को 72.73% तथा कृतिदेव को 0% सही करते हैं। इसी क्रम में कुल विद्यार्थियों में 22.22% मंगल ,54.44% अपराजिता तथा 2.22% कृतिदेव का चयन करते हैं।

विवेचना-

तालिका संख्या एवं चित्र संख्या4.44 से स्पष्ट है कि 22.22% विद्यार्थि मंगल का एवं 54.53% विद्यार्थि अपराजिता का गलत चयन करते हैं। जबकि2.22% विद्यार्थि कृतिदेव विकल्प का सही चयन करते हैं। जिसका कारण है कि अधिकाँश छात्र/छात्राओं को सही उत्तर की जानकारी नहीं है।

प्रश्न (45) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति-

प्रश्न सं 45हिन्दी टाइपिंग का सर्वाधिक नॉन यूनिकोड फॉण्ट है-

तालिका सं 4.45

प्रश्न (45) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों

श्रेणी	N	मंगल		कुर्तिदेव		चाणक्य	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
छात्र	68	16	23.53	34	50	18	26.47
छात्राएँ	22	3	13.64	14	63.64	5	22.73
कुल	90	19	21.11	48	53.33	23	25.56
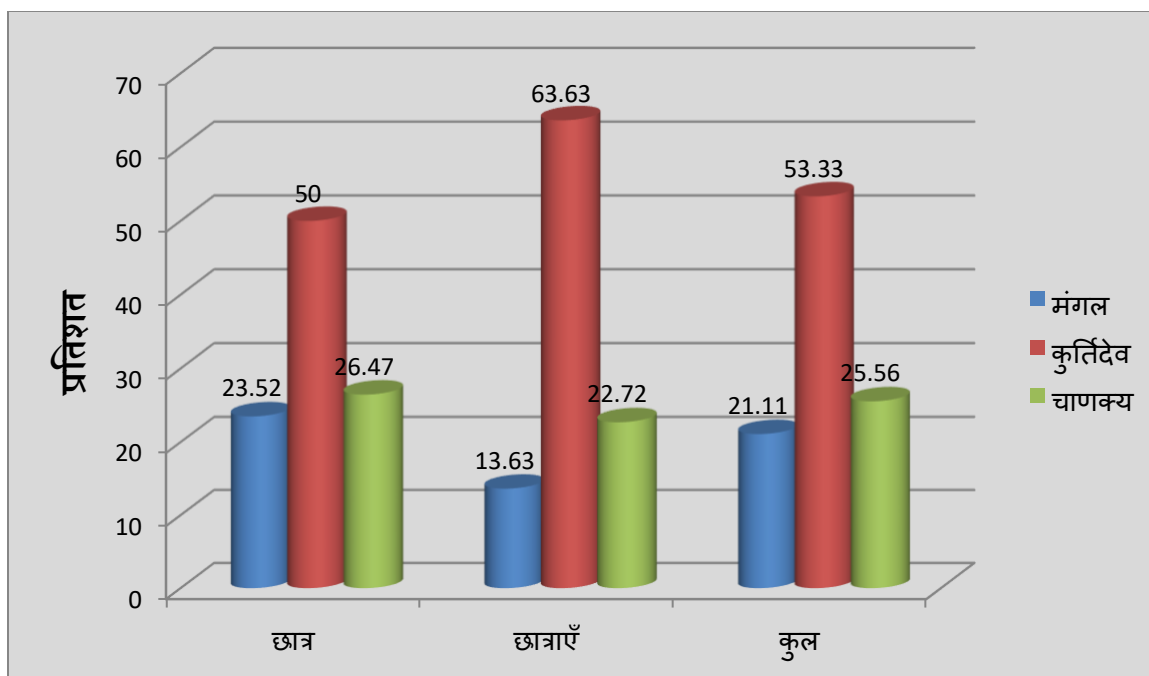
प्रश्न (45) के सन्दर्भ में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की स्थिति

चित्र सं 4.45

विश्लेषण

तालिका संख्या 4.45 एवं चित्र सूची 4.45 से स्पष्ट है कि 23.53% छात्र मंगल,50 % कुर्ती देव तथा 67.47 % चाणक्य हिंदी टाइपिंग के सर्वाधिक नॉन Unicode फॉण्ट में काम करना पसंद करते हैं छात्राएं 13.64% मंगल, 63.64% कुर्ती देव, 22.73% चाणक्य हिंदी टाइपिंग के सर्वाधिक नवीनnon Unicode को पसंद करते हैं कुल विद्यार्थी 21.11%,53.33%, 25.62% हिंदी टाइपिंग के सर्वाधिक नवीन यूनिकोड फॉण्ट को पसंद करते हैं।

विवेचना

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि विद्यार्थियों द्वारा इस प्रश्न में सही उत्तर हेतु शत-प्रतिशत परिणाम ना दिए जाने का कारण यूनिकोड कोमा non Unicode अंतर ना समझ पाना है इसके फलस्वरूप कुछ विद्यार्थी अन्य विकल्पों का चयन करते हैं

4.2 महाविद्यालयीन छात्र/छात्राओं में हिन्दी कम्प्यूटिंग के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक विश्लेषण।

परिकल्पना: महाविद्यालयीन छात्र/छात्राओं की हिन्दी कम्प्यूटिंग जागरूकता के मध्य सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

तालिका सं-4.46

महाविद्यालयीन छात्र/छात्राओं में हिन्दी कम्प्यूटिंग के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक विश्लेषण।

श्रेणी	संख्या(N)	मध्यमान(M)	मानक विचलन(S.D.)σ	मानक विचलन वर्ग (S.D.) σ^2	क्रांतिक अनुपात (गणना मान)(C.R.)	स्वतंत्रांश(df)	क्रांतिक अनुपात(C.R.) (तालिका मान)	सार्थकता स्तर
छात्र	68	17.33	3.31	10.95	3.17	88	1.9873	0.5
छात्राएँ	22	15.36	2.25	5.06				

उपरोक्त तालिका संख्या 4.46 से स्पष्ट है कि महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में हिंदी कंप्यूटिंग की जागरूकता के संदर्भ में छात्रों का मध्यमान एवं मानक विचलन, मानक विचलन वर्ग क्रमशः 17.33 , 3.31,10.95 एवं छात्राओं का मध्यमान एवं मानक विचलन, मानक विचलन वर्ग क्रमशः 15.36,2.25,5.06 है। जिनका परिगणित क्रांतिक मान 3.17 है

है जो कि .05 सार्थक स्तर पर निश्चित तालिका मान 1.9873 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना . 05 स्तर पर अस्वीकृत की जाती है।

प्रेक्षित परिकल्पना में पाया गया कि विद्यार्थियों में छात्र-छात्रा के आधार पर महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं में हिंदी कंप्यूटिंग के प्रति जागरूकता के मध्य सार्थक अंतर है। चित्र संख्या 4.46 में इस मध्यमान को प्रदर्शित गया है।

5.1.निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के परिणामों से जो निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं वह निम्न वत हैं महाविद्यालय विद्यार्थियों में एंड्रॉयड मोबाइल के संदर्भ मैं शत-प्रतिशत आंकड़े प्राप्त हुए हैं तथा 15-16 आयु वर्ग के सभी छात्र-छात्राएं एंड्राइड मोबाइल का उपयोग दैनिक जानकारी हेतु करते है।

सभी महाविद्यालय छात्राएं एंड्राइड मोबाइल का शत-प्रतिशत प्रयोग करते हैं अधिकांश छात्र भी एंड्राइड मोबाइल का समझताप्रयोग करते हैंमहाविद्यालय विद्यार्थियों में मोबाइल की भाषा मोबाइल की संपर्क भाषा हिंदी के संबंध में जो परिणाम प्राप्त हुए हैं उनमें 100% छात्राओं ने अंग्रेजी भाषा का चयन किया है जिसका कारण यह है कि मोबाइल की प्राथमिक भाषा अंग्रेजी थी जो छात्रों छात्राओं के मूल प्रगति में शामिल हैमहाविद्यालय इन विद्यार्थियों में कंप्यूटर एवं इंटरनेट अनुप्रयोग करने वाले छात्र-छात्राओं में मूल्यांकन स्तर पर जागरूकता काप्रतिशत अधिक पाया गया। राष्ट्रभाषा हमारे भारतीय होने के गर्व का प्रतीक है परंतु सभी भारतीय शत-प्रतिशत राष्ट्रभाषा हिंदी का प्रयोग करते हैं

5.2 अध्ययन की उपादेयता

महाविद्यालय विद्यार्थियों में कत्था शिक्षा के प्रति जो नीरसता उत्पन्न हो रही है उसे विभाग बार कंप्यूटर में इंटरनेट के उपयोग से दूर किया जा सकता है शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है जो भारतीय भाषाओं में भारत की राष्ट्रभाषा उसका विकास क्रम आज तथ्यों पर चर्चा परिचर्चा का आयोजन करवा कर उसके अध्ययन अध्यापन में आधुनिक नवीन शैक्षिक उपागम ओं का उपयोग किया जाना चाहिए जिससे प्रत्येक विद्यार्थी मैं नूतन जानकारी तथा सीखने के कौशल विकसित होंगे महाविद्यालय इन विद्यार्थियों में शिक्षा प्रक्रिया के प्रमुख तत्वों में शिक्षक का स्थान सर्वाधिक महत्वपूर्ण है योग्य शिक्षकों के अभाव में सुयोग्य छात्रगण वांछित ज्ञानार्जन में सफल नहीं हो सकते हैं । अच्छी से अच्छी पाठ्यवस्तु भी निपुण शिक्षक की अनुपस्थिति में प्राण हीन हो जाती है अगर शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया है तो शिक्षक इस कठिन प्रक्रिया को गति प्रदान करने वाला । शिक्षक शिक्षा प्रक्रिया को उचित दिशा प्रदान करते हैं शिक्षण प्रक्रिया के समय शिक्षकों द्वारा सीखे गए कौशलों

का अनुप्रयोग एक ऐसी आधारभूत विशेषता है जो शिक्षकों को भावी चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करती हैं

5.3 अध्ययन के सुझाव

इस अध्ययन के निष्कर्ष हिंदी प्रशिक्षकों शिक्षकों पाठ्यक्रम निर्माण करता हू आदि के लिए लाभप्रद हो सकते हैं प्रस्तुत खंड में सुझाव भिन्न-भिन्न दिए जा सकते हैं।

5.3.1 **शिक्षकों हेतु सुझाव**

आधुनिक समय में हमारे देश में शिक्षा के सर्वांगीण विकास हेतु शिक्षा की स्थिति दयनीय है हमारी सरकारें शिक्षा नीति में बहुत से समाचारों का समावेशन करती हैं परंतु उन्हें भली-भांति शिक्षा में लागू नहीं कराया जाता बल्कि उसकी उपेक्षा की जाती है हमारे देश में पठन-पाठन आज भी रख कर कराया जाता है हिंदी शिक्षण में भी यही समस्या है उच्च शिक्षा में भी शिक्षा के विभिन्न विषयों में एक निर्धारित कौशलों को करवाने हेतु पारंगत होते हैं और ना ही उनके द्वारा छात्रों से करवाया जाता है। उच्च शिक्षा में अगर शिक्षकों को विभाग बार शिक्षण सामग्री उपलब्ध करवाई जाती है तब भी वह छात्रों को समय की कमी आदि समस्याएं बताकर पढ़कर याद करने को कह कर किनारा कर लेते हैं शिक्षकों से यह आशा की जाती है कि वह पाठ्य पुस्तकों में दी गयी ज्ञानवर्धक सामग्री के अतिरिक्त विषय वस्तु से संबंधित नवीन एवं रुचिकर जानकारी खोजें और कक्षाओं में विद्यार्थियों को बताए तथा स्वयं कर के छात्रों को भी सीखने के लिए प्रेरित करें।

5.3.2 शिक्षकों प्रशिक्षकों शिक्षकों हेतु सुझाव

उच्च शिक्षा में शिक्षा तक प्रशिक्षकों के लिए भी प्रस्तुत अध्ययन के परिणाम महत्वपूर्ण है इससे संबंधित कुछ सुझाव निम्न है।

उच्च शिक्षा से संबंधित शिक्षकों प्रशिक्षकों को चाहिए कि छात्र-छात्राओं एवं प्रशिक्षकों की रुचि को ज्ञात कर उनकी रुचि का विकास करें।

उच्च शिक्षा में कंप्यूटर से संबंधित अभ्यास कथाएं होनी चाहिए तथा हिंदी कंप्यूटिंग के पृष्ठों की रुचि को ज्ञात कर उनकी रुचि का विकास करें

हिंदी विषय से संबंधित शिक्षक प्रशिक्षकों को चाहिए कि वे कक्षा में हिंदी के प्रशिक्षुओं में विज्ञान प्रक्रिया कौशल ज्ञात कर उनमें हिंदी प्रक्रिया कौशल का विकास करें

हिंदी कंप्यूटिंग विषय से संबंधित शिक्षक प्रशिक्षकों को चाहिए कि वे कक्षा में हिंदी के प्रशिक्षण में हिंदी कंप्यूटिंग कौशल ज्ञात कर उनमें हिंदी कंप्यूटिंग कौशल की प्रक्रिया का विकास करें

हिंदी कंप्यूटिंग से संबंधित शिक्षकों को चाहिए कक्षा में हिंदी कंप्यूटिंग के प्रशिक्षुओं को हिंदी कंप्यूटिंग कौशल का अभ्यास कराएं और प्रशिक्षुओं को बताएं कि अध्यापन के समय में छात्रों में हिंदी कंप्यूटिंग के कौशल का विकास कैसे करेंगे। हिंदी शिक्षण कौशल का प्रयोग कर हिंदी विषयों के प्रशिक्षुओं

हिंदी कंप्यूटिंग शिक्षण कौशल का अध्ययन कर उनमें इस कौशल को विकसित कर सकते हैं।

5.3.3 अभिभावकों हेतु सुझाव

समूचे सृष्टि में मानव ईश्वर की ऐसी अप्रतिम रचना है जिसके जीवन प्रत्याशा संघर्ष में है समस्याओं से पूर्ण है प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि मैं अपनी आर्थिक स्थिति को कैसे सुदृढ़ करूं जिसका परिणाम यह होता है कि वह अपने परिवार और बच्चों को पर्याप्त समय नहीं दे पाता है वह अपने बच्चों का विद्यालय में प्रवेश कराने के बाद बच्चों की शिक्षा की जिम्मेदारी केवल विद्यालयों में छोड़ देते हैं जो कि बच्चों के भविष्य हेतु अत्यंत हानिकारक सिद्ध होता है अभिभावकों के इस आशय की छाती से सावधान रहना चाहिए छात्र विद्यालय के बांध किन किन गतिविधियों में लिप्त रहता है आवश्यक अवलोकन करना चाहिए अधिकांश देखा जाता है कि छात्र द्वारा भेजा घरेलू वस्तुओं से विभिन्न प्रकार के क्रियाकलाप किए जाते हैं जिससे वह विभिन्न प्रकार की वस्तुओं को बनाता में दौड़ता रहता है जिससे अभिभावक हरकत या वस्तुओं को तोड़ने फोड़ने में ले लेता है और बच्चों की उन गलत गतिविधियों पर रोक लगा देते हैं इसका परिणाम यह होता है कि छात्रों द्वारा किए जाने वाले क्रियाकलापों के बंद हो जाने से उनके मन में वस्तुओं का घटनाओं के पीछे दे सिद्धांतों कारणों को जानने की उत्कंठा मंद हो जाती है और स्वयं करने की प्रक्रिया बंद हो जाती है अभिभावकों को चाहिए कि वह

घरों में छात्रों के लिए विज्ञान के विज्ञान से संभावित खिलौनों को छात्रों के लिए उपलब्ध कराएं मुझे ऐसे क्रियाकलापों हेतु प्रोत्साहित करें ना कि विकसित करें

5.3.4विद्यालय प्रबंधन हेतु सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन में प्रबंध तंत्र के लिए दिए गए सुझाव निम्नांकित हैं

शिक्षकों के व्यक्तित्व विकास हेतु नीति निर्धारकों के व्यक्तित्व विकास से संबंधित अलग-अलग प्रशिक्षण कार्यक्रमों को अनिवार्य रूप से लागू करना करना चाहिए।

शिक्षा संबंधी बनाई जाने वाली नीतियों में महाविद्यालय स्तर में कंप्यूटर शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रमों को स्थान देना चाहिए। शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में शिक्षकों के व्यक्तित्व के अनुरूप प्रशिक्षण की व्यवस्था की जानी चाहिए।

5.4 भावी अध्ययन हेतु सुझाव।

कदाचित कोई भी शोध कार्य स्वयं में संपूर्ण नहीं होता है बहुत से प्रश्न रह जाते हैं यह तो बिल्कुल सत्य है कि किसी एक शोध कार्य के आधार पर अधिक स्थिर परिणाम नहीं कर पाते हैं अधिक स्थिर परिणाम प्राप्त करने हेतु एक ही समस्या पर कई शोध अध्ययन किए जाने चाहिए एक शोधार्थी के लिए समय धनवा शक्ति की कमी से के कारण यह संभव नहीं हो पाता है जिसके परिणाम स्वरूप कई अन्य सहयोगी एवं महत्वपूर्ण पहलू अध्ययन के प्रभाव से अछूते रह गए हैं भाभी अनुसंधानकर्ताओं से यह अपेक्षा की जा रही है कि अध्यापन के अध्ययन के प्रभाव से अछूते क्षेत्र को अपने अध्ययन में शामिल करेंगे उनके द्वारा दिया गया अध्ययन शिक्षा के क्षेत्र में दूरगामी परिणामों के साथ साथ अध्ययन के क्षेत्र में एक नवीन संकल्पना के रूप में दृष्टिगोचर होगा भाभी अनुसंधानकर्ता अपने शोध कार्य में निम्नलिखित पहलुओं को शामिल कर सकते हैं जो बिंदुवार है

- ❖ महाविद्यालयीनविद्यार्थियोंमेंहिंदीकंप्यूटिंगकेप्रतिजागरूकताकाअध्ययनबांदाजिलेकेविशेषसंदर्भमें
- ❖ महाविद्यालयीनछात्र-छात्राओं में हिंदी कंप्यूटिंग के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

❖ महाविद्यालयविद्यार्थियोंकीहिंदीकंप्यूटिंगसंबंधीआदतोंकाअध्ययन

पंचम अध्याय- निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के परिणामों से जो निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं वह निम्नवत हैं महाविद्यालय विद्यार्थियों में एंड्रॉयड मोबाइल के सन्दर्भ में शत-प्रतिशत आंकड़े प्राप्त हुए हैं तथा 15-16 आयु वर्ग के सभी छात्र-छात्राएं एंड्राइड मोबाइल का उपयोग दैनिक जानकारी हेतु करते हैं।

सभी महाविद्यालय छात्राएँ एंड्राइड मोबाइल का शत-प्रतिशत प्रयोग करते हैं अधिकांश छात्र भी एंड्राइड मोबाइल का समझताप्रयोग करते हैंमहाविद्यालय विद्यार्थियों में मोबाइल की भाषा मोबाइल की संपर्क भाषा हिन्दी के सम्बन्ध में जो परिणाम प्राप्त हुए है उनमें 100% छात्राओं ने अंग्रेजी भाषा का चयन किया है जिसका कारण यह है कि मोबाइल की प्राथमिक भाषा अंग्रेजी थी जो छात्र छात्राओं के मूल प्रगति में शामिल है। महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में कम्प्यूटर एवं इण्टरनेट अनुप्रयोग करने वाले छात्र-छात्राओं में मूल्यांकन स्तर पर जागरूकता का प्रतिशत अधिक पाया गया। राष्ट्रभाषा हमारे भारतीय होने के गर्व का प्रतीक है परन्तु सभी भारतीय शत-प्रतिशत राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रयोग करते हैं।

निष्कर्ष

- शत प्रतिशत छात्राओं के पास तथा अधिकांश छात्रों के पास एंड्राइड मोबाइल पाये गये।
- शत प्रतिशत छात्राओं के मोबाइल की भाषा अंग्रेजी पायी गयी।
- शत प्रतिशत विद्यार्थियों के मोबाइल की भाषा अंग्रेजी है।
- शत प्रतिशत विद्यार्थी मोबाइल में सम्पर्क अंग्रेजी भाषा में सहेजते हैं।
- शत प्रतिशत विद्यार्थीमोबाइल अनुप्रयोग में हिन्दी के स्तान पर अंग्रेजी को महत्त्व देते है।
- शत प्रतिशत विद्यार्थी मोबाइल अनुप्रयोग में हिन्दी में प्रयुक्त तकनीक शब्द क्लिष्ट मानते है।
- शत प्रतिशत विद्यार्थी मोबाइल अनुप्रयोग में अंग्रेजी का कुंजीपटल प्रयोग करना पसन्द करते है।
- शत प्रतिशत विद्यार्थी मोबाइल अनुप्रयोग में हिन्दी का कुंजीपटल बड़ा होने के कारण प्रयोग में कठिनाई महसूस करते हैं।
- अधिकांश विद्यार्थी अंग्रेजी में काम करने की विधि प्रक्रियासे असहमति व्यक्त करते हैं।

- शत प्रतिशत विद्यार्थी मोबाइल अनुप्रयोग में अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी का प्रयोग अनपढ़ गवार पिछड़े लोग करते हैं इस कथन से अधिकांश विद्यार्थी असहमत है।
- शत प्रतिशत विद्यार्थी राष्ट्रभाषा में काम करने पर गर्व की अनुभूति करते हैं। * शत प्रतिशत विद्यार्थी भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी को मानते हैं।
- शत प्रतिशत विद्यार्थियों मातृभाषा में काम करने पर गर्व की अनुभूति करते हैं।
- शत प्रतिशत विद्यार्थी हिन्दी में कार्य करना देश की अस्मिता राष्ट्र के गौरव की मानते है।
- अधिकांश विद्यार्थी यह मानते हैं कि मोबाइल में हिन्दी माध्यम से काम करना अत्यंत कठिन है।
- अधिकांश विद्यार्थी मोबाइल कम्प्यूटर के द्वारा हिन्दी में कार्य करने की सरलतम विधि ध्वनी लेखन मानते है।
- शत प्रतिशत विद्यार्थीओं मोबाइल में बोलकर लिखने की सुविधा है।
- शत प्रतिशतविद्यार्थी मोबाइल में हिन्दी भाषा में बात करते है।

5.2 अध्ययन की उपादेयता

महाविद्यालय विद्यार्थियों में कत्था शिक्षा के प्रति जो नीरसता उत्पन्न हो रही है उसे विभाग चार कम्प्यूटर में इण्टरनेट के उपयोग से दूर किया जा सकता है शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है जो भारतीय भाषाओं में भारत की राष्ट्रभाषा उसका विकास क्रम आज तथ्यों पर चर्चा परिचर्चा का आयोजन करवा कर उसके अध्ययन अध्यापन में आधुनिक नवीन शैक्षिक उपागमों का उपयोग किया जाना चाहिए जिससे प्रत्येक विद्यार्थी में नूतन जानकारी तथा सीखने के कौशल विकसित होंगे महाविद्यालय इन विद्यार्थियों में शिक्षा प्रकिया के प्रमुख तत्वों में शिक्षक का स्थान सर्वाधिक महत्वपूर्ण है योग्य शिक्षकों के अभाव में योग्य वांछित ज्ञानार्जन में सफल नहीं हो सकते है। अच्छी से अच्छी पाठ्यवस्तु भी निपुण शिक्षक की अनुपस्थिति में प्राण हीन हो जाती है अगर शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया है तो शिक्षक इस

कठिन प्रक्रिया को गति प्रदान करने वाला शिक्षक शिक्षा प्रक्रिया को उचित दिशा प्रदान करते हैं शिक्षण प्रक्रिया के समय शिक्षकों द्वारा सीखे गए कौशलों का अनुप्रयोग एक ऐसी आधारभूत विशेषता है जो शिक्षकों को भावी चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करती हैं।

5.3 अध्ययन के सुझाव

इस अध्ययन के निष्कर्ष हिन्दी प्रशिक्षकों, कक्षा शिक्षकों, पाठ्यक्रम निर्माण कर्ताओं आदि के लिए, लाभप्रद हो सकते हैं प्रस्तुत खण्ड में सुझाव भिन्न-भिन्न दिये जा सकते है।

5.3.1 शिक्षकों हेतु सुझाव

आधुनिक समय में हमारे देश में शिक्षा के सर्वांगीण विकास हेतु शिक्षा की स्थिति दयनीय है। हमारी सरकारें शिक्षा नीति में बहुत से समाचारों का समावेशन करती हैं परन्तु उन्हें भली-भांति शिक्षा में लागू नहीं कराया जाता बल्कि उसकी उपेक्षा की जाती है। हमारे देश में पठन-पाठन आज भी रट कर कराया जाता है हिन्दी शिक्षण में भी यही समस्या है। उच्च शिक्षा में भी शिक्षक विभिन्न विषयों में दक्षता हेतु निर्धारित कौशलों को करवाने हेतु पारंगत होते हैं और ना ही उनके द्वारा छात्रों से करवाया जाता है। उच्च शिक्षा में अगर शिक्षकों को विभागवार शिक्षण सामग्री उपलब्ध करवाई जाती है तब भी वह छात्रों को समय की कमी आदि समस्याएँ बताकर पढ़कर याद करने को कह कर किनारा कर लेते हैं। शिक्षकों से यह आशा की जाती हैं कि वह पाठ्य पुस्तकों में दी गयी ज्ञानवर्धक सामग्री के अतिरिक्त विषय वस्तु से सम्बन्धित नवीन एवं रुचिकर जानकारी खोजें और कक्षाओं में विद्यार्थियों को बताएं तथा स्वयं करके छात्रों को भी सीखने के लिए प्रेरित करें।

शिक्षकों प्रशिक्षकों हेतु सुझाव

उच्च शिक्षा में शिक्षक, प्रशिक्षकों के लिए भी प्रस्तुत अध्ययन के परिणाम महत्वपूर्ण है। इससे सम्बन्धित कुछ सुझाव निम्न है—

- उच्च शिक्षा से सम्बन्धित शिक्षकों, प्रशिक्षकों को चाहिए कि छात्र-छात्राओं एवं प्रशिक्षकों की कथि को ज्ञात कर उनकी रुचि का विकास करें।
- उच्च शिक्षा में कम्प्यूटर से सम्बन्धित अभ्यास कक्षाएँ होनी चाहिए तथा हिन्दी कम्प्यूटिंग के पृष्ठों की रुचि को ज्ञात कर उनकी रुचि का विकास करें।
- हिन्दी कम्प्यूटिंग से सम्बन्धित शिक्षक को चाहिए कि वे कक्षा में हिन्दी कम्प्यूटिंग के प्रशिक्षुओं को हिन्दी कम्प्यूटिंग कौशल का अभ्यास कराएं और प्रशिक्षुओं को बताएं कि अध्यापन के समय वे छात्रों में हिन्दी कम्प्यूटिंग के कौशल का विकास कैसे करेगें।
- हिन्दी शिक्षण कौशल का प्रयोग कर हिन्दी विषय के प्रशिक्षुओं के हिन्दी कम्प्यूटिंग शिक्षण कौशल का अध्ययन कर उनमें इस कौशल को विकसित कर सकते है।

5.3.3 अभिभावकों हेतु सुझाव

समूचे सृष्टि में मानव ईश्वर की ऐसी अप्रतिम रचना है जिसके जीवन प्रत्याशा संघर्ष में है समस्याओं से पूर्ण है। प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि मैं अपनी आर्थिक स्थिति को कैसे सुदृढ करूँ जिसका परिणाम यह होता है कि वह अपने परिवार और बच्चों को पर्याप्त समय नहीं दे पाता है। वह अपने बच्चों का विद्यालय में प्रवेश कराने के बाद बच्चों की शिक्षा की जिम्मेदारी केवल विद्यालयों में छोड़ देते हैं जो कि बच्चों के भविष्य हेतु अत्यंत हानिकारक सिद्ध होता है अभिभावकों के इस आशय की क्षति से सावधान रहना चाहिए छात्र विद्यालय के बाद किन-किन गतिविधियों में लिए रहता है औचक अवलोकन करना चाहिए। अधिकांश देखा जाता है कि छात्र द्वारा घरेलू वस्तुओं से विभिन्न प्रकार के क्रियाकलाप किए जाते हैं जिससे वह विभिन्न प्रकार की वस्तुओं को बनाता बिगड़ता रहता है। जिसे अभिभावक हरकत या वस्तुओं को तोड़ने फोड़ने में ले लेता है और बच्चों की उन गतिविधियों पर रोक लगा देते हैं

इसका परिणाम यह होता है कि छात्र द्वारा किए जाने वाले क्रियाकलापों के बन्द हो जाने से उनके मन में वस्तुओं या घटनाओं के पीछे दे सिद्धांतों कारणों को जानने की उत्कण्ठा मन्द हो जाती है और स्वयं करने की प्रक्रिया बन्द हो जाती है। अभिभावकों को चाहिए कि वह घरों में छात्रों के लिए विज्ञान के विज्ञान से सम्बन्धित खिलौनों को छात्रों के लिए उपलब्ध कराएं उन्हें ऐसे क्रियाकलापों हेतु प्रोत्साहित करें न कि दण्डित करें।

5.3.4 विद्यालय प्रबन्धन हेतु सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन में प्रबन्ध तंत्र के लिए दिए गए सुझाव निम्नांकित है—

- शिक्षकों के व्यक्तित्व विकास हेतु नीति निर्धारकों के व्यक्तित्व विकास से सम्बन्धित अलग-अलग प्रशिक्षण कार्यक्रमों को अनिवार्य रूप से लागू करना करना चाहिए।
- शिक्षा सम्बन्धी बनाई जाने वाली नीतियों में महाविद्यालय स्तर में हिन्दी कम्प्यूटिंग शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रमों को स्थान देना चाहिए। शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में शिक्षकों के व्यक्तित्व के अनुरूप प्रशिक्षण की व्यवस्था की जानी चाहिए।

5.4 भावी अध्ययन हेतु सुझाव

कदाचित कोई भी शोध कार्य स्वयं में सम्पूर्ण नहीं होता है बहुत से प्रश्न रह जाते हैं यह तो बिल्कुल सत्य है कि किसी एक शोध कार्य के आधार पर अधिक स्थिर परिणाम नहीं कर पाते हैं। अधिक स्थिर परिणाम प्राप्त करने हेतु एक ही समस्या पर कई शोध अध्ययन किए जाने चाहिए। एक शोधार्थी के लिए समय धन वा शक्ति की कमी के कारण यह सम्भव नहीं हो पाता है जिसके परिणाम स्वरूप कई अन्य सहयोगी एवंमहत्वपूर्ण पहलू अध्ययन के प्रभाव से अछूते रह गए हैं भावी अनुसंधानकर्ताओं से यह अपेक्षा की जा रही है कि अध्यापन के अध्ययन के प्रभाव से अछूते क्षेत्र को अपने अध्ययन में शामिल करेंगे उनके द्वारा दिया गया अध्ययन शिक्षा के क्षेत्र में दरगामी परिणामों के साथ साथ अध्ययन के क्षेत्र में एक नवीन

संकल्पना के रूप में दृष्टिगोचर होगा भावी अनुसंधानकर्ता अपने शोध कार्य में निम्नलिखित पहलुओं को शामिल कर सकते हैं जो बिन्दुवार है–

- प्रस्तुत अध्ययन विभिन्न महविद्यालयों के मध्य किया जा सकता है।
- प्रस्तुत अध्ययन को शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालयीन स्तर के विद्यार्थियों को लेकर भी किया जा सकता है।
- प्रस्तुत अध्ययन अध्यापक तथा अभिभावकों को लेकर भी किया जा सकता है।
- महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में हिन्दी कम्प्यूटिंग के प्रति जागरूकता का अध्ययन बाँदा जनपद के विशेष सन्दर्भ में।
- महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं में हिन्दी कम्प्यूटिंग के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन
- महाविद्यालय विद्यार्थियों की हिन्दी कम्प्यूटिंग सम्बन्धी आदतों का अध्ययन।
- प्रस्तुत अध्ययन को हिन्दी माध्यम के निजी महाविद्यालय, राजकीय महाविद्यालय तथा अनुदानित महाविद्यालय के विद्यार्थियों को लेकर किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.पाण्डेय, रामशकल (2012), हिन्दी शिक्षण, आगरा विनोद पुस्तक मन्दिर

2. लाल, रमन बिहारी एवं शर्मा, कृष्णा कान्त (2013), भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएँ, मेरठः आर०लाल०बुक डिडिपो

3.कौल, लोकेश (2006), शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, नई दिल्ली: विकाश पब्लिशिंग हाउस प्रा ०लि० ।

4.गुप्ता, एस० पी० (2017), अनुसंधान संदर्शिका सम्प्रत्यय, कार्यविधि एवं प्रविधि इलाहाबाद: शारदा प्रकाशन ।

5. सिंह, अरुण कुमार (2015), मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ दिल्ली: मोतीलाल बनारसी दास।

6.सिंह, अरुण कुमार (2017), उच्चतर सामन्य मनोविज्ञान, दिल्ली: मोतीलाल बनारसी दासा

लघु शोध प्रबन्ध

7.दास, राम (2004), उच्च शिक्षा स्तर शिक्षकों के व्यक्तित्व एवं विषय सजगता के सन्दर्भ में कम्प्यूटर एवं इण्टरनेट अनुप्रयोग सम्बन्धी कौशलों का अध्ययन. पी०एच०डी० (शिक्षा शास्त्र) शोध-प्रबन्ध, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ < http://hdl.handle.net/10603/42968 >

8.कुमारी, मंजू (2005) मलिन बस्तियों में निवास करने वाले विशिष्ट जाति समूह की लड़कियों का शैक्षिक व्यावसायिक स्तर तथा उनकी शिक्षा के प्रति अभिभावकों का अभिमत. पी०एच०डी० (शिक्षा शास्त्र) शोध-प्रबन्ध दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय) दयालबाग आगरा

<http://hdl.handle.net/10603/207595

9.http://hdl.handle.net/10603/207692

10.http://hdl.handle.net/10603/132773

11.http://hdl.handle.net/10603/23035

परिशिष्ट

परिशिष्ट–1

बाँदा जनपद का मानचित्र

<u>परिशिष्ट–2</u>

संकलित चित्रावली
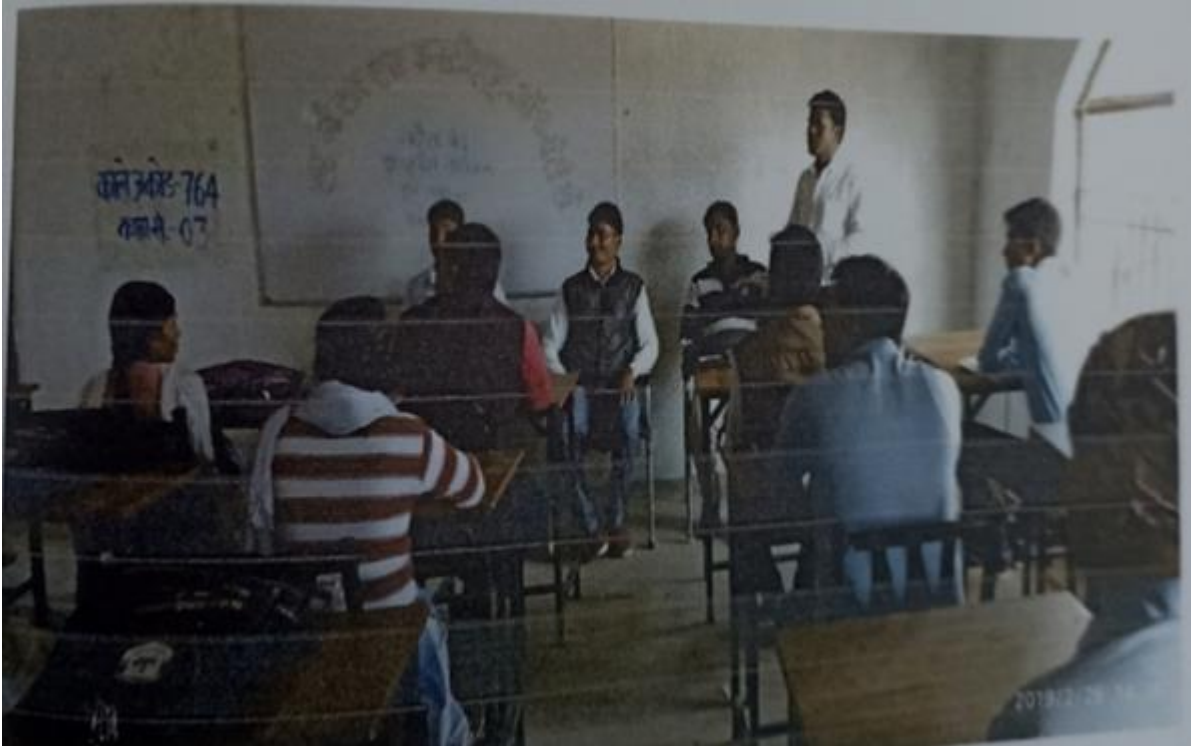
परिशिष्ट–3

पूरक परिशिष्ट सूची

1.क्या आप मोबाइल में यू-ट्यूब के माध्यम से हिन्दी वीडियों देखते है?

(अ) हाँ [ ] (ब) नहीं [ ] (स) इनमें से कोई नहीं [ ]

2.यू-ट्यूब में किस भाषा के माध्यम से वीडियो ढूढने में आपको सरलता का अनुभव होता है।

(अ) हिंदी [ ] (ब) अंग्रेजी [ ] (स) अन्य [ ]

3. मोबाइल में यू-ट्यूब की सहायता से अपने मन पसंदीदा कार्यक्रम के वीडियो ढूढ़ने के लिए आप किस भाषा का अधिकाधिक चयन करते है।

(अ) हिन्दी [ ] (ब) अंग्रेजी [ ] (स) अन्य [ ]

4.क्या अपने मोबाइल मे शिकायत निवारण प्रणाली का प्रयोग करते हैं?

(अ) हाँ [ ] (ब) नहीं [ ] (स) बिल्कुल नहीं [ ]

5.आप अपने मोबाइल में शिकायत को किस भाषा में टाइप करते हैं।
(अ) हिन्दी [ ] (ब) अंग्रेजी [ ] (स) अन्य भाषा [ ]

6.क्या आप शिकायत को हिन्दी भाषा के माध्यम से टाइप करने में सरलता का अनुभव होता है?

(अ) हाँ [ ] (ब) नहीं [ ] (स) बिल्कुल नहीं [ ]

7.क्या आपने टिवटर में अपनी टिप्पणी को हिन्दी में टाइप किया?
(अ) हाँ [ ] (ब) नहीं [ ] (स) बिल्कुल नहीं [ ]

8. क्या आप हॉटस्टार के माध्यम से L.P.L. के मैच देखते है?

(अ)हाँ [ ] (ब)। नहीं [ ] (स) बिल्कुल नहीं [ ]

9. IPL के मैचों की कमेंट्री किस भाषा मे आपको अच्छी लगती है?

(अ) अंग्रेजी [ ] (ब) हिंदी [ ] (स) अन्य भाषा [ ]

10. आपके मोबाइल में इनस्टॉल किए गए प्रत्येक सॉफ्टवेयर किस भाषा में संरक्षित किए गए?

(अ) हिंदी [ ] (ब) अंग्रेजी [ ] (स) अन्य भाषा [ ]

11. क्या आपके पास एंड्राइड मोबाइल 12. आपके मोबाइल की भाषा क्या है?

(अ) हाँ [ ] (ब) नहीं [ ] (स) बिल्कुल नहीं [ ]

12. आपके मोबाइल की भाषा क्या है?
(अ) अंग्रेजी [ ] (ब) हिन्दी [ ] (स) अन्य भाषा [ ]

13. आप मोबाइल में अधिकांश कार्य किस भाषा में करना पसन्द करते है?

(अ) अंग्रेजी [ ] (ब) हिंदी [ ] (स) अन्य भाषा [ ]

14. आप अपने मोबाइल मे सम्पर्क (contect) किस भाषा में संचित (save) करते है?

(अ) अंग्रेजी [ ] (ब) हिंदी [ ] (स) अन्य भाषा [ ]

15. मोबाइल अनुप्रयोग में हिन्दी के स्थान पर English की प्रधानता का कारण है–

(i) English मे काम करना सरल है- (अ) सहमत [ ] (ब) असहमत [ ]

(ii) English के स्थान पर हिन्दी में प्रयुक्त तकनीकी शब्द क्लिष्ट (कठिन) है–

(अ) सहमत [ ] (ब) असहमत [ ]

(iii) English का कुंजीपटल (keyboard) छोटा एवं प्रयोग मे सरल है-

(अ) सहमत [ ] (ब) असहमत [ ]

(iv) हिन्दी का कुंजीपटल (keyboard) बड़ा होने के कारण आपको प्रयोग में कठिनाई होती है–

(अ) सहमत [ ] (ब) असहमत [ ]

(v) मेरा मानना है कि English में काम करने पर दूसरे लोग मुझे सम्मान कि दृष्टि से देखेंगे–

(अ) सहमत [ ] (ब) असहमत [ ]

(vi) मैं समझता हूं कि English में काम करना अधिक शिक्षित होने का प्रतीक है–

(अ) असहमत [ ] (ब) सहमत [ ]

(vii) हिन्दी का प्रयोग अनपढ़ गवार पिछड़े लोग करते हैं?

(अ) सहमत [ ] (ब) असहमत [ ]

(viii) राष्ट्रभाषा में काम करने पर गर्व की अनुभूति होनी चाहिए–

(अ) सहमत [ ] (ब) असहमत [ ]

16. भारत की राष्ट्रभाषा क्या है?

(अ) अंग्रेजी [ ] (ब) हिन्दी [ ] (स) अन्य भाषा [ ]

17. आपकी मातृभाषा क्या है?

(अ) अंग्रेजी [ ] (ब) हिन्दी [ ] (स) अन्य भाषा [ ]

18. मातृभाषा में काम करने पर गर्व की अनुभूति होनी चाहिए।

(अ) हाँ [ ] (ब) नहीं [ ] (स) बिल्कुल नहीं [ ]

19. हिन्दी में कार्य करना देश की अस्मिता / राष्ट्र के गौरव का विषय है–

(अ) हाँ [ ] (ब) नहीं [ ] (स) बिल्कुल नहीं [ ]

20. मोबाइल में हिन्दी में काम करना अत्यन्त सरल है–

(अ) हाँ [ ] (ब) नहीं [ ] (स) बिल्कुल नहीं [ ]

21. मोबाइल कम्प्यूटर के द्वारा हिन्दी में कार्य करने की सरलतम विधि है–

(i) कुंजीपटल (keyboard) [ ] (ii) ध्वनि लेखन (vice typing) [ ]

22. क्या आपके मोबाइल में बोलकर लिखने(vice typing) की सुविधा है–

(अ) हाँ [ ] (ब) नहीं [ ] (स) बिल्कुल नही [ ]

23. मोबाइल में आप किस भाषा के समाचार देखतेहैं?

(अ) अंग्रेजी [ ] (ब) हिन्दी [ ] (स) अन्य भाषा [ ]

24. मोबाइल में फेसबुक (सोशल साइट) आदि किस भाषा में टिप्पणी करते हैं ?

(अ) अंग्रेजी [ ] (ब) हिन्दी [ ] (स) अन्य भाषा [ ]

25. whatsapp समूह में आप किस भाषा में वार्तालाप (chatting) करते हैं ?

(अ) हिन्दी [ ] (ब) अंग्रेजी [ ] (स) अन्य भाषा [ ]

26. आप ट्विटर में किस भाषा के माध्यम से अपने सन्देश लिखते है ?

(अ) हिन्दी [ ] (ब) अंग्रेजी [ ] (स) अन्य भाषा [ ]

27. मोबाइल में सन्देश टाइप करने में आप किस भाषा को वरीयता देते हैं ?

(अ) हिन्दी [ ] (ब) अंग्रेजी [ ] (स) अन्य भाषा [ ]

28. अपने चिर परिचितों से मोबाइल के माध्यम से किस भाषा में बात करते हैं ?

(अ) हिंदी [ ] (ब) अंग्रेजी [ ] (स) अन्य भाषा [ ]

29. क्या आप हिन्दी देवनागरी भाषा की बोर्ड के बारे में जानते हैं?

(अ) हाँ [ ] (ब) नहीं [ ] (स) बिल्कुल नहीं [ ]

30. क्या आप मोबाइल में हिन्दी व अंग्रेजी भाषा मिश्रित (मिला हुआ) संदेश भेजते हैं ?

(अ) हाँ [ ] (ब) नहीं [ ] (स) बिल्कुल नहीं [ ]

31. आपको अपने मोबाइल में अधिकतर कार्य जैसे– जोड़ना, घटाना, सन्देश टाइप करना, सन्देश भेजना, मोबाइल नम्बर सुरक्षित करना आदि कार्य को करने में अधिकतर किस भाषा का प्रयोग करते हैं?

(अ) हिन्दी [ ] (ब) अंग्रेजी [ ] (स) अन्य भाषा [ ]

32. आपको मोबाइल में कार्य करने हेतु कौन सी भाषा जटिल महसूस होती है ?

(अ) हिन्दी [ ] (ब) अंग्रेजी [ ] (स) अन्य भाषा [ ]

33. आपके मोबाइल फोन में software किस भाषा में संग्रहित किए गए हैं?

(अ) हिन्दी [ ] (ब) अंग्रेजी [ ] (स) अन्य भाषा [ ]

34. क्या आपने मल्टीमीडिया मोबाइल में हिन्दी key board इन्स्टाल किया है?

(अ) हिन्दी [ ] (ब) अंग्रेजी [ ] (स) अन्य भाषा [ ]

35. फेसबुक में सूचना भेजने हेतु आप किस भाषा का प्रयोग करते हैं ?

(अ) हिन्दी [ ] (ब) अंग्रेजी [ ] (स) अन्य भाषा

36. ईमेल आईडी भेजने हेतु आप किस भाषा का प्रयोग करते हैं?

(अ) हिंदी [ ] (ब) अंग्रेजी [ ] (स) अन्य भाषा [ ]

37. क्या आप अंग्रेजी की-बोर्ड टाइपिंग को हिन्दी की-बोर्ड टाइपिंग में परिवर्तित कर लेते हैं ?

(अ) हाँ [ ] (ब) नहीं [ ] (स) बिल्कुल नहीं [ ]

38. क्या आप मोबाइल के हिन्दी की बोर्ड साफ्टवेयर के विषय में जानते हैं ?

(अ) हाँ [ ] (ब) नहीं [ ] (स) बिल्कुल नहीं [ ]

39. आप हिन्दी की-बोर्ड के किसी साफ्टवेयर के बारे में जानते हैं?

(अ) हाँ [ ] (ब) नहीं [ ] (स) बिल्कुल नहीं [ ]

40. हिन्दी में बोलकर (voice typing) कैसे करते हैं?

(अ) गूगल डॉक द्वारा [ ] (ब) गूगल टूल द्वारा [ ] (स) इनमें से कोई नहीं [ ]

परिशिष्ट–4

बाँदा जनपद के महाविद्यालयों की सूची

क्रम संख्या	महाविद्यालय का नाम	
1.	राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय बाँदा	
2.	पं०जवाहरलाल नेहरू स्नातकोत्तर महाविद्यालय बाँदा	
3.	अतर्रा स्नातकोत्तर महाविद्यालय अतर्रा बाँदा	
4.	जिला परिषद कृषि महाविद्यालय बाँदा	
5.	श्री सुखदेव सिंह लवकुश महाविद्यालय बबेरू बाँदा	
6.	स्व० कामता प्रसाद शास्त्री महाविद्यालय, बदौसा, बाँदा	
7.	एकलव्य महाविद्यालय, दुरेड़ी रोड, बाँदा	
8.	राजीव गांधी डी०ए०वी० कॉलेज, बाँदा	
9.	सीतारमण समर्पण महाविद्यालय, बाँदा	
10.	शिवदर्शन महाविद्यालय, कल्यानपुर तिंदवारी, बाँदा	
11.	डॉ० वी० आर० अम्बेडकर विधि महाविद्यालय, गिरवां, बाँदा	
12.	महर्षि गौतम बुद्ध महिला महाविद्यालय, बबेरू, बाँदा	
13.	राजा देवी डिग्री कॉलेज, बाँदा	
14.	स्व० श्री प्रहलाद सिंह स्मारक महाविद्यालय, गौरी कलां, जसपुरा, बाँदा	
15.	बाला जी महाराज महाविद्यालय, खटपटिहा कलां. बाँदा	
16.	डॉ० भीमराव अम्बेडकर महाविद्यालय, बाँदा	

17.	डॉ० कमरुद्दीन डिग्री कॉलेज, अकबरपुर, सेवढ़ा, बाँदा	
18.	गुलाब रानी महाविद्यालय, बदौसा, बाँदा	
19	स्व० चन्द्रशेखर पाण्डेय महाविद्यालय, अतर्रा, बाँदा	

महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में हिन्दी कम्प्यूटिंग के प्रति जागरूकता: एक अध्ययन (बाँदा जनपद के विशेष सन्दर्भ में)